(Geography)

B.A / B.Sc - IInd Semester

Paper - Human Geography

(मानव भूगोल)

Scanned by CamScanner

B.A/B.Sc-IInd Semester (Geography)

Paper:- Human Geography.
(मानव भूगोल)

Unit-Ist

Topic-(i) Human Geography:- Definition, Nature, Scope

मानव भूगोल :- परिभाषा, Aims; अर्थ, प्रकृति, उद्देश्य, कार्यक्षेत्र (विषय क्षेत्र)

प्रश्न (1) मानव भूगोल को परिभाषित कीजिए। मानव भूगोल की प्रकृति व तथ्यों का विस्तृत वर्णन कीजिए। (2021)

- मानव भूगोल के उद्देश्यों, क्षेत्र एवं प्रकृति की व्याख्या कीजिए।

Topic (2) Principles of Human Geography
(मानव भूगोल के सिद्धान्त)

प्रश्न (1) मानव भूगोल के आधारभूत सिद्धान्तों की विवेचना कीजिये। (2020, 2021)

- मानव भूगोल के आधारभूत सिद्धान्त कौन-कौन-2 से हैं, किसी एक की उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए। (2016)

Scanned by CamScanner

Topic (3) Inter-disciplinary Approach.
मानव - भूगोल :- उपागम (रीतियाँ)

प्रश्न:(1) मानव भूगोल के अध्ययन के उपागमों को समझाइयें।

Topic (4) Understanding of Cultural landscape.
(सांस्कृतिक - दृश्य भूमि)

प्रश्न(1) सांस्कृतिक - दृश्यों भूमि पर टिप्पणी लिखियें!

Topic (5) Man - Nature Relationship:- Determinism, Possibilism, Neo - Determinism.
(मानव - पर्यावरण सम्बन्ध) :- निश्चवाद, सम्भववाद, नव - निश्चयवाद)

प्रश्न(1) मानव - पर्यावरण सम्बन्ध की अवधारणा की विवेचना कीजिए। (2018)

प्रश्न. नियतिवाद व निश्चयवाद के विषय में आप क्या समझते हैं?

प्रश्न. सम्भववाद के गुण और दोषों का वर्णन करें (2022)

प्रश्न. नव - निश्चयवाद के गुण और दोषों का वर्णन कीजिए! (2017)

Scanned by CamScanner

Topic (6) Relation of Human Geography with other Subject., Essential Facts of Human Geography.

(मानव भूगोल का अन्य विषयों सम्बन्ध) तथा मानव भूगोल के तत्व :- हंटिंगटन, ब्रूंज)

प्रश्न (1) मानव भूगोल का अन्य विषयों से सम्बन्ध को स्पष्ट करें। (2022)

प्रश्न (2) जीन ब्रूंश एवं हंटिंगटन के अनुसार मानव भूगोल के तत्वों की व्याख्या कीजिए (2022)

Scanned by CamScanner

Unit-IInd

Date ____
Page ____

Topic :- ① Cultural regions :- सांस्कृतिक प्रदेश

प्रश्न-1. विश्व के सांस्कृतिक प्रदेशों विस्तार से वर्णन किजिए।

Topic - ② Human Race (Griffith taylor's classification)

(मानव प्रजातियों (वर्गीकरण टेलर के अनुसार)

प्रश्न-2 मानव प्रजाति को परिभाषित कीजिए तथा 'ग्रिफिथ टेलर' द्वारा प्रस्तुत वर्गीकरण का विस्तार पूर्वक उल्लेख कीजिए।
(2018), (2020)

Topic :- ③ Tribes :- Eskimo, Bushman, Pygmy. Santhal, Nagas, Bhil.

(जनजातियाँ :- एस्किमों, बुशमैन, पिग्मी, संन्थाल, नागा, भील।)

प्रश्न-3 "एस्किमों" जनजाति के आवास स्थल, अर्थव्यवस्था और समाज पर एक भौगोलिक वृतान्त लिखिए। (2021)

Scanned by CamScanner

प्रश्न.(5) "बुशमैन" जनजाति के आवास, सामाजिक संगठन और अर्थव्यवस्था का वर्णन कीजिए। (2022)

प्रश्न.ड. 'पिग्मी' जनजाति के आवास, अर्थव्यवस्था, एवं समाज व्यवस्था पर लेख लिखिए। (2018)

प्रश्न.6. 'सन्थाल' जनजाति के आवास, अर्थव्यवस्था एवं समाज व्यवस्था पर एक भौगोलिक लेख लिखिए। (2015)

प्रश्न.7. 'नागा' जनजाति के आवास, अर्थव्यवस्था एवं समाज व्यवस्था पर एक लेख लिखिए (2017)

प्रश्न.8. "भील" जनजाति के आवास, अर्थव्यवस्था और समाज पर एक भौगोलिक वृतान्त बताइये। (2022)

Topic - (iv) Religious and Linguistics Composition of World Population.
(धार्मिक और भाषाई रचना के आधार पर विश्व की जनसंख्या)

प्रश्न.9. धार्मिक और भाषाई रचना के आधार पर विश्व की जनसंख्या के वितरण को समझाइये।

Unit - III[rd]

Date ______
Page ______

Topic ① World Population :- Growth, Distribution, Density, Sex-Ratio and Literacy. (विश्व जनसंख्या :- वृद्धि, वितरण, घनत्व, लिंगानुपात, साक्षरता)

प्रश्न ① विश्व की जनसंख्या वृद्धि को समझाइयें तथा जनसंख्या वृद्धि की समस्याओं का वर्णन कीजियें।

प्रश्न ② विश्व में जनसंख्या के वितरण और घनत्व को प्रभावित करने वाले भौगोलिक कारकों को समझाइयें। (2022, 2018)

प्रश्न ③ विश्व की जनसंख्या का वितरण और घनत्व को समझाइए।

प्रश्न ④ विश्व की जनसंख्या के लिंगानुपात व साक्षरता पर टिप्पणी लिखिए।

प्रश्न ⑤ विश्व के प्रमुख जनसमूह (महाजन समूह की विस्तार से व्याख्या कीजिए। (2015)

Scanned by CamScanner

Date ______
Page ______

Topic-② Population Growth Theory :-
(Malthusian and Demographic transition Theory) : (जनसंख्या वृद्धि सिद्धान्त :-
(माल्थस और जनांकिकीय संक्रमण सिद्धान्त)

प्रश्न-(1) जनसंख्या वृद्धि के माल्थस के सिद्धान्त को विस्तार से समझाइयें।,

प्रश्न (2) जनसंख्या वृद्धि के जनांकिकीय संक्रमण सिद्धान्त का वर्णन कीजिए।,

Topic-③ Human Development Index (HDI.)
(मानव विकास सूचकांक) -

प्रश्न-(1) मानव विकास सूचकांक क्या है, समझाइयें (विस्तार से).

Scanned by CamScanner

Unit - IV

Topic - ① Factors, Types and Consequences of Migration, (कारण, प्रभाव, प्रकार - जनसंख्या स्थानान्तरण (जनसंख्या प्रवसन)

प्रश्न (1) जनसंख्या प्रवसन को विस्तारपूर्वक समझाइए और प्रवसन के प्रकार व कारणों का वर्णन कीजिए। (2017)

प्रश्न (2) जनसंख्या स्थानान्तरण को परिभाषित करते हुए। इसके प्रकारों व इसे प्रभावित करने वाले कारकों का वर्णन कीजिए।

प्रश्न (3) जनसंख्या स्थानान्तरण के प्रभावों पर संक्षिप्त में लिखिये।

Topic ② Griffith Taylor's Migration theory (टेलर का प्रवास कटिबन्ध सिद्धान्त)

प्रश्न (4) ग्रिफिथ टेलर के 'प्रवास कटिबन्ध सिद्धान्त' की व्याख्या कीजिये।

Scanned by CamScanner

Date ______
Page ______

Topic ③ Trends and Patterns of Urbanisation of the World.
(विश्व में नगरीकरण : प्रवृत्तियाँ और प्रतिरूप)

प्रश्न 5 विश्व में नगरीकरण की प्रवृत्तियाँ को विस्तार से समझाइयें।

प्रश्न 6. विश्व में नगरीकरण के प्रतिरूप को समझाइयें।

Topic ④ Settlements: Types and Patterns.
(बस्तियाँ : प्रकार और प्रतिरूप)
(ग्रामीण, नगरीय)

प्रश्न (7) अधिवासों के प्रकारों से आप क्या समझते हैं? ग्रामीण अधिवास प्रतिरूपों की विस्तार से व्याख्या कीजिए। (2018)

प्रश्न 8 नगरीय अधिवासों के विषय में विस्तृत ब्यौरा दीजिये। (2020)

Topic ⑤ Christaller's Central Place theory.
(क्रिस्टालर केन्द्रीय स्थल सिद्धान्त)

प्रश्न 9 क्रिस्टालर के केन्द्रीय स्थल सिद्धान्त को समझाइयें।

Kailsh

Scanned by CamScanner

Topic-① Definition, aims and scope of Human (Geography)

(मानव भूगोल - परिभाषा, अर्थ, प्रकृति, उद्देश्य, विषय-क्षेत्र)

प्रश्न-(1) मानव भूगोल की परिभाषा दीजिए तथा भूगोल की शाखा के रूप में इसके कार्यक्षेत्र की विवेचना कीजिए। (2018, 2019)

प्रश्न-(2) मानव भूगोल का अर्थ समझाइए और मानव भूगोल के उद्देश्य एवं विषय-क्षेत्र की व्याख्या कीजिए। (2015, 2017)

प्रश्न-3 मानव भूगोल के उद्देश्यों, क्षेत्र, एवं प्रकृति की व्याख्या कीजिए। (2014)

उत्तर:- पृथ्वी के धरातल पर पाए जाने वाले सभी तथ्यों का अध्ययन करके उनके बारे में जानना, तत्पश्चात विश्लेषण करके उनका वर्णन करना अथवा लिखना भूगोल शब्द का शाब्दिक अर्थ है,

भूगोल को दो भागों में बाँटा गया है,

(i) भौतिक भूगोल -
(ii) मानव भूगोल -

(i) भौतिक भूगोल :- इसमें पृथ्वी को नियन्त्रित करने करने वाले बल, पृथ्वीतल, थल व जल, पृथ्वी के सौर सम्बन्ध, मिट्टी व वनस्पति, जीव-जन्तु

आदि तत्व आते है।

(i) मानव भूगोल :- इसमें मानव द्वारा निर्मित भू-दृश्यों का अध्ययन किया जाता है, जैसे - आर्थिक क्रियाएँ, मानव जातियाँ, कृषि, बस्तीयाँ आदि का अध्ययन किया जाता है,

परिभाषा :- (Definitions) :-
(i) रैट्जेल के अनुसार :- " मानव भूगोल के दृश्य सर्वत्र वातावरण से सम्बन्धित होते हैं, जो स्वयं भौतिक दशाओं का एक योग होता है।"

(2) कुमारी सैम्पुल - के अनुसार :- " मानव भूगोल अस्थायी पृथ्वी और चंचल मानव के पारस्परिक परिवर्तनशील सम्बन्धों का अध्ययन है।"

(3) डिकेन और पिट्स - के अनुसार :- " मानव भूगोल में मानव और उसके कार्यों को समाविष्ट किया है।"

(4) विडाल - डी - ला - ब्लाश :- के अनुसार " मानव भूगोल पृथ्वी और मानव के पारस्परिक सम्बन्धों को एक नया विचार देता है, जिसमें पृथ्वी को नियन्त्रित करने वाले भौतिक नियमों तथा पृथ्वी पर निवास करने वाले जीवों के आपसी सम्बन्धों का अधिक संयुक्त ज्ञान समाविष्ट होता है।"

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

(फ्रांसीसी विद्वान)

(5) डिमांजियाँ के अनुसार :

" मानव भूगोल मानवीय वर्गों, समाजों तथा प्राकृतिक वातावरण के सम्बन्धों का अध्ययन बताया है, "

- जर्मन विद्वानों के अनुसार मानव भूगोल का अर्थ - मानव एवं उसको प्रभावित करने वाले प्राकृतिक कारको को ही माना था।

लेकिन समय उपरान्त कुमारी सैम्पुल ने मानव द्वारा किये गये कार्यो को भी सम्मिलित किया है,

- फ्रांसीसी विद्वानों ने मानवीय कार्यो को और भी अधिक महत्व दिया तथा ब्रूंज महोदय ने उन समस्त दृश्यों को जिनमें मानवीय क्रियाएँ कार्य करती हैं उन्हें मानव भूगोल के दृश्य माना।

उपरोक्त के आधार पर कहा जा सकता है कि " विभिन्न प्रादेशिक स्थितियों में मानव समूह ने वहाँ के स्थानिय भौतिक नियमों के साथ अपने आप को किस प्रकार स्थापित किया है, और वह अपने जीवन की कठिनाइयों को कम करने के लिए अपने वातावरण में किस प्रकार प्रयत्नशील है, " के अध्ययन को ही मानव भूगोल कहते है,

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

S	M	T	W	T	F	S
31					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

मानव भूगोल की प्रकृति :-

मानव भूगोल की प्रकृति में मानवीय क्रिया कलाप केन्द्रीय बिन्दु है। मानवीय क्रियाकलापों का विकास कहाँ, कब, कैसे हुआ आदि प्रश्नों को भौगोलिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत करना ही मानव भूगोल की प्रकृति को प्रकट करता है।

⇒ मानव भूगोल विभिन्न प्रदेशों के पारिस्थितिक समायोजन और क्षेत्र संगठन के अध्ययन मुख्यत केन्द्रित रहता है।

※ ⇒ मानव भूगोल की प्रकृति में यह विश्लेषण किया जाता है कि पृथ्वी के किसी क्षेत्र में रहने वाला मानव समूह अपने जैविक, आर्थिक, सामाजिक, व सांस्कृतिक विकास के लिए वातावरण का उपयोग किस प्रकार करता है, और वातावरण में क्या-2 बदलाव लाता है।

मानव अपने पर्यावरण के अनुसार क्रियाकलापों व रहन-सहन में अनुकूल रूपान्तरण व समायोजन करता है,

अतः मानव भूगोल समय के साथ परिवर्तनशील प्रकृति के सभी जटिल तथ्यों के पारस्परिक सम्बन्धों का अध्ययन मानव को केन्द्रीय भूमिका में मानकर करता है।"

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

मानव भूगोल के उद्देश्य :-

मानव भूगोल का मुख्य उद्देश्य - मानव - प्रगति - समृद्धि है,

अर्थात पृथ्वी पर विभिन्न प्रदेशों की जनसंख्या और उनके वातावरण के संसाधनों के प्रयोग से किये गये स्थानिक संगठनों का अध्ययन मानव - प्रगति - समृद्धि के लिए किया जाना चाहिये।

⇒ मानव - भूगोल में केवल प्राकृतिक वातावरण का ही नहीं बल्कि सांस्कृतिक वातावरण की शक्तियों, तथ्यों, प्रक्रियाओं के प्रभावों तथा मानव द्वारा उनमें परिवर्तनों का अध्ययन किया जाता है।

मानव भूगोल के अध्ययन के उद्देश्य निम्न हैं,

(1) मानव को उत्पन्न करने वाले वातावरण का अध्ययन करना।

(2) वातावरण के दास के रूप में मानव - वर्गों के क्रिया - कलाप का अध्ययन करना।

(3) मानव - वर्गों के सामने आने वाली क्षेत्रीय तथा ग्लोबल कठिनाइयों और मानव - वर्गों द्वारा उनका समाधान करना।

(4) भौतिक वातावरण के तत्वों एवं सम्भावनाओं का उपयोग करते हुए मानव - वर्गों द्वारा निर्मित सांस्कृतिक वातावरण का अध्ययन करना।

(5) प्रकृति पर विजेता के रूप में मानव - वर्गों के मिथ्या भू-दृश्यों का अध्ययन करना।

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

(6) मानव - वर्गो द्वारा निर्मित सांस्कृतिक वातावरण के तत्वों का मानव - वर्गो पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभाव का अध्ययन करना।

(7) मानव भूगोल का उद्देश्य जनसंख्या प्रदेश एवं संसाधनों का ऐसा रूप विकसित करना है जिसमें क्षेत्रीय संसाधनों के आधार पर सतत् विकास का भाव निहित हो।

(8) मानव समूहों के द्वारा किये गये विभिन्न प्रकार के वातावरण - समायोजन, प्रादेशिक - व्यवस्थापन और क्षेत्र - संगठन का अध्ययन किया जाता है।

अतः विभिन्न प्रदेशों या क्षेत्रों में मानवीय शारीरिक लक्षणों और वर्णता की इकाइयों के वितरण, जनसंख्या के स्थानिक वितरणों, प्रवासों, सामाजिक संरचनाओं, संसाधन उपयोग, मानवीय बस्तियों के वितरण, निर्माण - सामग्री, भोजन - वस्त्र आदि प्रारूपों तथा इनके प्रभावों का अध्ययन एवं विश्लेषण करना।

प्रश्न -(5) मानव भूगोल को परिभाषित कीजिए। मानव भूगोल की प्रकृति व तथ्यों का विस्तृत वर्णन कीजिए। (2021)

प्रश्न -(5) मानव भूगोल की प्रकृति व तथ्यों को परिभाषित कीजिये। (2020)

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

मानव भूगोल के कार्य-क्षेत्र / विषय-क्षेत्र ⇒

भूगोल का अध्ययन क्षेत्र या विषय-क्षेत्र इसके मानव समस्त तथ्यों को सम्मिलित करके पूर्ण किया जाता है,

मानव तथा प्राकृतिक वातावरण के साथ समायोजन के द्वारा बने सांस्कृतिक वातावरण के तथ्य मिलकर मानव भूगोल के विषय-क्षेत्र का निर्माण करते है,

इस प्रकार मानव भूगोल के अध्ययन-क्षेत्र में निम्नलिखित तथ्य आते है

(1) जनसंख्या एवं उसकी विशेषताए
(2) प्राकृतिक वातावरण के तथ्यों एवं मानव के समायोजन का अध्ययन -
(3) सांस्कृतिक वातावरण या सांस्कृतिक भू-दृश्य,
(4) संसाधन उपयोग एवं संसाधन नियोजन
(5) वातावरण के तथ्यों का कालिक विकास क्रम
(6) मानव भूगोल के भू-दृश्यों का क्षेत्रीय वितरण (स्थानिक संगठन)
(7) इन क्षेत्रीय स्थानिक संगठनों के अन्तरास्थानिक सम्बन्धों का अध्ययन होता है। इसमें स्थानिक संगठनो के पारस्परिक सम्बन्धों का अध्ययन मानव समाजों के हित में किया जाता है,

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

S	M	T	W	T	F	S
31					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

विषय - क्षेत्र का सार :- निम्न है,

(i) मानव - वातावरण समायोजन के सिद्धान्त : मानव भूगोल का विकास :- मानव अपने उत्पत्ति काल से ही पर्यावरण की रूकावटों व असहयोग को अनुभव करता रहा है तथा पर्यावरण के तत्वों से समायोजन करने के लिए प्रयत्न करता रहा है,

– मानव भूगोल का विकास विषय के रूप में 19वीं शताब्दी में शुरू हुआ तथा वर्तमान तक अनेक विद्वानों ने मानव भूगोल को एक विज्ञान के रूप में विकसित किया है,

(2) मानव - उद्गम क्षेत्र और मानव प्रजातियाँ :- (i) इसमें मानव उद्गम, मानव प्रजातियाँ को सम्मलित किया गया है,

(ii) भूमण्डल पर मानव प्रजाति का देशकालीन स्थापन को सम्मलित किया गया है।

(3) जनसंख्या अध्ययन :- (i) मानव जनसंख्या तथा वृद्धि की दर।

(ii) जनसंख्या के वितरण और घनत्व पर प्रभाव डालने वाले कारक।,

(iii) पुरूष - स्त्री अनुपात - लिंगानुपात

(iv) आयु - वर्ग

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

(v) शारीरिक स्वास्थ्य तथा मानसिक क्षमता

(vi) प्रवास तथा मिश्रण आदि को सम्मलित किया गया है,

(4) प्राकृतिक वातावरण के साथ मानव वर्गो का समायोजन :-

इसमें मानव का मैदानों, पठारों और पर्वतों के साथ समायोजन, जलवायु से मानव सम्बन्ध, वनस्पति और जन्तु जगत से मानव सम्बन्ध, मिट्टियों से समायोजन, खनिजों, स्थलीय जलराशियों और सागरो से मानव सम्बन्धों के अध्ययन को सम्मलित किया गया है,

(5) मानव की नितान्त आवश्यकताओं का भूगोल :-

- इसमें भोजन, वस्त्र, मकान आदि को सम्मलित किया गया है,

भोजन :- अनाज :- गेहूं, जौ, बाजरा, चावल, मक्का

वस्त्र :- पशुओं और वनस्पतियों से प्राप्त होने वाले रेशे - कपास, रेशम, ऊन आदि।,

मकान :- इसके लिए विस्तृत क्षेत्र की आवश्यकता होती है

⇒ मानव प्रकृति से प्राप्त निर्माण सामग्री के अनुसार भवनों का निर्माण करता है
इसमें झोपड़ी से लोहे सीमेन्ट आदि के भवन सम्मलित है

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

(6) मानव बस्तियाँ और मार्ग :- इसमें ग्रामीण बस्तियाँ, नगरीय बस्तियाँ व इनको जोड़ने वाले मार्ग को सम्मिलित किया गया है,

(7) मानव की अर्थव्यवस्थायें : इसमें आखेट, मत्स्यउत्पादन, पशुपालन, कृषि, निर्माण - उद्योग, व्यापार, परिवहन के साधनों को सम्मिलित किया गया है,

(8) सामाजिक - सांस्कृतिक संगठन :- तथा विभिन्न प्रदेशों में जीवन के ढंग, जन - जातियाँ।,

(i) सामाजिक संगठन :- इसमें परिवहन, श्रम विभाजन, सामाजिक वर्ग, सामाजिक व्यवहार, रीति - रिवाज, और प्रथायें सम्मिलित हैं,

(ii) भाषा, और साहित्य, कला और शिल्प, धार्मिक विश्वास, अन्धविश्वास, संगीत तथा मनोरंजन औजार, यंत्र आदि को सम्मिलित किया गया है,

(iii) भूमि उपयोग :- जलवायु दशाओं के अनुसार कृषि फसलें उत्पन्न करना, घास के मैदानों का उपयोग पशुचारण आदि के लिए करना।,

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

(9) राजनीतिक प्रशासन और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति :-

- पृथ्वी के धरातल पर फैले हुए भौगोलिक दृश्यों के क्षेत्रीय संगठन एक - दूसरे से सम्बन्धित होते हैं, ये सम्बन्ध कई मानवीय समस्याओं के हल में सहायक सिद्ध हो सकते हैं,

जैसे:- मेक्सिको से गेहूं के बिज बोने से खाद्य समस्या के समाधान में सहायता मिली है,

(10) संसाधन नियोजन :-

भविष्य में मनुष्यों की आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक उन्नति के लिए किसी भी प्रदेश के प्राकृतिक संसाधनों का मूल्यांकन, संरक्षण तथा सदुपयोग की योजनायें भी मानव भूगोल के विषय - क्षेत्र में सम्मिलित हैं, अतः किसी प्रदेश की भावी उन्नति के लिए संसाधन नियोजन आवश्यक है।

मानव - भूगोल के अध्ययन - क्षेत्र के सम्बन्ध में कई भूगोलवेत्ताओं ने विचार दिये हैं इनमें -

फ्रेडरिक रैटजेल, - विडाल - डी - ला - ब्लाश, जीन ब्रूंज, डिमाजियाँ, फ्रिन्च और ट्रिवार्था, व्हाइट तथा रैनर, हटिंगटन, मुख्य हैं।

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

31					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30
S	M	T	W	T	F	S

Topic (2) Relation of Human Geography with other Subject and other Social Sciences.

(मानव भूगोल का अन्य विषयों तथा समाज विज्ञानों से सम्बन्ध)

प्रश्न:- (1) मानव भूगोल का अन्य सामाजिक विज्ञानों से सम्बन्ध पर टिप्पणी लिखें। (2016, 2022)

प्रश्न-(2) मानव भूगोल का अन्य विज्ञानों से सम्बन्ध स्पष्ट करें।

प्रश्न-(3) मानव भूगोल बहुत से विषयों से बहुत कुछ लेता है, और साथ ही उन्हें बहुत कुछ देता भी है इस कथन की पुष्टि कीजिए। (2019)

उत्तर :- मानव भूगोल एक संयुक्त विज्ञान है, जिसमें पृथ्वी की विभिन्न परिवर्तनशील भौतिक दशाओं और परिवर्तनशील तथा क्रियाशील मानव के अन्तर्सम्बन्धों के फलस्वरूप उत्पन्न होने वाले परिणामों का विज्ञान है,

17 SUNDAY

⇒ मानव भूगोल अन्य सामाजिक विज्ञानों से निम्न प्रकार से सम्बन्धित है,

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

(1) मानव भूगोल और मानव विज्ञान.
(2) मानव भूगोल और अर्थशास्त्र
(3) मानव भूगोल और समाजशास्त्र -
(4) मानव भूगोल और इतिहास
(5) मानव भूगोल और राजनीति विज्ञान -
(6) मानव भूगोल और पुरातत्व विज्ञान -
(7) मानव भूगोल और भू-राजनीति -
(8) मानव भूगोल और सैन्य विज्ञान -

(1) मानव भूगोल और मानव विज्ञान :-

मानव भूगोल और मानव विज्ञान दोनों ही विषयों में मनुष्य की प्रजातियों का अध्ययन किया जाता है, मनुष्य की शारीरिक बनावट और जैविक लक्षणों के आधार पर भिन्न-भिन्न प्रजातियों का वर्गीकरण होता है और विभिन्न प्रदेशों की जनसंख्या में इन वर्गों का विस्तार किया जाता है। अतः दोनों ही विज्ञान परस्पर सम्बन्धित हैं।

(2) मानव भूगोल और अर्थशास्त्र :-

मानव ने वातावरण के संसाधनों का उपयोग करके किस-किस प्रदेश में कौन-कौन से आर्थिक व्यवसाय अपनाये हैं, इन विषयों का अध्ययन मानव भूगोल में होता है। खेती, पशुचारण, वन, उद्योग, खनिज उद्योग, निर्माण उद्योग, परिवहन, वाणिज्य आदि का अध्ययन मानव भूगोल तथा अर्थशास्त्र दोनों में ही होता है। इसलिये दोनों विषय परस्पर सम्बन्धित हैं,

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

S	M	T	W	T	F	S
31					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

(3) मानव भूगोल और समाजशास्त्र :-

मानव समुदायों के सामाजिक संगठन, परिवार-प्रणाली, श्रम-विभाजन, लोकनीति, रीति-रिवाजों और सामाजिक प्रथाओं का अध्ययन मानव भूगोल तथा समाजशास्त्र दोनों में ही होता है। दोनों के ही अन्तर्गत लोक-साहित्य, लोक-कथा, कला, धार्मिक विश्वास, मनोरंजन, आदि विषयों का समावेश होता है, इसलिये दोनो ही विज्ञान परस्पर सम्बन्धित है,

(4) मानव भूगोल और इतिहास:-

मानव भूगोल के अन्तर्गत मानवीय सभ्यता और उन्नति के विकास का कालिक अनुक्रम पढ़ा जाता है अर्थात किस-2 युग किसी प्रदेश में निवास करने वाली जनता ने कितनी-कितनी सांस्कृतिक और तकनीकी उन्नति की थी। पुरातत्व विज्ञान तथा इतिहास भी विभिन्न युगों में मानव सभ्यता के विकास का परिशीलन करते है, इसीलिये मानव भूगोल का इनसे सम्बन्ध है,

(5) मानव भूगोल और राजनीति विज्ञान:-

दोनो विज्ञानों के अन्तर्गत विभिन्न प्रदेशों की राष्ट्रों की शासन प्रणालियों और सरकारों का अध्ययन होता है मानव भूगोल में प्रादेशीकरण के साथ-साथ राजनीतिक सीमाओं, देशों के क्षेत्र आपसी सम्पर्क एवं प्रभावों का और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का भी अध्ययन होता है अतः ये परस्पर सम्बन्धित है।

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

(6) मानव भूगोल और पुरातत्व विज्ञान :-

पुरातत्व विज्ञान के द्वारा विभिन्न युगों में मानव सभ्यता के विकास के प्रतीको का अध्ययन करके उनका संरक्षण किया जाता है, ये सभी प्रतीक या भूदृश्य मानव भूगोल के ही दृश्य होते हैं,

(7) मानव भूगोल और भू - राजनीति :-

विश्व में राजनीतिक समीकरण बदलते रहते हैं, विश्व - शक्तियों के प्रभाव उनके ध्रुव तथा उनके सहयोगी एवं बदलते रहते है, इन परिवर्तनों पर क्षेत्रीय भूस्वरूप व स्थिति का क्या प्रभाव होगा, यह अध्ययन मानव भूगोलवेत्ता ही करते है,

(8) मानव भूगोल और सैन्य विज्ञान :-

विभिन्न राष्ट्रों की सीमाओं, क्षेत्रफलों, भौगोलिक साधनों और उनकी जनशक्ति तथा सुरक्षा का अध्ययन मानव भूगोल तथा सैन्य विज्ञान दोनों में होता है सैन्य विज्ञान में विभिन्न प्रदेशो की जलवायु और वनस्पति आदि का भी ज्ञान कराया जाता है, शत्रु या मित्र देशों की जनसंख्या, रीति - रिवाजों और ~~सभ्य~~ सभ्यताओं का ज्ञान भी सैनिको को दिया जाता है। अत: दोनो विज्ञानों में परस्पर सम्बन्ध हैं,

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

प्रश्न- मानव भूगोल का अन्य विज्ञानों से सम्बन्ध:- निम्न हैं,

(1) मानव भूगोल और गणित -
(2) मानव भूगोल और सांख्यिकी
(3) मानव भूगोल और भौमिकी
(4) मानव भूगोल और ऋतु विज्ञान तथा जलवायु विज्ञान -
(5) मानव भूगोल और रसायन विज्ञान तथा मृदा विज्ञान -
(6) मानव भूगोल और पादप पारिस्थितिकी -
(7) मानव भूगोल और प्राणी पारिस्थितिकी -
(8) मानव भूगोल और जल-विज्ञान तथा समुद्र विज्ञान -

(1) मानव भूगोल और गणित:- मानव भूगोल में किसी प्रदेश की ज्यामितीय स्थिति अक्षांशों और देशान्तरों के अंशो तथा कलाओं द्वारा व्यक्त किया जाता है, तथा उस प्रदेश की भौगोलिक स्थिति, क्षेत्रफल, और आकृति का अध्ययन किया जाता है। इन तत्वों का अध्ययन गणित के अन्तर्गत होने से मानव भूगोल का गणित से सम्बन्ध है,

मानव भूगोल में विभिन्न प्रदेशों के संसाधनों के मूल्यांकन तथा स्थानिक संगठन के कारकों का विश्लेषण किया जाता है। इन सभी में गणित की ज्यामिति, बीजगणित, गणना, प्रारूप आदि का प्रयोग होता है,

(2) मानव भूगोल और सांख्यिकी:- विभिन्न प्रदेशों की जनसंख्या, वृद्धि, सघनता, वितरण, जातियों और

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

शक्ति आदि का अध्ययन मानव भूगोल तथा सांख्यिकी दोनो मे होता है,

- वातावरण के संसाधनो की मात्राओं का मापन और सांस्कृतिक तथ्यों का मापन करते समय मानव भूगोल में सांख्यिकी का प्रयोग किया जाता है,

- मानव भूगोल में मानचित्रों तथा रेखाचित्रों और ग्राफों को बनाने मे भी सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया जाता है। इसलिये दोनो में सम्बन्ध है।

(3) मानव भूगोल और भौमिकी :-

मानव भूगोल में भूमि की बनावट और भू- आकृतियों (पर्वत, मैदान, घाटिया,) तथा शैलों और खनिज पदार्थों का अध्ययन होता है तथा इनका अध्ययन भौमिकी में मूल विषय के रूप में किया जाता है। इसलिए मानव भूगोल का भौमिकी से सम्बन्ध है,

(4) मानव भूगोल और ऋतु विज्ञान तथा जलवायु विज्ञान :-

मनुष्य के भोजन, वस्त्र, मकान, आदि किस प्रकार के होंगे और वह किन फसलों की कृषि कर सकता है इन सब पर जलवायु का मुख्य प्रभाव होता है। मनुष्य की प्रतिदिन की क्रियाओं पर ऋतुओं का बड़ा प्रभाव होता है। जलवायु के अनुसार ही विभिन्न प्रदेशों की वनस्पति और जीव - जन्तु होते है अतः मानव भूगोल का ऋतु और जलवायु विज्ञान से बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध है,

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

S	M	T	W	T	F	S
31					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

(5) मानव भूगोल और रसायन विज्ञान तथा मृदा विज्ञान :-

सभी मानव भोजन प्रत्यक्ष रूप से मृदा से प्राप्त करता है मृदा में खाद डालकर उपजाऊ बनाया जाता है इन मिट्टियों का अध्ययन मानव भूगोल तथा मृदा - विज्ञान दोनों में होता है इसलिये ये आपस में सम्बन्धित है,

(6) मानव भूगोल और पादप पारिस्थितिकी :-

वनों से मानव लकड़ी, कच्चा माल, मृदा कटाव रोकना, बहुमुल्य प्राकृतिक संसाधन प्राप्त होते है मानव भूगोल में वनस्पति के प्रदेशों का अध्ययन होता है इसीलिए मानव भूगोल का सम्बन्ध पादप पारिस्थितिकी से है,

(7) मानव भूगोल और प्राणी पारिस्थितिकी :-

मानव सभ्यता के आदिकाल से मनुष्यों और पशुओं का साथ रहा है आर्थिक जीविकोपार्जन के अलावा मनुष्य के सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में भी पशुओं का मानव से गहरा सम्बन्ध रहा है,

(8) मानव भूगोल और जल विज्ञान तथा समुन्द्र विज्ञान,

24 SUNDAY - नदियाँ, झीलें, और सागर, परिवहन के महत्वपूर्ण साधन है किसी प्रदेश के सिन्चाई के साधन और जनशक्ति की क्षमता तथा विकास की मात्रा का अध्ययन भी मानव भूगोल से होता है इसलिए इनका सम्बन्ध जल - विज्ञान से है तथा बन्दरगाहों और ज्वार-भाटे

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

Topic - (3) मानव भूगोल के तत्व : (हटिंगटन, जीन ब्रून्स)

प्रश्न :- (1) हंटिंगटन द्वारा प्रतिपादित मानव भूगोल के तत्वों का वर्णन कीजिए। (2018)

प्रश्न -(2) जीन बूँज द्वारा प्रतिपादित मानव भूगोल के आवश्यक तत्वों का वर्णन कीजिए (2022, 2023)

उत्तर :- हंटिंगटन (अमेरिकी) ने मानव भूगोल को अध्ययन करते हुए मानव को केन्द्र में रखकर मानव भूगोल के तत्वों को दो बड़े वर्गों में बाटा गया है,

(1) प्राकृतिक वातावरण या भौतिक दशाएँ -
(2) सांस्कृतिक वातावरण (मानवीय प्रतिक्रियाएँ) -

(1) भौतिक दशाए :- (Physical Conditions) :- इन्होने प्राकृतिक वातावरण का भौतिक दशाओं के रूप में अध्ययन किया है, निम्न है -

(i) पाँच प्रमुख दशाएँ :- (1) ग्लोबीय स्थिति (2) भूमि की बनावट (3) जलराशियाँ (4) मिट्टियाँ एवं खनिज पदार्थ (5) जलवायु। ये सभी दशाएँ मिलकर भौतिक वातावरण का निर्माण करती है,

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

(2) इन पाँच भौतिक दशाओं के द्वारा जीवन की उत्पत्ति होती है, इनमें वनस्पति तथा जन्तु भौतिक वातावरण के प्रमुख अंग हैं।

(3) मानव भी भौतिक वातावरण का तत्व है, जो मुख्य उपभोक्ता एवं कार्यकर्ता है,

(2) मानवीय प्रतिक्रियाएं :- इन्होंने सर्वप्रथम यह दर्शाया है, कि भौतिक तत्व किस प्रकार एक-दूसरे को प्रभावित करते हुए अन्तर्संबंधित हैं, इनका सामूहिक प्रभाव जैविक रूपों (वनस्पति, जीव-जन्तु और मनुष्य) पर होता है, जबकि विभिन्न जैविक रूप भी आपस में एक-दूसरे से सम्बंधित हैं,
भौतिक दशाओं, पौधों तथा पशुओं से मानव की क्रिया-प्रतिक्रिया होती है, जिसके परिणामस्वरूप मानव प्रतिक्रियाओं की उत्पत्ति होती है।
हंटिंगटन के अनुसार मानव प्रतिक्रियाएं मानव भूगोल के प्रमुख तत्व हैं, इन्होंने समस्त मानव प्रतिक्रियाओं को चार वर्गों और 22 उपवर्गों में विभक्त किया है,

(1) भौतिक आवश्यकताएं :- (1) भोजन (2) वस्त्र, (3) आश्रय (4) औजार (5) यातायात के साधन। इन्हें प्राथमिक आवश्यकताएं कहते हैं,

(2) मौलिक व्यवसाय :- भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए (1) आखेट (2) मछली पकड़ना (3) पशुचारण (4) कृषि (5) वनोद्योग (6) खनन (7) विनिर्माण (8) व्यापार आदि मुख्य व्यवसाय विकसित करता है,

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

(3) कार्यकुशलता :- भौतिक आवश्यकताओं की आपूर्ति सुनिश्चित करने के उपरान्त मानव अपनी कार्य-कुशलता का विकास करता है, जिसमें -

(1) स्वास्थ्य (2) सांस्कृतिक प्रेरणा (3) मनोरंजन

से सम्बन्धित तथ्यों का विकास करता है,

(4) उच्चतर आवश्यकताएं :- (Higher Needs) :- इनमें

(1) सरकार का गठन (2) शिक्षा (3) विज्ञान (4) धर्म

(5) कला (6) साहित्य आदि तथ्यों का विकास करता है,

⇒ इस प्रकार हंतिगटन द्वारा किया गया मानव भूगोल के तत्वों का वर्गीकरण निश्चितरूप से सुबोध, सार्थक तथा तार्किक है। यद्यपि इसमें मानव भूगोल का विषय-क्षेत्र अपरिमित हो जाता है। ये सभी तथ्य मानव की सभ्यता और उन्नति को दर्शाते हैं,

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

(मानव भूगोल के तत्व : हंटिंगटन) :

(1) भौतिक दशाएं

- (1) भूमंडल पर स्थिति
  ↓
- (2) स्थलरूप
  ↓↑
- (3) जलाशय
  ↓↑
- (4) मिट्टी एवं खनिज
  ↓↑
- (5) जलवायु

(2) जीवन के प्रकार

- (i) पौधे
- (ii) मनुष्य → व्यवसाय
- (ii) पशु

(3) मानव प्रक्रियाएँ

- (i) भौतिक आवश्यकताएं
  - (1) भोजन
  - (2) वस्त्र
  - (3) आश्रय (आवास)
  - (4) औजार
  - (5) यातायात के साधन
- (ii) प्रमुख व्यवसाय
  - (1) आखेट
  - (2) मत्स्योद्योग
  - (3) पशुचारण
  - (4) कृषि
  - (5) वनोद्योग
  - (6) खनन
  - (7) विनिर्माण उद्योग
  - (8) वाणिज्य
- (iii) कार्य कुशलता
  - (i) स्वास्थ्य
  - (ii) सांस्कृतिक प्रेरणा
  - (iii) मनोरंजन
- (iv) उच्चतर आवश्यकताएं
  - (i) सरकार
  - (ii) शिक्षा
  - (iii) विज्ञान
  - (iv) धर्म
  - (v) कला
  - (vi) साहित्य

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

31					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30
S	M	T	W	T	F	S

प्रश्न-2 जीन ब्रूंज द्वारा प्रतिपादित मानव भूगोल के आवश्यक तत्व (टिप्पणी) (2022, 2023)

उत्तर:- ब्रूंश की प्रसिद्ध पुस्तक 'मानव भूगोल' में मानव भूगोल के तथ्यों की विस्तृत विवेचना की गयी है, इन्होंने मानव भूगोल के तथ्यों को दो भिन्न रूपों से वर्गीकृत किया है,

(A) सभ्यता के विकास के आधार पर वर्गीकरण-
(B) यथार्थवादी वर्गीकरण-

(A) सभ्यता के विकास के आधार पर वर्गीकरण:-

मानव भूगोल में सभ्यता के विकास को ध्यान में रखकर मानव भूगोल के तथ्यों को चार वर्गों में विभक्त करके विश्लेषण किया है,

(i) प्राथमिक आवश्यकता का भूगोल:- इसके अन्तर्गत मानव की तीन मूलभूत (प्राथमिक) आवश्यकताओं - भोजन, वस्त्र और मकान को सम्मिलित किया गया है,

(2) भू-शोषण का भूगोल:- इसमें मानव की उन क्रियाओं तथा प्रयत्नों को सम्मिलित किया गया है, जिनके द्वारा

31 SUNDAY

वह प्राकृतिक संसाधनों का शोषण करके अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है इसके अन्तर्गत पशुपालन, कृषि, खनन, औद्योगीकरण आदि सम्मिलित किये गये हैं।

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

(3) सामाजिक भूगोल :- इसके अन्तर्गत मनुष्यों की आत्मनिर्भरता, प्रेम, विभाजन, सहकारिता, नागरिक व्यवस्था को सम्मिलित किया गया है,

(4) राजनीतिक एवं ऐतिहासिक भूगोल :- इसके अन्तर्गत ब्रूंश ने राजनीतिक या प्रशासकीय तथ्यों तथा ऐतिहासिक घटनाओं से सम्बन्धित तथ्यों को सम्मिलित किया है,

(B) यथार्थवादी वर्गीकरण :- (Positive classification) :- इसके अन्तर्गत इन्होंने मानव भूगोल के तथ्यों को तीन प्रमुख वर्गों और छः आवश्यक तथ्यों में विभाजित किया है। प्रत्येक वर्ग में दो-दो आवश्यक तथ्यों को रखा है,

(1) मिट्टी के अनुत्पादक व्यवसाय सम्बंधी तथ्य :- इसके दो आवश्यक तथ्य हैं - (1) गृह (2) राजमार्ग

इनके अनुसार गृहों और सड़कों के अन्तर्गत प्रयुक्त भूमि से कोई आर्थिक उत्पादन नहीं प्राप्त होता है, अतः इन्होंने इसे अनुत्पादक व्यवसाय की संज्ञा दी है

→ मकानों और सड़को के निर्माण के लिए भूमि के विस्तृत क्षेत्र की आवश्यकता होती है मानव अपने वातावरण से प्राप्त निर्माण सामग्री के अनुसार मकानों व सड़कों का निर्माण करता है,

इनके निम्न पक्ष हो सकते है

(1) मकानों के भेद -
(2) मार्ग और सड़क की भौतिक विशेषतायें :
(3) मानवीय बस्तियां -
(4) नगरीय समूह -

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

S	M	T	W	T	F	S
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28						

(2) पौधों और पशुओं पर विजय सम्बंधी तथ्य :- इस वर्ग के दो आवश्यक तथ्य हैं - कृषि और पशुपालन

⇒ जीवन - निर्वाह के लिए भोजन व अन्य वस्तुओं की आवश्यकता होती है, इनसे ही इनकी पूर्ति करता है, विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में अलग - अलग कृषि फसलों का विकास करके और जन्तुओं को पालतू बनाकर उनसे दुग्ध, माँस आदि प्राप्त करता है,

ब्रूंज ने इन तथ्यों हेतु निम्न पक्ष बताये है

(1) जलवायु से सम्बन्धित तथ्य -
(2) कृषि के विभिन्न प्रकार व विभिन्न फसलें -
(3) वनस्पति उत्पाद -
(4) पशुओं का मौसमी स्थानान्तरण और पशुचारण
(5) मानवीय स्थानान्तरण -

(3) विनाशकारी अर्थव्यवस्था सम्बंधी तथ्य :- इस वर्ग के दो आवश्यक तथ्य है,

(1) खनिज सम्पत्ति का शोषण -
(2) पौधों तथा पशुओं का विनाश -

⇒ मनुष्य प्रकृति द्वारा निर्मित खनिज भंडारो तथा पौधों एवं पशुओं का अपने स्वार्थ सिद्ध के लिए शोषण करता है, जबकि इस विनाश की क्षतिपूर्ति निकट भविष्य में संभव नही है, ~~इस~~ इन विनाशकारी आर्थिक क्रियाओं को 'आर्थिक लूट' और इस प्रकार की अर्थव्यवस्था को 'लुटेरी अर्थव्यवस्था' की संज्ञा दी गई है

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

(५) आवश्यक वर्गो के अतिरिक्त अन्य तथ्य :-

(1) पृथ्वी पर जनसंख्या वितरण -
(2) मानव प्रजातिया
(3) आर्थिक क्रियाएँ
(4) सामाजिक संगठन से जुड़े तथ्य - धर्म, भाषा, कला, राष्ट्रीयता
(5) राजनीतिक और ऐतिहासिक भूगोल से सम्बन्धित तथ्यों का अध्ययन

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

Topic (4) Schools of man - environment relations :- (मानव - पर्यावरण सम्बन्ध की अवधारणा :- निश्चयवाद, संभववाद, नव - निश्चयवाद)

प्रश्न• (i) मानव - पर्यावरण सम्बन्ध की अवधारणा की विवेचना कीजिए। (2018)

उत्तर :- मानव तथा वातावरण के इन सम्बन्धों का अध्ययन तो हजारों वर्षों पूर्व आरम्भ हो गया था। परन्तु मानव भूगोल के वर्तमान स्वरूप का विकास 19 वीं शताब्दी में जर्मनी में हुआ था। जर्मनी के अलावा फ्रांस तथा ब्रिटेन, अमेरिका, पूर्व सोवियत संघ, आदि देशों में भी मानव भूगोल के अध्ययन का विकास हुआ।

इन अध्ययनों से मानव वर्गों के वातावरण सम्बन्धों के विषय में निम्न अवधारणाएं / विचारधारायें विकसित हुई हैं।

(i) वातावरण निश्चयवाद / नियतिवाद - विषय में आप क्या समझते (2020) प्रश्न
(2) वातावरण सम्भववाद
(3) वातावरण नव - निश्चयवाद (नव - पर्यावरणवाद)

(i) वातावरण - निश्चयवाद (Environmental Determinism)

- इस विचारधारा का विकास जर्मनी में हुआ। भूगोल के वर्तमान वैज्ञानिक रूप का विकास सबसे पहले जर्मनी में हुआ।

वारेनियस, फॉस्टर्स, कान्ट, हम्बोल्ट, रिटर, तथा रैटजेल नामक जर्मन भूगोलवेत्ताओं के (जर्मन)

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

प्रश्न ② वातावरण निश्चयवाद तथा सम्भववाद की आलोचनात्मक व्याख्या कीजिए। (2019)

ग्रन्थों में वातावरण के तत्वों का मानव जीवन और मानवीय क्रियाओं पर प्रभाव का वर्णन किया गया है,

⇒ वातावरण निश्चयवाद की विचारधारा में वातावरण को प्रधानता दी गई है, इसके अन्तर्गत किसी प्रदेश की स्थिति, भू-रचना, उच्चावच, जलवायु, मिट्टियों, खनिज संसाधनों, वनस्पति और जन्तु वर्ग के द्वारा उस प्रदेश में निवास करने वाले मानव-वर्ग के शारीरिक स्वास्थ्य, भोजन, वस्त्र, मकान, आर्थिक-उद्योगों, सामाजिक संगठन तथा संस्कृति का प्रारूप निश्चित किया जाता है,

⇒ इस विचारधारा के मुख्य प्रतिपादक रैटजेल थे, तथा उनकी शिष्या कुमारी सैम्पुल (अमेरिकन) ने इस विचारधारा का विस्तृत प्रतिपादन किया था। हंटिंगटन (अमेरिकन) निश्चयवाद के ही समर्थक थे। इन्होंने निश्चयवाद के आधार पर ही प्रादेशिक वर्णन, तथा क्रमबद्ध वर्णन किये हैं।

जैसे - गर्म तथा आर्द्र जलवायु के प्रदेशों में चावल, गन्ना रबर, जूट, चाय, नारियल आदि का उत्पादन होता है,

* समशीतोष्ण जलवायु के प्रदेशों में गेहूं, चुकन्दर अलसी, सोयाबीन, रेशम, ऊन आदि का उत्पादन होता है, और इस उत्पादन के अनुसार मानव का रहन-सहन होता है।

- पर्वतों पर मानव वनों की उपज तथा पशुचारण पर निर्भर रहते हैं, टुण्ड्रा प्रदेश में मछली, बारहसिंगा, आदि से मांस, खाल इत्यादि प्राप्त करते हैं, महासागरीय तटों के निवासी मत्स्य उद्योग तथा जहाज निर्माण में कुशल होते हैं।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

06 FEBRUARY SATURDAY

Wk-06 • 037-328 2021

FEBRUARY '21

S	M	T	W	T	F	S
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28						

निश्चयवाद : विश्लेषण एवं आलोचनायें ⇒

निश्चयवाद मानव भूगोल की प्रारम्भिक विचारधारा है। वास्तव में, उस समय मानव, यन्त्रों का विकास नहीं कर पाया था। और वह प्रकृति के सामने असहाय दिखाई देता था। इसीलिए उस समय के भूगोल वेत्ता प्रकृति को मानव के कार्यों पर नियन्त्रक की तरह देखते थे।

रैटजेल- वातावरण को केवल भौतिक दशाओं का योग मानते थे, मानवीय कार्यों का नहीं।

निम्न के आधार पर निश्चयवाद का सार ⇒

(1) पूर्वी भारत में - चावल व जूट, पश्चिमी भारत में - गेहूँ, चना, मटर, आदि तथा राजस्थान में ज्वार, बाजरा की फसलों का उत्पादन प्रकृति के निश्चयवाद का ही परिणाम था।

(2) उस समय फसल उत्पादन को सुरक्षित रखने के लिए प्रबन्ध नहीं था। जैसे - आलू, प्याज, आदि।

(3) वर्षा न होने पर फसलें सूख जाती थीं और अनेक बार अकाल का सामना करना पड़ता था। सिंचाई की सुविधाएँ नहीं थीं।

07 SUNDAY

(4) मानव का भोजन, वस्त्र, एवं वेशभूषा तथा आवास प्राकृतिक वातावरण से प्रभावित होते थे।

(5) मानव के शरीर का गठन प्राकृतिक वातावरण से प्रभावित होता है।

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

प्रश्न ③ वातावरण निश्चयवाद की आलोचनात्मक व्याख्या कीजिए। (2021)

(6) अनेक प्रकार की महामारी फैलने से जनसंख्या कम हो जाती थी। मानव के पास कोई उपचार नही था। (1900 से 1920 तक भारत में जनसंख्या में कमी आ गई)

आलोचनाएँ :-

20 वीं सदी के प्रारम्भ में ही मानवीय कार्यो का प्रकृति पर प्रभाव दृष्टिगोचर होने लगा था। मानव ने नई मशीने बनाई। नदियों से नहरे निकाली गयीं, भूमिगत जल को नलकूप द्वारा निकाला गया, परिवहन के साधनों का विकास कर लिया गया था, निम्न है,

(1) सिंचाई सुविधाओं का विकास करके फसलों के क्षेत्र में परिवर्तन सम्भव हो गया था,

(2) फसल उत्पादों को सुरक्षित रखने के लिए शीतगृहों का विकास किया गया है,

(3) जलवायु की कठोरता से बचने के लिए भवनों को वातानुकूलित बना लिया गया,

(4) बीमारियों से सुरक्षा के लिए दवाइयाँ तथा टीके बनाकर महामारियों को रोक दिया गया

इस प्रकार के परिवर्तनों को देखकर, कुछ विद्वान कहने लगे।

कुमारी सैम्पुल :- " बढ़ते हुए बच्चे को कसे हुए कपड़े पहनाना बुद्धिमानी की बात नहीं है।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

09 FEBRUARY TUESDAY 2021

Wk-07 • 040-325

FEBRUARY '21

S	M	T	W	T	F	S
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28						

किरचौफ :- "मानव ऐसी मशीन नहीं है, जिसकी अपनी कोई इच्छा ही नहीं है।"

फ्रेब्रे :- # "प्रत्येक स्थान पर सम्भावनायें हैं; आवश्यकतायें नहीं और मानव इन सम्भावनाओं का स्वामी बनकर, इनके उपयोग का निर्णायक है"

जार्ज टेथम :- ने कहा "निःसन्देह वातावरण मानव को प्रभावित करता है, परन्तु बदले में मानव वातावरण को परिवर्तित करता है और यह अन्तर्द्वन्द्व इतना उलझा हुआ है कि किसका प्रभाव कब समाप्त होता है तथा कब शुरू होता है, जानना बहुत कठिन है,

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

(२) वातावरण सम्भववाद :- जन्मदाता ⇒ विडाल-डी-ला-ब्लाश

प्रश्न -(५) सम्भववाद के गुण और दोषों का वर्णन करें।

(2022)

उत्तर :- फ्रांसीसी लूसियन फैब्रे (1912) सम्भववाद शब्द दिया

⇒ इस अवधारणा का जन्म २०वी शताब्दी के आरम्भ मे फ्रांस में हुआ था। इसके मुख्य प्रवर्तक - विडाल-डी-ला-ब्लाश तथा फेब्रे थे। इनके अतिरिक्त फ्रांसीसी विद्वान ब्रूंज, डिमांजियाँ, ब्लैंचार्ड, आदि ने भी इस सिद्धान्त को अपने ग्रन्थों और लेखों द्वारा पुष्ट किया

अमेरिकन भूगोलवेत्ता ईसा बोमेन और कार्ल सावर आदि ने भी इस विचारधारा का विकास करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया था।

सम्भावना का अर्थ है। कि प्रत्येक प्रदेश में प्रकृति ने वातावरण के द्वारा कुछ सम्भावनायें प्रस्तुत की है,

इसमें मानव की स्वतंत्रता तथा उसकी कार्यकुशलता के महत्व पर बल दिया। मानव पर्यावरण में अपने क्रिया-कलापों द्वारा प्राकृतिक भूदृश्य में परिवर्तन करके सांस्कृतिक भूदृश्यों का निर्माण करता है। मानव-वर्ग उन सम्भावनाओं का उपयोग अपनी इच्छा के अनुसार करके अपने जीवन के ढंग तथा आर्थिक-सामाजिक प्रारूप को निश्चित करता है,

- इनके अनुसार मनुष्य प्राकृतिक पर्यावरण द्वारा नियंत्रित नहीं है, बल्कि उसने अपने

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

S	M	T	W	T	F	S
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28						

विवेक तथा कुशलता से प्राकृतिक तत्वों पर विजय प्राप्त कर ली है, मानवीय प्रयत्नों तथा क्रिया-कलापों को प्रधानता प्रदान करने वाली इस विचार धारा को 'सम्भववाद' के नाम से जाना जाता है,

जैसे:- U.S.A की जलवायु तथा मिट्टियाँ - गेहूँ, कपास, चुकन्दर के लिए उत्पादन के लिये सदैव उपयुक्त रही हैं।
अतः यह सिद्ध होता है कि मानव-वर्गों के जीवन की क्रियाओं को निश्चित करने में प्रकृति के प्रभाव की अपेक्षा मानवीय इच्छा का अधिक महत्व है,

ला-ब्लाश के अनुसार :- "मनुष्य के लिए प्रकृति का स्थान एक सलाहकार से अधिक नहीं हो सकता"

* सम्भववाद : विश्लेषण एवं आलोचनायें → निम्न है,

→ वातावरण निश्चयवाद की आलोचना के बाद, फ्रांसीसी विद्वानों ने सम्भववाद की विचारधारा को विकसित किया। जिस प्रकार जर्मनी के भूगोलवेत्ताओं को प्रकृति के सामने मानव असहाय प्रतीत होता था। उसके विपरीत फ्रांसीसी भूगोलवेत्ताओं को मानव प्रकृति पर विजय प्राप्त करता हुआ प्रतीत हो रहा था।,
निम्न सार -

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

(1) मानव ने नदियों पर बाँध बनाकर नहरें निकालीं तथा कृषि फसलों को संचित किया।,

(2) नगर प्राचीन काल में केवल नदियों के किनारे विकसित होते थे, अब नदियों से दूर भी इनका विकास होने लगा।,

(3) मानव ने कृषि-यन्त्रों का निर्माण करके, असमतल भूमि को समतल किया। भूमि जो वर्ष में एक फसल उत्पादन करती थी, उसको बहुफसली बनाया।,

(4) अधिक उत्पादन देने वाली फसलें तथा गाय, भैंस, बकरी व खच्चर, आदि पशुओं की उन्नत नस्लों का विकास किया।,

(5) परिवहन साधनों का विकास करके मानव चन्द्रमा तक पहुँचा तथा मंगल पर उतरने की तैयारी कर रहा है,

(6) विद्युत विकास करके शक्ति तथा रोशनी का प्रबन्ध किया।,

(7) प्रशीतन का विकास करके जलवायु को परिवर्तित किया।,

(8) फसलों में आनुवंशिकी संवर्धन था आनुवंशिकी अभियन्त्रण के द्वारा एक और क्रान्ति के पास पहुँचने वाला है,

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

उपरोक्त तथ्यों को देखकर यह आभास होता है, कि मानव निरन्तर प्रकृति पर विजय प्राप्त करता जा रहा है, इसीलिए सम्भववादी विचारधारा के कुछ अतिवादी कह देते हैं कि मानव वातावरण का दास नहीं बल्कि विजेता है, और वह जो चाहे कर सकता है।

आलोचनाए ⇒ जब सम्भववादी वातावरण को जीतने की डींग मारने लगे तो कुछ विद्वान, मानव के सामने उपस्थित ऐसी कठिनाइयों के अध्ययन प्रस्तुत किये, जिनको मानव नियंत्रित नहीं कर पा रहा था, निम्न है

(1) क्या मानव जलवायु को व्यापक स्तर पर बदल सकता है, वह प्रशीतन के द्वारा घर, दुकान, फैक्टरी को तो वातानुकूलित कर सकता है, परन्तु क्या सहारा मरूस्थलीय उष्ण प्रदेश की जलवायु बदल सकता है,

(2) क्या मानव टुण्ड्रा प्रदेश में कृषि कर सकता है।

(3) क्या मानव बीमारियों पर पूर्ण रोक लगा पाया है,

(4) क्या मानव प्रकृति के प्रकोप (भूचाल, बाढ़, सूखा, आदि) को रोक पाया है,

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

प्रश्न:-
सम्भववाद के गुण व दोष :→ निम्न है,

गुण ⇒

(1) प्राकृतिक पर्यावरण :-

प्रत्येक सम्भववादी विचारक पर्यावरण की शक्तियों को स्वीकार करता है, लेकिन वह पर्यावरण द्वारा मानव की क्रियाओं का निर्धारण स्वीकार नहीं करता।, प्राकृतिक पर्यावरण की एक वृहद योजना में मानव अपनी इच्छानुसार कार्य करने के लिए स्वतंत्र है, पर्यावरण के तत्व मानवीय क्रियाओं के निर्धारण में हस्तक्षेप नहीं करते. यही सम्भववाद की मान्यता है।

(2) मानव प्रकृति को संशोधित ही नहीं परिवर्तित भी करता है।-

आधुनिक युग वैज्ञानिक प्रगति का युग है। जिसमें मानव ने लगातार अग्रसर होकर अपने तकनीकी ज्ञान से विकास किया है इस उन्नति को ध्यान में रखते हुए सम्भववादी विचारक यह मानने लगे हैं कि मानव प्रकृति को संशोधित ही नहीं अपितु परिवर्तित करने की क्षमता रखता है, मानव अपने शोध कार्यों के परिणामस्वरूप शुष्क प्रदेशों में कृत्रिम सिंचाई की सुविधाएँ ही नही अपितु कृत्रिम वर्षा भी कर सकता है

(3) लौकिक एकता :→

लौकिक एकता के सिद्धान्त में दोनों मत संभववाद एवं निश्चयवाद विश्वास करते हैं, सम्भववादी मानव क्रियाओं के अध्ययन से तथा नियतिवादी प्राकृतिक वातावरण के अध्ययन से प्रारम्भ करते है, कु. सैम्पुल ने प्रत्येक अध्याय

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

की शुरुवात प्राकृतिक पर्यावरण की शक्तियों से की है, जबकि ब्रून्ज ने प्रत्येक अध्याय में मानव क्रियाओं की विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत की है,

(4) मानव की स्वेच्छा शक्ति :-
सम्भववाद में मानव की स्वेच्छा शक्ति को प्राकृतिक पर्यावरण से महत्वपूर्ण माना गया है, सांस्कृतिक पर्यावरण मानव की स्वेच्छा शक्ति का ही परिणाम है, मानव ने अपनी इच्छा शक्ति से अपनी सुख - सुविधाओं के लिए इसका निर्माण किया है, जहाँ मानव की इच्छा है, वहीं मार्ग प्रशस्त है, इसी के अनुरूप मानव प्राकृतिक पर्यावरण के ढाँचे में अपनी क्रियाओं को करता है,

(5) मानव स्वभाव :-
इतिहास से प्रशिक्षित होने के कारण समस्त सम्भववादी विचारक मानव स्वभाव पर अधिक बल देते हैं, मानव अपने स्वभाव के अनुसार पर्यावरण मे संशोधन के स्थान पर उसकी अवहेलना कर सकता है,
- प्रत्येक विकास के कार्य में स्वभाव का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है,

(6) मानव के कार्य :-
सम्भववाद में न केवल मानव के कार्यों पर ही बल दिया जाता है अपितु उनकी क्रियाओं को भी महत्व दिया जाता है, मानवीय क्रियाओं से वह पर्यावरण को परिवर्तित करता है,

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

(7) मानव एक भौगोलिक कारक :⇒

मानव इस रूप में अन्य कारकों के समान भौगोलिक तत्व बन जाता है, और यह प्रत्येक स्थान पर पर्यावरण में हस्तक्षेप कर उसे परिवर्तित व नव-निर्मित करता है,

(8) मानव सभ्यता :-

मानव अपने आदिम काल में आखेट, मत्स्य संग्रहण आदि जंगली अवस्था में था। वर्तमान समय में वह अपने-आपको सभ्य एवं सुसंस्कृत मानने लगा है, मानव सभ्यता का यह विकास उसके स्वयं के प्रयासों का ही परिणाम है, पर्यावरण में कोई परिवर्तन नही हुआ है, अपितु मानव स्वयं अपनी स्वेच्छा, शक्ति से पर्यावरण का उपयोग कर उसके साथ समायोजन में लगातार परिवर्तन करके वर्तमान सभ्य संसार का निर्माण कर सका हैं, वह अपनी इच्छानुसार फसलों को पैदा करता है, तथा आदतों के अनुरूप अपनी क्रियाएँ करता है,

सम्भववाद के दोष :⇒ निम्न है,

(i) प्राकृतिक शक्तियों को नगण्य मानना :-

संभववादी विचारक प्राकृतिक शक्तियों को नगण्य मानकर उन पर मानव की विजय का उद्घोष करते है, इस प्रकार दोनो ही अतिवादी के दोष से युक्त है,

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

S	M	T	W	T	F	S
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28						

(2) प्राकृतिक वातावरण में संभावनाओं को निहित मानना :- सम्भववादी विचारधारा के अनुसार प्राकृतिक वातावरण में कुछ संभावनाएँ निहित है, इसमें मानव को चुनाव की क्षमता व इच्छा प्रदान करता है, तथा चुनाव में भी भिन्न दशाओं के अन्तर को स्वीकार करना है, यथा - ध्रुवों पर केले तथा ग्रीनलैण्ड में अनन्नास के पौधे नहीं उगाये जा सकते हैं,

* (3) प्राकृतिक वातावरण के सम्बन्ध में एकमत नहीं होना :- सभी संभववादी प्राकृतिक वातावरण के सम्बन्ध में एकमत नहीं है, किसी के अनुसार प्रकृति मानव के लिए सुअवसर प्रदान करती है, कोई मानता है कि मानव के समक्ष वह एक योजना प्रस्तुत करती है, तथा अन्य लोग स्वीकार करते हैं, कि प्रकृति एक ऐसा कार्यक्षेत्र है जिसकी निश्चित सीमाएँ हैं तथा जिसमें मनुष्य स्वतंत्र है।

(4) निकट संभावनाओं का उपयोग सर्वप्रथम करना :

⇒ वातावरण अनेक संभावनायें मानव के सामने रखता है इसमें से कुछ अत्यन्त स्पष्ट और अधिक सरलता से प्राप्त की जा सकती है मानव पहले इन्हीं सम्भावनाओं का उपयोग करता है और यदि वह ऐसा नहीं करता है, तो उसे अधिक व्यय तथा अधिक परिश्रम करना पड़ता है।

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

(5.) मानव तथा प्रकृति पूरक है- मानव अपने प्रारम्भिक काल से ही सक्रिय रहा है, मानव ने आखेट व पशुपालन को लाभप्रद समझा, वह घास के मैदानों का उपयोग कृषि के लिए करने लगा। इनसे मानव ने सभ्यता एवं संस्कृति में विकास किया है, प्रकृति मानव के लिए सर्वत्र सहयोगी रही है अतः मानव तथा प्रकृति एक-दूसरे के पूरक माने गये हैं,

(6) मानव प्रकृति के प्रकोप (भूचाल, बाढ़, सुखा आदि को रोक नही पाया है,

(7) मरूस्थलीय व शीत प्रदेशों की जलवायु को मानव नही बदल सकता है,

(8) मानव विभिन्न महामारियों पर नियन्त्रण नही ~~कर~~ कर सकता है।

(9) महासागरीय प्रदेशों को नही बदल सकता।,

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28						
S	M	T	W	T	F	S

प्रश्न ० 4 ०

(III) नव- निश्चयवाद :-

प्रश्न :- नव- निश्चयवाद के गुण और दोषों का वर्णन कीजिए। (2017)

प्रश्न ० नव- निश्चयवाद एवं प्रसम्भवाद पर टिप्पणी लिखो (2015)

उत्तर :- नव- निश्चयवाद :- / नवनियतिवाद / नव-पर्यावरणवाद :- यह विचारधारा रूसी, अमेरिकन, तथा ब्रिटिश भूगोलवेत्ताओं द्वारा प्रतिपादित की गई है,

⇒ इसमें वातावरण निश्चयवाद तथा सम्भववाद दोनों का समन्वय किया गया है,

⇒ इसमें यह माना गया है, कि प्रत्येक प्रदेश में प्रकृति की शक्तियों और तत्वों के द्वारा कुछ सीमायें निश्चित की जाती है, इन्हें सम्भावनायें कहा जा सकता है और उन सीमाओं के अन्दर

21 SUNDAY ही मानव - वर्ग अपनी इच्छा का प्रयोग करता है प्रकृति पर मानव की पूर्ण विजय नही है अतः मानव प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करता है,

इसके लिए वह वातावरण में

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

रूपान्तरण भी करता है,

जैसे :(i) पर्वतों में रेलमार्ग और सड़क निर्माण के लिए मानव ने सुरंगें बना ली।

(ii) पर्वतीय ढालों पर कृषि करने के लिये 'सीढ़ीदार खेत' का निर्माण करना।

(iii) शुष्क प्रदेशों में कृषि करने के लिये नहरों तथा नलकूपों से सिंचाई की योजनाये कार्यान्वित कर ली है,

⇒ नव-निश्चयवाद के मुख्य प्रतिपादक - टेलर, कार्लसावर (अमेरिकन), रॉक्सबी, फ्ल्यूर (ब्रिटिश). हरबर्टसन (ब्रिटिश) डोकुचायेव (रूसी) मुख्य है,

⇒ टेलर ⇒ ने अपने सिद्धान्त निश्चयवाद को 'वैज्ञानिक निश्चयवाद' या "रुको और जाओ निश्चयवाद' कहा

⇒ डा. टैथम :- ने इसको क्रियात्मक सम्भववाद नाम दिया है।

अतः न तो प्रकृति का मनुष्य पर पूर्ण नियन्त्रण है, और न मनुष्य प्रकृति पर विजेता है, दोनो एक-दूसरे से क्रियात्मक रूप से जुड़े हुए है,

⇒ इस प्रकार मानव उन्नति के लिए आवश्यक है कि मनुष्य प्रकृति का सहयोग प्राप्त करे यह नव-निश्चयवाद है,

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

नव-निश्चयवाद : विश्लेषण एवं आलोचनाएँ ⇒

निश्चयवाद एवं सम्भववाद के विश्लेषण एवं आलोचनाओं का तुलनात्मक अन्तर ही नव-निश्चयवाद का विश्लेषण है।

जैसे- (1) निश्चयवाद को मानने वाले प्रकृति द्वारा सीमाओं के निश्चित होने की बात करते हैं तो सम्भववादी सम्भावनाओं एवं मानवीय छाँट को स्वीकारते हैं। उत्तरी यूरोप में फसलों की प्राकृतिक सीमा को उत्तर की ओर बढ़ा दिया गया है, परन्तु क्या हम इस सीमा को टुण्ड्रा तक बढ़ा सके हैं, नहीं। अर्थात हमने सीमा को परिवर्तित तो किया परन्तु फिर एक सीमा पर रुके हुए हैं।

(2) मानव ने ~~नदियों~~ नदियों से नहरें निकालकर कृषि क्षेत्र का विस्तार किया है, परन्तु क्या वह वर्षा को नियन्त्रित कर पाया है,

(3) मानव ने भूकम्प आने वाले क्षेत्रों का सीमांकन तो किया है और वहाँ पर लकड़ी के मकान तथा भूकम्प अवरोधक तकनीकी पर आधारित मकान बनाये हैं। परन्तु क्या भूकम्प का पूर्व-आकलन या रोकने के उपाय मानव कर पाया है

टेलर का "रुको और जाओ"

इनके अनुसार मानव विकास को समझने के लिए परिवहन पथ के उदाहरण से :-

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

⇒ मानव अपनी कार से सड़क पर चल रहा है, चौराहे पर लाल बत्ती होने पर रूक कर प्रतीक्षा करता है, हरी बत्ती होने पर फिर चलता है, और किसी चौराहे पर लाल बत्ती होने पर फिर रूक जाता है, इसी प्रकार मानव प्रकृति के विकास करता है, तथा एक बाधा को पार कर लेता है, परन्तु दूसरी बड़ी बाधा को पार करने के लिए नयी तकनीकी विकसित होने की प्रतीक्षा करता है इस प्रकार वह बाधा को पार करता है, फिर प्रतीक्षा करता है फिर बाधा को पार करता है, तथा फिर रूक जाता है, न तो बाधाएं समाप्त होती है, और न मानव की विकास की प्रवृत्ति समाप्त होती है,

अर्थात - चलो - रूको जाओ रूको - फिर जाओ, यही नव - निश्चयवाद है,

⇒ इस विचारधारा के समर्थक अधिकांश: नरमपंथी विद्वान हैं, अत: इस विचार धारा की आलोचनाओं का अभी समय नहीं आया है, क्योंकि यह मध्यममार्गी विचारधारा है,

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

नव-निश्चयवाद के गुण और दोष ⇒

(i) गुण ⇒ (1) यह वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित है, और व्यावहारिक जगत् के अधिक समीप है,

(2) वर्तमान सभ्य संसार में मानव ने अनेक क्षेत्रों में प्रकृति की दासता से पूर्णतया मुक्ति प्राप्त कर ली है,

(3) टेलर ने मानव पर प्रकृति के नियंत्रण के स्थान पर प्रकृति के प्रभाव की वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत कि है।

(4) टेलर के अनुसार प्रकृति चौराहे पर खड़ी ट्रैफिक पुलिस के समान है, जो यात्रियों को चौराहे पर नियंत्रित करती है, किन्तु उनके गन्तव्य को नही बदलती है। चौराहे पर पहुँचकर यात्री अपने दाये-बाये देखकर और अपनी सूझबुझ से आगे बढ़ता है।
जिस प्रकार यात्री को अपनी भलाई के लिए यातायात के नियमों का पालन करना उपयोगी है,

⇒ उसी प्रकार मानव को भी प्राकृतिक नियमों को ध्यान में रखते हुए कार्य करना चाहिए। अन्यथा उसे अज्ञात कठिनाई या दुर्घटना का शिकार होना पड़ सकता है।

(5) टेलर के अनुसार मनुष्य पर प्रकृति का पूर्ण नियंत्रण नही है किन्तु प्रकृति के प्रभाव को अस्वीकार नही किया जा सकता है,

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

(6) टैथम:- प्रकृति मानव के सम्मुख अनेक योजनाएँ (सम्भावनायें) प्रस्तुत करती है। इनमें से मनुष्य को चयन करने की स्वतंत्रता होती है।

(7) मानव उन्नति के लिए आवश्यक है, कि मानव प्रकृति का सहयोग प्राप्त करें।

(8) प्रत्येक देश की आर्थिक प्रगति सम्भववादी दृष्टिकोण से न होकर प्राकृतिक योजना के अनुरूप कार्य करने से होगी।

- इस अवस्था में मानव केवल विकास की गति को तेज या धीमा ही कर सकता है। उसे पूर्ण रूप से परिवर्तित नही कर सकता है,

(9) फ्राइर के अनुसार:-

"विज्ञान का आदर्श दबाव न होकर समन्वय होना चाहिए और मानव भूगोल का नारा - प्रकृति की विजय या अधीनता न होकर उसके साथ सहयोग होना चाहिए।

(10) अर्थशास्त्रियों के मतानुसार:-

जनसंख्या को देखते हुए संसाधनों के उपयोग पर अंकुश नही लगाया जा सकता है, लेकिन हमें आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये संसाधनों का उपयोग अधिक करना चाहिए जिनका नवीनीकरण प्राकृतिक या मानवीय रूप से अधिकाधिक सम्भव हो।

(11) पर्यावरणशास्त्रियों के अनुसार:-

विश्व एक अन्तरिक्ष यान के समान है। जिसकी अर्थव्यवस्था भी अन्तरिक्ष यान

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

के समान सीमित सामग्री है उसी प्रकार पृथ्वी पर भी संसाधन सीमित है तथा उनके नवीनीकरण में भी समय लगता है,

(12) नवनियतिवादी / नवनिश्चयवादी इस विचारधारा में समायोजन पर अधिक बल देते है अतः शक्ति के बजाय विज्ञान का आदर्श सामंजस्य होना चाहिए।,

कोष ⇒ (i) मानव पर्यावरण से घिरा हुआ है

(ii) मानव ने नदियों से नहरें निकालकर कृषि क्षेत्र का विस्तार किया है परन्तु क्या वह वर्षा को नियन्त्रित कर पाया है, नही।,

(iii) मानव ने भूकम्प आने वाले क्षेत्रों का सीमांकन तो किया है परन्तु क्या भूकम्प का पूर्व-आकलन या रोकने के उपाय मानव कर पाया है नही।,

(iv) उन्तरी यूरोप में फसलों की प्राकृतिक सीमा को उन्तर की ओर बढ़ा दिया गया है परन्तु क्या इस सीमा को टुण्ड्रा तक बढ़ा सके है नही परन्तु एक सीमा पर रुके हुए है,

28 SUNDAY (v) मानव विकास करता है तथा प्रकृति की एक बाधा को पार कर लेता है परन्तु दूसरी बड़ी बाधा को पार करने के लिए नयी तकनीकी विकसित होने की प्रतीक्षा करता है इस प्रकार वह बाधा को पार करता है,

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

फिर प्रतीक्षा करता है, न तो बाधाएँ समाप्त होती है, और न मानव की विकास की प्रवृत्ति समाप्त होती है,

(6) मानव द्वारा स्वयं अपने निर्धारित लक्ष्यों के अनुसार इच्छा बनाना - मानव एक स्वतंत्र साधन नही है,

(7) प्रकृति के नियंत्रण को कम किया जा सकता है, लेकिन उसके प्रभावों की अनदेखी नहीं की जा सकती है.

(8) यह मध्यममार्गी विचारधारा है अतः इस विचारधारा की आलोचनाओं का अभी समय नही आया हैं

(4) प्रसम्भाव्यवाद :- (Probabilism):- मानव - वातावरण के पारस्परिक सम्बन्धों के विषय में ब्रिटिश - भूगोलवेत्ता 'स्पेट' (O.H.K Spate) (1957) में सम्भववाद शब्द के स्थान पर प्रसम्भाव्यवाद शब्द का प्रयोग किया।,

- इनके अनुसार वातावरण के साथ - मानव सम्बन्धों में सम्भावनाएं विद्यमान रहती है किन्तु इनमें कुछ सम्भावनाएँ अन्य सम्भावनाओं की अपेक्षा अधिक सम्भाव्य होती है

हैगेट के अनुसार:- प्रसम्भाव्यवाद निश्चयवाद एवं सम्भववाद के मध्य की समन्वय की स्थिति है अर्थात मानव वातावरण सम्बन्धों के बारे में प्रारम्भिक दृष्टिकोण परिवर्तित होते रहते हैं

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

Topic -(5) Principles of Human Geography
(मानव भूगोल के सिध्दान्त)

प्रश्न-(1) मानव भूगोल के तीन सिध्दान्तों का वर्णन कीजिये। (2023)

प्रश्न-(2) मानव भूगोल के आधारभूत सिध्दान्तों की विवेचना कीजिये। (2020, 2021)

प्रश्न-(3) मानव भूगोल के आधारभूत सिध्दान्त कौन-2 से है किसी एक की उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए। (2014, 2016)

उत्तर ⇒ मानव - भूगोल का प्रत्येक दृश्य, चाहे वह प्राकृतिक वातावरण से सम्बन्धित हो अथवा सांस्कृतिक वातावरण से, प्रति पल व क्षण परिवर्तित होते रहते है,

जैसे:- एक कृषि फार्म में फसल के पौधे, भवन निर्माण, मानव स्वयं, प्राकृतिक वातावरण, अत: यह सब परिवर्तन धीरे - धीरे होता है,

- मानव भूगोल के तथ्यों की उत्पत्ति, उनके आपसी सम्बन्ध तथा मानव के वातावरण के सम्पर्क का यह अध्ययन कुछ नियमों पर आधारित होता है, इन्हें मानव भूगोल के मूल सिध्दान्त कहा जाता है,

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

निम्न सिद्धान्त :-
(i) क्रियाशीलता या परिवर्तन का सिद्धान्त -
(ii) पार्थिव एकता का सिद्धान्त -
(iii) वातावरण - समायोजन का सिद्धान्त -

(i) क्रियाशीलता या परिवर्तन का सिद्धान्त :- (Principle of Activity)
प्रकृति में भौतिक तथा सांस्कृतिक वातावरण के सभी तत्व परिवर्तनशील है, हर समय प्रत्येक वस्तु किसी - न किसी प्रकार बदलती रहती है,

ब्रूँज महोदय के अनुसार :- " हमारे चारों ओर जितनी वस्तुएँ है, वे सभी परिवर्तनशील हैं, उनका आकार या मात्रा या रूप अथवा गुण बदल जाता है"

अतः संसार में कोई भी वस्तु सदैव स्थायी नहीं रहती । स्वयं पृथ्वी भी हर समय भ्रमण करती रहती है, और सूर्य के चारों और चक्कर लगाती है, जिससे वायुमण्डल में हर क्षण मौसम में बदलाव आता है, (सर्दी - गर्मी)
⇒ इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार की वनस्पति, मानव, नदियाँ, दिन की अवधि, पर्वत, झीलें, ग्लेशियर, समुन्द्र तल, आदि में परिवर्तन होता रहता है,

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

(1) Principle of Activity

पृथ्वी के तल पर हर समय परिवर्तन करने वाली शक्तियाँ निम्न प्रकार की होती है।

(i) पृथ्वी के सौर सम्बन्ध (Planetary Relations)

(ii) पृथ्वी की विवर्तनिक शक्तियाँ :(Tectonic Forces)

(iii) सौर्य शक्ति - (Insolation):-

(iv) गुरुत्वाकर्षण (Gravitation):-

(v) जैविक शक्तियाँ - (Biotic forces) -

(vi) मानव शक्ति - (Human force):-

(1) पृथ्वी के सौर सम्बन्ध :- पृथ्वी हमारे सौर मण्डल का एक ग्रह है, जो अपने अक्ष पर भ्रमण करने के साथ - साथ सूर्य के चारों ओर अपने कक्ष पर भी परिभ्रमण करती है, इसके कारण ही पृथ्वी पर दिन - रात, ऋतुये, आदि होती है, इनके अतिरिक्त पृथ्वी पर ताप पेटियाँ तथा पवन पेटियाँ आदि का निर्माण होता है,

(2) पृथ्वी की विवर्तनिक शक्तियाँ :- पृथ्वी तल पर विवर्तनिक शक्तिओं के द्वारा दो प्रकार के परिवर्तन होते है,

(i) प्रथम :- अत्यन्त धीमी गति से :- उत्थान, धंसना, पर्वतों का बनना आदि।

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

(ii) द्वितीय :- आकस्मिक या अचानक :- भूकम्प और ज्वालामुखी आदि से पृथ्वी तल पर अनेक परिवर्तन होते रहते है,

(3) सौर्य शक्ति (Insolation) :- सूर्य की शक्ति से भूतल पर परिवर्तन लाने वाली बाह्य शक्तिया उत्पन्न होती है, इससे ताप, ओस, और पाला, तुषार और हिमपात, वाष्पीकरण, और बादलों का बनना, आंधि तूफान, एवं वर्षा और सुखा, दिन और रात, ऋतुओं का परिवर्तन और जलवायु में परिवर्तन ये सभी सूर्य की शक्ति द्वारा ही होते हैं, इसी से मानव व पशुओं को जीवन शक्ति मिलती है,

*(4) गुरुत्वाकर्षण शक्ति :- (Gravitational force) :- पृथ्वी के केन्द्र में स्थित गुरुत्वाकर्षण शक्ति प्रत्येक पदार्थ को अपनी ओर खींचती है इसी के कारण वायुमण्डल की निम्न परतों में अधिक वायु एकत्र हो जाती है, सूर्य की शक्ति के द्वारा भूतल पर जो परिवर्तन उत्पन्न होते है उनको गुरुत्वाकर्षण शक्ति नियमितता में बदलती रहती है,

(5) जैविक शक्तियाँ :- (Biotic forces) :- वनस्पति और जीव-जन्तु वर्ग के द्वारा भी हर समय भूतल पर परिवर्तन होते रहते है। मृदा पर वनस्पति आवरण से मृदा अपरदन नही होता है, परन्तु पेड़-पौधों की जड़े नरम शैलों में दरारें पैदा कर देती है, विभिन्न प्रकार के जीव-जन्तु भूमि में निवास हेतु गड्ढे बनाते है, इस प्रकार हर समय जैविक शक्तियां परिवर्तन लाती है

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

(6) मानव शक्ति :- मानव भी भूतल पर परिवर्तन करता रहता है, मानव द्वारा कृषि कार्य बनाना, कहीं नहरें, सड़कें, सुरगें बनाता है, कहीं खानों से खनन करके खनिज पदार्थ निकालता है, और मानव बस्तियाँ बनाकर अनेक प्रकार के सांस्कृतिक भू-दृश्य बनाकर भूतल पर परिवर्तन करता रहता है,

⇒ उपरोक्त छः शक्तियों के द्वारा पृथ्वी तल पर जो परिवर्तन होते हैं, वे आपस में एक-दूसरे से सम्बन्धित होते हैं, प्रत्येक घटना के कुछ कारण होते हैं, और कुछ नियमों के अनुसार उनकी क्रिया होती है, इस प्रकार भौतिक दृश्यों के उत्पन्न होने, विस्तार होने, और समाप्त हो जाने का क्रम चलता रहता है, जैसे हिमालय, आल्प्स, रॉकिज आदि नये पर्वत हैं, और अरावली, खीनगन, आदि प्राचीन पर्वत हैं, इसी प्रकार नदियों का जीवन-चक्र भी बाल्यकाल, युवावस्था, और वृद्धावस्था के रूप मे होता होता है।

- पृथ्वी-तल पर केवल भूमि की बनावट से ही परिवर्तन नहीं होते, बल्कि जलवायु मे भी परिवर्तन होते रहते हैं जैसे - प्लायोसीन और मायोसीन युगों में, मध्य एशिया की जलवायु वर्तमान की अपेक्षा बहुत अधिक आर्द्र थी, और यह प्रदेश मानव जाति का उद्गम प्रदेश था, परन्तु वर्तमान में वहा सूखा मरूस्थल है,
- इसी प्रकार प्राकृतिक वनस्पति के क्षेत्र में भी परिवर्तन देखे गये हैं, कार्बोनीफेरस युग में मध्य यूरोपीय क्षेत्र मे बहुत सघन वन थे, परन्तु वर्तमान मे वन क्षेत्रों ह्रास हो गया है,

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

→ इसी प्रकार मानव की जनसंख्या घटती - बढ़ती रहती है, अतः पृथ्वी पर प्रत्येक वस्तु परिवर्तनशील है, इसलिये हमें मानव संस्कृति की क्रियाओं का अध्ययन इस प्रकार करना चाहिये, जिस प्रकार की क्रियाशील अंगो का अध्ययन किया जाता है, तभी हम उनकी प्रगति की दिशा और प्रगति को ठीक प्रकार से समझ सकेंगे।

(II) पार्थिव एकता का सिद्धान्त :- Principle at terrestrial Unity :- वातावरण के विभिन्न तथ्य आपस में एक-दूसरे से घनिष्ठ सम्बन्ध रखते हैं,

रैटजेल के अनुसार - " वातावरण के सभी भौगोलिक तथ्य, चाहे वे जड़ हो अथवा चेतन एक दूसरे से सम्बन्धित होते है, कोई भी परिस्थिति अकेली नही होती, वरन उसका जन्म और विकास बहुत से तथ्यों के जटिल समूह से होता है,

- सम्पूर्ण पृथ्वी एक इकाई है, जिसके विभिन्न भाग आपस में एक दूसरे से संयुक्त हैं, समस्त पृथ्वी पर एक से भौतिक नियम क्रियाशील हैं।

वायुमण्डल के कारण सम्पूर्ण पृथ्वी पर जलवायु के नियम समान ढंग से बनते है, समान प्रकार की जलवायु में सभी जगह समान प्रकार वनस्पति होती है,

- प्राकृतिक तथ्यों की भांति मानव भूगोल के तथ्य भी पार्थिव एकता से सम्बन्ध है।

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

09 MARCH TUESDAY 2021

Wk-11 * 068-297

MARCH '21

- पृथ्वी तल पर सभी जगह भौतिक वातावरण का प्रभाव मानव पर होता है, और सभी जगह मानव अपना अनुकूलन करता है,

- प्रत्येक प्रदेश में समस्त जीवधारी आपस में वातावरण के साथ समायोजन स्थापित करके सत्ता प्राप्त करते है, भूमि की बनावट, जलवायु, के तत्व (जैसे - तापमान, वायुभार, वर्षा,) मिट्टियाँ, वनस्पति और पशु - जगत में पारस्परिक क्रियायें एक - दूसरे पर प्रभाव डालती हैं, और उन सबके पारस्परिक संयोग से प्रत्येक तत्व की सत्ता बनती है तथा परिवर्तित होती है,

उदा॰ के लिये, वनस्पति की उत्पत्ति भूमि, जलवायु, और मिट्टियों पर निर्भर है,

हम्बोल्ट :- ने बताया है कि किसी भू - दृश्य के निर्माण में वनस्पति का बड़ा महत्व होता है"

ब्लाश और ब्रूज के अनुसार :- "किसी स्थान पर जितने भी जीवधारी, जैसे - वनस्पति, जन्तु, और मनुष्य होते है, उन सब में एक पारस्परिक सम्बन्ध होता है, और ये सब ही अपनी परिस्थिति से समायोजन स्थापित करते है,"

⇒ वनस्पति की अपेक्षा पशुओं को प्रकृति ने श्रेष्ठतर बनाया है क्योंकि पौधे अचल है और ~~[illegible]~~ पशु चाहे जहाँ जा सकते हैं मानव इन सब में श्रेष्ठतम है, क्योंकि उसमें बुद्धि की विशेषता है, इसके द्वारा वातावरण से समन्वय स्थापित कर लेता है,

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

⇒ अतः वातावरण के सभी तथ्य चाहे वे प्राकृतिक हों या सांस्कृतिक, एक-दूसरे से सम्बन्धित हैं, एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं, तथा एक-दूसरे से प्रभावित होते हैं,

सिद्धान्त के भिन्न बिन्दु :-

(i) जलवायु प्रदेश के निर्धारण में -
(ii) नदियों द्वारा बनाये गये मैदान -
(iii) वनस्पति प्रदेश -
(iv) किस प्रदेश में किस प्रकार के पशु पाले जाये -
(v) कृषि फसलों का निर्धारण -
(vi) मानव के भोजन करने की आदत या भोजन का प्रतिरूप -
(vii) धरातल पर जनसंख्या का वितरण व घनत्व :-

(i) जलवायु प्रदेश के निर्धारण में :-

सूर्यातप की उपलब्धता, प्रदेश की अक्षांशीय स्थिति, पृथ्वी की गति, सूर्य की किरणों का तिरछापन, धरातल की समुन्द्र तल से ऊँचाई तथा समुन्द्र से दूरी, आदि कारको की संयुक्त भूमिका होती है,

(2) नदियों द्वारा बनाये गये मैदान :-

नदी के बहाव, ढाल, पर्वत, शृंखला, अपक्षय, तथा अपरदन, प्रक्रिया, नदी में जल की उपलब्धता तथा चट्टानों की प्रकृति आदि पर निर्भर है,

(3) वनस्पति प्रदेश :-

जलवायु तथा धरातल एवं मिट्टियों के संयुक्त प्रभाव से निर्मित होते हैं

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

(4) किस प्रदेश में किस प्रकार के पशु पाले जायें - यह धरातल, जलवायु, मिट्टी एवं वनस्पति तथा मानव मिलकर निर्धारित करते हैं।

(5) कृषि फसलों का निर्धारण :- वर्षा, तापमान, धरातल, मिट्टी, सागर से दूरी, मानव के भोजन करने की आदत तथा बाजार आदि के द्वारा होता है,

(6) मानव का भोजन का प्रतिरूप :- क्षैत्रीय वनस्पति, जीव-जन्तु, सागर से दूरी तथा समाजों में आपसी सम्पर्क के यौगिक प्रभाव द्वारा निर्धारित होता है,

(7) धरातल पर जनसंख्या का वितरण व घनत्व :-

⇒ क्षैत्र की भूमि, धरातल, जल की उपलब्धता, जलवायु, वनस्पति, कृषि संगठन, उद्योग, एवं व्यापारिक, गतिविधियों के संयुक्त प्रभाव का परिणाम होता है,

अतः कोई भी दृश्य एक से अधिक कारकों के यौगिक से अस्तित्व में आता है,

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

(3) वातावरण - समायोजन का सिद्धान्त :- (Principle of Environmental Adjustment.) :- विभिन्न प्रदेशों के वातावरण द्वारा निर्धारित की गई सीमाओं के अन्दर वहाँ के निवासी मानव - वर्ग अपनी आवश्यकताओं, क्षमताओं और इच्छा के अनुसार, वातावरण के साथ - समायोजन करके, उन प्रदेशों का क्षेत्र - संगठन करते है,
वातावरण के दो अंग बताए है ① प्राकृतिक ② सांस्कृतिक

- इन दोनों ही प्रकार के वातावरण का प्रभाव, मनुष्य के जीवन और क्रिया - कलापों पर होता है, तथा मनुष्य भी इन दोनों प्रकार के वातावरण में कुछ परिवर्तन करता है ताकि वह अपनी सत्ता बनाए रखे और उन्नति करे।

⇒ प्राकृतिक वातावरण में प्रादेशिक स्थिति, भूमि की बनावट, जलवायु, मिट्टियाँ, खनिज - पदार्थ, जल - राशियाँ, वनस्पति, जीव - जन्तु आदि होते हैं, ये प्राकृतिक तत्व मनुष्य के रहन - सहन तथा क्रियाओं पर इच्छा की सीमाएँ निर्धारित करते है, और इन्ही सीमाओं के अन्दर मनुष्य अपने शारीरिक और आर्थिक क्रिया-कलापों का समन्वय करता है,

⇒ सांस्कृतिक वातावरण मनुष्य के द्वारा निर्मित किया हुआ भू - दृश्य होता है, जिसमें मानवीय निवास-गृह, आवागमन के साधन, सिंचाई के साधन, परिवहन और संचार - वाहन के साधन, आर्थिक व्यवसाय, श्रम - विभाजन, खेत, कारखाने, बैंक - संस्थान तथा साहित्यिक, वैज्ञानिक, औद्योगिक और राजनीतिक संस्थायें, आदि होते है इनके अलावा सामाजिक व्यवस्था, ~~प्रशासनिक~~ विभाजन, प्रथायें और जीवन मूल्य इसमें सम्मिलित रहते हैं.

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

⇒ प्राकृतिक और सांस्कृतिक वातावरण के ये भिन्न-भिन्न तत्व मनुष्य के भोजन, वस्त्र, निवास, व्यवसाय और सामाजिक संस्कृति पर प्रभाव डालते हैं। मनुष्य उनके प्रभावों के अनुसार ही अपने रहन-सहन का अनुकूलन करता है और इसके अलावा वातावरण में भी कुछ परिवर्तन करता है, इन क्रियाओं को वातावरण-समायोजन कहते हैं।

- वातावरण में आवश्यक परिवर्तन मनुष्य अपनी आवश्यकताओं, शक्तियों और रुचियों के अनुसार करता है,

⇒ वातावरण के तत्वों की क्रिया मनुष्यों के शरीर, स्वास्थ्य और जीवन के कार्यों पर होती है, इसके दो पहलू हैं,

(1) अनुकूलन - (Adaptation)
(2) रूपान्तरण - (Modification) -

(1) अनुकूलन :- (Adaptation) : मनुष्य अपने आपको वातावरण के अनुकूल बनाता है, इसे स्व-परिवर्तन भी कहते हैं। अनुकूलन में मनुष्य की क्रियाये दो प्रकार की होती हैं,
(1) आन्तरिक अनुकूलन - ① ऐच्छिक ② अनैच्छिक
(2) बाह्य अनुकूलन -

14 SUNDAY

(2) रूपान्तरण :- इसके द्वारा मानव अपने वातावरण में कुछ परिवर्तन करता है,
① प्राकृतिक वातावरण का परिवर्तन -
② सांस्कृतिक वातावरण का परिवर्तन -

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

जैसे:- यूरोप के किसी ठण्डे प्रदेश, - जर्मनी, ब्रिटेन, या स्वीडिन, आदि का कोई मानव परिवार भारत में आकर तमिलनाडु राज्य के किसी मैदानी भाग में निवास करने लगता है, यहाँ आने के पश्चात उसको दक्षिणी भारत की जलवायु अपने मातृ प्रदेश की जलवायु से बहुत अधिक गरम मालूम होती है और ग्रीष्म ऋतु में यूरोपियन लोग कृत्रिम साधनों का प्रयोग करते हैं ऐसे ही वह बाजार, भाषा, भोजन में आदि के आन्तरिक अनुकूलन करता है,

- ऐसे ही कोई गर्म प्रदेश का व्यक्ति ठण्डे प्रदेश मे जाकर निवास करने लग जाये तो वह उस देश के समाज की प्रथाओं के अनुसार, वेशभूषा, सामाजिक व्यवहार और बोलचाल मे भी कुछ परिवर्तन करने होते है।

(Probabilism):-

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

Date
Page

Topic (3) Inter-disciplinary Approach.
मानव - भूगोल :- उपागम (रीतियाँ)

प्रश्न:(1) मानव भूगोल के अध्ययन के उपागमों को समझाइयें।

Topic (4) Understanding of Cultural Landscape.
(सांस्कृतिक - दृश्य भूमि)

प्रश्न(1) सांस्कृतिक - दृश्यों भूमि पर टिप्पणी लिखियें।

Scanned by CamScanner

(b) निर्माण-उद्योग, (c) परिवहन, (d) व्यापार, (ix) मुख्य नगर, (x) ग्रामीण बस्तियों के प्रकार।

मानव भूगोल के अध्ययन के उपागम (रीतियाँ)
(APPROACHES IN HUMAN GEOGRAPHIC STUDIES)

मानव भूगोल के अन्तर्गत भूतल पर मानव-वर्गों और उनके वातावरण के पारस्परिक कार्यात्मक सम्बन्धों (functional relationships) का तथा मानवीय तथ्यों (human facts) के स्थानिक वितरणों का अध्ययन किया जाता है। इस अध्ययन के कई पक्ष हैं अर्थात् इस अध्ययन को कई रीतियों से किया जा सकता है। मानव भौगोलिक अध्ययन के मुख्यतः 4 उपागम हैं—

(1) पारिस्थितिकी उपागम (ecological approach)।
(2) क्षेत्रीय या स्थानिक उपागम (spatial approach)।
(3) व्यवहारपरक उपागम (behavioural approach)।
(4) मानव-कल्याण सम्बन्धी उपागम (human welfare approach)।

1. पारिस्थितिकी उपागम
(Ecological Approach)

इस उपागम के अन्तर्गत किसी प्रदेश के मानव-वर्ग और वातावरण के अन्तर्सम्बन्धों का अध्ययन होता है। मानव भूगोल के अध्ययन में मानव का केन्द्रीय स्थान है। वह प्राकृतिक वातावरण और सांस्कृतिक वातावरण से प्रभावित होता है, उसमें परिवर्तन करता है तथा उसका उपयोग करता है। अतः मानव वातावरण के पारस्परिक सम्बन्धों के अनुसार विकसित प्रतिरूपों का विश्लेषण एवं विवेचन करने की रीति ही पारिस्थितिकी उपागम कहलाती है। मानव भूगोल का पारिस्थितिकी दृष्टिकोण से अध्ययन इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर किया जा सकता है कि किसी प्रदेश विशेष में मानव किस प्रकार एवं किस सीमा तक अपने वातावरण से समायोजन करे, जिससे कि वह अधिकाधिक समय तक उपयुक्त ढंग से अपना जीवन-निर्वाह कर सके। पारिस्थितिकी रीति से मानव-वातावरण अन्तर्सम्बन्धों के विश्लेषण से ही निश्चयवाद, सम्भववाद एवं नव-निश्चयवाद की विचारधाराओं का विकास हुआ है।

Scanned by CamScanner

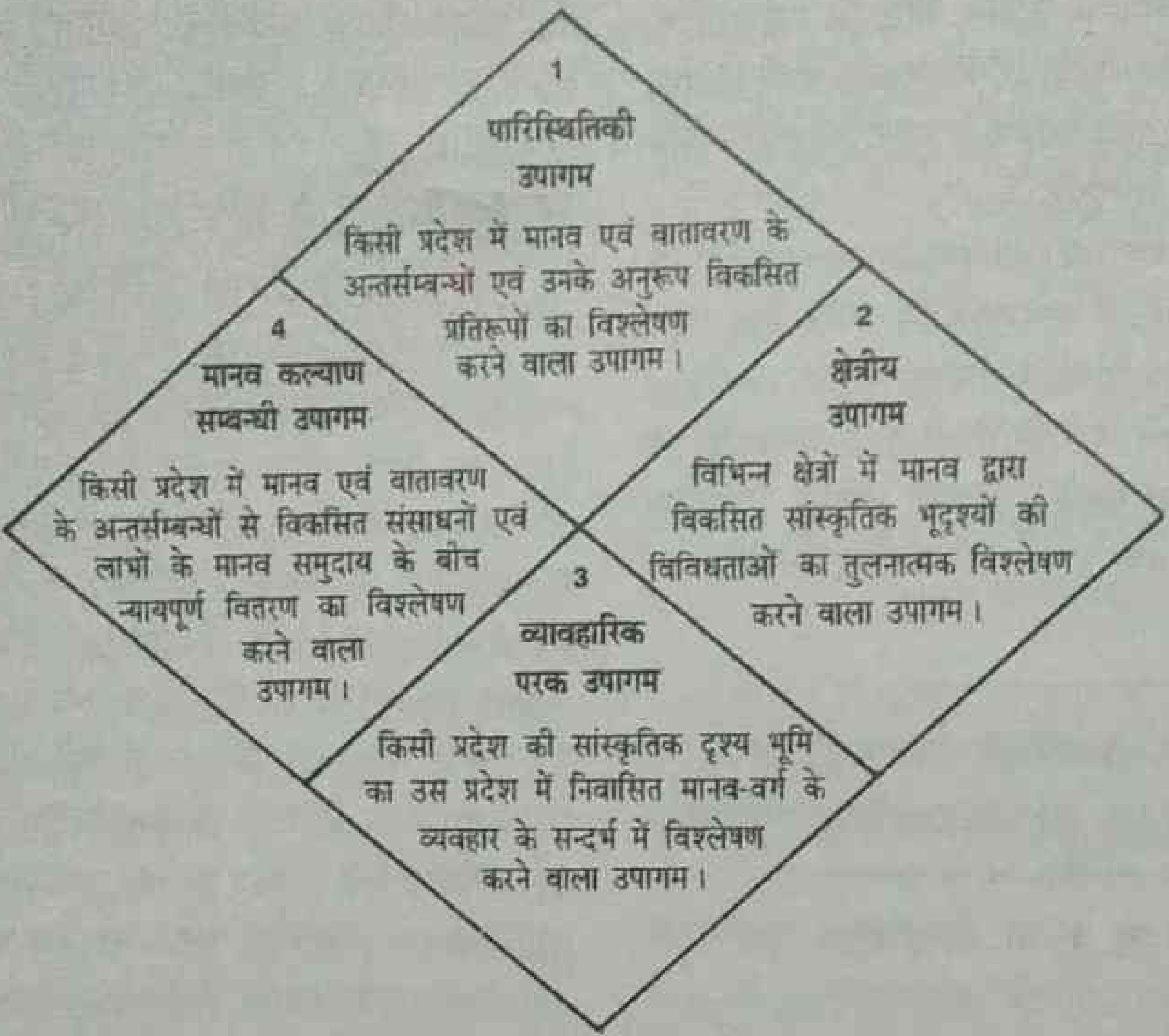

चित्र 1. मानव भूगोल के अध्ययन के चार उपागम।

2. क्षेत्रीय (स्थानिक) उपागम
(Spatial Approach)

यह रीति पृथ्वी तल पर सांस्कृतिक भू-दृश्यों के क्षेत्रीय विश्लेषण से सम्बन्धित है। भूतल के विभिन्न क्षेत्रों में मानव के जीवन-निर्वाह के ढंगों में भिन्नता पायी जाती है। उसके द्वारा विकसित सांस्कृतिक भू-दृश्य भी विभिन्न क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न होते हैं। इस रीति से पृथ्वी तल के विभिन्न क्षेत्रों में विकसित होने वाले इन सांस्कृतिक भू-दृश्यों की विविधताओं की कारणों सहित तुलनात्मक व्याख्या की जाती है। इस प्रकार इस उपागम में मानव सम्बन्धी एवं वातावरण सम्बन्धी उन सभी तत्वों का विश्लेषण किया जाता है जो इस सांस्कृतिक दृश्यभूमि की क्षेत्रीय विविधता या भिन्नता के लिये उत्तरदायी होते हैं। अतः पृथ्वी तल पर विभिन्न क्षेत्रों में मानव-संख्या (जनसंख्या), उसकी आर्थिक क्रियाओं—कृषि, पशुपालन, व्यापार, उद्योग, आदि उसके जीवन-यापन के सामाजिक रीति-रिवाजों, उसकी निवास-बस्तियों, आदि के वितरण में पायी जाने वाली भिन्नताओं का कारण-सहित तुलनात्मक विश्लेषण एवं विवेचन क्षेत्रीय या स्थानिक उपागम से सम्बन्धित होता है। इस प्रकार के विश्लेषण से किन्हीं क्षेत्रों में मानव के जीवन-निर्वाह के स्तर की उन्नति के लिये किये जाने वाले नियोजन (planning) में सहायता मिलती है।

3. व्यवहारपरक उपागम
(Behavioural Approach)

भूतल के किसी प्रदेश में निवास करने वाले मानव-वर्ग का अपने वातावरण के प्रति व्यवहार किस प्रकार का है, अर्थात् वह वर्ग विशेष अपने प्रदेश के वातावरण का किस प्रकार उपयोग करके अपने सांस्कृतिक भू-दृश्यों का निर्माण और विकास करता है, इस दृष्टिकोण से किया जाने वाला अध्ययन व्यवहारपरक उपागम के अन्तर्गत आता है। किसी प्रदेश में दीर्घकाल से निवास करते चले आये मानव-वर्ग की धारणायें, परम्परायें, रीति-रिवाज, आदि उस प्रदेश के वातावरण मानव सम्बन्धों को प्रभावित करती हैं। इसी कारण विभिन्न क्षेत्रों में प्राकृतिक वातावरण के तत्वों की समानता होते हुए भी उन क्षेत्रों में रहने वाले मानव-वर्गों के व्यवहार एवं क्षमताओं की भिन्नता के कारण भिन्न-भिन्न मानव वातावरण अन्तर्सम्बन्ध प्रतिरूपों एवं जीवन-निर्वाह पद्धतियों का विकास हो जाता है। इस प्रकार इस उपागम में किसी क्षेत्र विशेष की सांस्कृतिक दृश्यभूमि (cultural landscape) का विश्लेषण, उस प्रदेश में

Scanned by CamScanner

निवास करने वाले मानव-वर्ग के व्यवहार के सन्दर्भ में किया जाता है। यहाँ यह तथ्य जानना आवश्यक है कि प्रदेश विशेष में निवासित मानव-वर्ग के अतिरिक्त किसी दूसरे प्रदेश के मानव-वर्ग का व्यवहार एवं दृष्टिकोण उस प्रदेश के वातावरण के उपयोग के प्रति भिन्न हो सकता है। अतः इस उपागम में प्रदेश विशेष में निवासित मानव-वर्ग का व्यवहार एवं दृष्टिकोण ही महत्वपूर्ण माना जाता है।

4. मानव कल्याण सम्बन्धी उपागम (Human Welfare Approach)

इस रीति का उद्देश्य विभिन्न क्षेत्रों में निवास करने वाले मानव-वर्गों एवं उनके वातावरण के संसाधनों के प्रयोग से विकसित स्थानिक संगठनों (spatial organisation) का अध्ययन मानव-कल्याण एवं सुख-समृद्धि के लिए करना है। किसी प्रदेश में मानव एवं वातावरण के अन्तर्सम्बन्धों में विकसित संसाधनों एवं लाभों का मानव-वर्ग के बीच वितरण किस प्रकार का है, इसका विश्लेषण इस उपागम में किया जाता है। यह रीति इन लाभों के मानव-वर्ग के सभी समुदायों के बीच न्यायपूर्ण वितरण पर बल देती है, ताकि समाज में किसी वर्ग पर साधनों एवं सुविधाओं का केन्द्रीयकरण तथा कुछ पर अभाव न हो और सभी को वातावरण के उपयोग से एकसमान लाभों की प्राप्ति हो, जिससे उनकी भोजन, वस्त्र, आवास सम्बन्धी मूलभूत आवश्यकताओं की सदैव पूर्ति होती रहे।

Scanned by CamScanner

होती है।

प्रश्न ⇒

सांस्कृतिक दृश्यभूमि का अर्थ
(MEANING OF CULTURAL LANDSCAPE)

सांस्कृतिक दृश्यभूमि (cultural landscape) का अर्थ है **मानव** (man) **द्वारा निर्मित भूदृश्य।** मानव ने प्राकृतिक दृश्यभूमि (natural landscape) को प्रयोग करके या उसमें रूपान्तरण (modification) करके उस 'प्राकृतिक दृश्यभूमि' पर अपनी कृतियों की तथा अपने निवास की छाप लगा दी है; और मानव की कृतियों सहित जो भूदृश्य बनता है उसी का नाम **सांस्कृतिक दृश्यभूमि** है अर्थात् प्राकृतिक क्षेत्र में मानव अपनी **बस्ती** (settlement) स्थापित करता है, और वहाँ सांस्कृतिक दृश्यभूमि का निर्माण हो जाता है, वहाँ **गाँव या घर** बस जाते हैं, **आने-जाने के मार्ग** बन जाते हैं, और **भूमि, मिट्टी, जल-प्रवाह, खनिज वनस्पति, जीव-जन्तु, आदि प्राकृतिक संसाधनों के प्रयोग पर मानव की छाप लग जाती है।** बहुत-सी प्राकृतिक दृश्यभूमियाँ ऐसी होती हैं, जहाँ पर मानव बिना कोई बस्ती बसाये भी सांस्कृतिक दृश्यभूमि का निर्माण कर देता है; उदाहरणार्थ—प्राकृतिक वनों में जाकर मनुष्य वृक्षों को काट डालता है, और उन कटे हुए वृक्षों की दृश्यावली ही **सांस्कृतिक दृश्यभूमि** हो जाती है।

कुछ भूगोलवेत्ता **वर्तमान दृश्यभूमि** को ही सांस्कृतिक दृश्यभूमि मानते हैं; क्योंकि वर्तमान काल में (केवल ऐन्टार्कटिका महाद्वीप के मध्य भाग को छोड़कर) प्रायः सारे भूमण्डल की प्राकृतिक दृश्यभूमियों पर मानव जा पहुँचा है और मानव ने अपने वहाँ पहुँचने की कोई-न-कोई छाप उस प्राकृतिक दृश्यभूमि पर अवश्य लगा दी है। अतः वर्तमान समस्त दृश्यभूमि को ही सांस्कृतिक दृश्यभूमि मान लिया जाता है।

परन्तु, वास्तव में **सांस्कृतिक दृश्यभूमि उसी दृश्यभूमि** को कहा जा सकता है, जहाँ पर **मानव द्वारा किया गया रूपान्तरण स्पष्टतः दिखाई** देने के साथ-साथ उस दृश्यभूमि का एक **प्रमुख अंग**

Scanned by CamScanner

या लक्षण (feature) बन गया हो अर्थात् उस क्षेत्र (area) पर मानव के कार्य की स्पष्ट छाप (imprint) लग गई हो। उस दृश्यभूमि पर **मानवीय अध्यावास** (human occupance) स्पष्ट दिखाई देता है।

सांस्कृतिक दृश्यभूमि के तत्व (ELEMENTS OF CULTURAL LANDSCAPE)

दृश्यभूमि (landscape) का वह पक्ष जो मानवीय उपस्थिति और मानवीय क्रिया के द्वारा निर्मित होता है, **सांस्कृतिक दृश्यभूमि** (cultural landscape) कहलाता है। इसमें निम्नलिखित 16 प्रकार के तत्व सम्मिलित होते हैं—

(1) स्वयं 'मानव' अर्थात् जनसंख्या;
(2) मानवीय बस्तियाँ, घर, गाँव, नगर, महानगर या सन्नगर (conurbation);
(3) आर्थिक उत्पादन, विनिमय और वितरण से सम्बन्धित इमारतें, कल-कारखाने, फैक्टरियाँ, मिलें, गोदामें, दुकानें, बाजार, बैंक, आदि की इमारतें, मशीनें, यन्त्र, आदि;
(4) शक्ति के संसाधन, विजलीघर, अणु-शक्तिगृह, नदियों के बाँध, इत्यादि;
(5) परिवहन (transport) और भ्रमण के मार्ग, पगडंडी, सड़कें, रेलमार्ग, पोताश्रय, हवाई अड्डे, मोटर-गाड़ियाँ, रेलगाड़ियाँ, वायुयान, जलयान, आदि; अन्तरिक्ष में उड़ान भरने के रॉकेट तथा उपग्रह छोड़ने के अड्डे;
(6) संचार के साधन (communication) डाक, टेलीफोन, रेडियो, टेलीविजन, राडार, आदि के खम्भे तथा उनके भवन।
(7) कृषि की फसलें, बाग-बगीचे आदि; मानव द्वारा कटे हुए या उत्पन्न किये हुए वन, उपवन;
(8) घरेलू पशु; पशुशालाएँ, पशुओं के बाड़े;
(9) नहरें तथा कृत्रिम जल-प्रवाह, सिंचाई के कूप, नल-कूप, आदि;
(10) खेती की सीमाएँ, प्रशासनीय क्षेत्रीय सीमाएँ, अन्तर्राष्ट्रीय सीमाएँ;
(11) प्रशासनिक कार्यालय, संसद-भवन, पुलिस चौकियाँ, थाने, न्यायालय, पंचायत-घर, ब्लॉक या सेवा-खण्ड, आदि की इमारतें, सैनिक-कैम्प, दूतावास, गढ़, किले, आदि;
(12) शिक्षा संस्थाएँ, स्कूल, कॉलिज, विश्वविद्यालय, तकनीकी संस्थाएँ, आदि;
(13) मनोरंजन की संस्थाएँ, सिनेमा, नाटकघर, सर्कस, व्यायामशाला, स्टेडियम, पार्क, रामलीला के मैदान, मेलों और उत्सवों को मनाने के स्थान, चिड़ियाघर (zoo), अजायबघर (museum), प्रदर्शनी, आदि;
(14) कला, सौन्दर्य और प्रेरणा के साधन, चित्र, मूर्तियाँ, महापुरुषों की मूर्तियाँ, स्तम्भ, शिला-लेख, द्वार, ध्वजा, तोरण, आदि, कृत्रिम झरने, फव्वारे, तालाब, घंटाघर, आदि;
(15) धार्मिक संस्थाएँ, मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर, श्मशान-भूमि, कब्रिस्तान, मठ, पीठ, आदि;
(16) सामाजिक संस्थाओं और सभा-गोष्ठियों के भवन; सामाजिक सेवाओं के भवन; अस्पताल या चिकित्सालय; सेवा समिति या बालचर संस्था या रेड-क्रॉस, आदि संस्थाओं के भवन; अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं के भवन, तथा अन्य ऐसे दिखाई देने वाले पदार्थ जो सीधे या परोक्ष में मानवीय अध्यावास (occupance) और मानवीय क्रियाओं द्वारा निर्मित होते हैं।

इस प्रकार, किसी क्षेत्र की वर्तमान दृश्यभूमि उस क्षेत्र की (i) **आरम्भिक भौतिक दशाओं** (original physical conditions) **की तथा** (ii) **मानव और वातावरण की पारस्परिक-क्रियाओं** (inter-actions) **के परिणामों की, मिश्रित रूप होती है; वह स्वयं 'मानव' द्वारा और मानव के कार्यों तथा उन कार्यों के परिणामों द्वारा प्रत्यक्ष प्रकट होती है।**

किसी प्राकृतिक दृश्यभूमि (natural landscape) पर 'मानव' की उपस्थिति या मानव की किसी क्रिया की छाप (imprint) लग जाने पर वहाँ सांस्कृतिक दृश्यभूमि का निर्माण हो जाता है। उदाहरणार्थ, प्राकृतिक वनों में वृक्षों के कटने पर, मैदान में खेत, नहर, सड़क, आदि बन जाने पर, पर्वतों पर सीढ़ीदार खेत या पैदल-मार्ग और झोंपड़ी बनने पर, झीलों में नौका पड़ने पर, वहाँ सांस्कृतिक दृश्यभूमि बन जाती है। **वर्तमान काल में तो चन्द्रमा के तल पर भी सांस्कृतिक दृश्यभूमि का निर्माण हो चुका है।** सबसे पहले, 1957 में पूर्ववर्ती सोवियत संघ ने अपने रॉकेट द्वारा एक धातु के ठप्पे पर अंकित अपना ध्वज-चिन्ह और राजसत्ता चिन्ह (emblem) चन्द्रमा के तल पर रखा था। उसके बाद संयुक्त राज्य अमेरिका ने सीसमोग्राफ (seismograph) और रेडियो कैमरा, आदि चन्द्रतल पर पहुँचाये; फिर चन्द्रयान द्वारा दो मानव चन्द्रतल पर उतरे, वहाँ से खोदकर कुछ चट्टानों और मिट्टी के नमूने लिये तथा कुछ उपकरण वहाँ छोड़े। पूर्व सोवियत संघ के स्वचालित मानव-रहित चन्द्रयान चन्द्रतल से कुछ मिट्टी व चट्टान खोदकर लाये। बाद में, मानव ने चन्द्रतल पर जाकर अपने यन्त्र रखे हैं। रूसी चन्द्रगाड़ी

Scanned by CamScanner

लूना-खोद स्वचालित यन्त्रों सहित अभी चन्द्रतल पर वैज्ञानिक अनुसंधान कर रही है। इस प्रकार चन्द्रतल पर भी मानव सांस्कृतिक दृश्यभूमि का निर्माण-कार्य आरम्भ हो चुका है। **परन्तु हम भूगोल में केवल पृथ्वी तल पर निर्मित सांस्कृतिक दृश्यभूमि का अध्ययन करते हैं। उनमें सबसे अधिक प्रधानता जनसंख्या और बस्तियों को दी जाती है,** जो निम्नलिखित है—

1. जनसंख्या (Population)—जनसंख्या के अन्तर्गत किसी क्षेत्र के निवासियों की संख्या, जनसंख्या वितरण, घनत्व, नर-नारी अनुपात, आयु-वर्ग, आर्थिक व्यवसायों में जनसंख्या का प्रतिशत भाग, ग्रामीण-नगरीय अनुपात, वृद्धि, जनसंख्या प्रवास या स्थानान्तरण, आदि तथ्यों का विचार होता है।

जनसंख्या का दिखाई देने वाला (visible) **पक्ष भी सांस्कृतिक दृश्यभूमि में सम्मिलित रहता है।**

2. मानवीय बस्तियाँ (Human settlements)—पृथ्वी पर मानव की क्रियाओं और रचनाओं में सबसे अधिक स्पष्ट[1] दूर से ही दिखाई देने वाली, सबसे अधिक महत्वपूर्ण और ठोस रचना मानवीय बस्तियाँ और मार्ग हैं, इनमें एक प्रकार का मूल तथ्य (fundamental facts) मकान या निवास है, और दूसरे प्रकार का तथ्य मार्ग या सड़कें हैं। मकानों और मार्गों में प्रयोग की गई भूमि पर कृषि या पशुचारण नहीं होता, इसलिये **ब्रूंज़** ने गृहों और मार्गों को भूमि का अनुत्पादक प्रयोग (unproductive occupation of the soil) बताया है।

मानवीय बस्तियों में मानव निवास के गृह, मकान, आश्रय, निवास, भवन, प्रासाद, अहाते, बंगले, आदि सभी सम्मिलित होते हैं। इनमें सभी प्रकार के घरों या आश्रयों (shelters) को सम्मिलित किया जाता है, चाहे तो कोई झोंपड़ी या छप्पर हो, या पत्तों और लकड़ियों की बनी कुटिया हो, अथवा मिट्टी या लकड़ी का घर हो, या ईंटों और चूने का बना मकान हो, या सीमेंट-कंकरीट की बनी कोई इमारत हो, अथवा पत्थर-लोहे, आदि से बना भव्य राजमहल या किला हो। निर्धन और धनी सभी के निवास इसमें सम्मिलित किये जाते हैं, भले ही कोई निवास एक जंगली आदमी की घास-फूँस की छोटी झोंपड़ी हो अथवा विशाल नगरों में अरबपतियों की गगनचुम्बी अट्टालिकाएँ हों। मनुष्यों के रहन-सहन के घर, औद्योगिक व्यवसायों के कारखाने, व्यापार घर, मिलें, आदि, सामाजिक तथा राजनीतिक कार्यों के लिये बनाये गये सभाघर, शिक्षालय, दफ्तर आदि भी इसमें सम्मिलित हैं।

आकार और स्थिति की दृष्टि से मानवीय बस्ती केवल एक व्यक्ति या एक परिवार का मकान अथवा वह दो-चार परिवारों की छोटी बस्ती का नंगला या पल्ली (hamlet) हो सकती है; या वह बहुत से परिवारों के निवास का गाँव अथवा नगर हो सकती है। उनमें बसे हुए घर एक-दूसरे से अलग-अलग कुछ दूरियों पर बसे हुए या परस्पर सटे हुए सघन हो सकते हैं।

3. मार्ग (Ways)— मकानों से संबन्धित आने-जाने के मार्ग होते हैं, जो मकानों से मिले हुए होते हैं तथा बस्तियों को बाहरी क्षेत्रों से जोड़ते हैं। मार्ग सँकरे या चौड़े हो सकते हैं। यहाँ मार्ग शब्द का अभिप्राय प्रत्येक प्रकार के गमनागमन के पथ से है, चाहे तो वह किसी गाँव को जाने वाली **बैल-गाड़ियों की कच्ची सड़क हो**, या किसी चरागाह में पशुचारक की झोंपड़ी को आने-जाने की **बटिया** (track) हो, अथवा किसी पहाड़ी नंगले से खेतों को जाने वाली **पगडंडी** (footpath) हो या किसी नगर को जाने वाली मोटर की **डामर-सड़क अथवा अन्तर्देशीय राजपथ** (highway) **हो। रेलमार्गों** (railways), **जलीय परिवहन की नहरें, नदियों, आदि आन्तरिक जलमार्गों** (inland waterways) को भी इसमें सम्मिलित किया जाता है। **बड़ी सड़कों या रेलमार्गों,** आदि से सम्बन्धित **पुलों, सुरंगों, रेलवे स्टेशनों और बन्दरगाहों** को इनमें सम्मिलित किया जाता है।

4. आर्थिक उत्पादन के लिए वितरण एवं भंडारण के भवन (Economic production and distribution houses)—आर्थिक व्यवसायों में कार्य करने के लिये भी इमारतें होती हैं। गाँवों में खेती के उत्पादन को रखने के अन्न कोठार, बीज-गोदाम, कपास-गोदाम, यन्त्रशाला, डेरी, आदि की इमारतें होती हैं। नगरों में निर्माण-उद्योगों (manufactures) के लिये कारखानों, मिलों, फैक्टरियों, वर्कशॉप, आदि की इमारतें तथा व्यापार (trade) के लिये दुकानें, बाजार, बैंक, बीमा-घर, आदि के भवन होते हैं।

5. सांस्कृतिक संस्थाओं की उपस्थिति एवं दृश्य—सांस्कृतिक कार्यों के लिये सभाघर, शिक्षालय, कॉलेज, ट्रेनिंग इन्स्टीट्यूट, क्लब, आदि भवन होते हैं। धार्मिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिये मंदिर, गुरुद्वारे, मस्जिद, गिरजाघर होते हैं।

अतः आश्रय, घर, मकान आदि के द्वारा मनुष्य की निम्नलिखित उद्देश्य-पूर्तियाँ होती हैं—(i) निद्रा और आराम के लिये आश्रय तथा निवास का स्थान, जंगली पशुओं से रक्षा, शत्रुओं से रक्षा, वस्तुओं और सम्पत्ति को एकत्रित करने

1. Brunhes, J. : 'Whenever there are men we find surface phenomena of a concrete... First comes one of the most obvious... the house shelter, habitation, or human construction.' — *Human Geography*, 1952, p. 36.

Scanned by CamScanner

और रखने का स्थान। (ii) आर्थिक व्यवसायों, जैसे—कृषि, डेरी, निर्माण-उद्योग, व्यापार, परिवहन, आदि के गोदाम, यन्त्रशाला, स्टोर्स, कारखाने, मिलें, फैक्टरियाँ, वर्कशॉप, दुकानें, बाजार, बैंक, बीमाघर, डाकघर, आदि। (iii) सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यों के लिये शिक्षालय, सभाघर, कला-सदन, क्लब, पंचायतघर, मंदिर, गिरजाघर, आदि। (iv) राजनीतिक कार्यों के लिये कार्यालय, पुलिस चौकी, सेना-शिविर, संसद भवन, राज-भवन, आदि।

Scanned by CamScanner

Unit-IInd

Date ______
Page ______

Topic:- ① Cultural regions:- सांस्कृतिक प्रदेश

प्रश्न-1. विश्व के सांस्कृतिक प्रदेशों विस्तार से वर्णन किजिए।

Topic - ② Human Race (Griffith taylor's classification)

(मानव प्रजातियां (वर्गीकरण टेलर के अनुसार)

प्रश्न-2 मानव प्रजाति को परिभाषित कीजिए तथा 'ग्रिफिथ टेलर' द्वारा प्रस्तुत वर्गीकरण का विस्तार पूर्वक उल्लेख कीजिए। (2018), (2020)

Topic:- ③ Tribes:- Eskimo, Bushman, Pygmy. Santhal, Nagas, Bhil.

(जनजातियाँ:- एस्किमों, बुशमैन, पिग्मी, संन्थाल, नागा, भील,)

प्रश्न-3 "एस्किमों" जनजाति के आवास स्थल, अर्थव्यवस्था और समाज पर एक भौगोलिक वृतान्त लिखिए। (2021)

Scanned by CamScanner

Date ______
Page ______

प्रश्न.(4) "बुशमैन" जनजाति के आवास, सामाजिक संगठन और अर्थव्यवस्था का वर्णन कीजिए। (2022)

प्रश्न.5. 'पिग्मी' जनजाति के आवास, अर्थव्यवस्था, एवं समाज व्यवस्था पर लेख लिखिए। (2018)

प्रश्न.6. 'सन्थाल' जनजाति के आवास, अर्थव्यवस्था एवं समाज व्यवस्था पर एक भौगोलिक लेख लिखिए। (2015)

प्रश्न.7. 'नागा' जनजाति के आवास, अर्थव्यवस्था एवं समाज व्यवस्था पर एक लेख लिखिए (2017)

प्रश्न.8. "भील" जनजाति के आवास, अर्थव्यवस्था और समाज पर एक भौगोलिक वृतान्त बताइये। (2022)

Topic - (4) Religious and Linguistics Composition of World Population.
(धार्मिक और भाषाई रचना के आधार पर विश्व की जनसंख्या)

प्रश्न.1. धार्मिक और भाषाई रचना के आधार पर विश्व की जनसंख्या के वितरण को समझाइयें।

अवस्थाओं से संकेत किया है—(i) जन्मावस्था (sub-infantile stage); (ii) शैशव (infantile); (iii) बाल्यावस्था (juvenile); (iv) किशोरावस्था (adeolscent); (v) प्रौढ़ावस्था (mature); (vi) प्रौढ़ोत्तर (late mature), और (vii) वृद्धावस्था (senile)।

बस्तियों के इन विभिन्न पक्षों को आगामी दो अध्यायों ...ण बस्तियों और नगरीय बस्तियों के अन्तर्गत समझाया ...।

...वासी पशुचारक (nomadic pastoralist) लोगों की बस्तियाँ चरागाहों में, डेरों (encampments) के रूप में हुआ करती हैं, जैसा कि मध्य एशिया के मंगोल चरावाहों की, या उत्तरी साइबेरिया के याकूत लोगों की होती है। इस प्रकार का तथा अन्य अस्थायी बस्तियों का उल्लेख ग्रामीण बस्तियों के अन्दर किया गया है।

सांस्कृतिक प्रदेश
[CULTURAL REALMS (REGION)]

एक समान सांस्कृतिक लक्षणों वाले प्रदेश को सांस्कृतिक प्रदेश (realms or region) कहते हैं। यहाँ पर लक्षणों का आशय बोली, वेशभूषा, खान-पान की विधियाँ, शिष्टाचार, विचार एवं विश्वास तथा मानवीय कृत्यों एवं सांस्कृतिक दृश्यभूमि आदि से है। जिन क्षेत्रों में ये लक्षण समान हैं, वह एक सांस्कृतिक प्रदेश है, जिन क्षेत्रों में ये लक्षण दूसरी प्रकार से व्यवस्थित हैं, वह दूसरा सांस्कृतिक प्रदेश है। विश्व के सांस्कृतिक प्रदेशों का संक्षेप में अध्ययन निम्नलिखित है—

1. भारतीय सांस्कृतिक प्रदेश—भारतीय संस्कृति सनातन काल से ही विकसित है। इसकी उत्तरी तथा पूर्वी सीमायें हिमालय की शाखायें ही बनाती हैं। पश्चिमी सीमा हिमालय की सुलेमान श्रेणी द्वारा निर्धारित है। दक्षिण में हिन्द महासागर तक इसका विस्तार है। यह आध्यात्मिक संस्कृति है, जो धर्म एवं कला पर आधारित है। इस सांस्कृतिक प्रदेश में हिन्दू (वैदिक तथा सनातन), बुद्ध, जैन तथा सिक्ख धर्मों का विकास हुआ है। प्राचीन काल में मध्य एशिया तथा काकेशस पर्वतीय क्षेत्रों से आने वाली अनेक शक तथा हूण जातियाँ, जो भारत में आयीं, वे कालान्तर में इसी संस्कृति का भाग बन गयीं।

प्रसार एवं प्रभाव—ईसा पूर्व इस संस्कृति का प्रभाव समस्त द० पूर्वी एशिया तथा मध्य एशिया के तिब्बत प्रदेश तक विस्तृत था। अशोक महान ने भारतीय संस्कृति, जो उस समय बौद्ध धर्म के रूप में थी, उत्तर में नेपाल, तिब्बत, चीन, जापान तक तथा दक्षिण पूर्व में म्यानमार (बर्मा), थाईलैंड, लाओस, कम्बोडिया तक फैली थी। मलय प्रायद्वीप तथा इंडोनेशिया के द्वीपों तक इसका विस्तार था। भले ही पूर्वी एशिया तथा द०पू० एशिया में अब अन्य संस्कृति विकसित हैं, परन्तु पुरातन भारतीय संस्कृति के चिन्ह या अवशेष वहाँ पर अभी भी विद्यमान हैं।

2. पूर्वी एशियाई सांस्कृतिक प्रदेश—यद्यपि पूर्वी एशियाई संस्कृति का प्रमुख धर्म वर्तमान में भी बुद्ध धर्म ही है, परन्तु इस प्रदेश में धर्म का अधिक महत्व नहीं रहा क्योंकि बुद्ध धर्म, जो यहाँ का मुख्य धर्म है, उसकी मान्यताओं का इस प्रदेश की जनता की वेशभूषा एवं खान-पान पर अधिक प्रभाव नहीं है।

विस्तार एवं प्रभाव—इस संस्कृति का प्रभाव चीन, जापान, कोरिया तक विस्तृत रहा है। वियतनाम, लाओस, कम्बोडिया, म्यानमार तथा थाईलैंड देशों में भी चीनी संस्कृति भारतीय मूल्यों के साथ मिश्रित रूप में विद्यमान है। इस संस्कृति का प्रभाव मुख्यतः मंगोलिया मानव प्रजाति के क्षेत्रों तक विस्तृत रहा है।

3. पश्चिमी सांस्कृतिक प्रदेश—पश्चिमी सभ्यता का विकास मुख्यतः यूरोपीय देशों में संयुक्त रूप से हुआ। यूरोप में इस सभ्यता का विकास ईसा पूर्व से ही विकसित हो रहा था, परन्तु ईसा के बाद यह संस्कृति ईसाई धर्म का सहारा लेकर अपना विस्तार करने में लगी है।

प्रसार एवं प्रचार—पिछली चार शताब्दियों में पश्चिमी सभ्यता यूरोप से बाहर अफ्रीका, अमेरिका, आस्ट्रेलिया तथा एशिया के कुछ भागों में विकसित हुई है। कहीं पर धर्म के नाम से, तो कहीं विकास को लेकर साम्राज्यवाद के सहारे इसका विस्तार उन सभी देशों तक पहुँचा है, जहाँ तक ये यूरोपीय साम्राज्यवादी पहुँच गये हैं। वर्तमान समय में भी व्यापार, शिक्षा तथा तकनीकी विकास के साथ-साथ इस संस्कृति का प्रसार हो रहा है। वर्तमान समय में, इस संस्कृति का विस्तार उस पूर्वी यूरोप तथा साइबेरिया पर भी स्थापित हो गया है, जो लगभग 100 वर्षों तक समाजवाद के नाम पर पश्चिमी सभ्यता से अलग रहा है।

वर्तमान में, इस सभ्यता का पूरे विश्व में प्रभाव है, परन्तु पूर्ण अधिकार वाले क्षेत्र तीन प्रकार के हैं—

(i) पश्चिमी यूरोप—यह इस संस्कृति का विकास स्थल है, यहीं से इसका विस्तार नयी दुनिया तथा अफ्रीका तक के देशों में हुआ है। यहाँ पर सघन जनसंख्या है, जो विश्व में सर्वाधिक विकसित है।

(ii) अमेरिका, आस्ट्रेलिया तथा दक्षिणी अफ्रीका—ये इस संस्कृति के आधुनिक विस्तार स्थल हैं। इन खाली भू-भागों पर यूरोपियन यात्रियों ने खोजकर अधिकार किया तथा यहाँ

Scanned by CamScanner

आकर बस गये। विश्व के इस बड़े भू-भाग पर इन पश्चिमी यूरोप के देशवासियों का ही अधिकार है।

(iii) पूर्वी यूरोप एवं रूस—इस संस्कृति का, पश्चिमी यूरोपियन संस्कृति से कुछ अलगाव रहा है। मध्य व पूर्वी यूरोप में सघन जनसंख्या के कारण साम्यवाद का विकास हुआ, जो बाद में समस्त उत्तरी एशिया तथा मध्य एशिया पर फैल गया, परन्तु अब इस साम्यवादी विचारधारा का लगभग अन्त हो रहा है। इसके उत्तरी तथा पूर्वी भाग वापस यूरोपियन सभ्यता में तथा मध्य एशियाई भाग और इस्लामी संस्कृति में लौट रहे हैं।

4. पश्चिमी एशियाई सांस्कृतिक प्रदेश—इसे मध्य-पूर्वी सभ्यता या इस्लामी सभ्यता अथवा अरब सभ्यता के नाम से भी जाना जाता है। इस एकेश्वरवादी सभ्यता का विकास पश्चिमी एशिया के अरब प्रायद्वीप में प्राचीन काल से रहा है। सातवीं सदी के बाद इसका विस्तार मुख्य रूप से तेजी से हुआ है। इस्लाम इस सभ्यता का केन्द्र बिन्दु है।

प्रसार एवं प्रचार—यह सभ्यता 8वीं सदी में उत्तरी अफ्रीका तथा 10वीं शताब्दी तक द० यूरोप व मध्य एशिया में रूस तथा चीन की सीमाओं तक पहुँच गयी थी। 12वीं तथा 13वीं शताब्दी में यह भारतीय उपमहाद्वीप में तथा 15वीं शताब्दी में दक्षिणी-पूर्वी एशिया के द्वीपों तक विस्तृत हो चुकी थी। वर्तमान में इस सभ्यता का विस्तार भी पूरे विश्व में है। इसके प्रमुख क्षेत्र निम्नलिखित हैं—

(i) पश्चिमी एशिया तथा उत्तर-पूर्वी अफ्रीका—यह इस्लामी सभ्यता एवं पश्चिमी एशिया की सभ्यता का मूल केन्द्र है। इस सभ्यता के समस्त प्राचीन एवं ऐतिहासिक चिन्ह इसी प्रदेश में हैं। यह क्षेत्र ईरान व इराक, सऊदी अरब, सीरिया से लेकर पश्चिम में अफ्रीका के उत्तरी पूर्वी देशों तक फैला है।

(ii) सहारा अफ्रीका व दक्षिण का भाग—इस क्षेत्र में पश्चिमी अफ्रीका में गिनी की खाड़ी तक का प्रदेश, मध्यवर्ती अफ्रीका तथा पूर्वी अफ्रीका के देश आते हैं। यहाँ अरबी संस्कृति अफ्रीकी परिवेश में विकसित है।

(iii) मध्य एशिया—मध्य एशिया का मरूस्थल तथा पहाड़ी प्रदेश, इस भाग में आता है। यह क्षेत्र उत्तर में रूस तक, पूर्व में चीन तक तथा दक्षिण में भारतीय उपमहाद्वीप तक विस्तृत है। प्राचीनकाल में यहाँ बर्बर लड़ाकू सरदारों का प्रभाव रहा है। अफगानिस्तान अब भी युद्ध क्षेत्र बना हुआ है, परन्तु अन्य देश अब लगभग शान्ति से विकास कर रहे हैं।

(iv) एशिया माइनर तथा दक्षिणी यूरोप—इस प्रदेश में टर्की, अजरबाइजान, जार्जिया, अलबानिया, मेसेडोनिया, बोस्निया-हर्जेगोनिया, कोसोवो देश तथा सर्बिया का दक्षिणी भाग एवं दक्षिणी रूसी क्षेत्र, चेचेनिया, दागिस्तान, आदि आते हैं। यह इस्लामी संस्कृति का प्रदेश है, जो यूरोपियन परिवेश का प्रभाव रखता है।

(v) दक्षिणी एशिया—भारतीय उपमहाद्वीप के पश्चिमी भाग जो इस्लाम के **अरब** एवं **भारतीय परिवेश** का उदाहरण हैं तथा पूर्वी भाग में बाँग्लादेश बंगाली परिवेश में इस्लामी संस्कृति का प्रदेश है। भारत के अलग-अलग भागों में रहने वाले मुसलमान—अरब तथा भारत के क्षेत्रीय परिवेश का प्रदर्शन करते हैं। सूफी संस्कृति इसका एक लक्षण है।

(vi) दक्षिणी-पूर्वी एशिया—दक्षिणी-पूर्वी एशिया के द्वीपों में इस्लामी सभ्यता का प्रचार व्यापारियों के द्वारा विकसित हुआ है। अब इसका विस्तार मलेशिया, इंडोनेशिया, सिंगापुर तथा फिलिपीन्स के दक्षिणी भागों तक है।

5. मध्य अफ्रीकी सांस्कृतिक प्रदेश—अफ्रीका का मध्यवर्ती भाग विश्व के सांस्कृतिक प्रदेशों की प्रगति से अछूता रहा है। प्राकृतिक अवरोधों के कारण यहाँ सांस्कृतिक प्रचार नहीं हो पाये हैं इसलिए यहाँ पर प्राचीनकालीन मानव जीवन के स्तर के दर्शन होते हैं। वर्तमान समय में ये बाधायें दूर हो रही हैं। अतः धीरे-धीरे विकास कार्य भी प्रगति पर है। अफ्रीका के अनेक देशों में—यूरोपियन, अरब तथा भारतीय सरकारों एवं समाजों के द्वारा अनेक प्रकार के कार्य—कृषि विकास, परिवहन विकास, औद्योगिक विकास तथा शिक्षा विकास के कार्य प्रगति पर हैं और यहाँ पर मिली-जुली संस्कृति का विकास हो रहा है। यहाँ कुछ देशों में ईसाई तथा इस्लामी संस्कृति के प्रचारक अपने-अपने प्रभाव को बढ़ाने में लगे हैं। यहाँ की संस्कृति लगभग पुरातन प्राकृतिक रचना पर आधारित है।

Scanned by CamScanner

प्रश्न:- (2) मानव प्रजाति को परिभाषित कीजिए तथा 'ग्रिफिथ टेलर' द्वारा प्रस्तुत वर्गीकरण का विस्तार पूर्वक उल्लेख कीजिए। (2018, 2020)

उत्तर:- मानव प्रजाति का अर्थ:-

मानव जाति एक जैविक विचार है। इसका अभिप्राय उस मानव-वर्ग से है जो वंशानुक्रम के द्वारा शारीरिक लक्षणों में समानता रखता हो।,

ग्रिफिथ टेलर:-

के अनुसार मानव प्रजाति का अर्थ- "मानव प्रजाति नस्ल को प्रकट करती है, न कि सभ्यता को।"

क्रोबर के अनुसार:-

"यह एक जैविक संकल्पना है और यह कोई सामाजिक-सांस्कृतिक संकल्पना नहीं है।"

हैडन के अनुसार:-

"मानव प्रजाति एक जैविक नस्ल है, जिसके प्राकृतिक लक्षणों का योग दूसरी प्रजाति के प्राकृतिक लक्षणों के योग से भिन्न होता है, ये प्राकृतिक लक्षण पीढ़ी-दर-पीढ़ी तक वैसे ही संक्रमित रहते हैं,

*विडाल-डी-ला-ब्लाश के अनुसार:-

"मानव प्रजाति का वर्गीकरण मानव शरीर की आकृति एवं लक्षणों के आधार पर किया जाता है,"

अतः प्रजाति का अर्थ इस प्रकार के मानव वर्ग से है जिस वर्ग के सभी मनुष्यों की शारीरिक रचना

Scanned by CamScanner

के कुछ बाहरी लक्षण (कद, त्वचा का रंग, सिर की लं., चौड़ाई), बालों की आकृति, नेत्र की आकृति और रंग, इत्यादि समान हो तथा उनके रक्त-वर्ग भी एक जैसे हो।

प्रजातियों की मुख्य विशेषताएँ :- निम्न है,

(1) प्रजाति एक जैविकीय अवधारणा है, इसका धर्म, राष्ट्र, जाति, भाषा, आदि से कोई सम्बन्ध नहीं है,

(2) प्रत्येक प्रजाति की अपनी विशेषताएं अथवा शारीरिक लक्षण होते है, जिनके आधार पर उस प्रजाति को अन्य प्रजातियों से अलग किया जा सकता है,

(3) वातावरण एवं क्षेत्रीय प्रभावों के कारण इनका कद, रंग, शरीर, संरचना, (सिर, जबड़ा, आँखे, बाल, होंठ आदि में परिवर्तन आ गया हैं

जैसे :- श्वेत प्रजाति का रंग गोरा, बाल सीधे, तथा होंठ पतले होते है, जबकि नीग्रो प्रजाति का रंग काला, बाल घुंघराले और होंठ मोटे होते हैं,

(4) प्रजाति के शारीरिक लक्षण एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में जीन्स के द्वारा हस्तान्तरित होते है,

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

(5) जिन शारीरिक लक्षणों के आधार पर प्रजाति का निर्धारण किया जाता है, वे मनुष्यों के एक बड़े समूह में पाये जाने चाहिए।

(6) विश्व की सभी मानव प्रजातियाँ मूल रूप से एक समान हैं, उनमें केवल बाहरी परिवर्तन तथा त्वचा, रंग बाल, नाक की आकृति में भिन्नता आदि हुए हैं,

(7) सभी मानव प्रजातियों की बुद्धि में क्षमता समान होती हैं,

(8) समस्त मानव प्रजातियों में शिक्षा प्राप्त करने और समायोजन करने की क्षमता होती है,

(9) जीव-विज्ञान की नियमावली के आधार पर वे सभी एक ही वर्ग के जीव हैं जो कुछ नियमित शारीरिक भिन्नता रखते हैं।"

(10) प्रजातियों के विकसित होने के साथ-साथ मनुष्य का प्रवास भी होता रहा है, इसके भिन्न कारण होते हैं किसी प्रदेश के वातारण के कठोर हो जाने के कारण, या उस प्रदेश की अधिक जनसंख्या हो हो जाने के कारण, अथवा भोजन की खोज में या आक्रमण या युद्ध के कारण अथवा प्राकृतिक शक्तियों की भयानकता से मानव प्रजातियाँ विभिन्न महाद्वीपों में प्रवास करती रही हैं।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

प्रजातियों का वर्गीकरण :- मानव प्रजातियों का उपयुक्त वर्गीकरण वही हो सकता है, जो एक से अधिक शारीरिक लक्षणों को परखा जाये।

प्रमुख वर्गीकरण निम्न है ⇒

(i) कुवियर का वर्गीकरण :-
(ii) हैडन का वर्गीकरण :-
(iii) टेलर का वर्गीकरण :-

(i) कुवियर का वर्गीकरण :- इनके अनुसार मानव प्रजातियों के मुख्य तीन - वर्ग बतायें गये हैं।

(1) नीग्रोइड - काली प्रजातियाँ।
(2) मंगोलॉइड - पीत वर्ण की प्रजातियाँ।
(3) कॉकेसाइड - श्वेत प्रजातियाँ।

⇒ इस वर्गीकरण को टेलर ने अस्पष्ट व गलत बताया है।

(2) हैडन का वर्गीकरण :- इनके अनुसार मानव प्रजातियाँ तीन प्रकार के बालों वाली हैं।

21 SUNDAY (1) उलोट्रिकी या छल्लेदार बालों वाली प्रजाति -
(2) सीमोट्रिकी या लहरदार बालों वाली प्रजाति -
(3) लिओट्रिकी या सीधे बालों वाली प्रजाति -

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

(1) उलोट्रिकी प्रजातियाँ :- (घुल्लेदार बाल) (Ulotrichi Races)

- वह प्रजातियाँ जिनके बालो का केश घातांक 50-60 तक होता है, और बाल घुल्लेदार होते हैं इनकी त्वचा काली होती है, ये नीग्रो तथा नैगरिटो होते हैं, (लम्बा कद + लम्बा सिर) (नाटे कद)

(2) सीमोट्रिकी प्रजातियाँ :- (Cymotrichi Races) : (लहरदार बाल)

⇒ वह प्रजातियाँ जिनके बालों का केश घातांक 60-70 तक होता है, और बाल लहरदार होते हैं। त्वचा रंग के आधार पर दो वर्ग होते हैं,

(i) काली त्वचा के आस्ट्रेलियन :- इनका कद मझला, सिर लम्बा, ये प्रजातियाँ आस्ट्रेलियाँ, भारत और ब्राजील में निवास करती हैं इनके अतिरिक्त श्रीलंका की वैध्य जाति, मलाया, सुमात्रा, और इण्डोनेशिया की जातियाँ भी इसी वर्ग की हैं।

(ii) भूरे एवं कत्थई और गोरे वर्ण की कॉकेशियन प्रजातियाँ :- इस वर्ग में दक्षिणी - पूर्वी यूरोप, उत्तरी भारत, अफगानिस्तान, ईरान, उत्तरी - अफ्रीका, स्पेन, पुर्तगाल और आरमीनिया की प्रजातियाँ हैं,

(3) लियोट्रिकी (Leiotrichi) : (सीधे बालों वाली प्रजातियाँ)

- ये वे प्रजातियाँ हैं। जिनके बालों का केश घातांक लगभग 80 होता है, और बाल सीधे होते हैं। इनका रंग पीला या कत्थई होता है, इनमें मंगोल जाति के लोगो की आखे कुछ तिरछी होती है।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

इनके छः वर्ग होते हैं, इनमें से तीन वर्ग चीन, उत्तरी साइबेरिया और मंचूरिया में रहते हैं।
इनका चौथा वर्ग रूसी तुर्किस्तान और मध्य एशिया में है,
पाँचवा वर्ग पश्चिमी साइबेरिया में और छठा वर्ग तिब्बत, सीम्याग तथा मलाया में रहता है,
ये प्रजातियाँ चौड़े सिर वाली हैं।

(3) <u>ग्रिफिथ टेलर का वर्गीकरण</u> :- (classification By G. Taylor) :- टेलर ने सिर-घातांक तथा बालों की बनावट के आधार पर मानव प्रजातियों को 7 वर्गों में विभक्त किया।

(1) नैग्रिटो (Negrito) :-
(2) नीग्रो (Negro) :-
(3) आस्ट्रेलॉइड (Australoid) :-
(4) मैडिटरेनियन (Mediterranean) :-
(5) नॉर्डिक (Nordic) :-
(6) अल्पाइन (Alpine) :-
(7) मंगोलियन (Mongolian) :-

(1) <u>नैग्रिटो</u> (Negrito) :- (बहुत पतला सिर) :-

⇒ इस प्रजाति के लोग नाटे कद व काले तथा चॉकलेटी रंग के होते हैं इनकी नाक चौड़ी और बहुत चपटी होती है इस प्रजाति के लोगों का केश-घातांक लगभग 40 होता है, बाल सपाट और

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

छल्लेदार होते हैं, इनके चहरे का जबड़ा बाहर निकला हुआ होता है, यह प्रजाति दूरस्थ वनों और पर्वतीय प्रदेशों में निवास करती है,

- वर्तमान में विश्व में कुछ ही नीग्रिटो जीवित हैं। जो श्रीलंका, मलाया, फिलीपाइन व्दीप, और न्यूगिनी. अफ्रीका (कांगो प्रदेश के वनों में), युगाण्डा, केमरून, तथा अंडमान व्दीपों में रहती हैं।

(2) नीग्रो :- (Negro) :- यह प्रजाति बहुत लम्बे सिर वाली होती है, इनका सिर घातांक 70-72 तक होता है, इनके बाल बहुत लम्बे और ऊन जैसे होते हैं, इनका केश घातांक लगभग 50 से कम होता है।

- इनकी त्वचा का रंग काला या काजल के समान होता है जबड़े बाहर की ओर निकले हुए होते है। नासिका चौड़ी और चपटी होती है,
यह प्रजाति (i) अफ्रीका में सूडान और गिनी तट (ii) न्यूगिनी के पापुआ प्रदेश में निवास करती है।

(3) आस्ट्रेलॉइड - (Australoid) :- यह प्रजाति लम्बे सिर वाली होती है। जिसका कपाल घातांक 72 से 75 होता है, इनके बाल ऊन के समान घुंघराले होते हैं, इनका केश घातांक 50-60 होता है, इनकी त्वचा का रंग चमकदार काला तथा चॉकलेटी होता है, इनकी नाक मध्यम चौड़ाई की होती है
यह प्रजाति पूर्व आस्ट्रेलिया महाव्दीप पर निवास करते थे।, (ब्रिटिश उपनिवेश बनने से पूर्व)

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

परन्तु अंग्रेजों के आस्ट्रेलिया में जाकर बसने के बाद ये प्रजाति मरूस्थलीय क्षेत्रों में चले गये,

- यह प्रजाति मध्य व दक्षिणी भारत, उत्तरी अमेरिका, पूर्वी एशिया, दक्षिणी यूरोप, न्यू मैक्सिको में पायी जाती है।

(ii) मैडिटरैनियन प्रजाति :- (Mediterramean race) :-

इस प्रजाति के लोग लम्बे सिर वाले होते हैं। जिनका कपाल अनुपात 74 से 77 तक होता है, इनकी नाक अंडाकार, बाल, घुंघराले होते हैं इनका केश घातांक लगभग 70 होता है,

⇒ समय उपरान्त इस प्रजाति में निम्न परिवर्तन आये हैं,

(1) औरिगनेशियन :- सबसे प्राचीन मैडिटरेनियन ये छोटे कद के थे।

(2) आइबीरियन :- मध्य युग के मैडिटरेनियन इनका शरीर सुगठित और त्वचा रंग जैतुनी या कॉसे के समान था।

(3) सैमाइट्स :-

वर्तमान युग के मैडिटरेनियन इनका कद लम्बा, तथा नाक उभरी हुई है।

इस प्रजाति में ऐसे लोग है जिस प्रकार यूरोप में पुर्तगाली, अफ्रीका में मिस्त्री, आस्ट्रेलियाँ में माइक्रोनेशिया, उत्तरी अमेरिका में इरोकआॅय और दक्षिणी अमेरिका में तुपी हैं।

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

(5) नॉर्डिक प्रजाति (Nordic) :- इस प्रजाति के लोगों का सिर मध्यम होता है। जिनका कपाल अनुपात 78-82 तक होता है, इनके बाल लहरदार व कम घुंघराले होते है, इनका केश घातांक 70-75 तक होता है, नाक लम्बी तथा अग्रभाग चोंच के समान मुड़ी हुई होती है, इनकी त्वचा का रंग हल्का भूरा और कुछ गुलाबी होता है,

- यह प्रजाति यूरोप, एशिया, और अमेरिका, न्यूजीलैंड तथा आस्ट्रेलिया आदि क्षेत्रों में निवास करती थी, इस प्रजाति के कुछ अवशेष उ.प. अफ्रीका में मिले है,

(6) अल्पाइन प्रजाति (Alpine) :- इस प्रजाति का सिर चौड़ा होता है, तथा सिर घातांक 82 से 85 तक होता है, इनकी नाक पतली तथा केश सीधे और केश घातांक 75-80 होता है, त्वचा का रंग भूरा व श्वेत होता है, इनका चेहरा और जबड़ा एक सीध में होते हैं,

इस प्रजाति की दो शाखाएँ हैं

(i) पश्चिमी शाखा :- इसमें स्विस, स्लाव, आरमेनियन, तथा अफगान लोग हैं इनकी त्वचा का रंग श्वेत (गोरा) होता है,

(2) पूर्वी शाखा :- इसमें फिन्स, मंगयार, मन्चू, सिऑक्स, लोग आते है इनकी त्वचा कुछ पीली होती है, प्रागऐतिहासिक काल में इस प्रजाति का निवास उ. तथा द. अमेरिका व उत्तरी यूरेशिया में था।

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			
S	M	T	W	T	F	S

(7) मंगोलियन या मंगोलिक :- प्रजाति (Mongolian) :-

(बाद की अल्पाइन) ⇒ इस प्रजाति का सिर लगभग गोल होता है, इनका कपाल घातांक 85-90 तक होता है, इनके केश सीधे और गोल होते हैं केश घातांक 80 से अधिक होता है इनका जबड़ा भीतर की ओर चेहरा अवतल होता है इनकी नाक पतली होती है इनकी त्वचा का रंग पीला व खुबानी (कत्थई) होता है,

⇒ प्रागैतिहासिक काल में यह प्रजाति केवल एशिया के केन्द्रिय भाग में रहती थी। इसके बाद यह प्रजाति तुर्किस्तान तथा पूर्व में महाद्वीपीय तट तक फैल गई।

⇒ वर्तमान में इस प्रजाति में अल्पाइन, नॉर्डिक, और मैडिटरेनियन प्रजातियों का मिश्रण हो गया है जो चीन तथा उसके पड़ोसी प्रदेशों में पायी जाती हैं (जापान, वियतनाम)

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

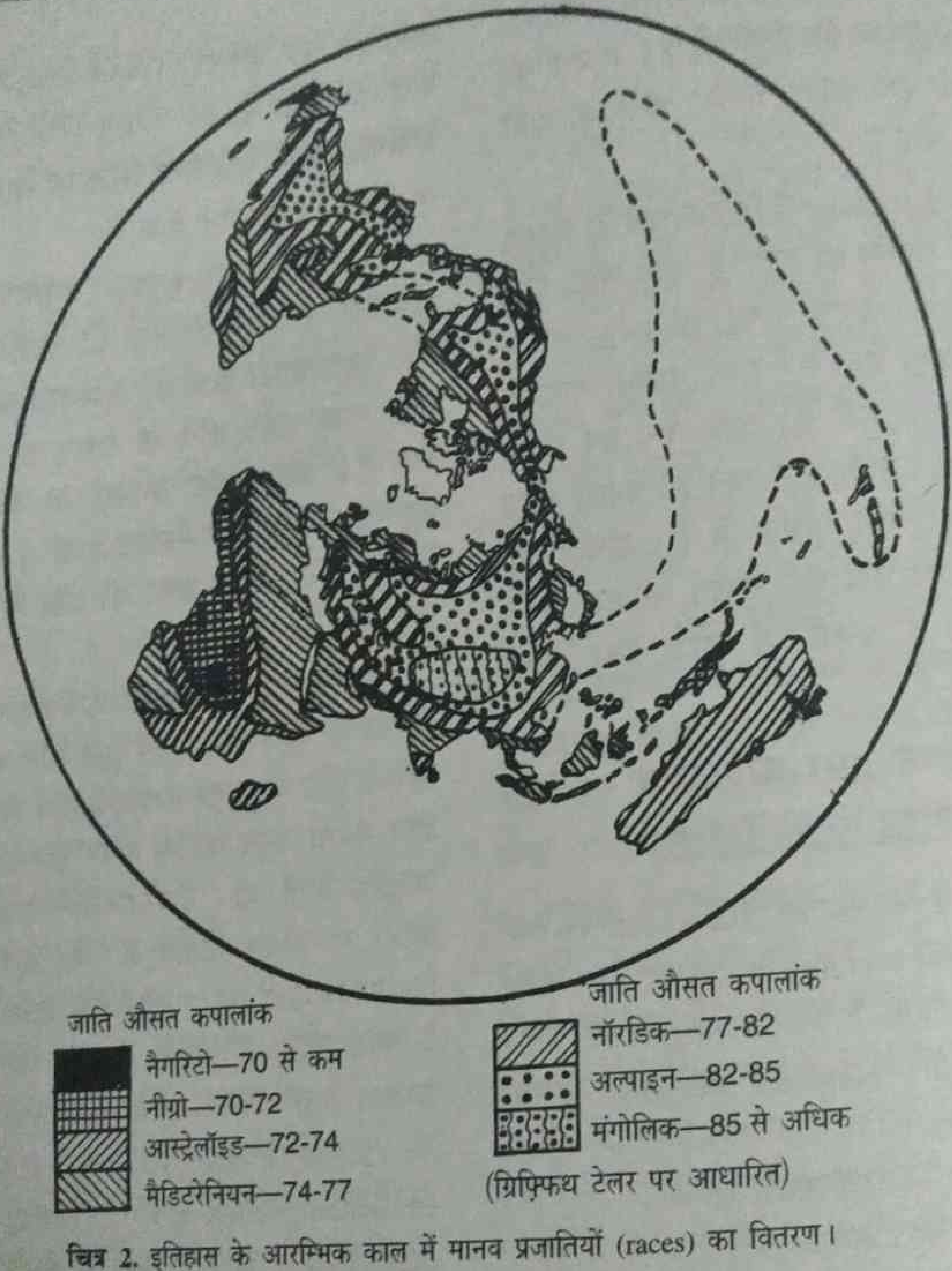

चित्र 2. इतिहास के आरम्भिक काल में मानव प्रजातियों (races) का वितरण।

लोग थे,

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

चित्र 3. विभिन्न प्रजातियों के शारीरिक लक्षण (टेलर पर आधारित)।

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

प्रश्न॰(1)
मानव प्रजाति के विकास के कारण पर टिप्पणी (2015)

उत्तर :-
मानव प्रजातियों में शारीरिक रचना के बाहरी गुणों के अन्तर उत्पन्न करने वाले कई कारण हैं। जिनमें मुख्य चार निम्न है।

(1) जलवायु के परिवर्तन
(2) ग्रन्थि-रसों के द्वारा परिवर्तन
(3) छाँट और जैविक परिवर्तन
(4) प्रवास द्वारा प्रजातियों का मिश्रण

(1) जलवायु के परिवर्तन :- (Climatic Changes) :- मानव प्रजातियों का विकास प्राचीन युग में तब हुआ था, जब उसके ऊपर ऐसी ही प्राकृतिक शक्तियों का नियन्त्रण रहता था। जैसी शक्तियाँ पशुओं के विकास को नियंत्रित करती है। इन प्राकृतिक शक्तियों में सबसे अधिक प्रभावशाली जलवायु है। एशिया महाद्वीप के जीवधारियों के विकास में जलवायु का कितना प्रभाव रहा है। कई वैज्ञानिको ने विश्लेषण किया है।

प्लीस्टोसीन :- युग में पाँच बड़े हिम-युग हुए थे। टेलर का मत है, कि समस्त मानव प्रजाति का विकास मध्य एशिया में उस समय हुआ था जब वहाँ की जलवायु गर्म थी।

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

उस काल में मध्य एशिया एक स्टेप प्रदेश था। जिसके उत्तर में वन पेटी थी तथा दक्षिण में पहले रेगिस्तान और फिर वन थे। उस काल में आदिम लोग सब शिकारी थे और जंगली पशुओं और जंगली फलों पर अपना जीवन - निर्वाह करते थे। हिम युग के आरम्भ होने पर वन तथा स्टेप प्रदेश दक्षिण की ओर खिसक गये। मनुष्य भी भोजन - सामग्री के प्रदेशों के खिसकने के कारण दक्षिण की ओर उष्णकटिबन्धीय प्रदेशों को प्रवास कर गया।

- हजारों वर्षों के बाद जलवायु की ठण्डी दशाएँ धीरे -2 समाप्त हुई और मध्य एशिया में गर्म जलवायु होने के कारण वनस्पति तथा जन्तुओं की पेटियाँ फिर उत्तर की ओर खिसक गई। मानव प्रजाति का बहुत बड़ा भाग वापस लौटा, परन्तु कुछ वहीं ठहर गये। दक्षिणी उष्णकटिबन्धीय प्रदेशों की जलवायु अब बहुत अधिक गर्म हो गई थी। इस उष्ण जलवायु का प्रभाव वहाँ ठहरी हुई मानव प्रजाति की शारीरिक रचना पर पड़ा। तेज गर्मी और धूप के कारण त्वचा का रंग काला होने लगा। इस प्रकार सर्वप्रथम प्रजातीय भिन्नता का आरम्भ हुआ।

जो लोग उष्णकटिबन्ध में ठहर गये थे, वे काले रंग, लम्बे सिर, मोटे होंठ वाले बन गये। और जो उस समय मध्य एशिया में रह रहे थे। उनका रंग कुछ उजला और सिर कुछ चौड़ा था।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

- उष्ण प्रदेशों में रहकर, नैगरिटो, नीग्रो, आस्ट्रेलाइड प्रजातियों के शारीरिक लक्षण जलवायु के अनुसार विकसित हो गये। इस प्रकार जलवायु का प्रभाव आने वाली संततियो मे भी वंशानुक्रम से चलता गया।
- इस प्रकार हिम युग के आगमन पर मनुष्य दक्षिण में भारतीय उपमहाद्वीप तथा अफ्रीका की ओर, पश्चिम मे यूरोप की ओर तथा पूर्व में अलास्का होते हुए, उत्तरी अमेरिका तथा वहाँ से दक्षिणी अमेरिका की ओर पलायन कर जाते थे। और 5 हिम युग आने का ज्ञान विद्धानों ने एकत्र किया। तथा 6 मानव प्रजातियों के विकास की बात निश्चित प्रतीत होती है।

(2) ग्रन्थिरस प्रभाव :-(Hormone Influence) :-

जलवायु उत्तेजना का प्रभाव मनुष्य के शरीर में रस निकालने वाली ग्रन्थियों पर होता है। शरीर मे कुछ ऐसी ग्रन्थियाँ हैं। जिनसे कुछ रासायनिक तत्वों, हारमोन्स का क्षरण होता है। इन ग्रन्थियों में पीयूष ग्रन्थि, पिनियल ग्रन्थि, थाइरॉयड तथा गुर्दो के समीप की ऐड्रिनल ग्रन्थि मुख्य है।

आर्थर कीथ :- का मत है कि पीयूष ग्रन्थि का असाधारण विकास होने पर ठोड़ी, नाक, और भौ बहुत बड़े हो जाते है। एड्रिनल ग्रन्थियों का प्रभाव त्वचा के रंग पर होता है। प्राचीन काल के आदिम मानव का आरम्भिक काला रंग इस ग्रन्थि के परिवर्तन

के साथ-2 बदलता गया है। थाइरॉयड ग्रन्थि यदि छोटी रह जाती है। तो उससे मनुष्य का कद छोटा रह जाता है। नाक और केश अविकसित रह जाते हैं। तथा चेहरा सपाट रहता है। मंगोल प्रजाति के मनुष्यों में इस प्रकार के लक्षण होते हैं। अफ्रीका की पिग्मी बुशमैन और हॉटेनटॉट प्रजातियाँ भी छोटे कद की हैं।

- जलवायु गर्म और तर एक युग में हुई फिर दूसरे युग में ठण्डी और तर थी। इस परिवर्तन से ग्रन्थियों और हॉरमोन्स में परिवर्तन हुए, जिनके कारण शरीर और चेहरे की आकृतियाँ भी बदल गई। इस प्रकार नीग्रो से मैडिटेरेनियन प्रजाति बनी। इसके बाद जलवायु शुष्क हो गई। जिससे ग्रन्थियाँ प्रभावित हुई और चौड़े सिर तथा सीधे बाल वाली अल्पाइन और मंगोलॉइड प्रजातियों का विकास हुआ।

(3) छाँट तथा जैविक परिवर्तन :- (Selection and Biological Mutations :- किसी प्रजाति के मूल शारीरिक लक्षण उसके वंश तत्वों में मिल जाते हैं। ये आगे की पीढ़ियों में जारी रहते हैं, परन्तु यह नहीं सोच लेना चाहिए. कि जो शारीरिक लक्षण सबसे आरम्भिक काल के मानव के थे, वे बिना किसी परिवर्तन के अब भी मौजूद हैं।

- वास्तव में प्रत्येक मानव-वर्ग के लक्षण प्राकृतिक छांट के द्वारा परिवर्तित होते रहते हैं

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

छाँट का सबसे मुख्य कारण प्रवास है। किसी विशाल मानव-वर्ग में विभिन्न प्रकार के स्वभाव और बुद्धिबल के मनुष्य होते हैं। जब किसी मानव-वर्ग का प्रवास होता है, तो मार्ग में बहुत-सी बाधायें और खतरे आते हैं। ये कमजोर व्यक्तियों को छोड़ देते हैं और दूसरों को आगे बढ़ा लेते हैं। इस प्रकार, दीर्घकालीन प्रवास के द्वारा शारीरिक लक्षणों में परिवर्तन हो जाता है।

उदा॰ मैडिटरेनियन प्रजाति प्रवास करके उत्तरी अमेरिका, एशिया तथा पोलोनेशिया गई और वहाँ उन प्रदेशों में दीर्घकालीन निवास के बाद उसके शारीरिक लक्षणों और निसर्ग में कुछ परिवर्तन हो गये हैं।

(4) प्रजातीय मिश्रण (Racial Mixture) :- प्रवास के द्वारा प्रजातियाँ विभिन्न महाद्वीपों को जाती रही है। कभी आक्रमण के लिये और कभी उपनिवेश बसाने के लिये प्रजातियाँ मिलती रही है।

- पारस्परिक सम्पर्क से विभिन्न प्रजातियों के पारस्परिक विवाह सम्बन्ध हुए और मिश्रित प्रजातियों का विकास हो गया। काली और गोरी प्रजातियों का ~~विकास हो गया~~ मिश्रण इसका स्पष्ट उदाहरण है। अमेरिका में नॉरडिक अल्पाइन तथा नीग्रोइड प्रजातियों की एक नई मिश्रित प्रजाति देखी जाती है, उपरोक्त कारणों से विश्व की विभिन्न मानव प्रजातियों का विकास हुआ है।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

प्रश्न. 1 'मानव प्रजातियों के विकास' सम्बन्धी ग्रिफिथ टेलर का वर्गीकरण एवं 'प्रवास कटिबन्ध सिद्धान्त' की व्याख्या कीजिए।, (2014) (2023)

प्रश्न. 2 मानव प्रजाति को परिभाषित कीजिये। प्रजाति विकास सम्बन्धी प्रवास कटिबंध सिद्धान्त का वर्णन कीजिये।, (2011)

Ans ⇒ प्रजाति विकास का प्रवास कटिबन्ध सिद्धान्त :- अथवा - कटिबन्ध - स्तर सिद्धान्त :- (ZONE STRATA THEORY):-

- ग्रिफिथ टेलर ने 1919 में मानव प्रजातियों के उद्भव और विकास से सम्बंधित एक सिद्धान्त प्रस्तुत किया जिसे प्रवास कटिबंध सिद्धान्त कहते है।
- इस सिद्धान्त के माध्यम से उन्होंने मानव प्रजातियों की उत्पत्ति और विकास की व्याख्या काल और क्षेत्र के संदर्भ मे किया। इन्होंने बताया कि सभी मानव प्रजातियों की उत्पत्ति महाहिमयुग (प्लीस्टोसीन युग) से पहले हो चुकी थी।
- इन्होंने समस्त मानव प्रजाति का उद्गम प्रदेश मध्य एशिया में कैस्पियन सागर का सीमावर्ती प्रदेश है।
- टेलर के अनुसार आदिकाल में जब मध्य एशिया की जलवायु मानव निवास के योग्य थी, वहाँ सर्वप्रथम नीग्रिटो प्रजाति का उद्भव हुआ।

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

- बाद में जलवायु परिवर्तन के कारण वहाँ की जलवायु अतिशीतल हो जाने पर वहाँ से मानव प्रवास बाहर की ओर हुए पुनः अंतर्हिमयुग में जलवायु मानव निवास योग्य होने पर वहाँ दूसरी प्रजाति (नीग्रो) विकसित हुई जो पहले से अपेक्षाकृत उन्नत थी।
- अगला हिमयुग आने पर नीग्रो प्रजाति भी बाहर की ओर स्थानांतरित हुई। इस प्रकार मध्य एशिया में हिमयुग के क्रमिक आगमन से मध्य एशिया में सात प्रमुख प्रजातियों का विकास हुआ जो हिमयुगों में बाहर की ओर हटती गयीं।
- बाद मे विकसित प्रजातियाँ पूर्ववर्ती प्रजातियों की तुलना में अधिक उन्नत और सबल थी।

✓ इस प्रकार मध्य एशिया से क्रमशः नीग्रिटो, नीग्रो, आस्ट्रेलियाई, भूमध्य सागरीय, नार्डिक, अल्पाइन और मंगोलाइड प्रजातियो का विकास हुआ।
- क्रमशः बाद में विकसित होने वाली प्रजातियाँ स्थानांतरण द्वारा अपने पूर्ववर्ती प्रजातियों को बाहर की ओर ढेलती गयी। इस प्रकार जिन प्रजातियों का विकास सबसे पहले हुआ था वे वर्तमान समय में महाद्वीपों के बाह्य कटिबंधों (सीमान्त क्षेत्रों) में पायी जाती हैं।

और बाद में ~~विकसति~~ विकसित होने वाली

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

प्रजातियाँ क्रमशः महाद्वीपों के भीतरी कटिबंधों में पायी जाती है।

टेलर के अनुसार यदि मध्य एशिया या अन्य भागों में खुदाई की जाय तो सबसे नीचे प्राचीनतम प्रजाति के अवशेष मिलेंगे और उसके ऊपर क्रमशः परवर्ती प्रजातियों के अवशेष मिलेंगे और सबसे ऊपर नवीनतम प्रजाति के अवशेष विद्यमान होंगे।

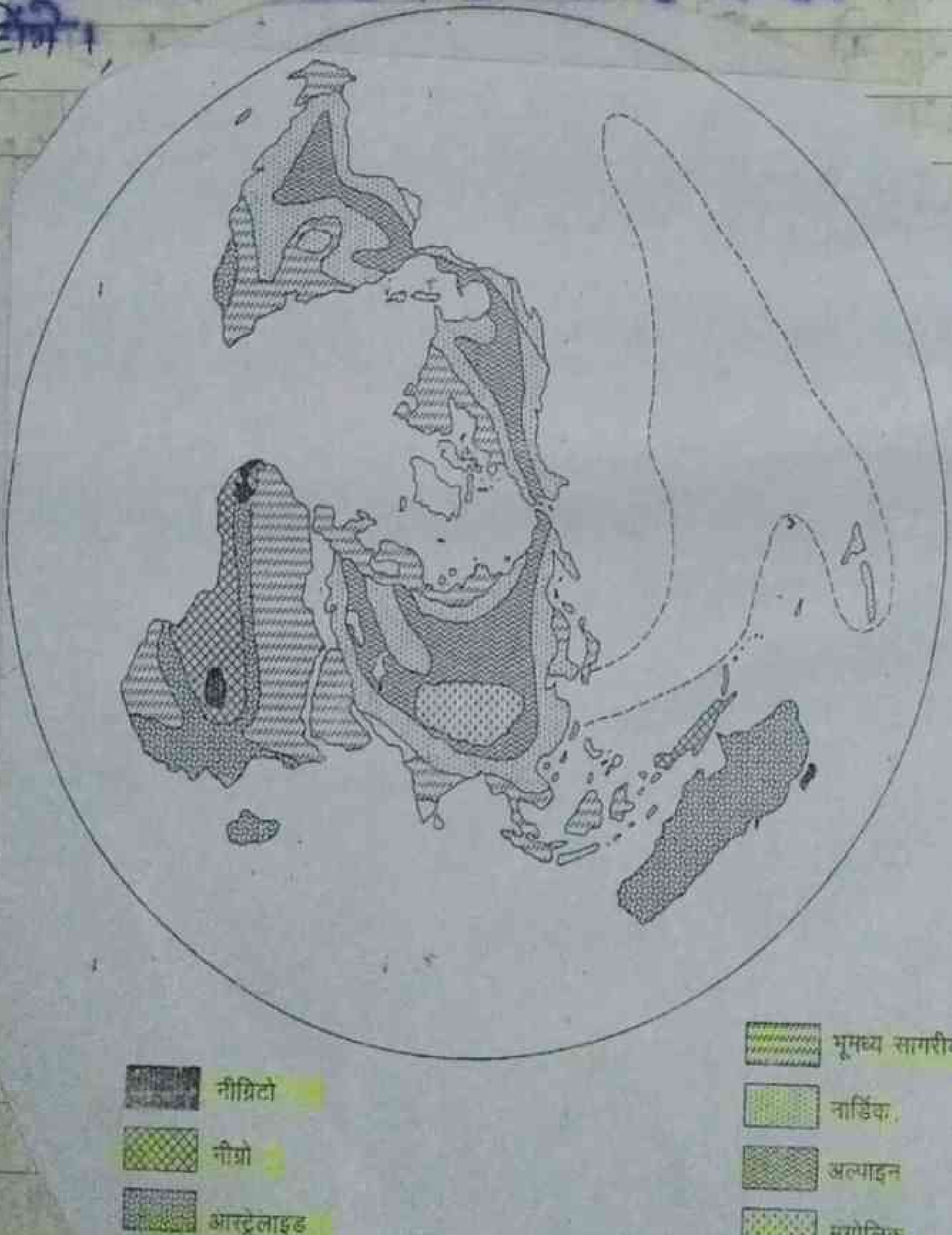

चित्र 15.2 ग्रिफिथ टेलर का प्रवास कटिबन्ध सिद्धान्त

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

- टेलर महोदय ने अपने सिद्धान्त को प्रस्तुत करते समय प्रजाति - सम्बन्धी तथ्यों को निम्नलिखित 8 साक्ष्यों और तत्वों के रूप में वर्णन किया है। जो निम्न है।

(1) पृथ्वी के विशाल भूखण्डों में :-

(A) एशिया केन्द्रीय महाद्वीप है।

(1) यूरैफ्रीका (2) अमेरिका एवं (3) आस्ट्रेलिया उसके प्रायद्वीप हैं।

(2) प्रत्येक प्रायद्वीप में प्रजातियों के कटिबन्ध हैं। जो एशिया से बाहर की ओर को अधिकाधिक आदिकालीन होते गये।

(3) प्रजाति विकास का प्रथम तत्व - जिसमें सबसे प्राचीन आदिकालीन प्रजातियाँ महाद्वीपीय किनारों की ओर खदेड़ी हुई पायी जाती है।

जैसे:- तस्मानिया, केप कॉलोनी, ग्रीनलैण्ड व ब्राजील में नैगरिटो प्रजाति।

(4) प्रजाति विकास का दूसरा तत्व:- इसमें सबसे अन्त में विकसित हुई प्रजातियाँ केन्द्र में पाई जाती हैं। जहाँ विकास को उद्दीपन करने वाली शक्तियाँ समस्त युगों में सर्वाधिक रही हैं।

(5) प्रजाति विकास का तीसरा तत्व:- जहाँ प्रजातीय विकास की प्रगति सबसे अधिक हुई है। वहाँ आदिम प्रजातियों के भूमि में दबे हुए स्तर सबसे अधिक है। दबे हुए साक्ष्यों में हड्डियों के अवशेष, औजार, शिल्प उपकरण,

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

स्थानों के नाम, लोक कथा आदि पाये जाते हैं,

(6) प्रजाति विकास का चौथा तत्व:-

विकास का क्रम दोनों ओर से एक ही रहता है, चाहे हम विकास केन्द्र से बाहर की ओर को जाते हुए कटिबन्धों को पार करें अथवा विकास केन्द्र में नीचे की ओर स्तरों को देखें।

(7) यह निष्कर्ष निकलता है कि आदिम प्रजातियाँ ठीक उन प्रदेशों में जीवित पायी जाती हैं। जहाँ पर उनका उद्‌भव नहीं हुआ था।

(8) यूरोप, अफ्रीका, दक्षिणी एशिया, और आस्ट्रेलिया से प्राप्त हुए, साक्ष्यों से प्रकट होता है। कि मध्य एशिया से अपकेन्द्री प्रवास रहा है। तुर्किस्तान तथा उसके आस-पास के क्षेत्रों (मध्य एशिया) से बाहर की ओर प्रजातियाँ गयी हैं।

टेलर महोदय के सिद्धान्त का सार यह है कि

(i) प्रजातियों का विकास मध्य एशिया में हुआ है।

(ii) सबसे पहले विकसित प्रजाति मध्य एशिया से अधिकतम दूरी पर मिलती है।

(iii) तथा बाद में विकसित प्रजाति अपने उत्पति स्थल के पास ही मिलती हैं।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

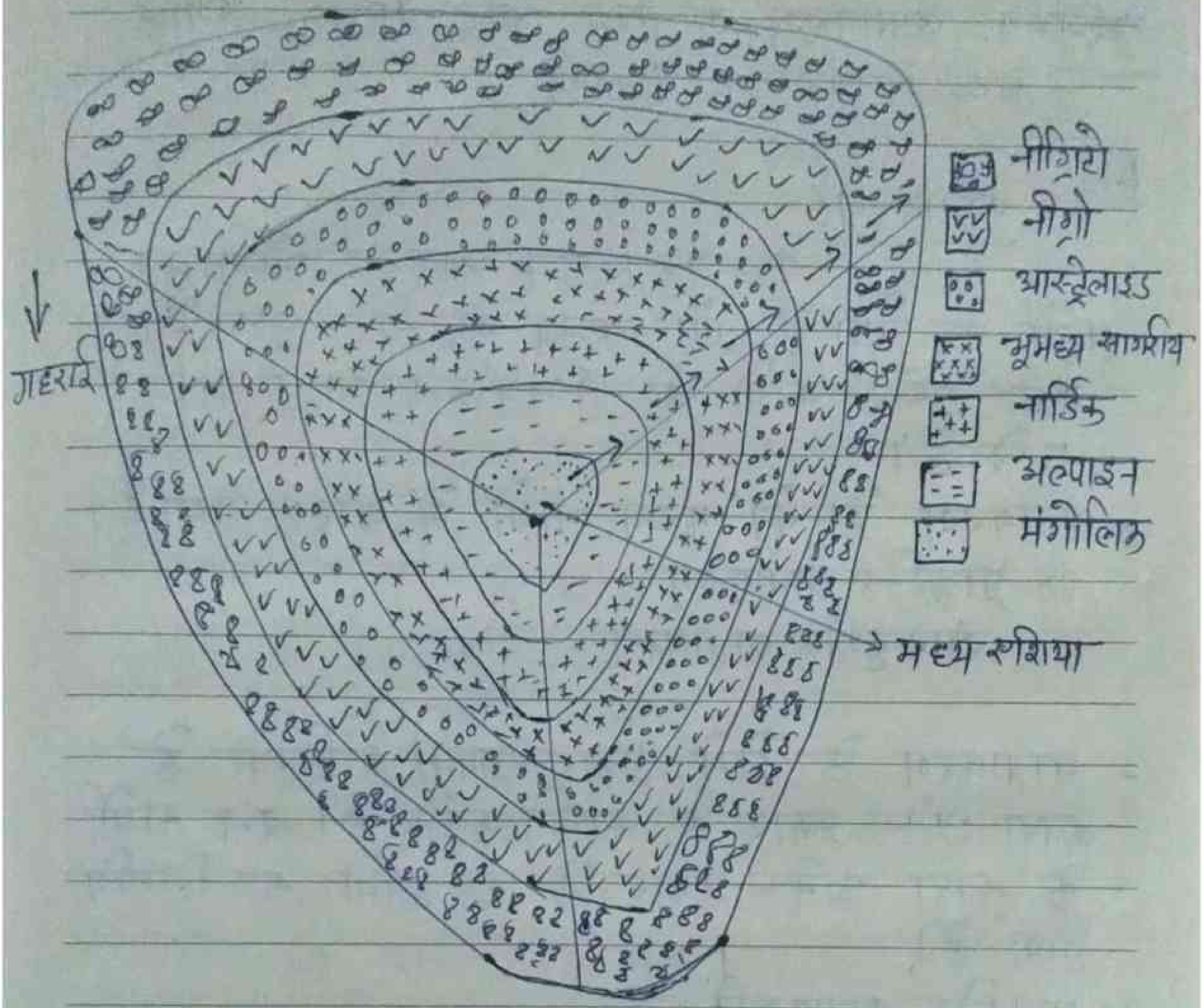

(कटिबन्ध एवं स्तर सिद्धान्त का आरेखीय प्रदर्शन

⇒ मानव के सांस्कृतिक विकास में निम्नलिखित जैविक विशेषताओं का विशेष योगदान है:-

(1) अंगूठे की अभिमुखचारिता
(2) सीधे - खड़े होने की क्षमता
(3) त्रिविम - दृष्टि
(4) जटिल - मस्तिष्क
(5) सम्प्रेषण की क्षमता -

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

Topic - ② (Human races in India and World.)

Date 46

Q.1 'पिग्मी' अथवा भील' के आवास, अर्थव्यवस्था और समाज पर एक भौगोलिक वृतान्त लिखियें (2017), (2018) (Unit - II, Unit-III)

Q.2. 'पिग्मी' अथवा 'नागा' जनजाति के आवास अर्थव्यवस्था एवं समाज ~~अथवा~~ व्यवस्था पर लेख लिखिए। (2014)

Q.3. नागा जनजाति के निवास स्थल पर (टिप्पणी) (2017)

Q.4. बुशमैन जनजाति पर (टिप्पणी) (2016) (2023)
↳ के आवास, सामाजिक संगठन और अर्थव्यवस्था का वर्णन (2022)

Q.5. 'मसाई' or 'संन्थाल' जनजाति के आवास, अर्थव्यवस्था एवं समाज व्यवस्था पर एक भौगोलिक लेख लिखिए। (2015) (उत्तर के Last में लिखे प्रश्न बाकी)

Q.1. Ans: पिग्मी (पिगमी) जनजाति ⇒

निवास क्षेत्र:-

मध्य अफ्रीका में छोटे कद के पिग्मी लोगों के निवास क्षेत्र बिखरे हुए मिलते हैं। इनका निवास 3° उत्तरी अक्षांशों से 3° दक्षिणी अक्षांशो के मध्य स्थित है।

- ये इतुरी नदी (बेल्जियम कांगो के पूर्वी भाग) के तटीय प्रदेश में निवास करते हैं, इनके अतिरिक्त अन्य कई पिग्मी वर्ग जो पश्चिम में गाबोन देश से लेकर पूर्व में युगाण्डा तक बसे हुए हैं,

- दक्षिण - पूर्वी एशिया में फिलीपीन्स के वनो

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

-16
-17

प्रश्न.6 भीलों के आवास, अर्थव्यवस्था और समाज पर एक भौगोलिक वृत्तान्त बताइयें। (2022)

में आमेटा तथा न्यूगिनी के वनों में भी कुछ पिग्मी वर्ग रहते हैं।

- पिग्मी लोगों के सभी निवास - क्षेत्र - विषुवतरेखीय जलवायु के वनों में स्थित हैं। जहां तापमान 28°c - 30°c के मध्य रहता है। तथा वार्षिक वर्षा 150 - 200 सेमी तक होती है। अधिक गर्मी और वर्षा के प्रभाव से वहा सघन वन हैं।

- पिग्मी वर्ग की विभिन्न उपजातियों का एक सम्मिलित नाम 'अचुआ' है, अचुआ की 4 उपजातियाँ हैं।

(i) म्बूती - विषुवत रेखा के उत्तर के क्षेत्रों में।
(ii) त्वा - विषुवत रेखीय मध्य पेटी में
(iii) बिंगा - दक्षिणी क्षेत्रों में
(iv) गेसेरा - दक्षिणी क्षेत्रों में

अर्थव्यवस्था:-
पिग्मी लोग आखेटक होते हैं, अतः ये स्थायी मकानों में निवास करने के बजाय आखेट की खोज में घूमते रहने के कारण अस्थायी मकानों में निवास करते हैं।

भोजन :-
पिग्मी लोगों का भोजन आखेट किये गये जन्तुओं का मांस तथा जंगली फल, कन्द-मूल आदि हैं।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

ये लोग न तो भूमि जोतते - बोते हैं और न पशु पालते हैं। परन्तु आखेट करने में ये लोग बहुत दक्ष होते हैं। और बड़े - से बड़े भीमकाय जन्तु हाथी तक को घेरकर मार डालते हैं।

NOH खाना - अधिक - ठुस - 2 कर) 60 कैलो

जन्तुओं के अलावा दीमक, चीटियां, गुबरैलों के डिम्ब, लारवों तथा मधुमक्खियों की सुंडियों और शहद को बड़े चाव से खाया जाता है।

(NOH) मछली पकड़ने में भी ये बड़े चतुर होते हैं। बिना कांटे की सहायता से ही ये मछली पकड़ते हैं। केवल एक डोरी में मांस का टुकड़ा बाँधकर पानी में फेंकते हैं और उसका लालच देकर बड़ी - बड़ी मछलियों को किनारे पर ले आते हैं।

- जंगल से अनेक प्रकार की जंगली सेम, फलियाँ, पालक और अन्य प्रकार के खाने योग्य शाक, छत्रक, आदि पदार्थ खाने को मिल जाते हैं।
- खाने - पीने और रहन - सहन में सिमी लोग बड़े गन्दे रहते हैं।
- केला इन लोगों का अत्यन्त प्रिय भोजन है। जिसको ये अपने पड़ोसी कृषक वर्गों से मांस, शहद, आदि के बदले मे प्राप्त कर लेते हैं। या कभी - 2 चोरी भी कर लेते हैं।

इनमें वस्तु विनिमय पाया जाता (वस्तु रख देते हो और मांस, कृषक उसके बदले केले / फल

Today

वस्त्र :- उष्ण आर्द्र जलवायु में वस्त्रों की आवश्यकता कम होती है। इसलिये पिग्मी पुरुष और स्त्री के तन पर केवल कमर से नीचे लटकती हुई किसी (पेड़ की छाल की पट्टी होती) है।

- परन्तु पुरुष किसी जन्तु की खाल को भी कमर के नीचे लटका लेता है। स्त्रियाँ पत्तों के गुच्छों को कमर से नीचे लटका लेती है।

निवास की झोंपड़िया और सज्जा :- (समाज)

ये लोग स्थाई नहीं रहते है। अत: ये लोग आदिम प्रकार की झोंपड़ियों में निवास करते है। इनकी झोंपड़ियों की आकृति मधुमक्खी के छत्ते की भाँति होती है। जिनका व्यास 2 मी. ऊँचाई 1.5 मीटर होती है झोपड़ी का प्रवेश द्वारा एक छिद्र के समान केवल 50 सेमी ऊँचा होता है जिसमें हाथ-पैरों से घुटनों के बल रेंगकर अन्दर जाते है।

- पिग्मी लोगों की सम्पत्ति में केवल तीरकमान, शाक पकाने का बर्तन, कमर में लटकाने का गज भर कपड़ा या खाल और झोंपड़ी में एक छोटी खटिया ~~छे खब~~ तथा पानी के लिये तुम्बी (gourd bottle) पर्याप्त होती है।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

प्रश्न10 पिग्मी पुरूष के गले में बाँस की बनी सीटी लटकी हुई होती है। इस सीटी से वह पक्षियों की बोलियों की नकल करता है। और जंगल में शिकार करते समय अपने साथी लोगों के मार्ग की जानकारी रखता है।

उत्तर आखेट :- छोटे जन्तुओं का आखेट एक व्यक्ति या दो व्यक्ति मिलकर कर लेते हैं। हाथी जैसे विशालकाय जन्तु का आखेट करने के लिये कई व्यक्ति साथ मिल जाते हैं। तथा विष तीरों का प्रयोग करते हैं।

व्यवहार :-

ये लोग कद में नाटे और शरीर से वजन में हल्के होते हुए भी, पिग्मी लोग बलवान, निर्भय और उत्साही होते हैं। वृक्षों पर तेजी से चढ़ने में ये लोग दक्ष होते हैं। ये लोग पानी मे घुसने को पसन्द नहीं करते हैं,

इनकी प्रेक्षण (observation) शक्ति बहुत तीव्र होती है। ये लोग हर समय खतरों के मध्य रहता है। अत: उसे हर समय चौकन्ना, सतर्क और जागरूक रहना पड़ता है, ये वृक्षों पर छिप जाता है।

ये कुशाग्रबुद्धि के होते हैं। इनकी स्मृति और नकल करने की शक्ति बड़ी प्रंशसनीय होती है।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

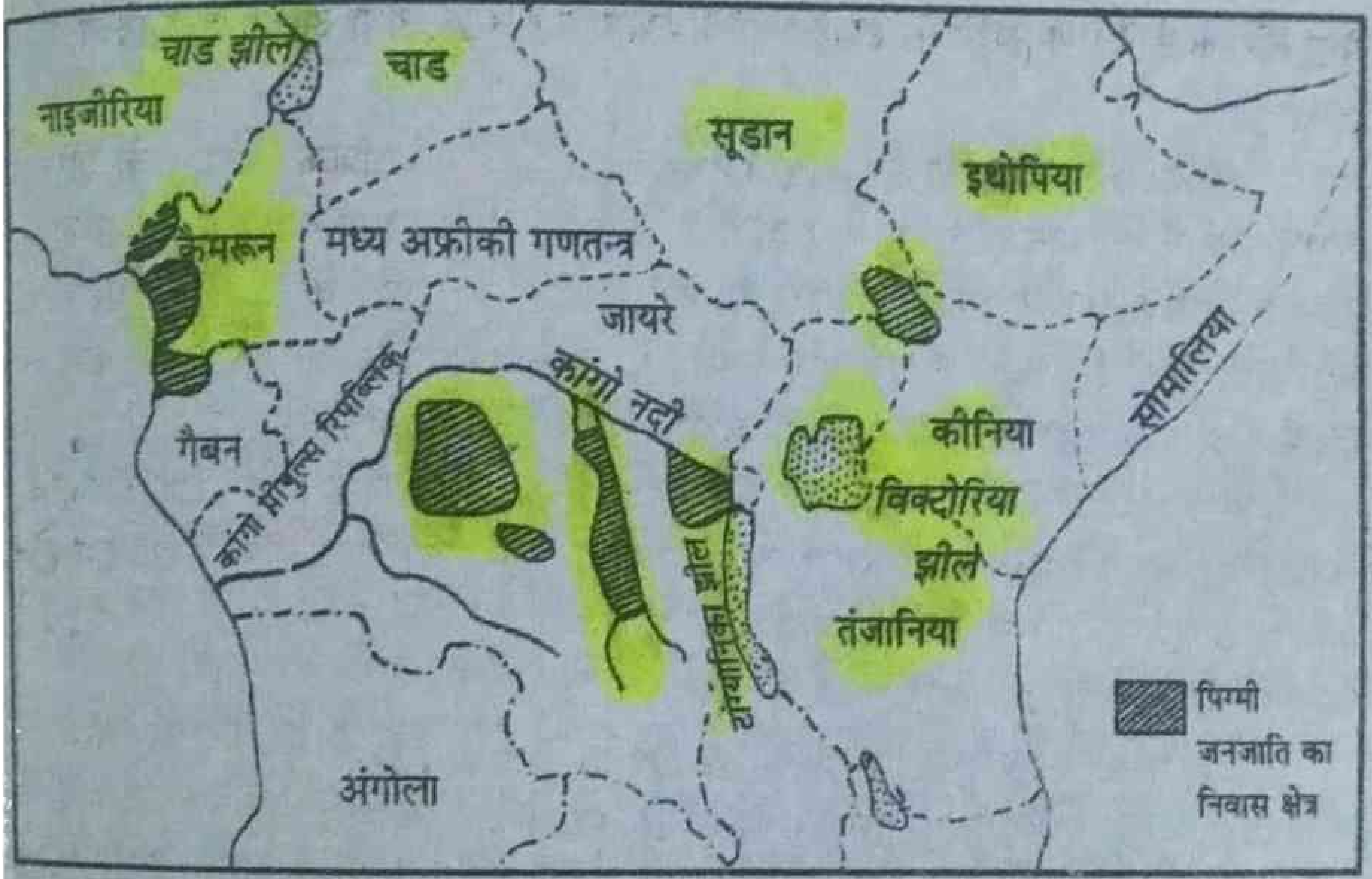

चित्र : 10.10 पिग्मी का निवास क्षेत्र

पिग्मी क्षेत्र का वातावरण—

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

परन्तु उस वातावरण में उसे बुद्धि विकास के द्वारा आर्थिक, सामाजिक, और सांस्कृतिक उन्नति करने का कोई अवसर नहीं मिला है।

- ये लोग भूत-प्रेतों में विश्वास करते हैं। इनकी सामाजिक अवस्था बिल्कुल अविकसित है। जो सफल और बढ़िया आखेटक होता है। उसी को छोटी-सी बस्ती का मुखिया मान लिया जाता है। नृत्य करने के ये बड़े शौकीन होते हैं।

Today

- यूरोपीय देशों के गोरे लोगों द्वारा उपनिवेश बसाये जाने के पश्चात् से पिग्मी लोगों की संख्या दिन-प्रतिदिन घटती जा रही है। पिग्मी लोग वनों में छिपे-छिपे रहते हैं। और वर्तमान सभ्यता के साथ ताल-मेल न बैठा सकने के कारण कम होते जा रहे हैं।

- यदि वर्तमान सभ्य मानव वर्ग ने इनकी रक्षा न की तो एक दिन यह वर्ग विलुप्त हो जायेगा।

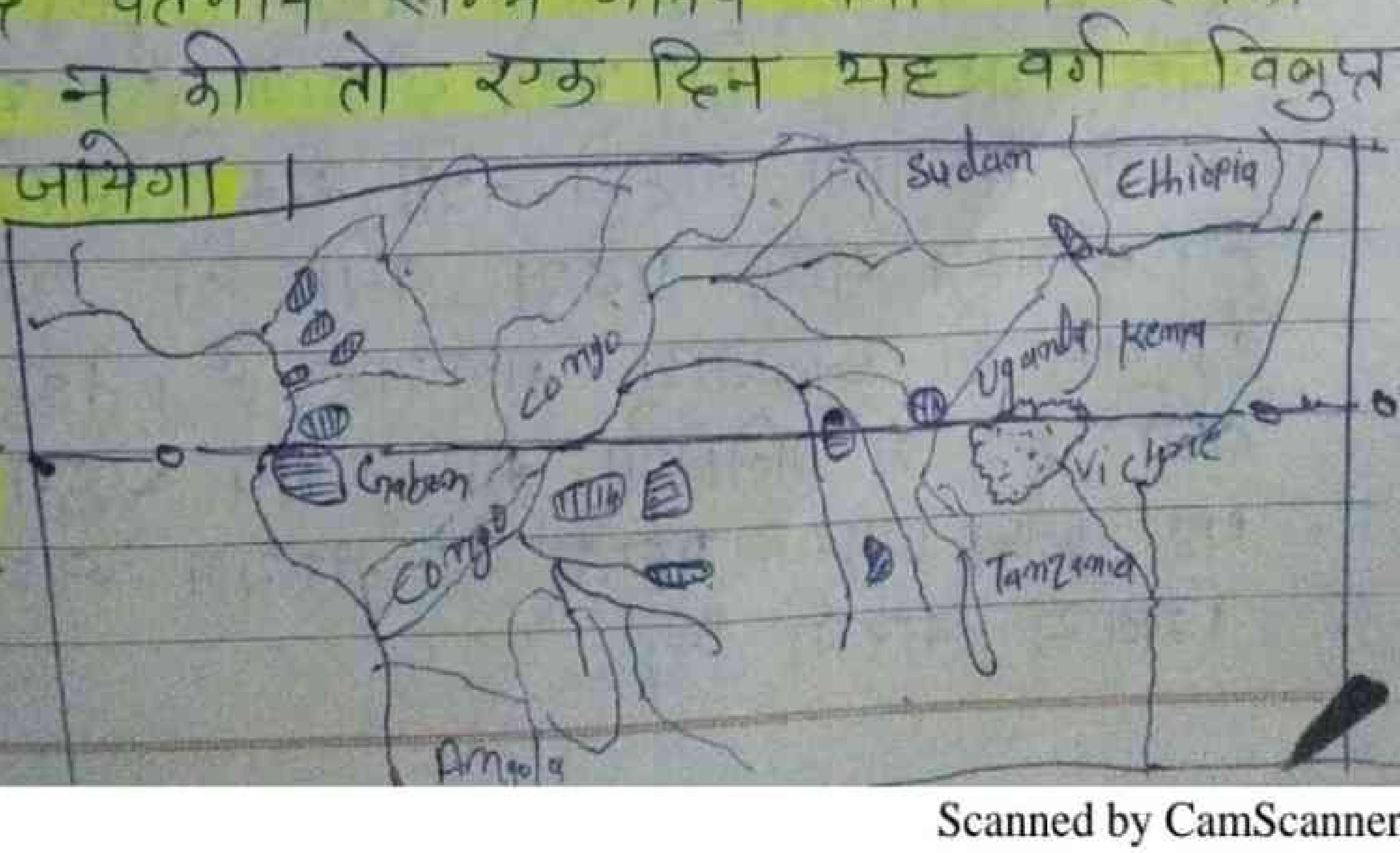

अफ्रीका में पिग्मी लोगों का निवास क्षेत्र

भील :-

भील ~~का~~ का शाब्दिक अर्थ :- 'तीर चलाने वाले व्यक्ति'

① निवास क्षेत्र :-

भील जनजाति भारत की एक बड़ी जनजाति है। इनका राजस्थान से लेकर मध्य प्रदेश के पश्चिमी भाग तक तथा दक्षिण में गुजरात एवं महाराष्ट्र तथा आन्ध्र प्रदेश के उत्तरी भागों तक पायी जाती है।

- भीलवाड़ इनका प्रमुख क्षेत्र है। ~~इस~~ इसके अतरिक्त बांसवाड़ा, डूंगरपुर, उदयपुर, सिरोही, चित्तौड़गढ़, आदि जिलों में मुख्य निवास है।

मानवशास्त्री :- इन्हे मुंडा जाति के वंशज मानते है।

इनका क्षेत्र राजस्थान में अरावली तथा मध्यप्रदेश व महाराष्ट्र में विन्ध्याचल तथा सतपुड़ा पर्वत शृंखला में फैला हुआ है।

अधिकांश धरातल ऊबड़-खाबड़, रेतीला, एवं पथरीला है। इन पहाड़ी शृंखलाओं के मध्य में उपजाऊ मिट्टी के छोटे-२

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

क्षेत्र भी मिलते है। माही, ताप्ती, एवं नर्मदा यहाँ की प्रमुख नदियाँ है।
यहा औसत तापमान शीतकाल में लगभग 10°c तथा ग्रीष्म काल में 40°c रहता है। औसत वर्षा उत्तरी - पश्चिमी भागों मे 50 cm तथा दक्षिणी भागों में 120 cm रहती है।
अत: उत्तरी भागों मे विरल तथा दक्षिणी भागों मे कुछ सघन वन पाये जाते है। जिनमें आम, जामुन, ढाक, सागवान, महुआ, पीपल, बड़, गुलर, कमरक, तथा बॉस के वृक्ष मिलते है। इन वनों मे हिरन, बकरी, तेंदुआ, लोमड़ी, खरगोश, गीदड़ तथा सरीसृप एवं पक्षी मिलते है।

(2) प्रजातीय विशेषता:- भील मध्यम कद के गठीले शरीर वाले होते है। नाक चौड़ी चेहरा गोल तथा चौड़ा एवं त्वचा का रंग हल्के भूरे से गहरा भूरा और बॉल घुंघराले होते है।

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

कुछ मानवशास्त्रियों का मत है कि भील जाति भारत की प्राक् - द्रविड़ जातियों मे से है। कुछ का अनुमान है कि इनके पूर्वज भूमध्यसागरीय प्रजातियों में से थे जलवायु के परिवर्तन के कारण प्रवास करके भारत आ गये।

③ अर्थव्यवस्था :-
पूर्व काल मे भील लोग अधिकतर पशुचारण, वनों की उपज और आखेट पर निर्भर करते थे।
- वर्तमान मे भी धनुष - बाण इनका प्रमुख हथियार है। परन्तु वर्तमान में ये लोग अधिकतर कृषि कार्य करते है। कुछ भेड़ - बकरिया पालते है तथा कुछ मुर्गी पालन करते है।
जो लोग पहाड़ियों और वन क्षेत्रों मे रहते है। वे मुख्यत: भेड़ - बकरी पालन व जंगल से छाल, गोंद, कन्दमूल आदि एकत्रित करने का कार्य करते है।

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

भील जो कृषि करते है। यह झूमिंग प्रकार की होती है।

(1) पहाड़ी ढालों पर की जाने वाली कृषि को 'चिमाता' तथा मैदानी या समतल भूमि पर की जाने वाली कृषि को

(2) 'दजिआ' कहते है।

कृषि में चावल, मक्का, ज्वार, तथा पपीता, बैंगन, आदि का उत्पादन किया जाता है।

वर्तमान मे ये लोग नगरों में जाकर नौकरी, मजदूरी करने लग गये है।

(4) **वेशभूषा:-**

इनके निवास क्षेत्र की जलवायु उपोष्ण है। यहाँ सूती वस्त्र पहने जाते हैं। ऊनी वस्त्र केवल शीतकाल मे (कम्बल) पहनते है।

पुरूष लोग कुर्ता, और धोती पहनते है। तथा सिर पर साफा बाँधते है।

भील स्त्रियों द्वारा काले व लाल रंग घाघरा पहना जाता उसे 'कछावू' कहते है।

भील पुरूषों द्वारा पहनी जाने वाली तंग धोती को ढेपाड़ा कहते है।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

स्त्रियाँ सूत का लहंगा और कुर्ती पहनती है। सिर पर सूती ओढ़नी होती है।

⇒ स्त्रियों को आभूषण का बड़ा चाव होता है। हाथों में हाथी दाँत के चूड़े और चाँदी के कड़े होते हैं। गले में चाँदी की हँसली, माला, माथे, पर चाँदी का बोरला तथा जंजीर, पैरो में चाँदी के कड़े, हाथों और पैरो की अंगुलियों में चाँदी के छल्ले होते है।

⑤ अवास :-

भीलों के घरो को 'कू' (Koo) कहा जाता है। भील लोग छोटे-2 गाँव बसाकर रहते है। जिनमें 25-250, तक घर बने होते है। बस्तिया प्रायः अर्ध-सघन या बिखरी हुई होती है। मकान मे 2-3 कमरे होते है।

मकान की दीवारें मिट्टी तथा बाँस के द्वारा और छत घास-फूँस के छप्पर के रूप में होती है। कुछ मकान पत्थर की दीवारों तथा खपरैल की छत से बने होते है।

- इन मकानों या झोंपड़ियों पर लौकी, तोरई, व सेम, की बेले चढ़ी रहती है घर के बाहर तथा अंदर खाली जगह में विभिन्न प्रकार की सब्जियाँ उगाई जाती हैं।

(6) समाज (रीति-रिवाज):- ये लोग परिश्रमी और ईमानदार होते है। ये चोरी करना धार्मिक पाप मानते है। इनमें बाल-विवाह की कुप्रथा नहीं होती है। विवाह से पूर्व लड़के-लड़कियों का पारस्परिक प्रेम समाज में वर्जित है। लड़का 20 वर्ष लड़की 18 वर्ष तभी विवाह होता है। इनमें - हठ विवाह, हरण विवाह, (कन्या अपहरण) परीक्षा विवाह, सेवा विवाह आदि पाये जाते है।

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

DATE: / /
PAGE NO.: 07

शीतलामाता, महादेव, राम, दुर्गा, हनुमान, गणेश,
भीलों में बहुत से देवी - देवताओं की पूजा की जाती है। ये कुछ अन्धविश्वासी होते हैं। भूत - प्रेत में विश्वास करते हैं। ये मृतकों का दाह - संस्कार करते हैं।
ये लोग मदिरा पान करते हैं। ये घरेलू मदिरा बनाते हैं जिसका उपयोग विवाह तथा उत्सवों में किया जाता है।
- केसरियानाथ (ऋषभदेव) के चढ़ी केसर का पानी पीकर ये कभी झूठ नहीं बोलते। घर आए शत्रु का भी सम्मान करते हैं। इनमें जातिगत एकता बहुत ही अधिक होती है।
इनको अजनबी द्वारा 'पाड़ा' कहने पर बहुत खुश होते हैं तथा 'कांडी' कह देने पर गाली मानते हैं।

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

DATE: / /

PAGE NO.: 08

- महाराणा प्रताप की यशगाथा के निर्माण में भील आदिवासियों का योगदान अविस्मरणीय है। मेवाड़ राज्य की रक्षार्थ किए गए भीलों के त्याग एवं स्वामिभक्ति के कारण ही इस राज्य के राज्य चिह्न में चित्तौड़ के किले में एक ओर राजपूत राजा तथा दूसरी ओर भील राजा का चित्र अंकित है।"

(7) विकास एवं परिवर्तन :- स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद से भील जनता के विकास के लिए सरकार की ओर से अनेक योजनाओं को कार्य में लाया गया है। निम्न हैं।

(i) शिक्षा और नौकरियों में भीलों को आरक्षण प्राप्त है।

(ii) गाओं में भीलों को सरकारी कृषि भूमि पट्टों पर दी गयी है। तथा विकास खण्ड के द्वारा स्थापित कृषि सेवा

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

केन्द्रो के कारण इनकी कृषि-कार्य में रुचि बढ़ी है।

(3) वर्तमान में भीलों ने मुर्गी-पालन के क्षेत्र में बहुत विकास किया है। अतः भीलों के पास बड़े-2 मुर्गीफार्म है।

(4) महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश, तथा मध्यप्रदेश के भीलों ने मछली व्यवसाय में काफी विकास किया है। ग्राम समाज के तालाबों पर अधिकांश: भीलों का अधिकार है।

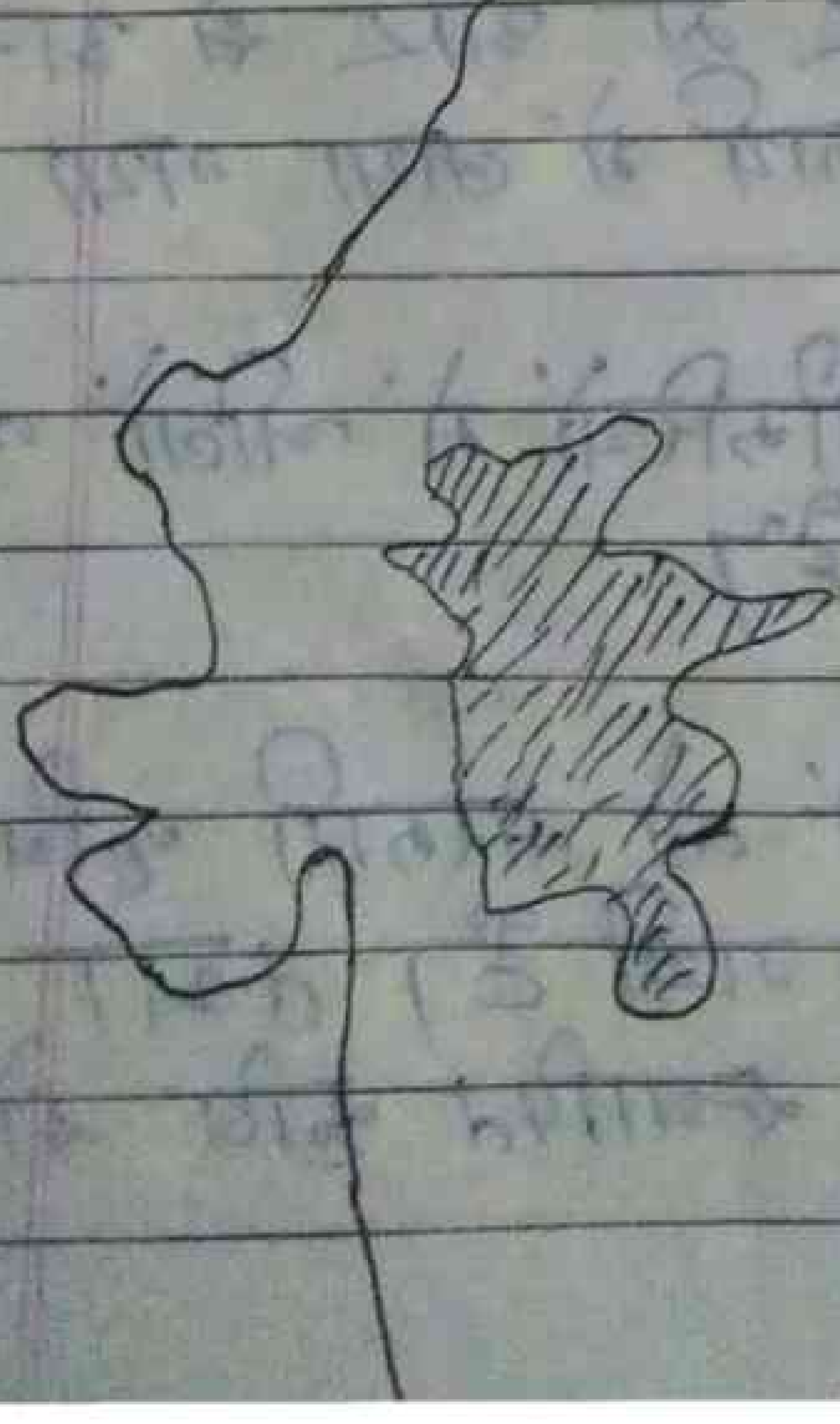

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

(3) नागा :- (Nagas) - (2017, 2021)

निवास क्षेत्र:- नागा जातियों का मुख्य निवास नागालैंड है। इसके अतिरिक्त पटकोई पहाड़ियों में, मणिपुर तथा मिजोरम के पहाड़ी भागों में, असम और अरूणाचल में नागा जातियों के कुछ लोग रहते हैं।

अरूणाचली तथा आसामी नागाओं के पाँच बड़े उपवर्ग निम्न हैं।

(1) उत्तर में रंगपण और कोन्यक
(2) पश्चिम में रेंगमा, सेमा, और अंगामी,
(3) मध्य में आओ, लोहता, फोम, चग, आदि।
(4) दक्षिण में कचा और काबुई
(5) पूर्वी क्षेत्रों में तेंगखुल और काल्यों-केंगु।

- नागालैण्ड एक पर्वतीय प्रदेश है। इसके उत्तर पूर्व में पटकोई पहाड़ियाँ तथा दक्षिण में मणिपुर और अराकान की पर्वत श्रेणियाँ हैं। यहा नदियाँ तीव्रगामी, गहरी तथा संकरी घाटियों वाली हैं। समस्त नागा प्रदेश वनों से आच्छादित है। यहा की जलवायु गर्म तर है। तथा वर्षा ऋतु में मलेरिया का प्रकोप रहता है। यह जातियां पहाड़ों के मध्यम भागों पर निवास करती है।

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

यहाँ सामान्य तापमान २६°C तथा वार्षिक औसत वर्षा २५० सेमी है।

अर्थव्यवस्था :-

① आखेट :- पहाड़ी तथा मैदानी नागाओं की शिकार करने की विधियाँ विभिन्न हैं। ये लोग जंगली जानवरों को खदेड़कर नदियों के खादर में लाकर, भालों से मारना सभी नागाओं में प्रचलित है।

ये लोग शिकार में तीर कमान, भालों तथा दाव (hand axe) का प्रयोग करते हैं। इनका प्रिय हथियार दाव है। जो ~~जंगल~~ की लकड़ी काटना, मार्ग साफ करना, गृह निर्माण और आक्रमण कार्यों में उपयोगी होता है।

- मणिपुर के मारम नागाओं द्वारा तीरों पर विष लगाने की प्रथा बहुत प्रचलित है।
- आखेट के नियम सभी नागाओं में कठोरता के साथ माने जाते हैं।

जैसे :- कृषि के समय कोई भी नागा शिकार नहीं कर सकता।

- यदि किसी अन्य गाँव की सीमा के अन्दर शिकार किया जाता है। तो दूसरे गाँव के लोग भी शिकार में भागीदार होते हैं।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

(ii) मछली पकड़ना (Fishing) :- मछलियाँ पकड़ने का कार्य पहाड़ के निचले भागों में, नदियों और तालाबों के किनारे, जालों, टोकरों और भालों की सहायता से होता है।

Today 6-08

(iii) कृषि कार्य :- ये ~~सभी~~ सीढ़ीनुमा पट्टियों में कृषि ~~करती~~ करते हैं। परन्तु उत्तर- पश्चिमी क्षेत्र में अभी तक स्थान परिवर्ती (झूमिंग कृषि) कृषि की जाती है।

23/10 ये लोग जंगलों को काटकर तथा जलाकर साफ की गई भूमि में एक स्थान पर दो या तीन वर्ष कृषि की जाती है। बाद कुछ समय (9 या 10 वर्ष) भूमि को खाली छोड़ देते हैं।

- सिंचाई के समय इन लोगों में बहुधा झगड़े भी होते हैं।
- ये पहाड़ी धान, मंडवा, कोटू, तथा पहाड़ी मोटे अनाज एवं कपास ~~हैं~~ की कृषि करते हैं।

(iv) कुटीर उद्योग :- (Cottage industry) :- इनका मुख्य कुटीर उद्योग मोटे कपड़े बुनना है। नागा उपवर्गों में श्रम विभाजन का पालन किया जाता है।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

जैसे- कुछ लोग कपास ही उगाते हैं। कुछ नागा केवल सूत ही कातते हैं। कुछ केवल कपड़ा बुनते हैं। तथा कुछ लोग मिट्टी के बर्तन बनाते हैं। इन सभी वर्गों द्वारा टोकरियाँ तथा चटाइयाँ बनाई जाती हैं।

लुहार को बहुत आदर पूर्वक से देखा जाता है। जों इनके कृषि व शिकार करने के औजार बनाता हैं। ये लोहा गलाने के लिए लकड़ी के कोयले का प्रयोग करते हैं।

(४) भोजन :- (Food)

इनका मुख्य भोजन चावल है। परन्तु यह अधिक मात्रा प्राप्त नहीं होता है। जिससे ये लोग कन्द-मूल, फल, मांस (कुत्ता, बकरी, भेड़, साँप, मेंढक) का प्रयोग भोजन में करते हैं।

नागाओं में अनेक प्रथाएँ मानी जाती हैं। जैसे-

(1) मारम नागा सूअर नहीं पालते हैं।
(2) टेंगरखुल नागा बकरी नहीं पालते तथा बकरी का मांस और दूध प्रयोग नहीं कर सकते,
(3) कपड़ा बुनने वाले नागाओं में नर जानवरों का मांस कुआरी लड़कियों को खाने के लिए नही दिया जाता है।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

(vi) वेशभूषा:- (clothing):-

भिन्न-2 नागा वर्ग विभिन्न प्रकार के कपड़े पहनते है। कपड़ों का चयन उनकी उपलब्धि और मुखियों के आदेश से होता है।

ये अपने शरीर पर शेर, चीता, तीरकमान के चित्र गुदवाने की प्रथा है। मेलों और पर्वों के समय सभी अच्छे कपड़े पहनते हैं। कुछ नागा लोग सिर पर सींग और पक्षियों के पर बाँधते है। ये लोग नृत्य करते समय चीते और रीछ की खालों का प्रयोग करते है।

- सड़कों पर कार्य करने वाले नागा लोग काली लुंगी का प्रयोग करते हैं।
- सभी वर्गों की स्त्रियाँ गले में कौड़ी और मूँगे, मोतियों की मालायें पहनती हैं।
- बहुत से लोग पशुओं के बालों तथा बेलपत्तों के सिर पर हैट पहनते हैं।

Today

(vii) मानव अधिवास:-

नागा लोगों के ग्राम में 200-250 तक भवन पाये जाते है। इनके गाँव के आस-पास कृषि योग्य भूमि उपलब्ध हो तथा जल का कोई स्थायी स्त्रोत हो।

इनके भवन छप्परों के बने होते है। ~~जो शहतीरों~~ ये छप्पर पाइन वृक्ष के शहतीरों पर टिके हुए होते हैं।

24/10 57

भवन (मकान) में दो त्रिभुजाकार दरवाजे होते हैं। सामने का दरवाजा बड़ा तथा पीछे का छोटा होता है। धनी नागा अपने घरों पर सींग और तुर्रे लगाते हैं। दरवाजों पर बालों वाली खालों को लटकाते हैं।

- जिस स्थान ये लोग नृत्य करते हैं वहा एक वृत्ताकार ईटो का घेरा बना होता है। मारम नागा अपने घरों का द्वार पश्चिम को नहीं बनाते, क्योंकि पश्चिम से शीतल वायु आती है।

नागा लोगो के आपसी झगड़ों को 'टेबो' (Tabo) सुलझाता है।

- इनके प्रत्येक गाँव में, गांव के पास मुख्य मार्गो पर एक या अधिक - बड़े - बड़े हॉल होते हैं। इन्हे 'मोरंग' कहते हैं।
- गाँव के सभी अविवाहित युवक इस 'मोरंग' में रहते हैं।

. इस मोरंग के कई उद्देश्य हैं।

(i) आक्रमण से सुरक्षा
(ii) परस्पर मेल - जोल,
(iii) धर्म गुरुओं द्वारा सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रशिक्षण देना।

समाज - व्यवस्था:-

नागा जाति में सम्मिलित परिवार-प्रथा प्रचलित है। कृषि के कार्यो में स्त्रियाँ भी पुरुषों के साथ कार्य करती हैं। आखेट करना केवल पुरुषों का काम है। प्रत्येक गाँव में

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

मुखिया होता है।

- विवाह के लिए स्त्री प्राप्त करने के लिये लड़की के संरक्षको को कुछ धन दिया जाता है, तथा विवाह के समय पशु-बलियाँ ~~को~~ दी जाती हैं। और दावते और नृत्य-गान होते है। इस जाति में बाल-विवाह नहीं होते है,

27-08

जादू-टोना:-

ये जातियाँ देवात्मा या देव शक्ति में विश्वास करती हैं।

- इनका विचार है कि संसार के पंचतत्वों के अतिरिक्त एक सूक्ष्मतर शक्ति और है, जो व्यक्ति को जीवन और बल प्रदान करती है। तथा जो एक विशेष समय और विशेष स्थान पर विशेष जाति में एक निर्धारित मात्रा में होती है।

- फसल का उत्पादन अधिक या कम होना देवात्मा की शक्ति क्षीण होने पर निर्भर माना जाता है,

- इसलिये ये जाति आपत्तियों से बचने के लिए ~~शिकार करके और~~ खोपड़ियों को घर में रखकर क्षीण शक्ति को पुन: प्राप्त कर सकता है, ~~ये लोग जादू-टोने में बहुत विश्वास करते है,~~

2019

विकास एवं परिवर्तन:-

भारत की स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद से, नागा लोग अन्य लोगों के सम्पर्क में

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

आये हैं। और इनमें शिक्षा का प्रचार बढ़ रहा है। अन्य जनजातियों के तुलना में नागा जाति ने तेजी से विकास किया है। नागा लोग सरकारी नौकरियाँ कर रहे हैं। तथा अपने राज्य में की सरकार चला रहे हैं। कृषि को स्थाई किया जा रहा है। तथा मछली पालन तथा मुर्गी पालन का व्यावसायिक स्तर पर विकास किया जा रहा है।

- अधिकतर नागा लोग ईसाई बन गये हैं। इन लोगों में राजनीतिक जागृति होने से भारत के अन्य राज्यों की भाँति नागालैंड एक अलग राज्य बन गया है।

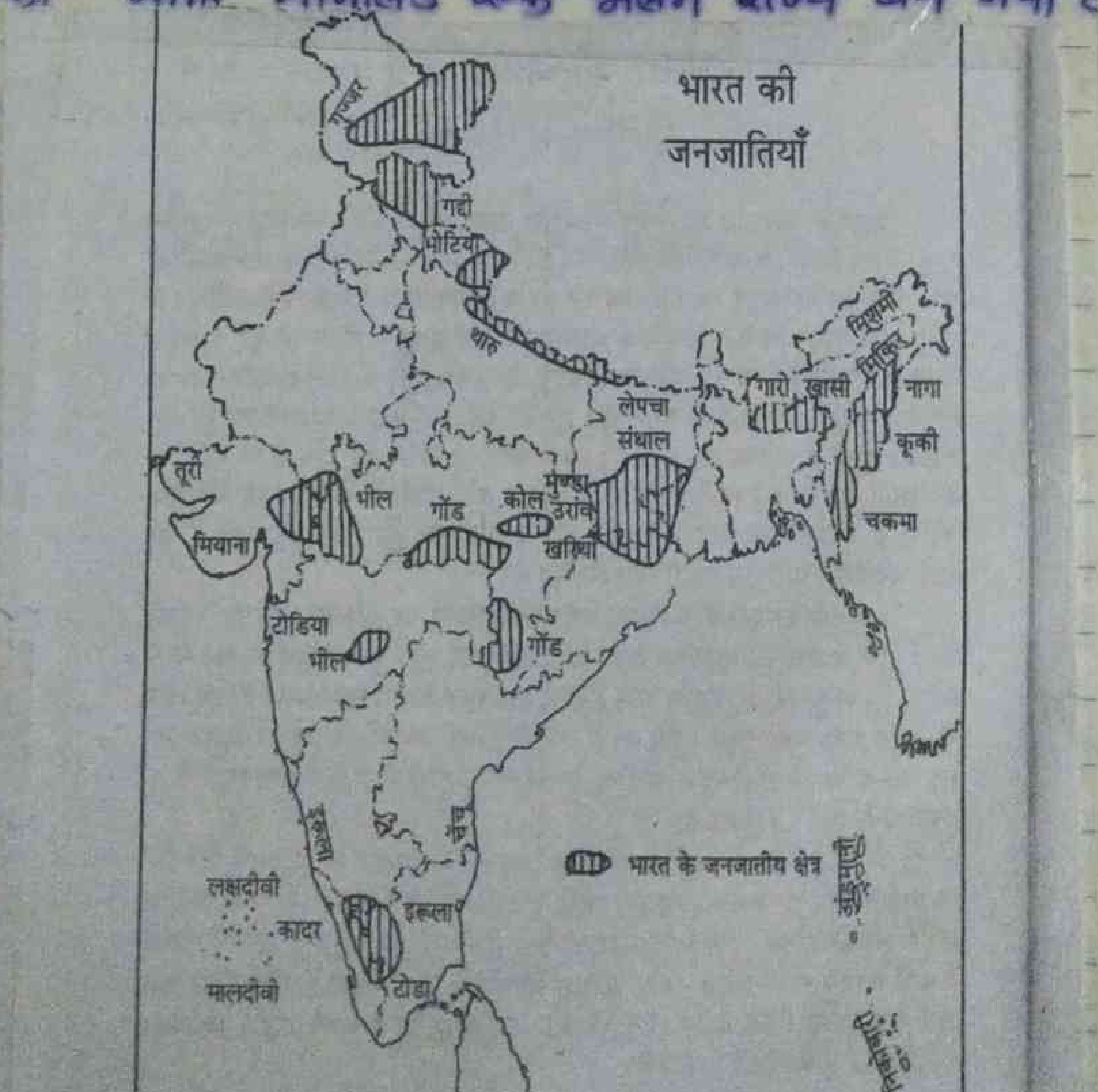

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

प्रश्न • बुशमैन जनजाति के आवास, सामाजिक संगठन और अर्थव्यवस्था का वर्णन कीजिए (2022)

Date 60

Q.4:- बुशमैन जनजाति पर (टिप्पणी) (2016)

Ans:- (i) निवास क्षेत्र :- (Habitat) :- यह उष्ण मरुस्थल के निवासी है। दक्षिणी अफ्रीका के कालाहारी मरुस्थल मे आखेटक बुशमैन निवास करते है।

यह लोग 18° द• अक्षांश से 25° द• अक्षांश तक बेचुआनालैंड में स्थित है। ये यहा ओकावांगो नदी तथा न्गामी झील के दलदली क्षेत्र और लिम्पोपो नदी तथा नोसोब नदी के क्षेत्रों मे बिखरे हुए है,

- बुशमैन निवास प्रदेश की जलवायु उष्ण मरुस्थली प्रकार की है। (दक्षिणी गोलार्द्ध) यहा औसत तापमान 22°C रहता है। (गर्म महीना जनवरी, ठण्डा महीना जुलाई) तथा वार्षिक वर्षा 50 cm से 85 सेमी तक होती है। (वर्षा ऋतु - दिसम्बर - फरवरी)

यहा प्राकृतिक वनस्पति में घास, झाड़ियाँ, बबूल, कीकर, कुछ फलदार वृक्ष होते है।

~~शुष्क क्षेत्रों मे तरबूज होता है। जिसे जल के मानव पशु सभी उपयोग करते है।~~

- यहा पीने योग्य जल का अभाव सा रहता है। नदियों में जल बहुत कम होता है। झीलों मे वर्षा काल में जल भर जाता है। जल सूखने पर इन झीलों की तली पर नमक की पपड़ियाँ रह जाती है।

- मच्छर अधिक होने से, मलेरिया, कालाज्वर, पेचिस, आंत्र ज्वर, न्यूमोनिया तथा इन्फ्लूएन्जा आदि रोग होते है।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

(i) आखेट के जन्तु:-

कालाहारी में आखेट के जन्तु बड़ी संख्या में पाये जाते हैं। यह मुख्यत: ओकावांगो के दलदलों में और न्गामी झील क्षेत्र में पाये जाते हैं। इन क्षेत्रों वर्षा के बाद घास उत्पन्न हो जाती है। इन जन्तुओं में हिरन, जंगली बकरी, जंगली भेड, कोडू, ब्लेसबोक, ओरिक्स जैम्सबॉक, ग्नू, जेबरा, जिराफ, शेर, जरख, जंगली कुत्ते, भेड़िये, खरगोश, चूहे, चमगादड़, गिलहरी तथा विभिन्न पक्षियों बतख, जलमुर्गी, अबाबील, गौरैया, उकाब, चील, बाज, गिद्ध आदि जीव होते हैं। इनके अतरिक्त - रेंगने वाले जन्तु, ~~कीड़े मकोड़े~~, दीमक, चींटी आदि भी होते हैं।

(ii) भोजन (Food):-

इन लोगों का भोजन आखेट के जन्तुओं और पक्षियों से, मछलियों से, तथा जंगली वनस्पति के कन्दमूल, गांठें, फलों तथा शहद से प्राप्त होता है।

ये लोग बड़े चतुर शिकारी होते हैं, इनकी दृष्टि तीव्र होती है। बिना आखेट इनका जीवित रहना अत्यन्त कठिन होता है।

- शिकार के पशुओं को पहले घायल कर देते हैं और बाद में उनका पीछा करके उनको घेरकर मार डालते हैं।
- इन लोगों को मरुस्थल में वनस्पति से कम भोजन प्राप्त होता है। इसलिये ये लोग जन्तुओं पर

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

निर्भर रहते हैं।
जंगली तरबूज-त्सामा,
- स्त्रियाँ प्रायः जंगल से कन्दमूल, बेर, कीड़े-मकोड़े, मेंढ़क, कछुए, गिरगिट, छिपकली, आदि ~~मारकर~~ लाती हैं।
- पुरुष लोग शिकार मार कर लाते हैं। ये शिकार पर किसी सम्बन्धी तथा कुत्ते को भी साथ लेकर जाते हैं। ये लोग छिपकर शिकार करते हैं। ये लोग जन्तुओं की ~~बोली~~ अवाज की नकल करने में बड़े दक्ष होते हैं। सम्मिलित शिकार करने के बाद आखेट किये गये जन्तुओं को आपस में बाँट लिया जाता है।
- ये लोग सर्वभक्षी होते हैं। एक बार में एक व्यक्ति आधी भेड़ खा जाता है। इन लोगों का खान-पान बहुत गन्दा होता है। (भोजन ताजा व बासी दोनो तरह चल जाता है)
- जब इनको बहुत-सा शिकार मिल जाता है। तो खुब दावतें मनाई जाती है, और जब शिकार नहीं मिलता तो भूखे रहते हैं। (क्योंकि मांस ज्यादा समय लिए सड़ जाता है) भोजन की कमी शुष्क ऋतु में होती जिससे इनका शरीर सिकुड़ जाता है। (इस समयं पशु अन्य क्षेत्रों के चरागाहों में चले जाते हैं)
- इन दिनों वह अपने शरीर को ढकने वाली खाल को ही चबाने लगता है। अगस्त में भूमि के ऊपर का जल सुख जाता है। तब ये त्सामा तरबूज और कुछ गाँठदार जड़े - 'बी' तथा 'मा' से जल + भोजन दोनो प्राप्त हो जाते हैं।

8-0

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

(E)

Today: Date 63

(iv) वस्त्र :- (Clothing):- बुशमैनों के शरीर पर बहुत कम वस्त्र होते हैं, जो खाल के बने होते हैं। दिन के समय पुरुष व स्त्रियाँ कमर पर खाल का टुकड़ा बाँधते हैं,

- सिर सभी के नंगे रहते हैं। पैरों में खाल की या छाल की चप्पल पहनते हैं। रात्री में खालों का बना कम्बल ओढ़ते हैं।
- ये लोग शरीर पर एक प्रकार का लेप मलते जो चर्बी में लाल या सफेद मिट्टी मिलाकर बनाया जाता है। क्योंकि ये लोग कभी भी स्नान नहीं करते हैं। इसलिए शरीर पर मला लेप धूप और कीड़ों से शरीर की रक्षा करता है।
- विभिन्न प्रकार के बीजों को डोरी में बाँधकर स्त्रियाँ आभूषण बनाती हैं। शुतुरमुर्ग के अण्डों के छिलकों के टुकड़ों से भी आभूषण बनते हैं।

8-08

(v) झोंपड़ी या आश्रय :- इनको शिकार (भोजन) और पानी की खोज में जगह-जगह घूमना पड़ता है, अतः ये लोग स्थायी मकान बनाकर नहीं रहते हैं। मौसम की कठोरताओं से बचने के लिए ये लोग गुफाओं में तथा झोंपड़ियों में रहते हैं। ये झोपड़ियाँ लकड़ी और चटाई (पत्तियों) की बनी होती है। कभी-कभी झोपड़ियों को काटकर, उनसे एक वृत्ताकार घेरा, लगभग एक मीटर ऊँचा बना लिया जाता है। और बीच में आग जलाई जाती है। ताकि रात्रि में गर्मी बनी रहे और

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

जंगली जन्तु दूर रहें। इनमें एक (अस्थकालीन) गाँव में 8-10 झोंपड़ियाँ होती हैं।

(vi) शस्त्र तथा औजार :-

इनमें तीर-कमान, लाठियाँ, चाकू, बर्छियाँ और भूमि खोदने की लकड़िया होती हैं, इनके पास कमान से लकड़ी रगड़ कर अग्नि उत्पन्न करने के लिये अग्नि-काष्ठ (fire-sticks) भी होती है।

- धनुष - 1 मीटर के होते हैं। पत्थर के चाकू 12 cm के तथा हड्डी के चाकू 30 cm लम्बे होते हैं। ये तीर-कमान से लगभग 60 मीटर की मार कारगर होती हैं।

- ये जल रखने के लिए शुतुरमुर्ग के अण्डों के खोल या हिरन की खाल की थैली और लकड़ी के प्याले का प्रयोग करते हैं। भोजन प्रायः कच्चा या खुली आग पर भून लिया जाता है। इसलिये बर्तनों की आवश्यकता नहीं होती है।

- ये लोग खाल या शहद के बदले पड़ोसी से लोहे की पत्तियाँ ले लेते हैं जिनका उपयोग तीरों की नोंक पर लगा कर करते हैं, वरन पत्थर या हड्डी की नोंक लगाते हैं।

Today

(vii) सामाजिक व्यवस्था :-

इनकी समाज व्यवस्था अति साधारण आदिमकालीन है। एक वर्ग

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

प्राय: 20 व्यक्तियों से भी कम होते हैं। प्रत्येक परिवार अपना-अपना डेरा अलग-2 लगाते हैं।
~~इनमें खेतागिरी की प्रणाली नहीं है~~।

- ये लोग भूत-प्रेतों में विश्वास करते हैं। आखेट में सफलता प्राप्त करने के लिये कुछ लोग जादू-टोना का प्रयोग भी करते हैं। जैसे- जिस जन्तु का आखेट करना चाहते हैं। उसी जाति के मांस की राख को मुख पर या शरीर के घावों पर लगाकर आखेट करने वाला व्यक्ति आखेट को जाता है।
- ये लोग कठिन परिश्रमी, उत्साही, तीव्र दृष्टि, और स्मृतिवान होते हैं। इन लोगों की संख्या प्रतिदिन घटती जा रही है।

अत: सभ्य समाज का कर्तव्य है कि इन लोगों की रक्षा की जाये।

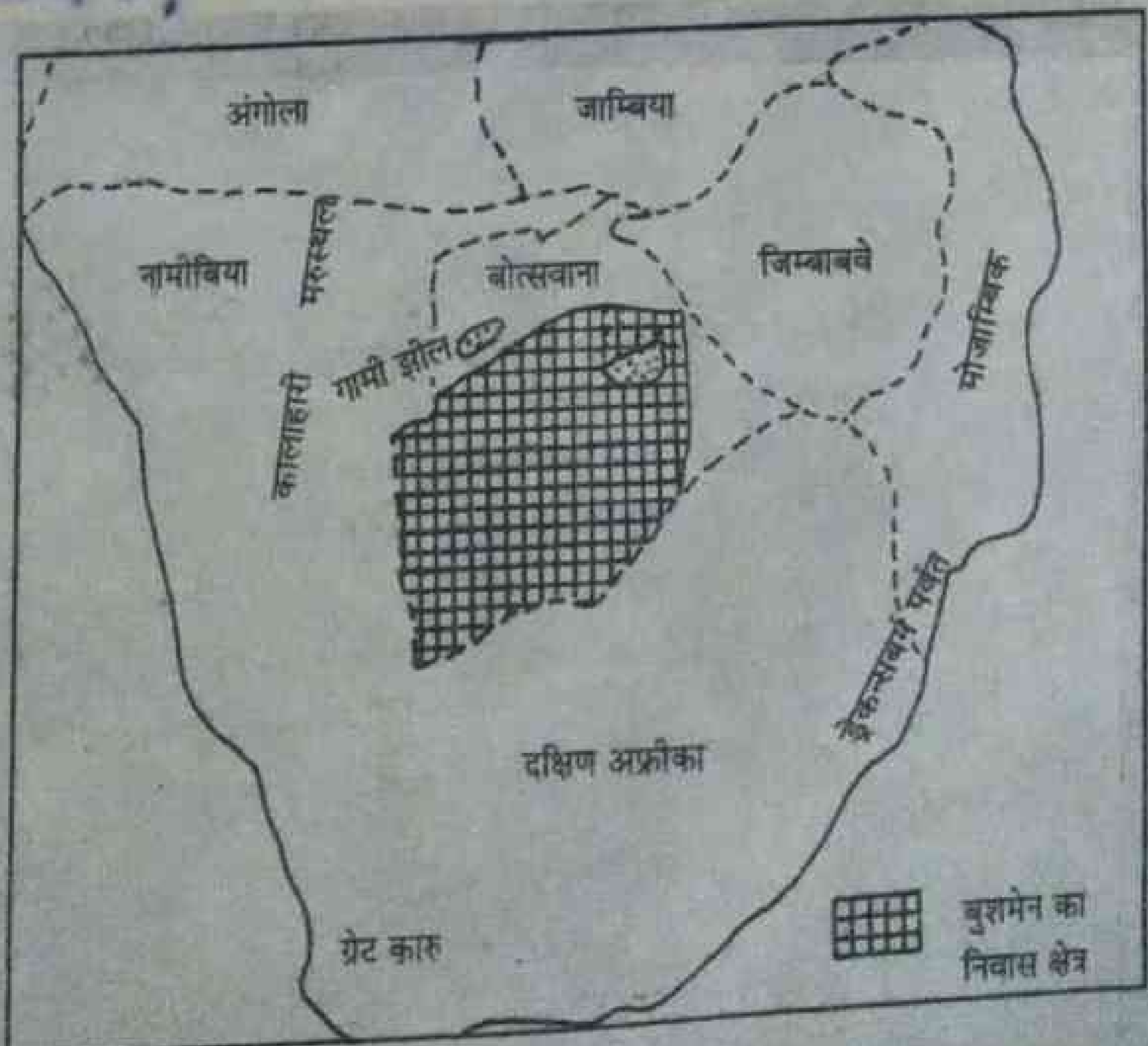

चित्र : 10.8 बुशमैन का निवास क्षेत्र

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

Or
Q.5. संथाल :- (Santhal.)

(i) निवास क्षेत्र :- (Habitat) :-

इनका मुख्य निवास झारखण्ड के छोटा नागपुर के पठार में जिला - संथाल परगना, राँची, पालामऊ और हजारीबाग मुख्य हैं। इसके अतिरिक्त उत्तरी बंगाल की वीरभूमि में और उड़ीसा में कटक के समीपवर्ती कृषि करते हैं। असम में चाय के बागानों में मजदूरों और कुलियों का कार्य करते हैं। दक्षिणी बंगाल की सूती वस्त्र मिलों तथा जूट मिलों में कार्य करते हैं।

- इस प्रदेश की जलवायु उष्णकटिबन्धीय मानसूनी है। यहाँ ग्रीष्म ऋतु में तापमान ५०°C - ५६°C तक रहता है। ग्रीष्मकालीन वर्षा 160 - 180 सेमी तक और शीतकालीन वर्षा केवल 10 सेमी तक हो जाती है।

(ii) भाषा (Language) :-

ये लोग 'मुण्डा' भाषा बोलते हैं। मुण्डा भाषा के अतिरिक्त ये लोग बिहारी, बंगाली, असमी, भाषा का भी प्रयोग करते हैं। वर्तमान मे ये लोग बहुभाषिये हो गये हैं।

- वर्ष 2011 के अनुसार इनकी संख्या 70 लाख से ऊपर थी।

(iii) समाज - व्यवस्था और संस्कृति :-

संथाल जाति प्रकृति - पूजक है जो भूत - प्रेतों को मानती है। ये लोग बहुत से वंशों में बट गये हैं। ये लोग गोत्र से बाहर

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

विवाह-सम्बन्ध को मानने वाले हैं।
- संथाल लोगों का साधारण संगठन बहुत विकसित ढंग का प्रादेशिक-संगठन है, जो 'परहा' (Parha) प्रणाली पर आधारित होता है।
- प्रत्येक गाँव में एक मुखिया होता है जो गाँव की सीमा के अन्दर निवास करने वाले सभी वंशो पर साधारण राजनीतिक अधिकार रखता है।
- बड़े गाँवों में समाज की सत्ता गाँव की पंचायत के अधिकार में होती है। परन्तु वहाँ भी गाँव के साधारण व राजनीतिक मामलों में मुखिया की बातें महत्वपूर्ण होती हैं।

(iv) आर्थिक उद्यम:- (Economic Occupation):-

- अधिकतर संथाल लोग कृषि करते हैं। कृषि की कमी को आखेट करके, या खाद्य-संग्रह और कन्द-मूल-फल एकत्रित करके पूर्ण किया जाता है। इन लोगों में कृषि के प्रति कम ज्ञान है। (जैसे- फसल-चक्र, सिंचाई, खाद आदि में कम ध्यान देते हैं।) जिससे कृषि की उपज बहुत ही कम होती है। अतः जीवन-यापन के लिये ये लोग - आखेट तथा मजदूरी भी करते हैं। ये लोग विभिन्न खानों (कोयला, लोहे अभ्रक) आदि में कार्य करते हैं। इसके अतिरिक्त चाय के बागानों में भी कृषि कार्य करते हैं।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

(1) **विवाह प्रथा :-** (Marriage System) :-

इनके समाज में विवाह की दो प्रथाये प्रचलित है।

(1) साधारण प्रथा :- इस प्रथा में लड़के का पिता जाकर लड़की के पिता से विवाह का प्रस्ताव रखता है, यदि लड़की का पिता या उसके मित्र सम्बन्ध को ठीक समझते हैं। तो स्वीकृति दे दी जाती है। लड़की के पिता को कुछ धन दिया जाता है, जिसे वह ~~बरात~~ बारात की दावत में या लड़की को कुछ दहेज देकर खर्च करता है।

(2) **अपहरण प्रथा :-**

इस प्रथा में लड़की का पिता लड़के से प्रार्थना करता है कि वह लड़की को बलपूर्वक ले जाये. अथवा लड़के के साथ कुछ मित्र और लड़का स्वय लड़की को उसके पिता के घर से बलपूर्वक पकड़कर ले जाते हैं। इसकी तिथि विवाह के समय से पूर्व निश्चित हो जाती है। ~~पह~~ पहले लड़की विरोध करती है, बाद में अपने अपरहण को सहन कर लेती है।, इसके बाद लड़के का पिता लड़की के परिवार वालों से विवाह का प्रस्ताव करता है। ~~इस~~ और निश्चित समय पर विवाह हो जाता है। इस प्रथा में वधु के पिता के आदर को ज्यादा माना जाता है। वर्तमान काल में यह प्रथा बहुत कम होती जा रही है।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

(vi) आधुनिक विकास :-

इस जनजाति ने स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद बहुत तेजी से विकास किया है। शिक्षा के साथ-साथ इन्होंने कृषि-कार्य में विशेष उन्नति की है। वर्तमान में अधिकांश भूमि पर ये स्थाई कृषि करते हैं।

- इस जनजाति के लोग खनन श्रमिक ही नहीं बल्कि सुपरवाइजर तथा अधिकारी तक के पदों पर कार्य कर रहे हैं।

Scanned by CamScanner

मानव प्रजाति

Date

प्रश्न (1) मानव का पर्यावरण के साथ अनुकूलन से आपका क्या अभिप्राय है। एस्किमों ने पर्यावरण के साथ किस प्रकार अनुकूलन किया स्पष्ट कीजिए। (2019)

उत्तर :- पृथ्वी पर मानव को रहते हुए लाखों वर्ष बीत चुके है। इस लम्बे काल में मानव ने प्राकृतिक वातावरण के साथ समायोजन करना सीखा है। मानव ने तकनीकी विकास के साथ-साथ वातावरण समायोजन में तीव्र गति से परिवर्तन किया है। विश्व में आज भी कुछ ऐसे क्षेत्र है। जिनमे कई जनजातियाँ आदिम ढंग से अपना जीवन यापन कर रही है। उनकी जीवन शैली में विशेष बदलाव नही आया है

- इस प्रकार की जनजातियाँ शीत प्रदेशों, घने जंगलो, उष्ण व शुष्क मरूस्थलों, घास के मैदानों एवं दुर्गम पहाडी क्षेत्रों में निवास करती है। इनकी अपनी विशिष्ट संस्कृति, सामाजिक ढाँचा, परम्पराएँ, रीति-रिवाज व मान्यताएँ है। इन जनजातियों की अर्थव्यवस्था का आधार खाद्य संग्रहण, आखेट, घुमक्कड़ पशुचारण आदिम ढंग की निर्वाहन कृषि है। ये विभिन्न प्राकृतिक दशाओं में प्राचीन काल के मानव व वातावरण के सम्बन्ध की सूचक है। आधुनिक विकसित सभ्यताओं से इनका सम्पर्क लगभग नगण्य है।

- जनजातियां वास्तव में जैविक समूह का नहीं वरन सामाजिक सांस्कृतिक समूह का प्रतिनिधित्व करती है।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

- जनजाति लोगों का वह समूह है जो सामाजिक रीति-रिवाजों एवं सांस्कृतिक परम्पराओं द्वारा एक दूसरे से घनिष्ट से सम्बन्धित है।

एस्किमो (Eskimos):- (ध्रुवीय व ठण्डे प्रदेशों के निवासी)

एस्किमों - शाब्दिक अर्थ - 'कच्चा मास खाने वाला)

निवास क्षेत्र:- (Habitat):-

एस्किमो लोग कनाडा के उत्तरी तट, पर बेफिन द्वीप के चारों ओर, हडसन मे तथा ग्रीनलैंड में 65° और 70° उत्तरी अक्षांश के मध्य पेटी में निवास करते है।

- इस समस्त प्रदेश में जाड़े की ऋतु बहुत लम्बी होती है। तथा गर्मी का मौसम छोटा होता है। वर्ष में 9 महीने कठोर शीत-ऋतु रहती है। और केवल 3 महीनो के छोटे समय में ही अन्य ऋतुओं - बसन्त, ग्रीष्म और पतझड़ का चक्र पूरा हो जाता है। वार्षिक औसत तापमान 0°C से नीचा रहता है। तथा जनवरी का औसत तापमान आर्कटिक द्वीपसमूह में शून्य से नीचे -46°C तथा तटीय भागों में -34°C से -37°C तक नीचा हो जाता है। जाड़ों के महीने लम्बे होने के साथ-2, जाड़ों के दिन बहुत छोटे होते है। तेज पवनों को रोकने के लिये पेड़ो का अभाव होने से बर्फ की आंधियां आती है। हवा सदैव आर्द्र रहती है।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

वर्ष मे केवल दो या तीन महीने ही ऐसे होते है। जिनमें तापमान 0°c से ऊपर पहुँचता है। इस प्रकार ये प्रदेश लगभग बर्फ से ढ़के रहते हैं। जो वर्षा होती है वह बर्फ के रूप में ही होती है।

– इस प्रकार की कठोर जलवायु के कारण वहाँ वृक्षों की वनस्पति उत्पन्न नहीं हो पाती। केवल गर्मी के मौसम में शैवाल, काई, लिचेन्स और डैण्डलियन्स आदि रंग-बिरंगे फूलो की घासें तथा छोटी-2 झाड़ियाँ उग आती हैं। जिनसे सम्पूर्ण वातावरण कुछ समय के लिए चित्रमय हो जाता है। परन्तु गर्मी के अचानक समाप्त हो जाने पर, पुनः बर्फ की वर्षा होने लगती है। और भूमि पर सर्वत्र बर्फ की चादर बिछ जाती है।

शारीरिक लक्षण:- एस्किमो लोगों का चेहरा सपाट तथा चौड़ा होता है। इनके बाल भद्दे तथा काले होते है। इन लोगो का कद 150 cm से लेकर 160 सेमी तक होता है। इनकी त्वचा का रंग हल्का पीला होता है। इनकी आँखो का रंग हल्का कत्थई होता है। तथा पलक तिरछे होते है। सिर लम्बा गालों की हड्डियाँ ऊँची होती है। इनका उद्‌गम स्थान एशिया है। इनमें मंगोलाइड प्रजाति के लक्षण मिलते है।

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

(1) शीतकालीन आखेट :-

आखेट :- इस ऋतु में एस्किमो समुद्री तट के किनारे सील मछली का शिकार करते है। जब मछली बर्फ में बने छिद्रों मे श्वास लेने आती है। तब एस्किमो द्वारा रखी हड्डी की छड़ हिल जाती है। एस्किमो अपने हथियार हारफून से सील मछली का शिकार करते है। इसे 'माउपाक' कहते है। माउपाक जिसका शाब्दिक अर्थ - 'प्रतीक्षा करना' होता है। शिकार की दूसरी विधि इतुरपाक है। जिसके अन्तर्गत शिकारियों द्वारा दो छिन्द्र बनाये जाते है। एक छिन्द्र में एक व्यक्ति सील को चारा डालकर बुलाता है। तथा दूसरे छिन्द्र में दूसरा व्यक्ति संकेत मिलते ही हारफून से शिकार कर लेता है।

- सील मछली न केवल भोजन प्रदान करती है। बल्कि जलाने के लिए ईंधन भी देती है। सील की चर्बी अन्य जीवों की चर्बी की तुलना में तुरन्त व अधिक देर तक जलती है। और ताप भी अधिक देती है।

3/10

(2) बसन्तकालीन आखेट :-

मार्च के बाद दिन की लम्बाई बढ़ने लगती है। सील मछलियाँ श्वास लेने हेतु बाहर आकर धूप सेंकने लगती है। समूह को देखकर वह बर्फ पर लेटकर उनके समूह तक खिसकता -2 इतना समीप पहुँच जाता है कि अपने भाले द्वारा यकायक हमला करके सील मार सके। बसन्तकालीन आखेट को उतोक कहते है। ये शिकारी कुत्तों

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

कुत्तों की मदद से सील मछलियों का शिकार करते है। इस ऋतु मे चमड़े से बनी नाव को परिवहन के लिए काम में लेते है। जिसे 'कयाक' कहते है। परिवहन के लिए नाव - उमियाक का प्रयोग किया जाता है। बसन्तकाल में ध्रुवीय भालू का भी शिकार किया जाता है।

ग्रीष्मकालीन आखेट :-

गर्मी के मौसम के मध्यकाल तक धरातल का हिम पिघल जाता है। तथा छोटी - 2 वनस्पति उग जाती है। तब स्थलीय पशुओं का शिकार किया जाता है। इस काल मे स्थल की ओर आते समय एस्किमों लोग कैरिबों बारहसिंगो की तलाश करता है। तथा धनुष - बाण से शिकार करते है।
- खरगोश, बतख व चिड़ियों का शिकार हल्के भाले से फैंक कर करते है। वर्तमान ये लोग बन्दूक, आदि आधुनिक शस्त्रों का प्रयोग भी करने लगे है।

भोजन :-

ये लोग शत - प्रतिशत मांसाहारी होते है। कच्चा माँस इनका प्रमुख भोजन है। भोजन का स्रोत सील, ह्वेल, सी लायन है, छोटी मछलियो व स्थलीय जीव - जन्तुओं से भी भोजन प्राप्त होता है।
- आखेट में एस्किमों लोगों ने उस वातावरण के साथ ऐसा दक्षतापूर्वक सामंजस्य स्थापित कर लिया है। कि कोई तकनीकी मे विकसित देश का मानव भी अपने आपको वहाँ इतना दक्ष नही पायेगा

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

उसको भी एस्किमों की कला और हुनर सीखने पड़ेंगे।

वस्त्र :- एस्किमों के वस्त्र मुख्यत: कैरिबो की खाल से बने होते है। यह सील मछली की खाल की अपेक्षा अधिक गर्म एवं हल्के होते है। ध्रुवीय भालू के समूर से भी वस्त्र बनाये जाते है। वस्त्र बनाने का कार्य स्त्रियाँ करती है। स्त्री व पुरूष दोनो के वस्त्र एक समान ही होते है। एस्किमों जर्सीनुमा बाँहदार वस्त्र जिसे 'तिमियाक' कहते है। पहनते है। तिमियाक के ऊपर पहने जाने वाले कपड़े को 'अनोहाक' कहते है। सील की खाल से बने जूतों को कार्मिक या मुक्लुक्स कहते है।

निवास गृह :-
एस्किमों लोगों की मकान बनाने की कला बहुत महत्वपूर्ण है। लकड़ी के अभाव के कारण अपने मकान हड्डी, पत्थर, खाल, व बर्फ से बनाते है। इनके बर्फ के मकान इग्लू (Igloo) कहलाते है। 5-6 फिट भूमिगत व 2-3 फीट ऊपर उठे लकड़ी व ह्वेल की हड्डियों के ढाँचे से बने मकान को 'कर्मक' कहते है। इसका प्रवेश द्वार एक भूमिगत सुरंग से जुड़ा होता है।

– ग्रीष्म काल में शिकार के दौरान ये लोग विशेष प्रकार के डेरे बना लेते है। ये डेरे सील मछली या कैरिबो की खाल के बने होते है।

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

Date

यंत्र व उपकरण / परिवहन साधन :-

कयाक :- चमड़े से बनी एक प्रकार की नाव जो 5 मीटर लम्बी तथा 1.5 मीटर चौड़ी होती है।

ऊमियाक :- बड़ी नाव जो व्हेल मछली के शिकार के दौरान काम में ली जाती है।

हारफून :- सील मछलियों के शिकार के लिए प्रयुक्त 1.2 से 1.5 मीटर लम्बा भालानुमा हथियार जो रस्सी से बंधा होता है।

स्लेज :- बर्फ पर चलने वाली पहिये विहीन गाड़ी जिसे कुत्ते व रेण्डियर खींचते हैं।

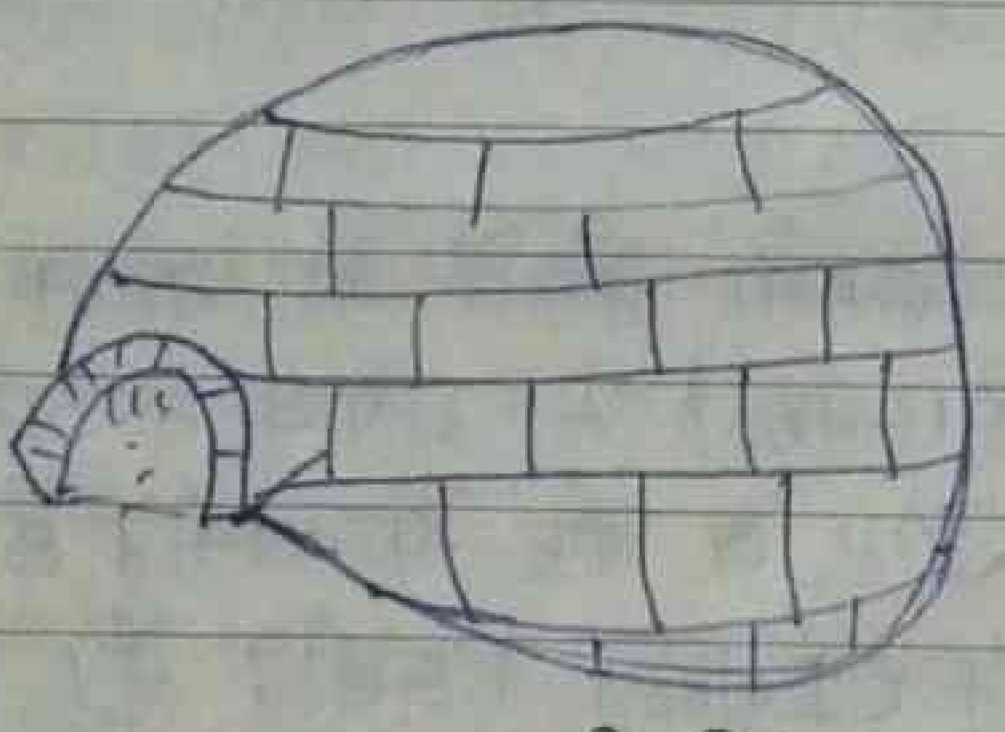

(इग्लू : एस्किमों का बर्फ का घर)

समाज व संस्कृति :-

ये लोग छोटे-2 समूहों में रहते हैं। इनका जीवन घुमक्कड़ है। आदिम ढंग से जीवन यापन करते हैं। पितृवंशीय समाज है। इनमें बहुपत्नी प्रथा प्रचलित है। ग्रीष्मकाल में कई उत्सव व समारोह मनाए जाते हैं। एस्किमों लोग जादू-टोने में

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

भी विश्वास रखते हैं। ये एस्किमों - एल्यूट भाषा बोलते हैं। कठोर शीत ऋतु में भोजन की कमी होने पर बूढ़े व अशक्त व्यक्ति आत्महत्या करते हैं। ये कभी स्नान नहीं करते हैं। कपड़ों के फट जाने पर ही उन्हें शरीर से उतारते हैं। इनमें एक जादूगर होता है जो सबसे अधिक प्रभावशाली व्यक्ति माना जाता है।

- मध्य तथा पूर्वी भागों के एस्किमों लोगों की एक देवी होती है। जिसे वे 'सेदना' (Sedna) कहते हैं। यह देवी समुद्र तल में रहती है। तथा जन्तुओं पर इसका नियन्त्रण माना जाता है। इस देवी का रूष्ट होना हानिकारक समझा जाता है। यद्यपि इन लोगों का जीवन कठिनाइयों और दरिद्रता से परिपूर्ण है, फिर भी ये प्रसन्न ही दिखाई देते हैं।

वातावरण समायोजन दक्षता :-

संसार के किसी अन्य प्रदेश में शायद ही कुछ लोग ऐसे हों जो एस्किमो की भाँति कठोर जीवन बिता सकते हैं और प्रकृति की इतनी क्रूर दशाओं में रहते हों फिर भी इन्होंने प्राकृतिक वातावरण के साथ अपना पूर्ण सामंजस्य स्थापित कर लिया है। इनके निवास-गृह, नावें, स्लेज गाड़ियाँ, हारपुन, तीर-कमान, वस्त्र आदि सब प्रकृति के साथ अद्भुत अनुकूलन करते हैं। यूरोपीय देशों से जो वैज्ञानिक लोग आर्कटिक या अण्टार्कटिक क्षेत्रों की खोज करने जाते हैं, वे एस्किमों के

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

वस्त्रों को ही अपनाते है।

आधुनिक संस्कृति से सम्पर्क :- एकाकी ध्रुवीय प्रदेशों में निवास करने वाली इस जनजाति का 1960 के पश्चात् यूरोपियन व अमेरिकी लोगों से सम्पर्क बढ़ा है। अब ये लोग आग्नेय अस्त्रों, बन्दूक आदि का प्रयोग करने लगे है। कयाक के स्थान पर मोटर चालित नाव व स्लेज के स्थान पर स्नो स्कूटर का प्रयोग बढ़ा है। पारम्परिक वातावरण का रूपान्तरण तीव्र गति से होने लगा है। फर, समूर आदि के व्यापार से मुद्रा मिलने से उनके पहनावे व रहन-सहन की विधियों मे भी बदलाव आया है।

– अमेरिकी सरकार द्वारा प्रदत्त स्वास्थ्य सुविधाओं के बढ़ने व भरण-पोषण सरल होने से एस्किमों लोगों की जनसंख्या कनाडा व अलास्का मे निरन्तर बढ़ रही है। इनकी संख्या वृद्धि से टुण्ड्रा के तटीय क्षेत्रों के पर्यावरण पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। संभव है कि 21 वी शताब्दी मे एस्किमों का जनजातीय परिवेश मात्र ऐतिहासिक रह जाये।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

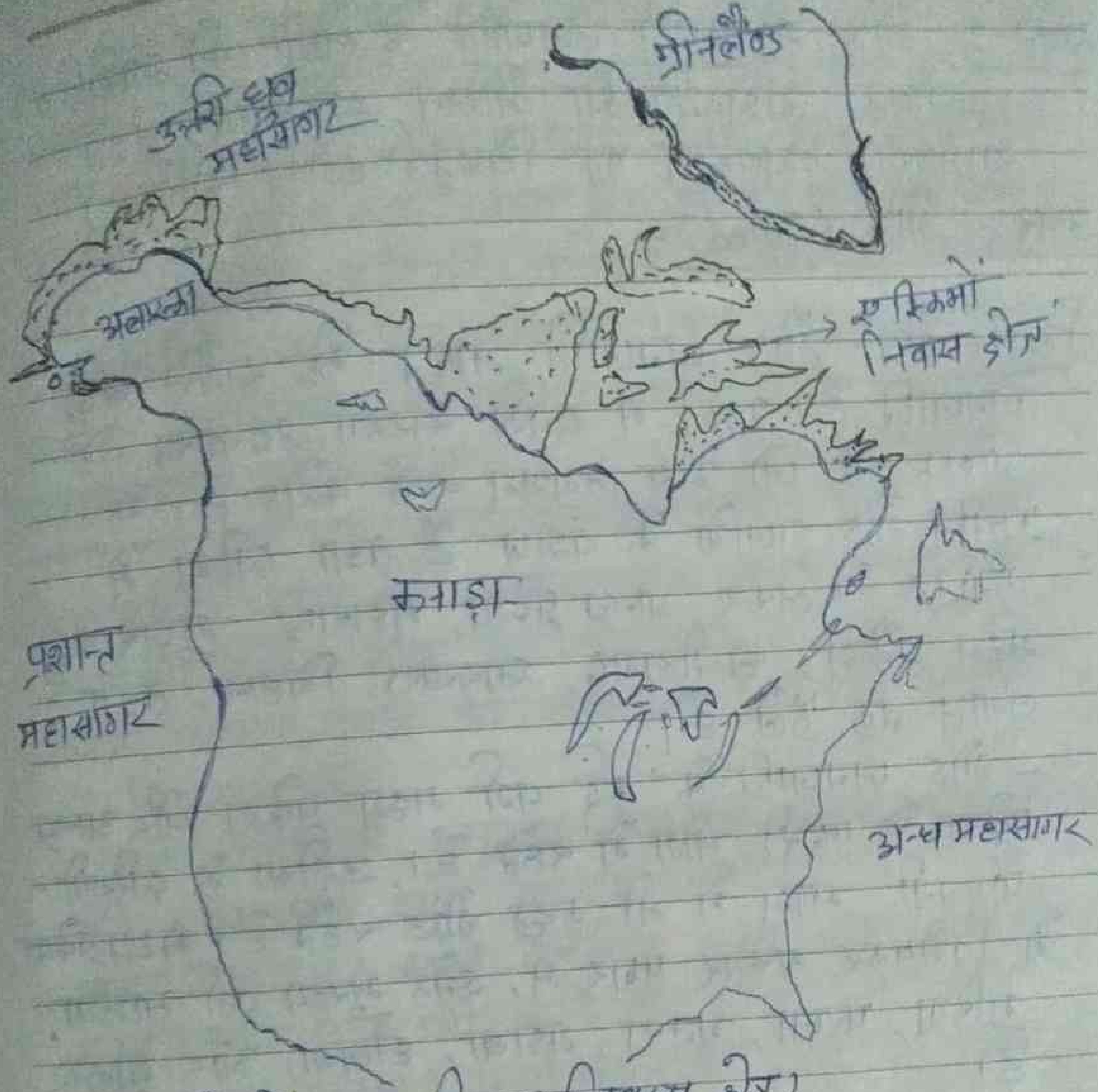

(एस्किमों जनजाति का निवास क्षेत्र)

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

गये और अन्त में फिर से हिन्दू धर्म में ही समाहित हो गये। इसी कारण शायद हिन्दू धर्म को सर्व आलिंगत (all embracing) मत की संज्ञा दी जाती है। आर्य समाज की स्थापना भी हिन्दू धर्म में सुधार लाने का ही प्रयास था।

मुख्य धर्मों का विश्व में वितरण (Spatial Distribution)

चित्र 9 से विदित होता है कि आज भी विश्व में प्रचलित विभिन्न धर्मों की संख्या अधिक नहीं है। विश्व की 80 प्रतिशत जनसंख्या केवल चार-पाँच धर्मों के अनुयायी ही हैं। पर यह सभी अपनी एक क्षेत्रीय प्रभुसत्ता बनाये हुए हैं।

Scanned by CamScanner

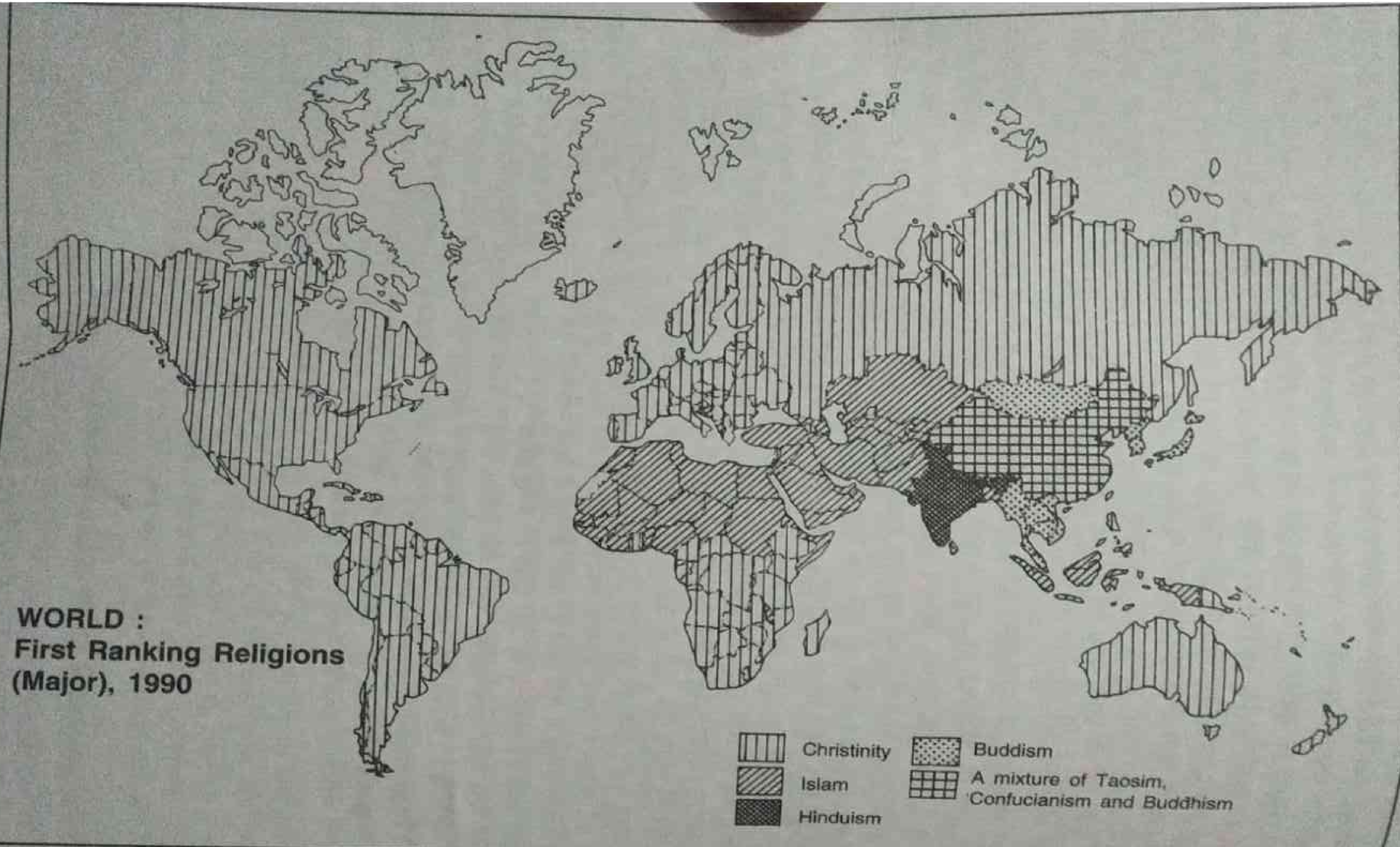

चित्र 9. विश्व : प्रमुख धर्म, 1990

Scanned by CamScanner

जैसा कि **चित्र 9** से विदित होता है, ईसाई धर्म के अनुयाइयों का क्षेत्रीय विस्तार विश्व में सर्वाधिक है। इनका क्षेत्र नयी दुनिया के दोनों अमेरिका से लेकर यूरोप से होता हुआ यूरेशिया व आस्ट्रेलिया तक फैला हुआ है और इनकी छुट-पुट संख्या तो अफ्रीका व एशिया के विभिन्न देशों में भी पायी जाती है विशेषकर दक्षिणी अफ्रीका व दक्षिण-पूर्वी एशिया में। विश्व के और किसी भी धर्म को अपने क्षेत्रीय फैलाव में इतनी अधिक सफलता प्राप्त नहीं हो पायी जितनी कि ईसाई धर्म को मिली। ईसाई धर्म के उपरान्त इस्लाम धर्म का स्थान आता है। इसका क्षेत्र ईसाई क्षेत्रों से थोड़ा कम होगा। **चित्र 9** से विदित होता है कि इस्लामी क्षेत्र उत्तरी-अफ्रीकी क्षेत्र से प्रारम्भ होकर मध्य-पूर्व के देशों से होता हुआ, पाकिस्तान, भारत-बंग्लादेश से लेकर दक्षिण-पूर्वी एशियायी देशों तक फैला हुआ है। इस्लाम के बाद हिन्दू धर्म का स्थान है जो कि भारतीय उप-महाद्वीप तक ही सीमित रह गया है। बौद्ध धर्म के अनुयायी चीन सहित पूर्वी एशिया तथा दक्षिण-पूर्वी एशिया के देशों में वितरित है। चीन जो कि विश्व में सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश है, किसी एक धर्म का पालन न करते हुए विभिन्न धर्मों वाली जनसंख्या का क्षेत्र बनकर रह गया है। यहाँ बौद्ध धर्म, ताओमत, व कन्फ्युशियस मत के लोग रहते हैं। चीन ने अपनी परम्परा को कायम रखते हुए बाहर से आये धर्मों को अपनाया तो अवश्य परन्तु उन्हें भी अपने ही रंग-ढंग में ढाल लिया। इस प्रकार अपनी सभ्यता को बाह्य-प्रभावों से बचाकर रखा। वैसे भी चीन की आज की सत्ता प्रणाली में धर्म का स्थान नहीं है। साम्यवाद में धर्म का विशेष महत्व नहीं होता।

विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में मुख्य धर्मों की विसरण प्रक्रिया का जन्म विभिन्न धर्मों के अनुयाइयों का एक स्थान से दूसरे स्थान पर पलायन व उन द्वारा अपने-अपने धर्मों का विभिन्न क्षेत्रों में प्रचार द्वारा भी हुआ। हाँ, इसमें उपनिवेशन व राजनीतिक प्रभुसत्ता का अपना एक स्थान रहा है। जैसा कि सर्वविदित है, इस्लाम ने जहाँ-जहाँ जिस-जिस क्षेत्र पर विजय पायी, वहीं अपनी प्रभुसत्ता के साथ-साथ धर्मान्तिरण को भी बढ़ावा दिया और अपने अनुयाइयों की संख्या में वृद्धि की। इसी प्रकार बौद्ध धर्म के क्षेत्रीय विसरण में भी इसके अनुयाईयों का धर्म प्रचार-प्रक्रिया का एक बड़ा हाथ है। ईसाई धर्म ने भी अपने धर्म के प्रचार में बहुत अधिक उत्साह उन क्षेत्रों में दर्शाया जहाँ-जहाँ इस समुदाय के लोगों ने उपनिवेशन किया और अपनी प्रभुसत्ता कायम की। इन सभी धर्मों के विपरीत हिन्दू धर्म के अनुयायी दूसरे क्षेत्रों में गये अवश्य परन्तु वहाँ अपने धर्म का प्रचार नहीं किया और न ही किसी को धर्मान्तिरण के लिये प्रेरित अथवा बाध्य किया। तभी शायद हिन्दू धर्म अपने जन्म स्थान (भारतीय उप-महाद्वीप) तक ही सीमित रह गया।

विभिन्न धर्मों के अनुयाइयों द्वारा समय-समय पर पलायन के कारण विभिन्न धर्मों के डायस्पोरा (diaspora) प्रकार के वितरण का जन्म हुआ। डायस्पोरा-वितरण का अर्थ होता है कि किसी एक प्रकार के अनुयाइयों का ऐसा वितरण जिसमें वे जगह-जगह अनिरन्तार रूप से फैले पाये जायें जैसा कि यहूदी धर्म के अनुयायी इज़राईल के अतिरिक्त बहुत से अन्य देशों में फैले हुए हैं। डायस्पोरा शब्द को विशेषकर यहूदियों के विश्व में वितरण को समझाने हेतु ही प्रयोग में लाया गया। परन्तु अब विश्व में और भी बहुत से समुदाय हैं जिनका वितरण भी डायस्पोरा की परिभाषा में सही बैठता है। जैसे पश्चिमी भारत में पारसी समुदाय के लोग या फिर यूरोप में आरमीनिया के ईसाई लोग। इसी प्रकार भारतीय लोग जो पलायन करके अफ्रीका के देशों, यूरोप के देशों, अमेरिका, केनेडा, आस्ट्रेलिया आदि में बस गये हैं, उनको ध्यान में रखते हुए भारतीय मूल के लोग भी विश्व में अपने प्रकार का डायस्पोरा बनाते माने जा सकते हैं। क्योंकि भारतीय मूल के लोगों ने बहुत से अफ्रीकी देशों में, दक्षिणी-पूर्वी देशों में, फिजी आदि में अपनी एक पहचान बना रखी है।

ऊपरलिखित मुख्य 4-5 धर्मों के अतिरिक्त विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में कई प्रकार की छोटी-छोटी धार्मिक प्रजातियाँ वास करती हैं विशेषकर यूरेशिया व उत्तरी अमेरिका के उत्तरी ठंडे भागों में। हाँ गणना की दृष्टि से इन लोगों की संख्या तो अधिक नहीं है। परन्तु पश्चिमी अफ्रीकी भागों में, दक्षिण-पूर्वी अफ्रीका के क्षेत्रों में ऐसे लोगों की संख्या कुछ अधिक है। ऐसे लोगों का मालावी, ज़ेम्बिया, मोज़ाम्बीक आदि में बोलबाला है।

Scanned by CamScanner

ईसाइयों में दो प्रमुख समुदाय होते हैं जिन्हें कैथोलिक व प्रोटेस्टेन्ट के नाम से जाना जाता है। यह आश्चर्यजनक लगता है कि कैथोलिक व प्रोटेस्टेन्ट ईसाइयों के वितरण के भी अपने-अपने क्षेत्र हैं। कहीं-कहीं कैथोलिक ईसाइयों की संख्या 90 प्रतिशत होती है और पास के ही क्षेत्र में उनकी संख्या केवल 10 प्रतिशत ही रह जाती है। ऐसा यूरोप में अक्सर पाया जाता है। ऐसा भी नहीं है कि सदैव केवल ऐसा ही होता है कि हर क्षेत्र में कैथोलिक या फिर प्रोटेस्टेन्ट बहुमत में हैं। यूरोप में कई ऐसे क्षेत्र भी हैं जहाँ दोनों मतों के समुदाय वास करते हैं जैसा कि मध्य यूरोपीय क्षेत्रों में। स्विटज़रलैण्ड में कैथोलिकों की संख्या 48% तो प्रोटेस्टेन्टों की संख्या 44% है, जर्मनी में दोनों ही लगभी 41% हैं। आस्ट्रिया में कैथोलिक 26% तो प्रोटेस्टेन्ट 24% हैं, नीदरलैण्ड में कैथोलिक 36% तो प्रोटेस्टेन्ट 26% हैं। हाँ, यहाँ यह बताना भी आवश्यक है कि चाहे एक देश में दोनों समुदायों की संख्या व अनुपात लगभग बराबर हो, फिर भी उनके अपने देश में निवास-क्षेत्र भिन्न हो सकते हैं और उनके अलग-अलग जमावड़े हो सकते हैं।

विश्व में कैथोलिक बहुमत वाले ईसाई क्षेत्रों में यूरोप के आयरलैण्ड, फ्रांस, बेल्जियम, स्पेन, पुर्तगाल, इटली, ग्रीस, मोनेको, वेटिकन सिटी, सेन मेरिनो, स्लोवेनिया, पोलैण्ड, हंगरी, क्रोशिया, ज़ेक गणराज्य, लिथूएनिया, स्लोवेकिया, प्रमुख हैं। इन लोगों का उन सभी लेटिन अमेरिकी देशों में, जहाँ कभी ब्रिटेन या हालैण्ड वासियों का प्रभुत्व नहीं रहा, भी बहुमत है। उत्तरी अमेरिका के कुछ भागों में, जैसा कि क्यूबेक में, इनका बहुमत है। उत्तरी अमेरिका में संयुक्त राज्य संघ अमेरिका में कैथोलिकों की संख्या 20% तो प्रोटेस्टेन्टों की संख्या 30% के करीब मानी जाती है। एशिया में भी फिलीपीनूस में कैथोलिक ईसाइयों का बहुमत है।

विश्व में प्रोटेस्टेन्ट बहुमत वाले ईसाई क्षेत्रों में यूरोप के ग्रेट ब्रिटेन, उत्तरी आयरलैण्ड, उत्तरी नीदरलैण्ड, स्केडिनेविया, फिनलैण्ड, जर्मनी के उत्तरी क्षेत्र, डेनमार्क, इस्टोनिया आदि प्रमुख हैं। इनके अतिरिक्त दक्षिणी अफ्रीका, न्यूज़ीलैण्ड आदि में भी प्रोटेस्टेन्ट लोगों का बहुमत है। पूर्वी यूरोप के देशों व रूस में प्रायः रूढ़िवादी चर्च का बोलबाला माना जाता है। अफ्रीका के इथियोपिया में भी एक प्रथक चर्च वाले ईसाई रहते हैं जिन्हें कैथोलिक या प्रोटेस्टेन्ट में नहीं बाँटा जा सकता।

आभ्यन्तरिक सागर (Mediterrnain) से लगते अफ्रीकी देशों से प्रारम्भ होकर मध्य एशिया के देशों से होते हुए, भारतीय महाद्वीप से आगे मलेशिया तथा इन्डोनेशिया तक फैले क्षेत्र में इस्लाम का काफ़ी बोलबाला है। इन क्षेत्रों के अधिकतर देशों में (भारत, नेपाल के अतिरिक्त) जनसंख्या का तीन-चौथाई भाग (75%) मुस्लिम समुदाय है इनमें अफ्रीका के अल्जीरिया, मिस्र, लीबिया, मारोको, ट्यूनिशिया, चड, माली, मौरिटानिया, नाईजर, सुडान, सोमालिया, गैम्बिया, गिन्नी, नाईजीरिया, सेनेगाल आदि देश शामिल हैं। यूरोप के अलबानिया, बॉस्निया, दक्षिणी सर्बिया, तज़ाकिस्तान, तुर्कमानिस्तान, उज़बेकिस्तान आदि जैसे देशों में भी मुस्लिम समुदाय के लोगों की अधिक संख्या है। एशिया में अफगानिस्तान, सऊदी अरब, बेहराईन, ईरान, इराक, जॉर्डन, कुवैत, कातार, ओमान, सीरिया, तुर्की, येमन, यू.ए.ई., पाकिस्तान, बंगलादेश मुख्य मुस्लिम देश हैं। इनके अतिरिक्त ब्रूनाय, इन्डोनेशिया व मलेशिया में भी मुस्लिम समुदाय के लोगों की संख्या काफ़ी अधिक है। पश्चिमी एशिया का लेबनान एक ऐसा देश है जहाँ मुस्लिम और ईसाई समुदायों की संख्या लगभग बराबर सी है। भारत में भी मुसलमानों की संख्या काफ़ी है। सन् 1991 की जनगणना के अनुसार यहाँ 10 करोड़ मुसलमान थे जो कि अधिकतर उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिमी बंगाल, महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश, केरल, कर्नाटक व जम्मू-काश्मीर तक फैले हुए थे। भारत की 11% जनसंख्या सन् 1991 में मुस्लिम थी। सन् 2001 की जनगणना में इनका अनुपात इससे भी बढ़ जाने की सम्भावना है।

बौद्ध धर्म का जन्म भारतीय उपमहाद्वीप में हुआ। अब भारत के तीन प्रमुख प्रदेशों में बौद्धधर्मी वास करते हैं। सिक्किम, महाराष्ट्र व लद्दाख में बौद्ध धर्म भारत से बाहर पूर्वी एशिया व दक्षिणी-पूर्वी एशिया में फैला और एक समय था जब इस धर्म के अनुयाइयों की संख्या इन क्षेत्रों में बहुत अधिक थी। आज के युग में बौद्ध धर्म केवल दो क्षेत्रों

Scanned by CamScanner

तक ही सीमित हो कर रह गया है। इनमें से पहला क्षेत्र हीनयान समुदाय का है जिसे इस क्षेत्र की स्थिति के कारण दक्षिणी विचार धारा के रूप में भी माना जाता है। ये लोग अधिकतर श्रीलंका, म्यानमार (बर्मा), थाईलैण्ड, लाओस, कम्बोडिया आदि तक सीमित हैं। दूसरा क्षेत्र महायान बौद्ध समुदाय के लोगों का है जिसे मठ व बौद्ध भिक्षु विचारधारा वाला समुदाय माना जाता है। इसके अनुयायी अधिकतर पूर्वी एशिया के देशों में निवास करते हैं। एक समय तिब्बत इसका मुख्य केन्द्र रहा है। अभी भी ये लोग तिब्बत, चीन के सीयांग प्रान्त, मंगोलिया, तायवान, जापान, कोरिया, भूटान, वियतनाम, मलेशिया, ब्रूनाय, आदि जैसे देशों में निवास करते हैं जिनमें इनकी देश की जनसंख्या का 11-50% तक का अनुपात है। पाँचवीं शताब्दी में चीन में बौद्ध धर्म बहुत प्रचालित था। आज भी इस देश में छः करोड़ बौद्ध धर्मी निवास करते हैं। चीन जो आज के बौद्ध धर्म की रूपरेखा है, में इसके अनुयाइयों में बौद्ध धर्म के अतिरिक्त कन्फ्युशियस के स्वर्ण नियम, ताओवाद के सादगी के मूल्य, तथा बौद्ध धर्म के करूणा जैसे सदगुणों की छाप पायी जा सकती है। चीन में साम्यवाद से पहले की विचारधाराओं में निश्चित रूप में पृथ्वी पर जीवन के महत्व की महत्ता रही होगी।

विश्व में जनसंख्या के आधार पर हिन्दू धर्म के लोग एक अरब के करीब होंगे जिनमें 80% तो भारत में निवास करते हैं। आज भारत में ही लगभग 80 करोड़ हिन्दू हैं। नेपाल एक और ऐसा देश है जहाँ की 90% जनंसख्या हिन्दू है। इनके अतिरिक्त, जहाँ हिन्दू धर्म के अनुयायी निवास करते हैं, वे देश हैं—मॉरिशियस (52%), फिजी (38%), ग्याना (34%), सूरीनाम (24%), त्रिनीदाद (24%), श्रीलंका (15%), बंगलादेश (12%), मलेशिया (7%), सिंगापुर (4%), तंज़ानिया (4%), पाकिस्तान (2%) आदि। यहाँ जो हिन्दू रहते हैं, इनके पूर्वज भारत से पलायन करके इन देशों में जा बसे थे। आधुनिक वर्षों में हिन्दू लोगों ने विकसित देशों की ओर अधिक पलायन किया है जिनमें यूरोप व अमेरिका के देश व आस्ट्रेलिया आदि शामिल हैं। इन देशों में हिन्दू डायस्पोरा बन चुका है।

कुछ अन्य धार्मिक समुदाय जिनके डायस्पोरा बन चुके हैं, जिनमें यहूदी, पारसी, व सिख समुदाय के लोग प्रमुख हैं। यहूदियों का प्रमुख केन्द्र अब इज़राइल बन गया है और वे यूरोप व अमेरिका के अनेकों देशों मे भी निवास करते हैं। पारसी लोगों का डायस्पोरा भारत में है। सिख समुदाय के लोग भारत में मुख्यतः पंजाब में निवास करते हैं। परन्तु विश्व के काफी अन्य देशों में भी वास करते हैं, मुख्यतः यू.के. में। ये विश्व के सभी महाद्वीपों में निवास करते हैं।

ऊपरलिखित से यह अनुमान लगता है कि विश्व की 80% जनसंख्या केवल 4-5 प्रमुख धर्मों में विश्वास रखती है जिनमें से प्रत्येक ने अपने बहुमत का एक क्षेत्र विशेष बना रखा है। क्षेत्रीय फैलाव की दृष्टि से ईसाई धर्म सबसे अधिक व्यापी है, जोकि यूरोप, अमेरिका व अफ्रीका में फैला हुआ है और संख्या की दृष्टि से हिन्दू धर्म के लोगों की संख्या शीघ्र ही एक अरब होने जा रही है। फिर भी उनका स्थान तीसरा होगा। पहले स्थान पर ईसाई, दूसरे पर मुस्लिम और तीसरे स्थान पर हिन्दू आते हैं।

Scanned by CamScanner

...म वर्ग में उत्तरी-पश्चिमी यूरोप के देश ब्रिटेन, बेल्जियम, ...न्मार्क, नीदरलैंड्स, आदि हैं, जिनमें उत्तरावस्था ... आयु के मनुष्यों की संख्या बहुत अधिक ...ों की कम है, जापान भी इसी वर्ग में ...ता है।

...शिया और अफ्रीका के देश हैं, जिनमें ...और निम्न प्रत्याशित आयु (low ...life) है, जिसके कारण जनसंख्या में बालक... और बूढ़े कम हैं।

(3) तीसरे वर्ग में दक्षिणी अमेरिका के कैथोलिक देश हैं, जिनमें बालक अधिक संख्या में हैं।

(4) चौथे वर्ग में मध्य अक्षांशों (mid latitudes) में स्थित 'नये बसे हुए' देश, संयुक्त राज्य अमेरिका, आस्ट्रेलिया, आदि हैं, जिनमें पश्चिमी यूरोप के सघन देशों की अपेक्षा छोटी आयु के मानव अधिक हैं, और बूढ़े अपेक्षाकृत कुछ कम हैं।

विश्व के प्रमुख धर्म
(MAIN RELIGION OF THE WORLD)

धर्म (religion) शब्द की स्पष्ट संकल्पना या परिभाषा निश्चित करना एक विषम कार्य है। वास्तव में, धर्म किसी नियमित दिनचर्या के सम्पादन को भी कह सकते हैं, और धर्म में दिनचर्या के साथ-साथ सांस्कृतिक स्थापना, सामाजिक संगठन, न्याय, आचरण, सेवाभाव तथा ईश्वर के प्रति मानव के भावों या नियमावली का भी समावेश होता है। **धर्म शुद्ध रूप में मानव को बुरे कार्यों से रोककर अच्छे कार्यों की ओर प्रेरित करने वाला विधान है।** कोई भी धर्म किसी व्यक्ति या समाज को परेशान करने या नष्ट करने के प्रयत्न करने का आदेश नहीं देता। धर्म का उद्देश्य सभ्यता, शिष्टाचार, दयालुता, दानप्रियता, मितव्ययता तथा क्षमाशीलता जैसे तथ्यों को स्थापित कराना है।

विश्व में धर्मों की उत्पत्ति का सम्बन्ध मानव की उत्पत्ति के साथ ही आरम्भ हुआ माना जाता है। एशिया महाद्वीप धर्मों की उत्पत्ति का स्थल रहा है। सभी धर्मों का उद्भव एशिया महाद्वीप पर हुआ है। क्षेत्रीय आधार पर इसके निम्नलिखित तीन वर्ग हैं—

(1) पश्चिम एशिया में उद्भिद् धर्म,

(2) दक्षिण एशिया में उद्भिद् धर्म,

(3) पूर्वी एशिया में उद्भिद् धर्म।

1. पश्चिम एशिया में प्रारम्भ हुये धर्म
(Religions Originated in West Asia)

पश्चिम एशिया में अरब प्रायद्वीप पर विश्व के तीन प्रमुख धर्मों—(i) यहूदी धर्म, (ii) ईसाई धर्म, तथा (iii) इस्लाम धर्म का उद्भव हुआ है। जेरूसलम इन तीनों धर्मों का साझा पवित्र स्थान है, ये तीनों ही धर्म एकेश्वरवादी हैं। जिनका संक्षेप में वर्णन निम्नलिखित है—

[A] यहूदी धर्म
(Jews)

यहूदी धर्म के संस्थापक हजरत मूसा थे। ये एक ईश्वर में विश्वास रखते थे। इस धर्म का उद्भव लगभग 3500 वर्ष पूर्व पश्चिम एशिया में हुआ। वर्तमान में यहूदी लगभग 135 देशों में रहते हैं। इनकी कुल संख्या 1.4 करोड़ है, जो विश्व की जनसंख्या का केवल 0.2% है, परन्तु व्यापारिक व्यवसाय से जुड़े होने के कारण समस्त विश्व में हलचल मचाये हुये हैं। इनकी अधिक सघनता इजरायल तथा सं०रा० अमेरिका में है।

मान्यताएँ—इनकी मान्यताएँ हैं—(i) येओहिम या इलोही (अल्लाह) या ईश्वर ने विश्व की रचना की है, (ii) ईश्वर का हिब्रू लोगों (यहूदियों) से एक विशेष सम्बन्ध है। (iii) यहूदी, जुडाह की सन्तान हैं, जो जैकब (हजरत याकूब) के चौथे बेटे थे, (iv) पवित्र ग्रन्थ-तौराह, तालमुद तथा बाईबिल हैं, (v) धार्मिक स्थान सिनामाम कहलाता है, (vi) मुख्य धार्मिक अनुष्ठान सब्बात है, यह शुक्रवार की शाम से शनिवार के प्रातः तक मनाया जाता है, (vii) हजरत मूसा यहूदी धर्म को प्रारम्भ करने वाले सबसे प्रिय नबी हैं, जिन पर ईश्वर की महान कृपा है।

[B] ईसाई धर्म
(Christianity)

पश्चिम एशिया में जेरूसलम के पास नजारथ में ईसा मसीह का जन्म हुआ। उनके विश्व से चले जाने की तिथि से ही ईसाई कैलण्डर वर्ष शुरू होता है, जिसका 2017वाँ वर्ष चल रहा है। विश्व के सभी देशों में ईसाई रहते हैं, परन्तु यूरोप, उत्तरी व दक्षिणी अमेरिका तथा आस्ट्रेलिया में इनकी प्रमुख सघनता है। अफ्रीका महाद्वीप के दक्षिणी भाग पर तथा एशिया में केवल फिलिपीन्स देश पर ईसाइयों का वर्चस्व है। विश्व में ईसाई धर्म को मानने वालों की 2010

Scanned by CamScanner

में संख्या लगभग 210 करोड़ से अधिक थी, जो कुल जनसंख्या का लगभग 30% से अधिक है।

मान्यताएँ—(i) विश्व का स्वामी गॉड है, जो अकेला इलाही (ईश्वर) पूजनीय है। (ii) ईसा मसीह ईश्वर का इकलौता पुत्र है, जिसे उसने विश्व से दुःख निवारण के लिए भेजा था और वे एक बार फिर आयेंगे। (iii) इनका पवित्र ग्रन्थ बाईबिल (ओल्ड टेस्टामेन्ट तथा न्यू टेस्टामेन्ट) है। (iv) मानव पर दया करनी चाहिए तथा उसकी सहायता करनी चाहिए। (v) ईसा मसीह के जन्म-दिन को बड़े दिन (25 दिसम्बर) के रूप में मनाया जाता है। (vi) ईसा मसीह के निर्वाण दिवस को गुड फ्राइडे के रूप में तथा अगले रविवार को ईस्टर के रूप में मनाया जाता है। (vii) उपासना-गृह को चर्च कहते हैं।

बाद में ईसाइयों के कई वर्ग बन गये, जिनमें से मुख्य निम्नलिखित हैं —

1. प्राच्य ऑर्थोडोक्स (Oriental orthodox)—यह रोमन साम्राज्य का ही एक भाग है। ये कॉन्स्टेनटिनोपल धर्मपीठ से जुड़े हैं। ये लोग प्रायः पुरातनपंथी हैं तथा पश्चिमी धर्म गुरुओं द्वारा किये गये धर्म सुधारों को नहीं मानते।

2. रोमन कैथोलिक (Roman catholic)—ये रोम के कैथोलिक चर्चों के अनुयायी हैं। ये अपने को ईसा का सच्चा अनुयायी मानते हैं। इनके लिये ईसा का बलिदान तथा पुनर्जागरण दिवस का बहुत महत्व है।

3. प्रोटेस्टेंटवाद (Protestants)—16वीं सदी में मार्टिन लूथर किंग द्वारा किये गये पुनर्गठन के फलस्वरूप जो चर्च रोम से पृथक् हो गये, वे इस नयी श्रेणी में आते हैं। इस चर्च में सभी अनुयाइयों की भागीदारी पर बल दिया जाता है।

[C] इस्लाम धर्म
(Islam)

इस्लाम धर्म का उत्पत्ति स्थल भी पश्चिम एशिया है। अरब देश के मक्का शहर में पैगम्बर मौहम्मद साहब का जन्म 570 ईसवी में हुआ और 622 ईसवी में उन्हें अपने मित्रों सहित मक्का शहर छोड़कर मदीना शहर में शरण लेनी पड़ी और 632 ईसवी में उनकी मृत्यु हो गई।

इस्लाम धर्म की स्थापना का वर्ष 622 ईसवी को ही माना जाता है, जब हजरत मौहम्मद साहब मक्का से मदीना पहुँचे, जिसे **हिजरत** कहते हैं। इसी तिथि से इस्लामी कैलण्डर शुरू होता है, जिसे हिजरी कैलण्डर कहा जाता है। मुसलमान, जो इस्लाम के अनुयायी कहलाते हैं, इसी कैलण्डर का उपयोग करते हैं।

मान्यताएँ—अरबी भाषा में इस्लाम का अर्थ है, **'अल्लाह के प्रति पूर्ण समर्पण'**। इस्लाम का समस्त विधान **'कुरान'** के रूप में सुरक्षित है। कुरान में अल्लाह का प्रकाश, जो मौहम्मद साहब को अल्लाह ने दिया था, संकलित है। अल्लाह सर्वशक्तिमान है, उसी ने विश्व की रचना की, वही उसे नियन्त्रित करता है। केवल अल्लाह ही उपासना के योग्य है। वह निराकार है और वही कयामत के बाद सभी का हिसाब करके जन्नत (स्वर्ग) व जहन्नुम (नरक) में भेजेगा। इस्लाम के पाँच आधारभूत सिद्धान्त हैं—

(1) अल्लाह के सिवा कोई उपासना के योग्य नहीं है और मौहम्मद साहब अल्लाह के पैगम्बर (messenger) हैं।
(2) प्रतिदिन पाँच बार नमाज पढ़ना।
(3) रमजान के महीनों में रोजा रखना।
(4) जकात (दान) देना, प्रत्येक मुसलमान को, उस धन पर जो उसके पास है, 2.5% प्रतिवर्ष दान देना आवश्यक होता है।
(5) यदि उसके पास जीवन में अपने खर्चों के बाद धन बचता है, तो जीवन में एक बार हज करना (मक्का-मदीना की यात्रा) आवश्यक है।

इस्लाम में जकात के कारण भाई-चारे का आधार मजबूत होता है। इसके अतिरिक्त इस्लाम में **शराब पीना, सूअर का मांस खाना, ब्याज लेना व देना हराम (निषिद्ध) है।**

इस्लाम के अनुयायी विश्व के सभी देशों में मिलते हैं, परन्तु इनका सान्द्रण पश्चिम एशिया में अरब, तुर्की तथा ईरान, मध्य एशिया में साइबेरिया तक तथा पश्चिमी चीन व मंगोलिया तक दक्षिणी एशिया में पाकिस्तान, बाँग्लादेश, भारत, श्रीलंका तथा दक्षिणी-पूर्वी एशिया में इण्डोनेशिया, ब्रुनेई, मलेशिया तथा फिलिपीन्स के दक्षिणी भाग तक अधिक है। यूरोप में तुर्की, अलबानिया, कोसोवो, मेकेडोनिया, रोमानिया, बलगारिया, यूक्रेन, जोर्जिया, अजरबाइजान तथा दक्षिणी रूस के क्षेत्रों तक फैले हैं। अफ्रीका महाद्वीप के समस्त उत्तरी, पश्चिमी, मध्य-उत्तरी तथा पूर्वी भागों पर इस्लाम का आधिपत्य है।

इस्लाम दो बड़े वर्गों—(i) सुन्नी मुसलमान, तथा (ii) शिया मुसलमान में बँटा हुआ है। शिया मुसलमान मुख्य रूप से ईरान, इराक तथा बहरीन में रहते हैं। पाकिस्तान, भारत, लेबनान, सीरिया तथा मध्य एशिया में भी कुछ शिया

Scanned by CamScanner

रहते हैं। शेष विश्व में सुन्नी मुसलमान रहते हैं। विश्व में कुल मुसलमानों का लगभग 85% सुन्नी मुसलमान हैं।

2. दक्षिण एशिया में प्रारम्भ हुये धर्म (Religions Originated in South Asia)

दक्षिणी एशिया में भारतीय उपमहाद्वीप पर कई धर्मों का उद्भव हुआ है। इनमें हिन्दू, बौद्ध, जैन तथा सिक्ख धर्म प्रमुख हैं। इन धर्मों का संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित प्रकार से है—

[A] हिन्दू धर्म (Hinduism)

वैदिक धर्म भारत का प्राचीनतम धर्म है। हिन्दू धर्म की उत्पत्ति (लगभग 5,000 वर्ष पूर्व) वैदिक धर्म से हुई है। हिन्दू धर्म का कोई अकेला संस्थापक नहीं है। अतः इसे सनातन धर्म भी कहा जाता है। हिन्दू धर्म में आत्मा की पवित्रता एवं अमरता में विश्वास किया जाता है। हिन्दू धर्म के शास्त्र एवं ग्रन्थ—वेद, उपनिषद, भगवद्गीता, महाभारत, रामायण तथा समय-समय पर महापुरुषों द्वारा दिये गये व्याख्यान तथा लिखित साहित्य हैं। विश्व में सौ करोड़ लोग हिन्दू धर्म का पालन करते हैं।

हिन्दू धर्म की कुछ प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(1) हिन्दू धर्म एक ईश्वर की सत्ता में विश्वास रखते हुए बहुदेववादी है।
(2) हिन्दू धर्म में आत्मा को अमर एवं अजर मानते हैं।
(3) हिन्दू धर्म पुनर्जन्म तथा अवतार अवतरित होने में विश्वास रखता है।
(4) इस धर्म में ईश्वर की उपासना साकार (मूर्ति पूजा) एवं निराकार दोनों रूप में की जाती है।
(5) इस धर्म में ईश्वर की उपासना—ध्यान, पूजा-अर्चना, भजन-कीर्तन, भक्ति से की जाती है।
(6) परोपकार, त्याग, सच्चरित्रता, सदाचरण, दान देना, आदि इस धर्म के प्रमुख अंग हैं।
(7) हिन्दू धर्म में कर्म की प्रधानता पर बल दिया गया है।
(8) हिन्दू धर्म में वर्णाश्रम धर्म की व्यवस्था है।
(9) हिन्दू धर्म का अन्तिम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त करना है।
(10) हिन्दू धर्म में सभी धर्मों के प्रति सम्मान की भावना है।

हिन्दू धर्म का उत्पत्ति स्थल भारत है। धर्म गुरुओं की श्रेणी में उच्चतम स्थान पर शंकराचार्य का पद होता है। विश्व के अधिकांश देशों में हिन्दू रहते हैं, परन्तु आनुपातिक दृष्टि से भारत, नेपाल, फिजी तथा मॉरीशस में अधिक सघनता है।

[B] बौद्ध धर्म (Budhism)

बौद्ध धर्म की स्थापना ईसा से लगभग 525 वर्ष पूर्व हुई। बौद्ध धर्म के संस्थापक सिद्धार्थ गौतम थे, जो बुद्ध या गौतम बुद्ध के नाम से जाने जाते हैं। इनका जन्म नेपाल के पास लुम्बनी स्थान पर राजा के घर हुआ था। जब इन्होंने विश्व में दुःखों तथा दुखियों को देखा, तो घर-बार छोड़कर संन्यासी हो गये। भटकने के बाद एक दिन इन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई। गौतम बुद्ध के द्वारा बौद्ध धर्म का उद्भव हुआ।

बौद्ध धर्म का सार, बुद्ध की शिक्षाओं, जीवन के नियम, संघीय जीवन के आदर्श **त्रिपेटिक** में संग्रहीत हैं। नियमों का संग्रह, सूत्रों के रूप में सुरक्षित है। बौद्ध धर्म का मुख्य मन्त्र है— **बुद्धम् शरणम् गच्छामि** अर्थात् मैं बुद्ध की शरण में जाता हूँ।

मान्यताएँ— गौतम बुद्ध के अनुसार मानव जीवन दुःखों से भरा हुआ है। जीवन में दुःख ही दुःख हैं। दुःखों का कारण है सत्ता, अपने पापों से जुड़ाव, वासनाओं की तृप्ति करना और भलाई से बचना। इन पापों के कारण ही मानव जन्म एवं पुनर्जन्म तथा अनेक योनियों में चक्कर लगाता रहता है, परन्तु उसे मोक्ष प्राप्त नहीं हो पाता है।

बौद्ध धर्म के अनुसार मोक्ष को प्राप्त कर लेना मानवमात्र का अन्तिम उद्देश्य है। यह मुक्ति समस्त वासनाओं को पराजित करके प्राप्त की जा सकती है। मुक्ति प्राप्ति के लिए **'सम्यक् अष्टक मार्ग'** का अनुसरण करना चाहिये। इसमें—**सम्यक् दृष्टि, सम्यक् इच्छा, सम्यक् वाणी, सम्यक् व्यवहार, सम्यक् जीवन, सम्यक् विचार, सम्यक् ध्यान** और **सम्यक् प्रयास** का अनुसरण मानव को इस पीड़ायुक्त विश्व से मुक्ति दिला सकता है। इस प्रकार मानव **निर्वाण** की स्थिति को प्राप्त कर लेगा, जो महात्मा बुद्ध का मुख्य उद्देश्य है।

बौद्ध धर्म भारत व नेपाल के सीमावर्ती प्रदेश में प्रारम्भ हुआ, परन्तु इन दोनों ही देशों में वह अल्पसंख्यक है। श्रीलंका, तिब्बत, चीन, जापान, तथा दक्षिणी पूर्वी एशिया के देश—म्यानमार, थाईलैण्ड, लाओस, कम्बोडिया तथा वियतनाम, वर्तमान में बौद्ध धर्म का पालन करने वाले प्रमुख देश हैं।

[C] सिक्ख धर्म (Sikhism)

सिक्ख धर्म की स्थापना लगभग 1500 ईसवी में हुई। सिक्ख धर्म के संस्थापक गुरु नानक थे। वास्तव में, गुरु नानक भारत में हिन्दू-मुस्लिम एकता चाहते थे। वह इनकी आपसी

Scanned by CamScanner

घृणाओं से असंतुष्ट थे। गुरु नानक इस्लाम के सूफीवाद (सूफीज्म) से प्रभावित थे। वे मानते थे कि हिन्दू और मुसलमानों के ईश्वर एक ही हैं। गुरु नानक निराकार ईश्वर की उपासना करते थे। हिन्दू समाज की मूर्ति-पूजा व जाति-व्यवस्था में उनका विश्वास नहीं था। उनके शिष्य हिन्दू भी थे और मुसलमान भी और वे भेदभाव को मिटाने का प्रयास करते रहे।

सिक्ख धर्म का प्रमुख ग्रन्थ **गुरु ग्रन्थ साहिब** है, जिसकी रचना गुरु नानक ने की थी। इनके बाद 9 गुरु और हुए, गुरु गोविन्द सिंह 10वें गुरु थे, इन्होंने खालसा पंथ की स्थापना की। गुरु नानक का जन्म-स्थान ननकाना साहब के नाम से जाना जाता है, जो पाकिस्तान के लाहौर जिले में स्थित है। विश्व में सिक्ख धर्म के अनुयायी लगभग 2.5 करोड़ हैं। इनकी बहुसंख्या भारत के पंजाब प्रान्त में है।

[D] जैन धर्म
(Jainism)

जैन धर्म, वास्तव में, हिन्दू धर्म का ही एक भाग है। जैन धर्मावलम्बी मुख्यतः व्यापार करने वाले वर्ग से सम्बन्धित हैं। इनमें महापुरुषों को तीर्थंकर कहा जाता है। तीर्थंकर भगवान महावीर जैन धर्म के प्रमुख गुरु हुए हैं। ये 24वें तीर्थंकर थे। यह अहिंसावादी धर्म है। जैन मुख्य रूप से गुजरात, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश एवं राजस्थान में रहते हैं। इनसे पहले 23 और तीर्थंकर उत्पन्न हो चुके थे। जैन धर्म की दो शाखाएँ — (i) दिगम्बर, एवं (ii) श्वेताम्बर हैं।

3. पूर्वी एशिया में प्रारम्भ हुए धर्म
(Religions Originated in East Asia)

पूर्वी एशिया में, पश्चिम एशिया या दक्षिण एशिया की तरह से कोई मजबूत धार्मिक व्यवस्था का विकास तो नहीं हुआ, परन्तु चीन व जापान में कुछ धार्मिक व्यवस्थाओं का उद्भव अवश्य हुआ है। पूर्वी एशिया में उद्भव होने वाले कुछ धर्म निम्नलिखित हैं—

1. कन्फ्यूशियसवाद (Confucianism) — कन्फ्यूशियस चीन के महान दार्शनिक थे। वे उत्तरी चीन में ईसा से लगभग 500 वर्ष पूर्व अपने दर्शन का चमत्कार दिखा रहे थे। इनके मतानुसार दया मानव का स्वाभाविक गुण है। अतः मानव को दया के कार्य करने चाहिए। इस धर्म के अनुयायी वर्तमान में ताइवान तथा कोरिया में रहते हैं। इनकी संख्या केवल 65 लाख के आस-पास है।

इनका धार्मिक ग्रन्थ *Analects* है, जिसमें कन्फ्यूशियस द्वारा रचित सूक्ति-संग्रह है। इसे चीनी *लू-यालो* कहते हैं, जिसका अर्थ है विद्वानों की वाणी। लगभग 2000 वर्ष तक चीनी जनता के प्रत्येक पक्ष पर इसका व्यापक प्रभाव रहा।

मान्यताएँ — इस सम्प्रदाय की मान्यता कन्फ्यूशियस तथा उसके 100 वर्ष बाद के सन्त **मेनशियस** की मान्यताओं पर आधारित हैं। इनकी शिक्षाओं में (i) दया, (ii) सत्यता, (iii) ज्ञान, (iv) शुद्ध जीवन तथा (v) सौम्य व्यवहार का प्रमुख स्थान है। इनका कोई पूजा गृह या पुरोहित, आदि नहीं होता।

2. शिंटो (Shintoism) **धर्म** — यह जापानी सभ्यता का प्राचीन धर्म है। इसकी उत्पत्ति जापानी सभ्यता के साथ हुई। इसका कोई संस्थापक तथा धर्मग्रन्थ नहीं है, यह पूर्वजों की पूजा द्वारा उत्पन्न धर्म है। वास्तव में यह आदिवासी प्रथाओं पर आधारित है। इसमें अनेक कर्मकाण्ड, पूजा, शोभायात्रा (जुलूस), आदि का प्रचलन है। इसके मानने वालों की संख्या भी 30-35 लाख से अधिक नहीं है।

3. ताओ (Taoism) **धर्म या ताओवाद** — यह छठी शताब्दी ईसा पूर्व का चीनी धर्म है। इसके संस्थापक चीनी विद्वान **लाओत्से** थे। इनका प्रमुख धर्मग्रन्थ *ताओ ते चिंग* है। ताओवाद में स्वर्ग एवं नरक का विधान है।

इस धर्म का सार है — (i) करुणा, (ii) उदारता, एवं (iii) विनम्रता। यह धर्म बाहरी दिखावा, आडम्बर, आयोजन, संघर्ष तथा युद्ध के विपरीत है।

अन्त में यदि सभी धर्मों का सार ग्रहण किया जाये, तो सभी धर्म एक नियमित दिनचर्या को प्रोत्साहित करते हैं, ताकि सभी मानव अपने कार्यों को करते हुए भाई-चारा बनाये रखें। सभी धर्म मानव को बुरे कार्यों के फल से डराते हैं तथा अच्छे कार्यों के बदले में स्वर्ग की ओर चलने को प्रोत्साहित करते हैं ताकि मानव समाज सुरक्षित रूप से नियमित मानवमात्र की भलाई की ओर अग्रसर रहे।

भारत एवं धर्म
(INDIA AND RELIGION)

भारत अनेक धर्मों का संगम स्थल है। हिन्दू, जैन, बौद्ध, एवं सिक्ख धर्म तो भारत में ही उत्पन्न हुए हैं। इनके अतिरिक्त ईसाई धर्म यूरोप से तथा इस्लाम धर्म पश्चिम एशिया से भारत में आये हैं। भारत में 2001 की जनगणना

Scanned by CamScanner

Unit-III^rd

Date ______
Page ______

Topic ① World Population:- Growth, Distribution, Density, Sex-Ratio and Literacy. (विश्व जनसंख्या :- वृद्धि, वितरण, घनत्व, लिंगानुपात, साक्षरता)

प्रश्न.① विश्व की जनसंख्या वृद्धि को समझाइयें तथा जनसंख्या वृद्धि की समस्याओं का वर्णन कीजियें।

प्रश्न.② विश्व में जनसंख्या के वितरण और घनत्व को प्रभावित करने वाले भौगोलिक कारको को समझाइयें। (2022, 2018)

प्रश्न.③ विश्व की जनसंख्या का वितरण और घनत्व को समझाइए।

प्रश्न.④ विश्व की जनसंख्या के लिंगानुपात व साक्षरता पर टिप्पणी लिखिए।

प्रश्न.⑤ विश्व के प्रमुख जनसमूह (महाजन समूह की विस्तार से व्याख्या कीजिए। (2015)

Scanned by CamScanner

प्रश्न - ①
विश्व की 2

जनसंख्या वृद्धि

(Population Growth)

विद्वानों के आकलन के अनुसार पृथ्वी धरातल पर *आधुनिक मानव* (*Homo sapien*) का आविर्भाव लगभग 10 लाख वर्ष पूर्व हुआ। अब से लगभग 20 हजार वर्ष पूर्व जब अन्तिम हिम युग समाप्त हुआ, तो मनुष्य ने पशुपालन शुरू किया। लगभग 15 हजार वर्ष पूर्व मानव ने कृषि कार्य शुरू किया तथा लगभग 6 हजार वर्ष पूर्व मानव ने कुछ तकनीकी विकास कार्य किये जिससे व्यापार तथा नगरीकरण शुरू हुआ। धीरे-धीरे मानव की संख्या बढ़ती रही तथा उसका विश्व में क्षेत्रीय विस्तार भी होता रहा। प्राचीनकालीन मानव की संख्या का अनुमान लगाना बहुत ही कठिन है अपितु शुद्धता के विचार से तो बिल्कुल असंभव है। फिर भी विद्वान अपनी-अपनी विचारक क्षमता का उपयोग करते रहते हैं। संभावित आकलनों के आधार पर पाषाण काल की समाप्ति पर विश्व में लगभग 10 लाख मनुष्य थे। पशुपालन काल एवं कृषि के प्रारंभिक काल में यह संख्या लगभग 20 से 200 लाख के मध्य रही होगी। लगभग 2 हजार वर्ष पूर्व यह लगभग 25–30 करोड़ पर पहुँच गयी होगी। 1650 में यह 55 करोड़ तथा 1950 में 200 करोड़ और 2011 में 702 करोड़ पहुँच गई। जनसंख्या में आने वाले इस अन्तर के आँकड़े निम्नलिखित हैं—

***तालिका 1.* विश्व की जनसंख्या।**

समय	जनसंख्या
1. पाषाण युग की समाप्ति पर	10 लाख
2. कृषि के प्रारम्भिक काल में	20–200 लाख
3. 2000 वर्ष पूर्व (ईसा काल)	2,500–3,000 लाख
4. 1650 ईसवी	5,500 लाख
5. 1750 ईसवी	7,200 लाख
6. 1800 ईसवी	9,300 लाख
7. 1850 ईसवी	13,300 लाख
8. 1900 ईसवी	16,600 लाख
9. 1950 ईसवी	25,100 लाख
10. 2000 ईसवी	61,400 लाख
11. 2011 ईसवी	70,200 लाख

Scanned by CamScanner

जनसंख्या के इस परिवर्तन का जब हम क्षेत्र के सन्दर्भ में अध्ययन करते हैं, तो इसे जनसंख्या वृद्धि (growth of population) के नाम से जाना जाता है। यह परिवर्तन धनात्मक (positive) भी हो सकता है और ऋणात्मक (negative) भी हो सकता है। प्रस्तुत अध्याय में विश्व की जनसंख्या वृद्धि के अध्ययन के साथ ही उसके क्षेत्रीय स्तर पर वितरण का भी अध्ययन किया गया है।

विश्व में जनसंख्या वृद्धि (WORLD-POPULATION GROWTH)

उपरोक्त तालिका 1 में विश्व की जनसंख्या को दर्शाया गया है, यदि दिये गये वर्षों के अन्तराल पर वृद्धि की गणना की जाये (जनसंख्या वृद्धि को प्रतिशत में मापने के लिये, निश्चित समय में बढ़ी हुई जनसंख्या को, उस क्षेत्र की पुरानी जनसंख्या से भाग देकर 100 से गुणा कर देते हैं) तो वह उस समय अन्तराल की वृद्धि होगी। यदि इस वृद्धि प्रतिशत को समय अन्तराल के वर्षों से भाग कर दिया जाये, तो औसत वार्षिक वृद्धि दर प्राप्त होगी। विश्व में जनसंख्या की वृद्धि का प्रतिशत विभिन्न कालों में निम्नलिखित रहा है—

तालिका 2. विश्व में जनसंख्या वृद्धि की दर।

वर्ष	कालिक वृद्धि %	वार्षिक वृद्धि %
1650–1750	30.9	0.31
1750–1800	29.2	0.58
1800–1850	43.0	0.86
1850–1900	24.8	0.50
1900–1950	51.2	1.02
1950–2000	145.0	2.89
1950–1960	20.3	2.03
1960–1970	22.2	2.22
1970–1980	20.3	2.03
1980–1990	19.2	1.92
1990–2000	17.0	1.70
2000–2010	14.3	1.43

विश्व में जनसंख्या वृद्धि के उपरोक्त आँकड़ों से स्पष्ट है—

(1) 1750 तक जनसंख्या वृद्धि का प्रतिशत अत्यन्त कम रहा है, इसे मंद वृद्धि काल कहा जा सकता है।

(2) 1750 से 1900 तक वृद्धि सामान्य रही है।

(3) 1900 से 1950 तक वृद्धि सामान्य से अधिक रही है।

(4) 1950 से 1980 तक वृद्धि तीव्र गति से हुई है।

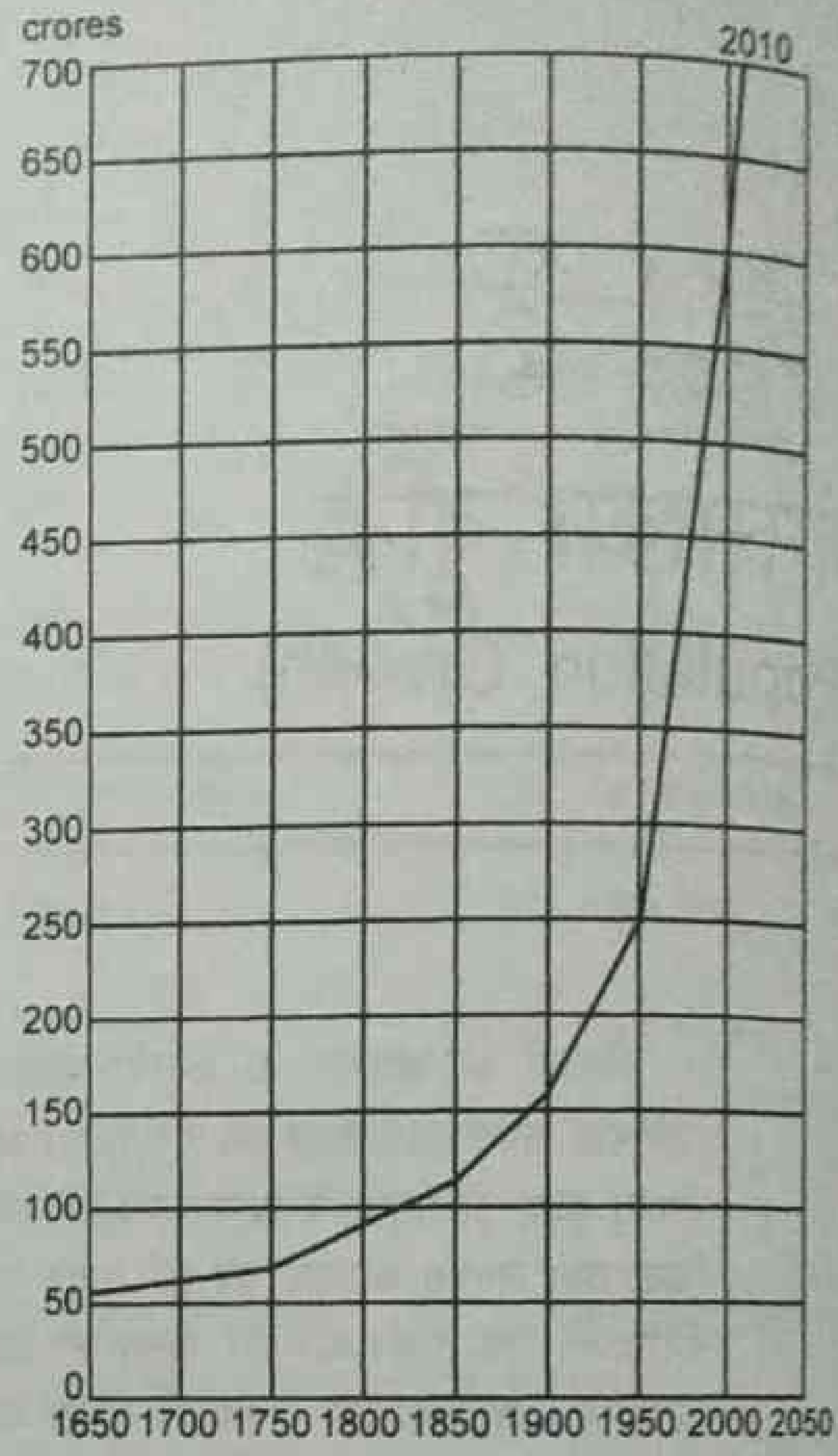

चित्र 1. विश्व की जनसंख्या वृद्धि की गति में परिवर्तन।

(1) 17वीं और 18वीं शताब्दियों में (1650 से 1750 तक) जनसंख्या मन्द गति से बढ़ती रही ।

(2) 18वीं शती के मध्य (1750) से 19वीं शती के मध्य (1850) तक, जनसंख्या की वृद्धि मध्यम गति से थी।

(3) 19वीं शती के मध्य (1850) के बाद जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ती रही है।

(5) 1980 के बाद से वृद्धि की दर में कुछ कमी आई है। संभवतः यह भविष्य में सामान्य गति की ओर अग्रसर रहेगी।

महाद्वीपों में जनसंख्या वृद्धि (POPULATION GROWTH IN CONTINENTS)

जनसंख्या वृद्धि के आँकड़ों को, जब महाद्वीपीय स्तर पर देखा जाता है, तो महाद्वीपों में जनसंख्या की वृद्धि विश्व की वृद्धि दर से पर्याप्त विचलन का प्रदर्शन करती है, जो अग्रलिखित तालिकाओं से स्पष्ट है—

Scanned by CamScanner

तालिका 3. महाद्वीपों की जनसंख्या (दस लाख में)।

वर्ष	एशिया	यूरोप	अफ्रीका	उ० अमेरिका	द० अमेरिका	ओशिनिया
1650	327	103	100	01	12	02
1750	475	144	95	01	11	01
1800	597	192	90	06	19	01
1850	741	274	95	26	33	01
1900	915	423	120	81	63	06
1950	1377	572	222	166	166	13
2000	3720	727	818	454	350	32

तालिका 4. महाद्वीपों की जनसंख्या वृद्धि (%)।

वर्ष	एशिया	यूरोप	अफ्रीका	उ० अमेरिका	द० अमेरिका	ओशिनिया
1650–1750	45.3	39.8	–05.0	–	–08.4	–50
1750–1800	25.7	33.3	–05.3	500.0	72.7	–
1800–1850	24.2	42.7	+05.5	333.0	73.7	–
1850–1900	23.5	54.4	26.3	211.5	90.9	500
1900–1950	50.1	35.2	85.0	104.9	163.5	116.7
1950–2000	170.2	27.0	268.0	173.5	110.8	146.2
1650–2000	1038.0	606.0	718.0	45400.0	2816.0	1500.0

महाद्वीपों में जनसंख्या वृद्धि की भिन्न दरें
(DIFFERENTIAL RATES OF POPULATION INCREASE IN CONTINENTS)

पिछली तीन शताब्दियों में समस्त विश्व की जनसंख्या में 55 करोड़ से 614 करोड़ अर्थात् 10 गुना से भी अधिक वृद्धि हुई है। एशिया में 10 गुना और यूरोप की जनसंख्या भी लगभग 6 गुनी हो गयी है। एशिया और यूरोप पूर्व काल से ही अधिक आबादी वाले क्षेत्र रहे हैं। यूरेशिया (Eurasia) में तीन शताब्दी पूर्व समस्त विश्व की 75% जनसंख्या रहती थी; और अब भी विश्व की 75% के लगभग रह रही है। एशिया और यूरोप में जनसंख्या तो इससे भी अधिक बढ़ती रही है, मगर यहाँ से बाहरी देशों को भी प्रवास होता रहा है।

सबसे अधिक जनसंख्या वृद्धि उत्तरी अमेरिका और दक्षिणी अमेरिका में हुई है और सबसे कम यूरोप तथा अफ्रीका में हुई है।

उत्तरी अमेरिका की जनसंख्या 454 गुना बढ़ गई है और अफ्रीका की केवल 7 गुना हो सकी है। इस भारी विभिन्नता का मुख्य कारण यह है कि उत्तरी अमेरिका की जलवायु, मिट्टियाँ तथा अन्य प्राकृतिक संसाधन बहुत अधिक सुविधाजनक रहे हैं, जबकि अफ्रीका की जलवायु स्वास्थ्य के लिये हानिकारक और विशेषकर यूरोपियन जातियों के लिये अहितकर रही है। यूरोप से मनुष्य प्रवास करके उत्तरी अमेरिका में जाकर बसते रहे हैं। इसके अतिरिक्त दूसरा मुख्य कारण यह है कि जो मनुष्य यूरोप से जाकर अमेरिका में बसे थे, वे अपने साथ यूरोप की सभ्यता, विज्ञान और प्रौद्योगिकी (technology) भी लेते गये थे। उन लोगों ने अमेरिका में पहुँचकर अपने विज्ञान और मशीनों के प्रयोग से यांत्रिक कृषि, निर्माण-उद्योग (manufacturing) और परिवहन की बहुत उन्नति की है। उन्होंने प्राकृतिक संसाधनों (natural resources) का प्रयोग करके मानव जीवन के स्तर को बहुत ऊँचा उठा दिया। भोजन सामग्री तथा अन्य सुख-सुविधाओं की बहुलता और बीमारी पर नियंत्रण हो जाने से उत्तरी अमेरिका की जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ती चली गयी। अफ्रीका में स्वास्थ्य के लिये अहितकर जलवायु, मरुस्थलों की विशालता, अनेक प्रकार की बाधाओं, बीमारियों और विषैले कीट-पतंगों के कारण जन-वृद्धि को प्रोत्साहन नहीं मिला।

1760 के लगभग यूरोप में औद्योगिक क्रान्ति (industrial revolution) का युग आरम्भ हुआ था। यंत्रों का अधिकाधिक प्रयोग और निर्माण-उद्योग के कारखाने एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में फैलने लगे। उस समय यूरोपीय क्षेत्रों में जनसंख्या तेजी से बढ़ने लगी। जब यूरोप में जनसंख्या की सघनता का भार अधिक बढ़ने लगा, तब यहाँ से मनुष्य दूसरे महाद्वीपों में जाकर अपने उपनिवेश (colonies) बसाने लगे। लगातार बाहर प्रवास होते रहने पर भी यूरोप की जनसंख्या पिछली तीन शताब्दियों में 6 गुना से अधिक हो गयी है, जो समस्त

Scanned by CamScanner

विश्व की औसत जनसंख्या वृद्धि दर से कम है। इस वृद्धि के कारणों में तकनीकी (technology) की प्रगति के अलावा आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन भी थे। अब यूरोप में जनसंख्या वृद्धि रुक गई प्रतीत होती है।

जनसंख्या की वृद्धि उस प्रदेश की जन्म-दर (birth-rate) और मृत्यु-दर (death-rate) पर निर्भर करती है। औद्योगिक क्रान्ति के बाद मृत्यु-दर घट गई क्योंकि भोजन की पूर्ति (food supply) अधिक नियमित हो गई। खेती के तरीकों में सुधार हुआ; परिवहन ने उन्नति की, जिसके फलस्वरूप व्यापार और छोटे उद्योग भी बढ़े। महासागरीय (oceanic) परिवहन का प्रसार होने पर, पक्के मालों का विदेशों को निर्यात और भोजन सामग्री का आयात होने लगा। स्वास्थ्य विज्ञान और चिकित्सा की उन्नति से मृत्यु-दर और भी कम हो गई है। अब यूरोप में जन्म-दर (birth-rate) घट गई है, इस कारण वहाँ की जनसंख्या बहुत कम बढ़ रही है।

विभिन्न महाद्वीपों में जनसंख्या वृद्धि की तुलना (COMPARISON OF POPULATION GROWTH IN DIFFERENT CONTINENTS)

उपरोक्त तालिकाओं में प्रस्तुत आँकड़ों से विदित होता है कि विश्व के सभी महाद्वीपों में जनसंख्या की वृद्धि होती रही है, परन्तु किसी महाद्वीप में जनसंख्या बहुत तीव्र गति से बढ़ी है और किसी में धीमी गति से बढ़ी है। जनसंख्या वृद्धि की मुख्य विभिन्नताएँ निम्नलिखित हैं—

(1) 1650 से 1750 तक एशिया और यूरोप में साधारण वृद्धि हुई थी और अफ्रीका में जनसंख्या घट गई थी। तब तक अमेरिका में बहुत कम जनसंख्या थी।

(2) 1750 से 1900 तक सभी महाद्वीपों में वृद्धि हुई, परन्तु अधिक वृद्धि एशिया, यूरोप और उत्तरी अमेरिका में हुई थी।

(3) 1900 के पश्चात् 20वीं शताब्दी में जनसंख्या वृद्धि की दर बहुत तीव्र गति से बढ़ी है।

(4) एशिया तथा अफ्रीका महाद्वीपों में 1900 तक धीमी गति से जनसंख्या वृद्धि हुई, परन्तु 1900 से वृद्धि तीव्र गति से हो रही है।

(5) यूरोप महाद्वीप में 1900 के बाद से वृद्धि बहुत मन्द है।

(6) नयी दुनिया के तीनों महाद्वीपों (उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका व ओशिनिया) में वृद्धि का प्रतिशत 1800 से 1950 तक अधिक रहा है, जिसका मुख्य कारण यूरोपियन जनसंख्या का इन महाद्वीपों को होने वाला जनसंख्या प्रवास है, जिसकी गति अब धीमी है।

समस्त महाद्वीपों में जनसंख्या वृद्धि एक-सी नहीं है। समस्त विश्व की जनसंख्या साढ़े तीन शताब्दियों (1650 से 2000 तक) में लगभग 10 गुना हो गई है। एशिया और यूरोप में तीन शताब्दियों पूर्व भी विश्व की 3/4 जनसंख्या रहती थी और अब भी विश्व की लगभग 3/4 है, परन्तु उत्तरी अमेरिका में बहुत अधिक जनसंख्या वृद्धि हुई है। उत्तरी अमेरिका में तीन शताब्दियों में जनसंख्या बढ़कर 454 गुना हो गई है। दक्षिणी अमेरिका में लगभग 28 गुना हो गई है। सबसे कम वृद्धि अफ्रीका में हुई है, जो केवल 7 गुना है। परन्तु वर्तमान में अफ्रीका महाद्वीप में बहुत तीव्र गति से वृद्धि हो रही है।

जनसंख्या में तीव्र वृद्धि के कारण (Causes of Rapid Increase of Population)

20वीं शताब्दी में इस आश्चर्यजनक वृद्धि के 5 मुख्य कारण रहे हैं—

(1) गहरी कृषि और यान्त्रिक कृषि (mechanised farming) के द्वारा भोज्य सामग्री के उत्पादन में वृद्धि हुई है। इससे खाद्य पूर्ति अधिक निश्चित हो गई है और उसमें पोषक तत्वों की मात्रा बढ़ी है।

(2) औद्योगिक उन्नति (industrial progress) जिसमें खनिज संसाधनों के प्रयोग जल विद्युत शक्ति, कच्चे माल, परिवहन और कुशल प्रबन्ध द्वारा निर्माण-उद्योगों और व्यापार का विकास हुआ है। इससे बढ़ती हुई जनसंख्या को नये-नये रोजगार मिलते रहे हैं।

(3) विज्ञान और तकनीकी की प्रगति, नये-नये आविष्कारों और जीवन को सुखी-संपन्न बनाने के प्रचुर साधनों का विकास।

(4) स्वास्थ्य विज्ञान (hygiene) और चिकित्सा (medical science) की उन्नति के द्वारा बीमारियों पर नियंत्रण होने से मृत्यु-दर (death-rate) कम हो गई है।

(5) नये बसे हुए देशों में, जैसे—उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड में बाहर से हुए मानव

Scanned by CamScanner

आप्रवास (immigration) के कारण भी जनसंख्या बढ़ी है, क्योंकि यूरोप तथा एशिया के सघन क्षेत्रों से मनुष्य नये देशों में जाकर बसते रहे हैं।

विश्व में जनसंख्या वृद्धि दर का वितरण (WORLD DISTRIBUTION OF POPULATION GROWTH RATE)

जिस प्रकार विश्व के महाद्वीपों में जनसंख्या वृद्धि की दर भिन्न-भिन्न रही है, उसी प्रकार देशों के आधार पर जनसंख्या वृद्धि दर में यह अन्तर और भी स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। विश्व के कुछ देशों में जनसंख्या वृद्धि की दर बहुत अधिक 3% वार्षिक से भी अधिक है, तो कुछ देशों में यह 1% से भी कम है। वर्तमान समय में यूरोप के कई देश ऐसे भी हैं, जहाँ पर जनसंख्या में ऋणात्मक वृद्धि हो रही है। जनसंख्या वृद्धि के आधार पर विश्व को निम्नलिखित भागों में विभाजित किया जा सकता है—

1. उच्च जनसंख्या वृद्धि दर—इस वर्ग में वे देश आते हैं, जिनमें जनसंख्या वृद्धि की दर 3% वार्षिक से अधिक है। इन देशों में दो प्रकार के देश हैं—

(i) अति पिछड़े, मध्यवर्ती, पूर्वी तथा पश्चिमी अफ्रीकी देश—अंगोला, इथोपिया, नाइजीरिया, नाइज़र, गिनी की खाड़ी के तटीय देश, कीनिया, तंजानिया, रुआंडा, बुरुंडी, युगांडा, मोज़म्बिक, मैडागास्कर, आदि देश।

(ii) शिक्षा व तकनीकी ज्ञान में पिछड़े उत्तरी अफ्रीका तथा पश्चिमी एशिया के तेल उत्पादक धनी देश—लिबिया, यमन, संयुक्त अरब अमीरात व सऊदी अरब, आदि देश।

2. अधिक जनसंख्या वृद्धि दर—इस वर्ग में अफ्रीका महाद्वीप के मिस्र, अल्जीरिया, मोरक्को, सूडान, आदि उत्तरी तथा दक्षिणी अफ्रीकी गणतन्त्र तथा उसके समीपवर्ती देश। पश्चिमी एशिया में टर्की, इराक, ईरान, दक्षिणी एशिया में पाकिस्तान, नेपाल, म्यानमार। मध्य एशिया में, मंगोलिया, टर्कमेनिया, ताजिकिस्तान व कजाकिस्तान तथा लैटिन अमेरिका में मैक्सिको, वैनेजुएला, कोलम्बिया तथा मध्य अमेरिकी देश। ये सभी देश जनसंख्या नियंत्रण के कार्यक्रम अभी ठीक से लागू नहीं कर पाए हैं, इनकी वृद्धि दर 2 से 3% वार्षिक है।

3. मध्यम जनसंख्या वृद्धि दर—इस वर्ग में विश्व के ऐसे देश आते हैं, जिन्होंने परिवार कल्याण कार्यक्रम को ठीक से लागू कर लिया है, जिससे उनकी जन्म-दर मध्यम हो गई है। इनकी वृद्धि दर 1 से 2% वार्षिक है तथा वह तेजी से कम हो रही है। इस वर्ग में उत्तरी अमेरिका महाद्वीप के संयुक्त राज्य तथा कनाडा एवं ओशिनिया महाद्वीप के आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड विकसित विश्व के देश हैं। शेष देश एशिया में चीन, भारत, इण्डोनेशिया, मलेशिया, श्रीलंका तथा दक्षिणी अमेरिका महाद्वीप के ब्राजील, अर्जेंटीना, चिली, युरुग्वे, पराग्वे, आदि देश सम्मिलित हैं, जो सभी विकासशील देशों की श्रेणी में आते हैं।

तालिका 5. विश्व के कुछ देशों की जनसंख्या वृद्धि दर वर्ष–2010।

देश	औसत वार्षिक वृद्धि दर	देश	औसत वार्षिक वृद्धि दर
इथोपिया	3.2	ब्राजील	1.3
कीनिया	3.0	अर्जेंटीना	1.3
अंगोला	3.4	फिजी	1.6
यमन गणराज्य	3.8	कनाडा	1.0
जार्डन	3.5	यू०एस०ए०	1.0
अफगानिस्तान	3.3	जर्मनी	0.3
मिस्र	1.8	स्वीडन	0.3
द० अफ्रीकी गणराज्य	2.2	फ्रांस	0.2
पाकिस्तान	2.5	इटली	0.0
भारत	1.7	रूस	–0.3
बाँग्लादेश	1.8	यूक्रेन	–0.2
श्रीलंका	1.6	बेलारूस	–0.3
कोलम्बिया	1.7		

4. कम जनसंख्या वृद्धि दर—इस वर्ग में विश्व में विकसित राष्ट्र आते हैं, इन देशों में जीवन-स्तर उच्च होने के कारण जनसंख्या वृद्धि दर 1% से कम है। यूरोप के सभी देश तथा एशिया में जापान इस वर्ग में आते हैं।

5. ऋणात्मक जनसंख्या वृद्धि—इस वर्ग में रूस, यूक्रेन, बेलारूस, फ्रांस तथा इटली देश आते हैं, इनमें जनसंख्या वृद्धि नकारात्मक है। ब्रिटेन, स्वीडन, नार्वे, डेन्मार्क, बेल्जियम देश भी शीघ्र ही इसी वर्ग में आने वाले हैं। इनकी वृद्धि दर 0.3% वार्षिक से कम रह गई है।

जनसंख्या ह्रास (POPULATION DECREASE)

जब जनसंख्या बढ़ने के स्थान पर उसमें कमी आने लगती है, तो इसे नकारात्मक या ऋणात्मक वृद्धि कहते हैं। यही जनसंख्या ह्रास (population decrease) कहलाता है। विश्व इतिहास में इसके अनेक उदाहरण मिलते हैं—

Scanned by CamScanner

उद्यानकृतियों, आदि सभी की क्षमता को सम्मिलित करके अधिक घनत्व की गणना की जाती है।

पोषण घनत्व
(Nutrition Density)

कृषि भूमि (cultivated land) की प्रत्येक इकाई से जितने मनुष्यों को आहार प्राप्त होता है, उन मनुष्यों की संख्या को पोषण घनत्व कहते हैं। उदाहरणार्थ, प्रति हेक्टेयर कृषि भूमि [illegible] कितने मनुष्य अपना पोषण-आहार प्राप्त करते हैं।

[illegible] का अभिप्राय यह है कि कृषि की प्रत्येक एकड़ भूमि [illegible] नुष्यों को आहार प्राप्त होता है। उदाहरण के [illegible] **में लगभग 47 करोड़ एकड़ भूमि पर** [illegible] र 1985 में भारतवर्ष की जनसंख्या लगभग [illegible] भारतवर्ष का तब पोषण घनत्व (nutrition [illegible] प्रति एकड़ या 40 मनुष्य प्रति हेक्टेयर था। [illegible] खेती पर निर्भर रहने वाली जनसंख्या 75% से अधिक होती है, वहीं पोषण घनत्व का विचार करना आवश्यक है। एशिया के मुख्य देशों का पोषण घनत्व निम्नलिखित तालिकानुसार है—

पोषण घनत्व (Nutrition density)
(कृषि भूमि के प्रति हेक्टेयर पर मनुष्यों की संख्या)

भारत	40	चीन	0.9
जापान	22	बाँग्लादेश	7.5
इण्डोनेशिया	9	म्यानमार	0.3
कोरिया	12	पाकिस्तान	4.5

विश्व में जनसंख्या घनत्व का वितरण
(DISTRIBUTION OF POPULATION DENSITY IN THE WORLD)

सघनता के विचार से पृथ्वी पर निम्नलिखित पाँच प्रकार के थल-खण्ड हैं—

1. अत्यधिक घनत्व के क्षेत्र (Very high density areas)—हम पीछे बता चुके हैं कि पृथ्वी पर तीन मानव-महासमूह (human agglomerations) हैं। इन सबमें ही बहुत सघन जनसंख्या है।

स्वास्थ्यकर जलवायु, उपजाऊ मिट्टी, पर्याप्त वर्षा या सिंचाई की सुविधा, तथा खनिज सम्पत्ति की प्रचुरता के क्षेत्रों में जनसंख्या की सघनता ऊँची है। इन प्रदेशों के कुछ भागों में सघनता 400 मनुष्य से 1,000 मनुष्य प्रतिवर्ग किमी तक है।

पूर्वी एशिया में, पूर्वी चीन और जापान की जनसंख्या की सघनता औसतन 300 मनुष्य प्रतिवर्ग किमी से कुछ अधिक है, परन्तु जापान की समुद्र तटीय पेटी में और चीन के यांगटिसी डेल्टा तथा समुद्र तटीय पेटी में यह सघनता 2000 मनुष्य प्रतिवर्ग किमी से भी अधिक बढ़ जाती है।

भारत में औसत जनसंख्या घनत्व 300 मनुष्य प्रतिवर्ग किमी है; परन्तु गंगा-डेल्टा तथा केरल में यह घनत्व 700 मनुष्य से भी अधिक बढ़ जाता है।

पश्चिमी यूरोप में सघनता 300 मनुष्य प्रतिवर्ग किमी है; जैसे कि बेल्जियम तथा पूर्वी ब्रिटेन में। संयुक्त राज्य के न्यूजर्सी (New Jersey) और मेसाचुसैट्स (Massachusetts) राज्यों में तथा रोड द्वीप (Rhode Island) में सघनता लगभग 300 मनुष्य प्रतिवर्ग किमी है।

नगरों तथा समीपवर्ती प्रदेशों में यह सघनता और भी अधिक ऊँची हो जाती है। उदाहरण के लिये, टोकियो, शंघाई, हाँगकांग, कोलकाता और मुम्बई में यह सघनता 3,500 मनुष्य प्रतिवर्ग किमी से अधिक है। यूरोप की औद्योगिक पेटी में नगरों की सघनता (urban density) 2500 से अधिक बढ़ गई है। यूरोप तथा संयुक्त राज्य में फसलों के पकने को काफी धूप मिल जाती है और फसल उगने योग्य लम्बा मौसम भी मिल जाता है तथा बीमारी की कमी के कारण सघनता अधिक है। सघनता के अधिक होने का मुख्य कारण औद्योगिक (industrial) और व्यापारिक (commercial) उन्नति है। विशाल नगरों में, जैसे—टोकियो, न्यूयार्क, लन्दन, शिकागो, बर्लिन, पेरिस, मास्को, आदि में जनसंख्या का घनत्व 3,500 मनुष्य प्रतिवर्ग किमी से अधिक है। संयुक्त राज्य का उत्तरी-पूर्वी भाग बड़े नगरों का क्षेत्र है।

इन्डोनेशिया के जावा द्वीप में और नील नदी की घाटी में 600 मनुष्य प्रतिवर्ग किमी से अधिक घनत्व है। जावा के ऊँचे घनत्व का कारण वहाँ की उपजाऊ मिट्टियाँ हैं, और नील की घाटी में ऊँचा घनत्व सिंचाई की सुविधा के कारण है।

2. अधिक घनत्व के क्षेत्र (High density areas)—अत्यधिक घनत्व के क्षेत्रों तथा सामान्य घनत्व के क्षेत्रों के मध्य में अर्थात् अत्यधिक घनत्व के क्षेत्रों के बाहरी किनारों पर तथा सामान्य घनत्व के क्षेत्रों के बाहरी किनारों पर इस वर्ग के जनसंख्या घनत्व वाले क्षेत्र स्थित हैं, इनमें 100 से 200 मनुष्य प्रतिवर्ग किमी धरातल पर निवास करते हैं।

इस प्रकार के क्षेत्र यूरोप के मैदान पर औद्योगिक क्षेत्रों के समीपवर्ती कृषि प्रदेश, उत्तरी अमेरिका के औद्योगिक प्रदेश,

Scanned by CamScanner

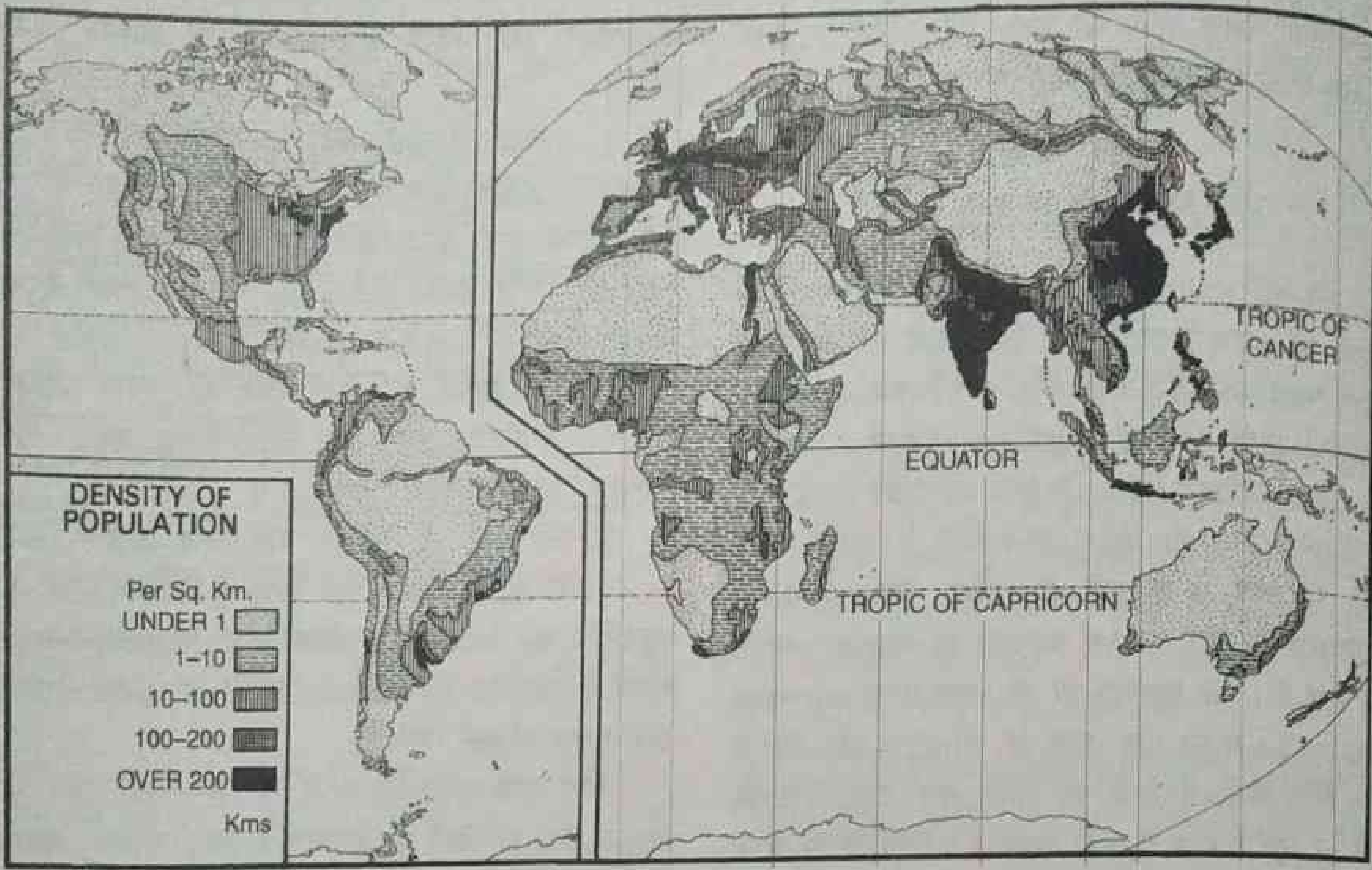

चित्र 16. विश्व में जनसंख्या घनत्व।

भूमध्यसागर के सहारे तुर्की, सीरिया, इजरायल, फिलीस्तीन, अल्जीरिया, ट्युनीशिया तथा मोरोक्को तटीय प्रदेश, इराक में दजला-फरात की घाटी, अफ्रीका में गिनी की खाड़ी का तटीय प्रदेश, आदि हैं।

3. सामान्य घनत्व के क्षेत्र (Moderately populated areas)—ऐसे भू-भागों में जनसंख्या का घनत्व 10 से 100 मनुष्य प्रतिवर्ग किमी है। इनमें अधिकतर निर्वाह-कृषि (subsistence agriculture) होती है। ये प्रदेश सघन प्रदेशों के बाहरी भागों में स्थित हैं। 87° पश्चिम और 100° पश्चिमी देशान्तरों के बीच में मध्य संयुक्त राज्य, मध्य अमेरिका (Central America), स्पेन, बलकान, टर्की, साइबेरिया में ट्रांस-साइबेरियन रेलवे (Trans-Siberian Railway) की संकरी पेटी, अल्जीरिया, नाइजीरिया, म्यानमार, मलेशिया, कम्पूचिया (कम्बोडिया), उत्तरी कोरिया, मध्य चिली और ब्राजील का समुद्री तट इस प्रकार के प्रदेश हैं।

पूर्वी यूरोप के मैदानी भाग में 50 सेमी से 100 सेमी तक वार्षिक वर्षा होती है और ग्रीष्म ऋतु में फसल पकने का अच्छा मौसम रहता है; वहाँ भी 10 से 100 मनुष्य प्रतिवर्ग किमी की सघनता है। दक्षिणी पूर्वी एशिया में ऐसे प्रदेश कम वर्षा वाले और पर्वतीय भागों में हैं।

4. अल्प घनत्व के क्षेत्र (Scantily populated areas)—इन प्रदेशों में 1 से 10 मनुष्य तक प्रतिवर्ग किमी की सघनता है। यहाँ की अल्प जनसंख्या पशुचारण (pasturing), अस्थाई कृषि (shifting cultivation), मरुद्यान कृषि (oasis cultivation), आदि पर निर्भर रहती है। सूडान, ईरान, इराक, पश्चिमी साइबेरिया, उत्तरी अर्जेंटीना, बोर्नियो, मैडागास्कर और संयुक्त राज्य का पर्वतीय भाग इस प्रकार के प्रदेश हैं। यूरोप के उत्तरी भाग में शीत-प्रधान वन और एशिया के मरूस्थली तथा पर्वतीय प्रदेश भी अल्प सघनता के प्रदेश हैं।

5. प्रायः निर्जन क्षेत्र (Almost uninhabited areas)—भूतल (land surface) के 70% भाग में जनसंख्या का घनत्व 1 मनुष्य प्रतिवर्ग किमी से भी कम है। पृथ्वी के विशाल प्रदेश इस प्रकार के निर्जन क्षेत्र हैं। ऐन्टार्कटिका (Antarctica) महाद्वीप तो पूर्णतः निर्जन है। ग्रीनलैण्ड में भी केवल दक्षिणी तट पर थोड़े से परिवार निवास करते हैं। कनाडा का उत्तरी भाग, साइबेरिया का टुण्ड्रा प्रदेश, मंगोलिया और मध्य एशिया, सहारा मरूस्थल, कालाहारी, अरब और थार (राजस्थान) के मरूस्थल तथा आस्ट्रेलिया के मरूस्थल, पैटागोनिया, अमेजन नदी का बेसिन और कांगो बेसिन इसी प्रकार के क्षेत्र हैं, अर्थात्—(i) उष्ण मरूस्थलों में मध्य, अक्षांशों के मरूस्थलों में, टुण्ड्रा के बर्फीले मरुस्थलों में, (ii) उष्ण-आर्द्र वनों में, तथा (iii) उच्च पर्वतीय भागों में अत्यल्प जनसंख्या है, जबकि बर्फ से ढके भाग बिल्कुल निर्जन हैं। इन क्षेत्रों में भोजन

Scanned by CamScanner

एकत्र करना (food gathering), आखेट (hunting), मछली पकड़ना (fishing) और पशुचारण (pasturing) के द्वारा जीवन-निर्वाह होता है। कहीं-कहीं पर खनिज पदार्थ भी निकाले जाते हैं, जैसे आस्ट्रेलिया की कालगूर्ली (Kalgoorlie) और कूलगार्डी (Coolgardie) खानों से तथा अलास्का (Alaska) की कुछ खानों से सोना प्राप्त हो जाता है। परन्तु ऐसे खनिज क्षेत्र केवल गिने-चुने हैं। इन प्रदेशों में वार्षिक वर्षा 25 सेमी से कम होती है। ये प्रदेश या तो उष्ण मरुस्थल हैं या बर्फ से ढके देश हैं, या पर्वतीय क्षेत्र हैं। अतिवृष्टि का अमेजन बेसिन भी निर्जन जैसा है।

ऊपर दिये हुए विभिन्न सघनताओं के प्रदेशों में जनसंख्या घनत्व की विशेषताओं के कारण, वहाँ के प्राकृतिक वातावरण (natural environment) की भिन्न सुविधाओं के अलावा, वहाँ की आर्थिक औद्योगिक क्रियाएँ, समाज व्यवस्था प्रणाली (social organisation), ऐतिहासिक पृष्ठ-भूमि और राजनीति भी भिन्न हैं।

Scanned by CamScanner

Ans :- (2) जनसंख्या घनत्व :-

किसी प्रदेश में निवास करने वाले मनुष्यों की संख्या और प्रदेश के क्षेत्रफल के पारस्परिक अनुपात से जनसंख्या का घनत्व (सघनता) ज्ञात किया जाता है।

- यह जनसंख्या घनत्व उस प्रदेश की उन्नति और भावी विकास के अनुमान लगाने का मुख्य आधार होता है।
- प्रत्येक देश की आर्थिक उन्नति तथा सामाजिक और सांस्कृतिक उन्नति की योजना बनाने के लिये उस प्रदेश की जनसंख्या घनत्व (सघनता) को जानना आवश्यक है।

Scanned by CamScanner

जनसंख्या घनत्व निम्न प्रकार का होता है,

(i) गणितीय घनत्व
(ii) आर्थिक घनत्व
(iii) कार्यिक घनत्व
(iv) कृषि घनत्व
(v) पोषण घनत्व

(i) गणितीय घनत्व:- (Arithmetic density):-

इसमें मानव - स्थल - अनुपात का विचार किया जाता है, अर्थात किसी प्रदेश या देश में रहने वाली कुल जनसंख्या को कुल क्षेत्रफल से विभाजित करने पर प्राप्त होता है,

इसे निम्न सूत्र से ज्ञात किया जाता है,

$$\text{गणितीय घनत्व} = \frac{\text{कुल जनसंख्या}}{\text{कुल क्षेत्रफल}}$$

जैसे- किसी प्रदेश का क्षेत्रफल 100 वर्ग किमी है। और जनसंख्या 150,000 है,

$$\text{घनत्व} = \frac{150,000}{100}$$

$$= 1500 \text{ व्यक्ति/वर्ग किमी.}$$

Today

- विश्व जनसंख्या ब्यूरो वाशिंगटन के अनुसार (2015) विश्व का जनसंख्या घनत्व 47 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. है। इस जनसंख्या घनत्व में क्षेत्रीय असमानताएँ मिलती है, जैसे- एशिया में - 116 ~~व्यक्ति~~, यूरोप में 32 व्यक्ति, अफ्रीका में - 27 व्यक्ति, उ. अमेरिका में 16, दक्षिणी अमेरिका में 20 व्यक्ति

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

ओसीनिया में 3 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी पाये जाते हैं,

(2) आर्थिक घनत्व:- (Economic density.)

इसमें किसी प्रदेश के संसाधनों की उत्पादन क्षमता और उस प्रदेश में निवास करने वाले मनुष्यों की संख्या से ज्ञात किया जाता है,

इसे निम्न सूत्र से ज्ञात किया जाता है।

$$\text{आर्थिक घनत्व} = \frac{\text{जनसंख्या}}{\text{संसाधन}}$$

(Not संसाधन उत्पादकता का सूचकांक)

(3) कायिक घनत्व:- (Physiological density):- / या कृषि क्षेत्रीय घनत्व:-

इसमें किसी प्रदेश की कृषि की जाने वाली भूमि और उस पर निवास करने वाले मनुष्यों की समस्त जनसंख्या से ज्ञात किया जाता है।

इसे निम्न सूत्र से ज्ञात किया जाता है।

$$\text{कायिक घनत्व / या कृषि क्षेत्रीय घनत्व} = \frac{\text{कृषि जनसंख्या}}{\text{कृषि भूमि क्षेत्र}}$$

जैसे- भारत की समस्त कृषि भूमि का क्षेत्रफल लगभग 15,62000 वर्ग किमी है। तथा भारत की जनसंख्या 121 करोड (2011) थी।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

अतः भारत का कार्यिक घनत्व = $\frac{121,00,00,000}{15,62000}$ = 775 मनुष्य/प्रतिवर्ग km.

④ कृषि घनत्व:-

इसमें किसी क्षेत्र या प्रदेश कि कृषि की जाने वाली भूमि के क्षेत्रफल और उसमें निवास करने वाली कृषक जनसंख्या से ज्ञात किया जाता है।

कृषि घनत्व = $\frac{\text{कृषि में संलग्न जनसंख्या}}{\text{कृषि योग्य भूमि (कृषि क्षेत्र)}}$

जैसे- भारत का कृषिय घनत्व - 415 है। तथा कनाडा - 2, U.S.A - 4, बाँग्लादेश - 907, है ~~आदि में~~ तथा इसमें पर्याप्त भिन्नता पायी जाती है।

(5) पोषण घनत्व:- (Nutrition Density):-

किसी प्रदेश की कुल जनसंख्या तथा उस प्रदेश की खाद्यन्न फसलों के अन्तर्गत क्षेत्र से ज्ञात किया जाता है।

इसे निम्न सूत्र ज्ञात किया जाता है।

पोषण घनत्व = $\frac{\text{कुल जनसंख्या}}{\text{खाद्यान्न फसलों के अन्तर्गत क्षेत्रफल}}$

- इसमें प्रति हेक्टेयर कृषि भूमि से कितने मनुष्य को पोषण प्राप्त होता है।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

जैसे:- 1985 में भारत का पोषणीय घनत्व 1.6 मनुष्य प्रति एकड़ था या 40 मनुष्य प्रति हेक्टेयर था।

⇒ कृषि भूमि के प्रति हेक्टेयर पर मानव की संख्या:-

भारत	- 40	चीन	- 0.9
जापान	- 22	बाँग्लादेश	- 7.5
इण्डोनेशिया	- 9	म्यानमार	- 0.3
कोरिया	- 12	पाकिस्तान	- 4.5

अतः प्रत्येक प्रकार के जनसंख्या घनत्व का उपयोग अलग-2 उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किया जाता है।

Q.1 + Q.3 + Q.2 :- Ans

जनसंख्या के वितरण और घनत्व को प्रभावित करने वाले कारक:-

(A). भौतिक कारक -

(i) → स्थिति -
(ii) → जल की उपलब्धता -
(iii) → जलवायु -
(iv) → मृदाएँ -
(v) → भूमि की बनावट -
→ [illegible]

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

(B) आर्थिक कारक :-
- (i) खनिज पदार्थ
- (ii) नगरीकरण
- ~~औद्योगीकरण~~
- (iii) शक्ति के संसाधन
- (iv)

(C) सामाजिक और सांस्कृतिक कारक :-

(D) राजनीतिक कारक -

(E) अन्तर्राष्ट्रीय देशों की ~~[illegible]~~ आवास - प्रवास नितियाँ :-

(F) मनोवैज्ञानिक कारक -

(A) भौतिक कारक :-

(i) अवस्थिति :- किसी प्रदेश की स्थिति का प्रभाव वहाँ की जनसंख्या, तथा दूसरे देशो से सम्बन्ध, परिवहन और व्यापार व मानव इतिहास पर स्पष्ट रूप से ~~दिखाई~~ दिखाई देता है,

जैसा कि ~~[illegible]~~ संसार की लगभग 75% जनसंख्या महासागरों और समुन्द्रों के तटीय भागों में निवास करती है, क्योंकि तटीय भागों में मत्स्य प्राप्ति, समुन्द्री परिवहन, सम जलवायु, भूमि प्राय: मैदानी, होती है।

अत: भूमध्यसागर, हिन्दमहासागर, आदि के चारों और तटीय भागों में बहुत प्राचीन काल से ही मानव बस्तियाँ रह रही है.

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

(2) जलवायु :- (climate) :- जनसंख्या वितरण तथा घनत्व पर जलवायु का प्रभाव सबसे अधिक होता है।

- मानव उन भागों में रहना पसन्द करता है, जहाँ की जलवायु उसके स्वास्थ्य तथा अन्य कार्यों (कृषि, उद्योग, पशुपालन) के लिए अनुकूल होती है।
(सामान्यत 5°C-21°C तक तापमान के प्रदेश जनसंख्या के लिए बहुत अनुकूल है)
- संसार के जिन प्रदेशों की जलवायु मानसूनी तथा सम-शीतोष्ण ~~जलवायु~~ प्रकार की उन प्रदेशों में सघन जनसंख्या पायी जाती है। जैसे - चीन, जापान, वियतनाम, भारत, म्यानमार, बाँग्लादेश, (मानसूनी), तथा प. यूरोप, तथा U.S.A (सम-शीतोष्ण) प्रकार की है।

- जिन प्रदेशों की जलवायु अति उष्ण और शुष्क है (थार, सहारा, कालाहारी, आस्ट्रेलिया के मरुस्थलों की है। इन स्थानों पर जनसंख्या घनत्व अत्यधिक कम पाया जाता है।
- अति उष्ण और अति आर्द्र वनों में भी जनसंख्या कम पायी जाती है। जैसे- अमेजन के वनों में

⇒ वर्षा का प्रभाव भी जनसंख्या की सघनता दिखाई देता है। वर्षा की मात्रा के साथ-साथ जनसंख्या की सघनता घटती - बढ़ती है।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

(3) जल की उपलब्धता:- जल जीवन की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। इसका उपयोग मानव विभिन्न उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु करता है।
अतः जिन प्रदेशों और क्षेत्रों में जल आसानी से उपलब्ध हो जाता है। उन क्षेत्रों में जनसंख्या वितरण व घनत्व अधिक मिलता है।
- यही कारण कि नदी घाटियों में तथा भूमिगत जल उपलब्धता वाले क्षेत्रों में जनसंख्या का घनत्व अधिक पाया जाती है।

10.08

(4) भूमि / धरातल:-

भू-रचना का भी जनसंख्या पर गहरा प्रभाव पड़ता है। मैदानी भागों में भूमि समतल होती है। और उन भागों में कृषि, सिंचाई, परिवहन, व्यापार, की सुविधा होती है। इसी कारण मैदानी भागों में सघन जनसंख्या पायी जाती है।
जैसे- राइन (यूरोप), मिसीसिपी (संयुक्त राज्य) आदि का सघन मैदानी क्षेत्र है।
इसके विपरित पहाड़ी क्षेत्रों में कठोर भूमि व अन्य समस्याओं के कारण जनसंख्या कम पाई जाती है।
जैसे:- हिमालय, रॉकीज, एण्डीज, आदि पर्वतों पर कम जनसंख्या पायी जाती है,

(5) मृदाएँ:- (Soils):-

जनसंख्या (मानव) का मुख्य आहार भोजन है। विश्व के सभी मनुष्यों का भोजन प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से मृदा से ही प्राप्त होता है।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

इसलिए उपजाऊ मृदा वाले प्रदेशों में जनसंख्या बहुत सघन होती है।
- चीन, भारत, और यूरोप आदि में नदियों की घाटियों मे उपजाऊ मृदाएँ पाई जाती है। जिससे कारण वहा बहुत अधिक सघन जनसंख्या पाई जाती है।
और जिन स्थानों पर मृदाएँ अनउपजाऊ होती है। उन क्षेत्रों जनसंख्या घनत्व कम पाया जाता है।

(B) आर्थिक कारक :-

(1) खनिज पदार्थ :- जिन प्रदेशों में खनिज पर्याप्त मात्रा में मिलते है। उन क्षेत्रों में औद्योगिक उन्नति अधिक होती है। औद्योगिक उन्नति से अधिक जनसंख्या को भोजन, वस्त्र, अन्य वस्तुएँ आसानी से प्राप्त हो जाती है।
जैसे- यूरोप की कोयला - पेटी यूरोपीय जनसंख्या की धुरी है। तथा पूर्वी U.S.A के खनिज क्षेत्रों में भी जनसंख्या सघन है।
- जिन प्रदेशों में खनिज पदार्थो की मात्रा अल्प या कम पायी जाती है। उन क्षेत्रों में जनसंख्या घनत्व कम पाया जाता है।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

(२) नगरीकरण:-

नगरों में मनुष्यों को रोजगार के बेहतर अवसर, शैक्षणिक व चिकित्सा सुविधाएँ, के, परिवहन और संचार के साधन मिलते है।
इन नगरीय सुविधाओं हेतु मानव (जनसंख्या) नगरों की ओर खींचते है।
अत: नगरों में अत्यधिक जनसंख्या व घनत्व अधिक पाया जाता है।

~~(३) औद्योगीकरण~~:-

(३) शक्ति के साधन:-

उद्योगों और कारखानों के संचालन के लिए ऊर्जा की मुख्य आवश्यकता होती है। जो कि विद्युत, पेट्रोलियम, गैस, कोयला, जल विद्युत, आदि से पूर्ण होती है।
अत: जिन क्षेत्रों में ऊर्जा स्त्रोत आसानी से उपलब्ध हो जाते है। उन क्षेत्रों में सघन जनसंख्या पायी जाती है। तथा जिन क्षेत्रों में ऊर्जा स्त्रोत नही होते है। उन क्षेत्रों में जनसंख्या वितरण व घनत्व कम पाया जाता है।

(६) सामाजिक और सांस्कृतिक कारक:-

सामाजिक रीति-रिवाजों, धार्मिक विश्वासों, और जीवन के प्रति दृष्टिकोण का भी जनसंख्या के वितरण व घनत्व पर होता है।

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

- एशिया के पूर्वी देशों में, ~~भारत~~, विशेषकर भारत में संयुक्त परिवार प्रणाली, बाल-विवाह, तथा पारिवारिक सदस्यों की पैतृक भूमि के पास रहने की प्रवृत्ति और अन्य कहीं जाने पर सामाजिक प्रतिबन्ध आदि परम्पराओं के कारण उन क्षेत्रों में जनसंख्या अधिक निवास करती है।

- कुछ स्थान धार्मिक अथवा सांस्कृतिक महत्व के कारण अधिक लोगों को आकर्षित करते हैं, इससें उन क्षेत्रों या प्रदेशों में जनसंख्या अधिक संघन हो जाती है।

(क) राजनीतिक कारक :- राजनीतिक नियमों का प्रभाव जनसंख्या वितरण व घनत्व पर सीधा होता है,

जैसे-

- आस्ट्रेलिया का क्षेत्रफल भारत की अपेक्षा 3 गुना है। परन्तु आस्ट्रेलिया की जनसंख्या भारत की जनसंख्या का लगभग 53वाँ भाग है, इसका मुख्य कारण आस्ट्रेलिया सरकार की 'श्वेत नीति' है। (White Policy) है, जो गोरी जातियों के अलावा ~~दूसरे~~ दूसरें लोगों को आस्ट्रेलिया में नहीं बसने देती है।
- मंगोलिया और मंचूरिया तथा पश्चिमी सीमान्त प्रान्तों में जनसंख्या की कमी ~~का~~ है। क्योंकि वहाँ पर शक्तिशाली शासन न होने के कारण डाकुओं और

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

लुटेरों की भरमार रहती है। जिसके कारण बहुत ही कम बाहरी लोग वहाँ जाने और रहने का सहास करते है।

(E) अन्तर्राष्ट्रीय देशों की आवास - प्रवास नितियाँ :-

पृथ्वी पर जनसंख्या के वितरण व घनत्व पर अन्तर्राष्ट्रीय देशों की आवास - प्रवास सम्बन्धी नीति बहुत प्रभाव डालती है।

जैसे-

ग्रेट - ब्रिटेन और जापान में सन् 1821 और 1824 में अपने नागरिकों पर U.S.A में जाने पर रोक लगा दी जिससे ~~जनन~~ जनसंख्या में वृद्धि होने लगी है।

- चीन और जापान द्वारा अपने घने बसे भागों से लोगों को प्रवास की छूट देने के कारण ही प्रशान्त महासागर के अनेक द्वीपों और देशों ~~के~~ में जनसंख्या वृद्धि हुई है।
- रूस, U.S.A, कनाडा, आस्ट्रेलियाँ, न्यूजीलैंड आदि देशों ने जनविहीन भागों में निः शुल्क भूमि देने आदि तरीके अपनाकर विभिन्न क्षेत्रों के लोगों को आकर्षित किया है।

अतः जनसंख्या के घनत्व व ~~a~~ वितरण में आवास - प्रवास नीति का स्थान महत्वपूर्ण है।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

Date 10

(F) मनोवैज्ञानिक कारक:-

मनुष्य किसी प्रदेश में अधिक या कम निवास करे वह स्वयं पर निर्भर करता है।
जैसा कि कुछ लोग अल्प साधनों के क्षेत्रों में बसे रहते हैं। जिसके उनका जीवन भी पिछड़ा हुआ होता है। जैसे पर्वतों या वनों में बसने वाले मानव-वर्ग भी है। ऐसे क्षेत्रों में पिछड़े हुए साधनों को विकसित करने की आवश्यकता होती है। जैसे:- दक्षिणी महाद्वीप में आदि में क्षेत्रों में है।

जनसंख्या वृद्धि को नियन्त्रित करने वाले कारक

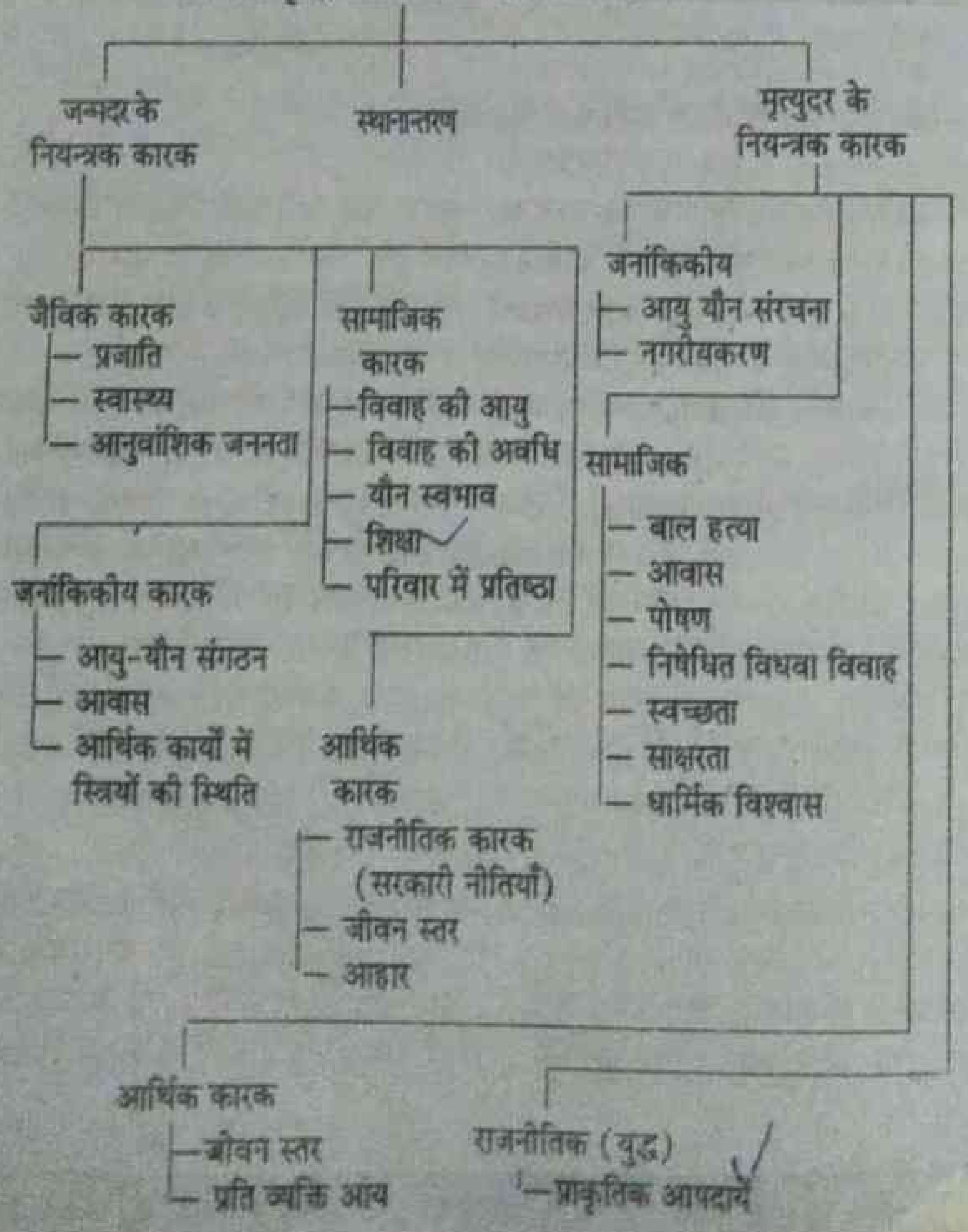

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

Q.4-(b) विकासशील देशों में जनसंख्या समस्याएँ:-

- मानव अपने उत्पत्ति काल से लेकर आज तक सदैव कुछ ना कुछ समस्याओं से घिरा रहा है, वर्तमान समय में जनसंख्या वृद्धि होने के कारण समस्याओं की उत्पत्ति हुई है,
- संसार की लगभग तिन चौथाई से अधिक जनसंख्या विकासशील देशों में निवास करती है, इन देशों में अफ्रीकी देश, अधिकांश लैटिन अमेरिकी देश तथा जापान, कुवैत व सिंगापुर को छोड़कर समस्त एशिया के देश आते है,

इनमें चीन, कोरिया, वियतनाम, लाओस, कम्बोडिया, थाईलैण्ड, म्यानमार, इंडोनेशिया, मलेशिया, फिलिपीन्स, पश्चिमी एशिया के देश - ईरान, टर्की, इराक, तथा अन्य अरब देश तथा दक्षिणी एशिया के देश [भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका, नेपाल, भूटान, एवं मालद्वीप है,

- दक्षिण एशिया के ये सात देश दक्षेश या सार्क देश कहलाते है,

★. इन विकासशील देशों की जनसंख्या समस्याएँ निम्न है, ⇒

(i) जनसंख्या की तीव्र वृद्धि -
(ii) बेरोजगारी
(iii) कृषि संसाधनों पर बढ़ता हुआ भार या कुप्रबन्ध:-
(iv) उद्योगों क्षेत्र की मन्द प्रगति या कमी -
(v) शिक्षा -

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

(vi) अल्पसंख्यकों की समस्या -
(vii) क्षेत्रवाद -
(viii) अन्तर्राष्ट्रीय विवाद -
(ix) महाशक्तियों की राजनीति :-
(x) निम्न जीवन स्तर तथा कुपोषण -

(i) जनसंख्या की तीव्र वृद्धि :-

सभी विकासशील देशों में जनसंख्या वृद्धि की दर अत्यन्त तीव्र है। इन देशों में जनसंख्या वृद्धि दर 2% वार्षिक से अधिक है। और कुछ देशों, जैसे - उत्तरी अफ्रीका एवं पश्चिमी एशिया के कुछ देशों में यह 3% से भी अधिक है।

- इसके मुख्य कारण है कि अधिकांश विकासशील देशों में जन्म दर उच्च है। तथा मृत्यु दर पर चिकित्सा सुविधाओं के प्रसार से नियन्त्रण कर लिया गया है, इन देशों में परिवार नियोजन कार्यक्रम बड़े पैमाने पर नहीं अपनाये जाते हैं।
- इन देशों में आश्रित जनसंख्या का अनुपात उच्च है। तथा कार्यरत जनसंख्या अल्प है।

(ii) बेरोजगारी :-

अधिकांश विकासशील देशों में बेरोजगारी की समस्याँ वहाँ की अत्यधिक जनसंख्या वृद्धि पर आधारित होती है।
इन प्रदेशों में अर्थव्यवस्था के द्वितीयक तथा तृतीयक क्षेत्र कम विकसित होते हैं।

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

अकुशल, अर्द्धकुशल तथा उच्च शिक्षित लोगों के लिए रोजगार के अवसर सीमित हैं।

- इसलिए शिक्षित तथा अशिक्षित, कुशल तथा अकुशल श्रमिक रोजगार की तलाश में दूसरे देशों में प्रवास करते हैं।
- जो विदेश नहीं जा पाते वे रोजगार के लिए छोटे नगरों से महानगरों को प्रवास करते हैं। इसके अतिरिक्त प्रवासी जनसंख्या के कारण नगरों में भीड़ बढ़ जाती है। निर्धन लोगों को नगरों में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इससे अनेक सामाजिक-आर्थिक तथा पर्यावरणीय समस्याएँ उत्पन्न होती हैं।

(iii) कृषि संसाधनों का कुप्रबन्ध या इनपर बढ़ता भार :-

- अधिकांश विकासशील ~~तथा अल्पविकसित~~ देशों में कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था पायी जाती है। कृषि कार्य परम्परागत पिछड़े ढंग से, पुराने उपकरणों तथा अपर्याप्त आर्थिक संसाधनों द्वारा होता है।
- निर्धनता के कारण कृषक रासायनिक उर्वरकों तथा अन्य आवश्यक निविष्टियों का प्रयोग नहीं कर पाते हैं।

- कृषि संसाधनों ~~कुप्रबन्ध~~ से भूमि को बढ़ाया नहीं जा सकता उसका केवल सदुपयोग तथा संरक्षण ही किया जा सकता है। विकासशील देशों में तीव्र जनसंख्या वृद्धि के कारण कृषि संसाधनों पर भार

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

बढ़ता जा रहा है। प्रति व्यक्ति भूमि का क्षेत्रफल लगातार कम होता जा रहा है।

(iv) उद्योग क्षेत्र में मन्द प्रगति या कमी:-

अधिकांश विकासशील देशों में औद्योगिक क्षेत्र निर्बल ही है, इन देशों में अभी भी अनेक प्रकार के उद्योगों का विकास नहीं हो पाया है।

- क्योंकि स्थानीय पूंजी की कमी के कारण उद्योगों की स्थापना करना कठिन होता है।
- उच्च तकनीक के लिये ये देश अभी भी विकसित देशों पर आश्रित हैं।
- इन देशों में उत्पादित माल के लिए स्थानीय जनता उत्तम बाजार भी उपलब्ध नहीं करा सकती है।

अतः दुर्बल औद्योगिक आधार, पूँजी की कमी तथा जनता की निर्धनता एक ऐसा दुष्चक्र पैदा करती है, जो औद्योगिक विकास को बाधित करता है।

(v) शिक्षा:-

विकासशील देशों में शिक्षित जनसंख्या का प्रतिशत 80 से कम तथा कुछ में 50% से भी कम है, भारत, पाकिस्तान तथा बाँग्लादेश से लाखों विद्यार्थी प्रतिवर्ष उच्च शिक्षा के लिये, अमेरिका, कनाडा, यूरोप तथा आस्ट्रेलिया जाते हैं, क्योंकि विकासशील देशों में उच्चतम स्तर की शिक्षा का प्रबन्ध नहीं है,

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

विकासशील देशों में रूढ़िवादिता के कारण आधुनिक जीवन शैली तथा नये विचार अपनाने से रोकती है। ऐसी प्रवृत्तियों में बदलाव, अन्धविश्वासों तथा संकीर्णता को दूर करने के लिए बड़े पैमाने पर साक्षरता तथा शिक्षा अभियान चलाने की आवश्यकता है।

(6) <u>अल्पसंख्यकों की समस्या</u> :- सभी विकासशील देशों में एक सम्प्रदाय या एक जाति बहुसंख्यक तथा एक अल्पसंख्यक है। सभी देशों में अल्पसंख्यको की आर्थिक दशा कमजोर है, अतः किसी भी देश में अल्पसंख्यक समुदाय के विकास से ही देश का समग्र विकास सम्भव होगा।

(7) <u>क्षेत्रवाद</u> :- विकासशील देशों में क्षेत्रवाद की भावना अधिक है, इसी कारण पश्चिमी तथा मध्य पूर्वी अफ्रीका में छोटे - छोटे अनेक देश बन गये हैं। ~~सार्क देशों में यह समस्या बहुत भयंकर है~~। 1971 में इसी भावना के कारण पाकिस्तान का विघटन हो गया था।

- वर्तमान में भी [illegible] कुछ क्षेत्र या देश क्षेत्रवाद की भावना रखते हैं। भारत में महाराष्ट्र में मराठी तथा गैर-मराठी की भावना को कुछ राजनीतिक तत्व उठाते रहते हैं। नागालैंड में कुछ राजनीतिक संगठन विशाल नागालैंड चाहते हैं इसी कारण तेलंगाना, आन्ध्र प्रदेश, में से तथा झारखंड, बिहार राज्य में से अलग राज्य बनाने पड़े हैं।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

(8) निम्न जीवन स्तर तथा कुपोषण:- विकासशील देशों में पोषण युक्त सन्तुलित आहार की बहुत कमी होती है, लोगों का जीवन स्तर बहुत निम्न होता है, तथा आवास सुविधाएँ भी अल्प होती है,

- इन क्षेत्रों में स्वास्थ्य तथा पोषण का स्तर भी नीचा होता है। जिससे स्वास्थ्य सम्बन्धी अनेक समस्याएँ तथा रोग हो जाते है,
- लोगों की अज्ञानता, स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी तथा आर्थिक संसाधनों की कमी के कारण आवास तथा स्वास्थ्य की दशाओं को सुधारने के प्रयास अधूरे रह जाते है।

(9)(1x) अन्तर्राष्ट्रीय विवाद (International Conflicts):- अफ्रीका तथा एशियाई देशों में आपसी विवाद बहुत अधिक है। इनमें अनेक युद्ध हो चुके हैं तथा उनका ये राष्ट्र कोई हल नहीं कर पाये है। इन विवादों में, भारत - पाकिस्तान, भारत - चीन, वियतनाम, उत्तरी एवं दक्षिणी कोरिया विवाद, ईरान-इराक-विवाद, अरब- इजराइल विवाद. आदि प्रमुख हैं।

- इन विवादों के कारण इन राष्ट्रों का धन हथियारों तथा फ़ौज पर आवश्यकता से अधिक व्यय हो रहा है,

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

(10) महाशक्तियों की राजनीति:- संसार की महाशक्तियाँ अनेक नीतियों ~~हथकण्डों~~ को अपनाकर, अपने लाभ के लिये विकासशील देशों में संघर्ष कराती रहती हैं।

- उन्हे ऐसा करने के लिये दोहरे मापदण्ड अपनाने में भी कोई संकोच नहीं होता है।

जैसे:- (1) प्रथम विश्व युद्ध में अधिकांश अरब प्रदेशों पर ब्रिटिश तथा फ्रांस का अधिकार हो गया था।

- ब्रिटेन ने जब अरब क्षेत्रों को स्वतंत्र किया तो फिलिस्तीन को अपना संरक्षित क्षेत्र बना लिया।

(2) भारत तथा पाकिस्तान के मध्य बँटवारे के समय ही झगड़े के बीज बो देना, ताकि दोनों संघर्षरत रहें।

(3) उत्तरी वियतनाम व दक्षिणी वियतनाम में युद्ध कराना।

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

जनसंख्या अध्ययन में मनुष्यों की संख्या, उनका वितरण एवं घनत्व, वृद्धि, जनसंख्या चक्र एवं स्थानान्तरण को जान लेना ही काफी नहीं है, बल्कि यह जान लेना भी आवश्यक है कि किसी प्रदेश में रहने वाले मनुष्यों का स्वास्थ्य कैसा है, स्त्री-पुरुष अनुपात क्या है, आयु संगठन कैसा है, कार्यकारी या कार्यशील जनसंख्या का क्या अनुपात है। शिक्षा की स्थिति कैसी है, श्रमिक किन-किन व्यवसाय में लगे हैं, नगरीय व ग्रामीण जनता का क्या अनुपात है, आर्थिक विकास की दर क्या है, आदि। प्रस्तुत अध्याय में जनसंख्या की कुछ ऐसी ही विशेषताओं का संक्षेप में अध्ययन किया गया है।

प्रश्न -(५) विश्व की जनसंख्या

साक्षरता
(LITERACY)

मानव अब से लगभग 4500 वर्ष पूर्व चित्रकारी कला का विकास कर चुका था, यह उसके साक्षर होने की पहली सीढ़ी थी, धीरे-धीरे उसने अक्षर या वर्ण विद्या का विकास कर लिया।[1] साक्षर किसको माना जाये, इस बात पर विद्वानों में मतैक्य नहीं रहा। संयुक्त राष्ट्र संघ के जनसंख्या आयोग ने किसी भी ऐसे व्यक्ति को, जो किसी भी भाषा में साधारण संदेश को समझ के साथ पढ़ने और लिखने की योग्यता रखता है, साक्षर माना है।

साक्षरता का वितरण पर्याप्त असमानता रखता है। संसार के कुछ देश उच्च साक्षरता रखते हैं तो अनेक देश बहुत पिछड़े हुए हैं। साक्षरता के आधार पर सभी राष्ट्रों को तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है—(i) उच्च साक्षरता वाले देश, (ii) औसत साक्षरता वाले देश, तथा (iii) निम्न साक्षरता वाले देश।

1. उच्च साक्षरता वाले देश—जहाँ कुल जनसंख्या का 90% से अधिक साक्षर है, मुख्यतः सभी यूरोपियन देश, रूस, उत्तरी अमेरिका के देश तथा दक्षिणी अमेरिका के उत्तरी देश और आस्ट्रेलिया एवं न्यूजीलैंड आते हैं। एशिया में केवल जापान व सिंगापुर देश इस वर्ग में आते हैं।

---

1. Golden Hilda H. 1968 : '*Literary*' International Encyclopedia of the Social Science vol. 9, MacMillan Company and Free Press, pp. 412.

Scanned by CamScanner

2. **औसत साक्षरता वाले देश**—इनकी साक्षरता 60 से 90% के मध्य मानी गई है। इस वर्ग में दक्षिण एशिया के भारत व श्रीलंका, पूर्वी एशिया के चीन, कोरिया, ताइवान; दक्षिणी पूर्वी एशिया के इंडोनेशिया, मलेशिया, फिलिपीन्स, पश्चिम एशिया से टर्की व जार्डन, सऊदी अरब; दक्षिणी अमेरिका के ब्राजील व मध्य अमेरिका के देश हैं। अफ्रीका महाद्वीप से केवल दक्षिणी अफ्रीका गणतन्त्र इस वर्ग में आता है।

3. **न्यून साक्षरता वाले देश**—इस वर्ग में अफ्रीका महाद्वीप के अधिकांश देश तथा कुछ एशियाई देश आते हैं। इनमें से अधिकांश देश मुस्लिम जनसंख्या वाले हैं।

साक्षरता दर को प्रभावित करने वाले कारक
(Factors Effecting the Literacy Rate)

साक्षरता दर के वितरण का अध्ययन स्पष्ट रूप से उजागर करता है कि औसत व निम्न साक्षरता वाले देश प्रायः कम विकसित या विकासशील श्रेणी के हैं, जबकि उच्च साक्षरता वाले देश विकसित वर्ग के हैं। साक्षरता को प्रभावित करने वाले कुछ मुख्य कारक निम्नलिखित हैं—

(1) दक्षिण एशिया, पश्चिम एशिया तथा अफ्रीका के अधिकांश देशों में **स्त्री साक्षरता अत्यन्त कम है**।

(2) ये देश प्रायः पिछड़े हुए हैं, संसाधनों की कमी है।

(3) शिक्षा निःशुल्क नहीं है।

(4) शिक्षा क्षेत्र गरीब जनता की पहुँच से दूर है।

(5) जीवन स्तर नीचा है।

(6) अधिकांश देशों की पृष्ठभूमि औपनिवेशिक है।

(7) सरकारें केवल दिखावा करती हैं, नियोजित रूप से शिक्षा का विस्तार नहीं करना चाहतीं।

(8) जनता गाँवों में रहती है, शिक्षण संस्थायें नगरों में स्थापित हैं।

(9) अधिकांश देशों में अल्पसंख्यक समूहों को उनकी मातृभाषा में शिक्षा का प्रबन्ध नहीं है। उदाहरण के लिये, "यह तथ्य सत्य है कि भारत का मुस्लिम समुदाय शिक्षा में पिछड़ा है। परन्तु इस सत्य को भी नकारा नहीं जा सकता कि उनकी मातृभाषा के अतिरिक्त अन्य भाषा के माध्यम से दी जाने वाली शिक्षा के प्रति उनके भाव तिरस्कारपूर्ण हैं।"[1] अतः प्राथमिक शिक्षा का प्रबन्ध मातृभाषा में होना चाहिए।

ग्रामीण नगरीय जनसंख्या एवं नगरीकरण
(RURAL URBAN POPULATION AND URBANISATION)

प्राचीन काल में जब मानव ने स्थायी रूप से बसना सीखा तो उसने गाँवों के रूप में बस्तियाँ बसायीं। धीरे-धीरे ये बस्तियाँ बड़ी होती गईं तथा लगभग 4000 वर्ष पूर्व मध्य-पूर्व में जैरीको नामक ग्रामीण बस्ती ने व्यापारिक रूप प्राप्त किया तथा वह संसार की प्रथम नगरीय बस्ती बनी। 1800 तक विश्व के नगरों में उसकी 2.5% जनसंख्या रहती थी। 1975 में विश्व की 38% तथा 2004 में 48% तथा 2012 में विश्व की 51% जनसंख्या नगरीय हो चुकी थी अर्थात् अब विश्व की लगभग आधी से अधिक जनसंख्या नगरीय हो चुकी थी। अनुमान है, 2025 तक विश्व की लगभग 61% जनसंख्या नगरीय हो जायेगी।

आरम्भ में सभी बस्तियों की स्थापना ग्रामीण बस्तियों के रूप में हुई थी, बाद में उन्हीं बस्तियों में से कुछ नगर के रूप में विकसित हो गईं, परन्तु किसी बस्ती को कब नगर माना जाये, इसके विषय में विश्व में कई मापदण्ड लागू हैं, ये मापदण्ड कुछ विशेषताओं पर आधारित होते हैं, जैसे—

(1) कुछ देशों में कृषि पर आधारित जनसंख्या की बस्ती को ग्राम तथा अन्य कार्यों में लगी जनसंख्या की बस्ती को नगर कहते हैं।

(2) कुछ देशों में वे बस्तियाँ, जिनमें सामुदायिक भावनाओं का विकास हुआ है, जहाँ परिवहन, जल, सीवर, सफाई आदि की सुविधायें विकसित हैं तथा अधिक जनसंख्या कृषि के अतिरिक्त कार्यों में लगी है, ऐसी बस्ती नगर कहलाती है।

(3) यूरोप के देशों में 1000 या 2500 से अधिक जनसंख्या वाली बस्तियाँ नगर कहलाती हैं, जबकि एशिया के देशों में यह संख्या 5,000, 10,000 तथा 20,000 है।

(4) शहरीकरण एक पूर्ण परिवर्तन की प्रक्रिया है जिसके कारण कृषीय अर्थव्यवस्था औद्योगिक अर्थव्यवस्था में तथा लघु समांगी समाज एक विशाल विषमांगी समाज में परिवर्तित होता है।

1. *जनसंख्या भूगोल* : डॉ० आर०सी० चान्दना, कल्याणी पब्लिशर्स, लुधियाना, पृष्ठ 290।

ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या का वितरण—दोनों तथ्य एक-दूसरे के विपरीत हैं। एक बढ़ता है तो दूसरा कम होता है, उदाहरण के लिये—(i) 1800 में विश्व की 2.5% जनसंख्या नगरीय थी। इसका अर्थ है कि 97.5% जनसंख्या ग्रामीण थी। (ii) 2004 में विश्व की 48% जनसंख्या नगरीय थी अर्थात् विश्व की 52% जनसंख्या ग्रामीण थी। (iii) 2012 में विश्व की 51% जनसंख्या नगरीय तथा 49% जनसंख्या ग्रामीण थी।

यह प्रतिशत संख्या सम्पूर्ण विश्व में एक समान वितरित नहीं है। दक्षिणी अमेरिका में 79% जनसंख्या नगरीय है तो अफ्रीका महाद्वीप में यह केवल 35% है। देशों के आधार पर विश्व को तीन भागों में बाँटा जा सकता है—

1. उच्च नगरीय जनसंख्या वाले देश—इस वर्ग में वे देश आते हैं, जिनकी 60% से अधिक जनसंख्या नगरीय है। ये देश दक्षिणी अमेरिका में ब्राजील, कोलम्बिया, अर्जेंटीना, सुरीनाम, उत्तरी अमेरिका में यू०एस०ए०, कनाडा व मेक्सिको तथा मध्य अमेरिका में टोबेको व त्रिनिदाद हैं। यूरोप के अधिकांश देश इसी वर्ग में आते हैं तथा आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड भी इसी वर्ग के देश हैं। एशिया में केवल जापान तथा चार छोटे देश—यूनाइटेड अरब अमीरात, सिंगापुर, इजरायल, तथा जार्डन ऐसे ही देश हैं, जबकि अफ्रीका महाद्वीप में इस वर्ग के देशों में लिबिया, अल्जीरिया, ट्युनिशिया तथा द०अ० गणतंत्र आते हैं।

2. औसत नगरीय जनसंख्या वाले देश—40-60% नगरीय जनसंख्या रखने वाले देश—दक्षिणी अमेरिका में पैराग्वे, यूराग्वे, वेनेजुएला, मध्य अमेरिका में हैटी, निकारागुआ, हाण्डुरास, क्यूबा, जमैका, अफ्रीका महाद्वीप के मिस्र, सूडान, नाइजीरिया, लाइबेरिया, घाना, बेनिन तथा सेनिगॉल देश हैं। एशिया के चीन, इंडोनेशिया तथा मध्य एशिया के देश एवं दक्षिण यूरोप के बाल्कन देश इस वर्ग में आते हैं।

3. न्यून नगरीय जनसंख्या वाले देश—40% से कम नगरीय जनसंख्या रखने वाले देशों में—दक्षिणी एशिया के भारत, पाकिस्तान, बाँग्लादेश, नेपाल, दक्षिणी-पूर्वी एशिया में म्यानमार, थाईलैंड, लाओस, कम्बोडिया, वियतनाम, फिलिपीन्स, आदि आते हैं।

नगरीकरण के कारक—नगरीकरण को बढ़ावा देने वाली शक्तियाँ निम्नलिखित हैं—(i) औद्योगीकरण, (ii) व्यापारिक गतिविधियाँ, (iii) परिवहन सुविधायें, (iv) प्रशासनिक गतिविधियाँ, (v) शैक्षिक पक्षों का एकत्रीकरण, (vi) धार्मिक क्रिया-कलाप, तथा (vii) जनसंख्या वृद्धि एवं कृषि के अतिरिक्त कार्यों या सेवाओं का विकास।

लिंगानुपात स्त्री-पुरुष अनुपात
(MALE-FEMALE RATIO)

स्त्री-पुरुष अनुपात या जनसंख्या का लिंग अनुपात जानना जनसंख्या अध्ययन का एक मुख्य पक्ष है। इसका अध्ययन प्रति एक हजार पुरुषों पर स्त्रियों की संख्या के आकलन से किया जाता है। विश्व में औसत रूप से प्रति एक हजार (1000) पुरुषों के पीछे स्त्रियों की संख्या 993 (1980) है अर्थात् 1000 पुरुषों पर 7 स्त्रियाँ कम हैं। जब क्षेत्रीय स्तर पर अध्ययन किया जाता है तो यह बहुत भिन्नता का प्रदर्शन करता है। इस भिन्नता के आधार पर विश्व को निम्नलिखित चार भागों में बाँटा जा सकता है—

1. अत्यधिक स्त्री अधिकता वाले क्षेत्र—इस वर्ग के देश 1000 मनुष्यों के पीछे 1050 से अधिक स्त्रियाँ रखते हैं। इनमें उत्तरी अमेरिका के यू०एस०ए० व कनाडा, दक्षिणी अमेरिका के दक्षिणी तथा पश्चिमी एंडीज पर्वतीय देश और उत्तरी, दक्षिणी तथा पश्चिमी यूरोप के देश सम्मिलित हैं।

2. स्त्री अधिकता वाले देश—इन देशों में 1000 पुरुषों के पीछे 1000 से 1050 तक स्त्री संख्या है। पूर्वी तथा पश्चिमी अफ्रीका के देश, दक्षिण अफ्रीकी देश। यूरोप में पोलैंड, यूक्रेन, बेलारूस, रूस तथा एशिया में केवल मध्य एशिया के कजाकस्तान, मंगोलिया एवं उज्बेकिस्तान तथा दक्षिणी-पूर्वी एशिया में म्यानमार, थाईलैण्ड तथा कम्बोडिया देश इस वर्ग में आते हैं।

3. पुरुष अधिकता वाले देश—इन देशों में 1000 पुरुषों के पीछे स्त्रियों की संख्या 1000-950 तक है। आस्ट्रेलिया, फिजी, न्यूजीलैंड; पश्चिमी एशिया में अरब देश, ईरान; पूर्वी एशिया में चीन, कोरिया; लैटिन अमेरिका में मेक्सिको, ब्राजील, वेनेजुएला, जमैका, क्यूबा, आदि ऐसे ही देश हैं।

4. अत्यधिक पुरुष अधिकता वाले देश—इस वर्ग में 1000 पुरुषों पर 950 से कम स्त्रियाँ रखने वाले देश आते हैं। भारत इस वर्ग का प्रतिनिधि देश है जहाँ पर 1000 पुरुषों पर केवल 933 स्त्रियाँ हैं। यदि भारत में क्षेत्रीय स्तर पर देखें तो

Scanned by CamScanner

कई राज्यों, जैसे—हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, आदि में यह संख्या 900 से भी कम है। हमें इसके कारण तलाश करके उनका निदान करना अति आवश्यक है।

लिंगानुपात भिन्नता के कारण — इस भिन्नता के कुछ प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं—

(1) जन्म के समय नर शिशुओं की संख्या प्रायः अधिक होती है। विश्व के कुछ देशों में यह 107 तक पाया जाता है।

(2) एशिया व अफ्रीका में लड़कियों के पालन-पोषण को लड़कों के बाद वरीयता मिलती है।

(3) अविकसित देशों में 15 से 50 वर्ष आयु वर्ग में स्त्रियों की मृत्यु अधिक होती है।

(4) एशिया महाद्वीप पर, जहाँ विश्व की 60% से अधिक जनसंख्या निवास करती है, पितृसत्तात्मक समाज होने के कारण, बच्चियों की गर्भ में ही हत्यायें हो रही हैं। भारत में इसे रोकने के लिए दण्डात्मक नियम बनाये गये हैं।

(5) यूरोप से पिछली तीन शताब्दियों में भारी प्रवास हुआ है। प्रवास में स्त्रियों की तुलना में पुरुष अधिक जाते हैं। अतः यूरोप में स्त्रियों का अनुपात बढ़ा है तथा आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड में जनसंख्या का आप्रवास (immigration) हुआ है इसीलिए वहाँ स्त्रियाँ कम हैं।

Scanned by CamScanner

Q.5 विश्व के जनसमूह की विस्तार से व्याख्या कीजिए तथा उनके लिए उत्तरदायी कारकों का वर्णन कीजिए।

Q.6 विश्व के प्रमुख महाजन समूहों को मानचित्र में अंकित करते हुए वर्णन कीजिए।

Q.7. एशियाई व यूरोपीय महाजन समूहों की तुलना कीजिए।

Ans.- विश्व की जनसंख्या (2016) में 716.2 करोड़ थी जो पृथ्वी के 14.79 करोड़ वर्ग किमी क्षेत्र पर निवास करती है।

⇒ विश्व को जनसंख्या वितरण की दृष्टि से दो भागों में विभक्त किया गया है।

(i) वास्य क्षेत्र -/ बसे क्षेत्र / सघन जनसंख्या वाले क्षेत्र -

(2) अवास्य क्षेत्र / बिना बसे / अल्प बसे क्षेत्र -

(i) वास्य क्षेत्र:-

विश्व में संघन जनसंख्या का वितरण एक समान नही है। विश्व को संघन जनसंख्या के अनुसार निम्न जनसमूह / महाजन समूहों में विभक्त किया गया है,

(1) एशियाई जनसमूह / महाजन समूह

(2) यूरोपीय जनसमूह / महाजन

(3) अमेरिकन (उत्तरी एवं दक्षिणी) जनसमूह

(4) अफ्रीकन जनसमूह / महाजन समूह

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

Date 99

पृथ्वी की जनसंख्या का लगभग 80% भाग इन 4 महाजन समूहों में बसा हुआ है,

चित्र 7. संसार में जनसंख्या के दो बड़े समूह।

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

(1) एशियाई जनसमूह :- यह विश्व का सबसे बड़ा जनसमूह है। विश्व की 60% प्रतिशत से अधिक जनसंख्या इसी जनसमूह मे निवास करती है।, इसमें लगभग 430 करोड़ जनसंख्या है।
- यह जनसमूह 10° उ० और 40° उत्तरी अक्षांशो के मध्य स्थित हैं। इसजनसमूह के सभी देश जापान को छोड़कर कृषि प्रधान हैं।
एशिया महाद्वीप का उत्तरी, मध्यवर्ती तथा पश्चिमी भाग बहुत ही कम जनसंख्या वाला है, इसमें कई बड़े व छोटे निर्जन प्रदेश हैं,
एशियाई जनसमूह के सघन जनसंख्या वाले क्षेत्रों को निम्न प्रदेशो में विभक्त किया गया है।
(i) दक्षिणी एशिया -
(2) पूर्वी एशिया -
(3) द० पू० एशिया -

① दक्षिणी एशिया:-
इसमें भारत, पाकिस्तान, बाँग्लादेश, श्रीलंका, नेपाल, भूटान एवं मालद्वीप देश सम्मिलित हैं। इन देशों में विश्व की 23% प्रतिशत से अधिक जनसंख्या निवास करती हैं।

(जनसंख्या - 2015)

देश	जनसंख्या (करोड़ में)	विश्व जनसंख्या का % (प्रतिशत)
(i) भारत	125.2	17.48 %
(ii) पाकिस्तान	19.8	2.76 %
(iii) बांग्लादेश	16.2	2.26 %
(iv) श्रीलंका	2.2	0.30 %
	163.4 करोड़	22.82 %

⇒ World Population Data Sheet (2015) New York

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

(2) पूर्वी एशिया :- इसमें चीन, जापान, व कोरिया आदि देश सम्मिलित हैं। इनमें विश्व की लगभग 22% से अधिक जनसंख्या निवास करती है।

देश	जनसंख्या (करोड़ में)	विश्व जनसंख्या का प्रतिशत
(1) चीन	135.0	18.85 %
(2) जापान	12.7	1.78 %
(3) कोरिया (उ.+द. कोरिया)	7.5	1.00 %
(4) ताइवान	2.3	0.31 %
	157.5	21.94

(3) द. पूर्वी एशिया :-
इसमें इण्डोनेशिया, फिलिपीन्स, मलेशिया तथा सिंगापुर (द्वीपीय देश) तथा वियतनाम, थाईलैण्ड व म्यानमार (बर्मा), लाओस, एवं कम्बोडिया आते हैं। इनमें विश्व जनसंख्या का 8% से अधिक भाग निवास करता है।

देश	जनसंख्या (करोड़ में)	विश्व जनसंख्या का (प्रतिशत)
(i) इंडोनेशिया	22.0	3.77 %
(ii) फिलिपीन्स	9.8	1.37 %
(iii) वियतनाम	10.2	1.42 %
(iv) थाईलैण्ड	7.5	1.00 %
(v) म्यानमार	6.0	0.87 %
	58.5	8.17 %

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

यह एशियाई जनसमूह की 430 करोड़ जनसंख्या 435 लाख वर्ग किमी क्षेत्रफल पर निवास करती है। यहा की जलवायु गर्म व मानसूनी प्रकार की है,

एशिया में जनसंख्या वृद्धि के कारण:-

(1) जलवायु की अनुकूलता से, वर्ष में दो-तीन फसलें उत्पन्न होने के कारण खाद्य-पूर्ति निश्चित हो गई है, जिस कारण जनसंख्या तेजी के साथ बढ़ती जा रही है,

(2) यहाँ उच्च जन्म-दर के कारण परिवार नियोजन में कमी तथा शिक्षा की कमी और निम्न जीवन स्तर से जनसंख्या में वृद्धि होती जा रही है,

(3) सामाजिक सोच (वंशवाद बढ़ाने के लिए)

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

(2) यूरोपीय जनसमूह :- (European Agglomeration) :-

इसमें लगभग 74 करोड़ मनुष्य निवास करते हैं। जो विश्व की जनसंख्या का लगभग 10.3 प्रतिशत है। यह जन समूह 40° उत्तरी अक्षांश से 60° उत्तरी अक्षांशों के मध्य स्थित है।
इसमें जनसमूह में रूस, जर्मनी, फ्रांस, यू.के. (ब्रिटेन) इटली, यूक्रेन, पोलैण्ड, स्पेन, नीदरलैण्ड, रोमानिया तथा अन्य छोटे देश सम्मिलित हैं।

Table 7 (यूरोपियन जनसमूह जनसंख्या - 2015)

देश	जनसंख्या (दस लाख में)	विश्व जनसंख्या का प्रतिशत %
(i) रूस	14.10	1.96
(ii) जर्मनी	8.50	1.19
(iii) फ्रांस	6.35	0.88
(iv) यू.के. (ब्रिटेन)	6.30	0.88
(v) इटली	6.10	0.85
(vi) यूक्रेन	4.70	0.57
(vii) पोलैण्ड	4.00	0.56
(viii) स्पेन	4.00	0.56
(ix) नीदरलैण्ड	1.60	0.23
(x) रोमानिया	2.30	0.31
(xi) अन्य छोटे देश	16.30	2.27
	74.25	10.38 %

इन प्रदेशों में औद्योगिक नगरों का विकास सबसे अधिक हुआ है। सबसे अधिक औद्योगिक उन्नति कोयला

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

क्षेत्रों में हुई है। जो यूरोपीय जनसंख्या की धुरी कहलाती है। इस महाद्वीप में जनसंख्या का मुख्य आधार निर्माण - उद्योग है। यहा की जनसंख्या का जीवन - स्तर एशिया के एशिया की स्तर की अपेक्षा बहुत उच्च है।

यूरोपीय सघन जनसंख्या मुख्य क्षेत्र निम्न है।
(i) ब्रिटेन से रूस में यूक्रेन तक कोयला पेटी
(ii) राइन नदी का क्षेत्र
(iii) इटली का उत्तरी तथा तटीय मैदान

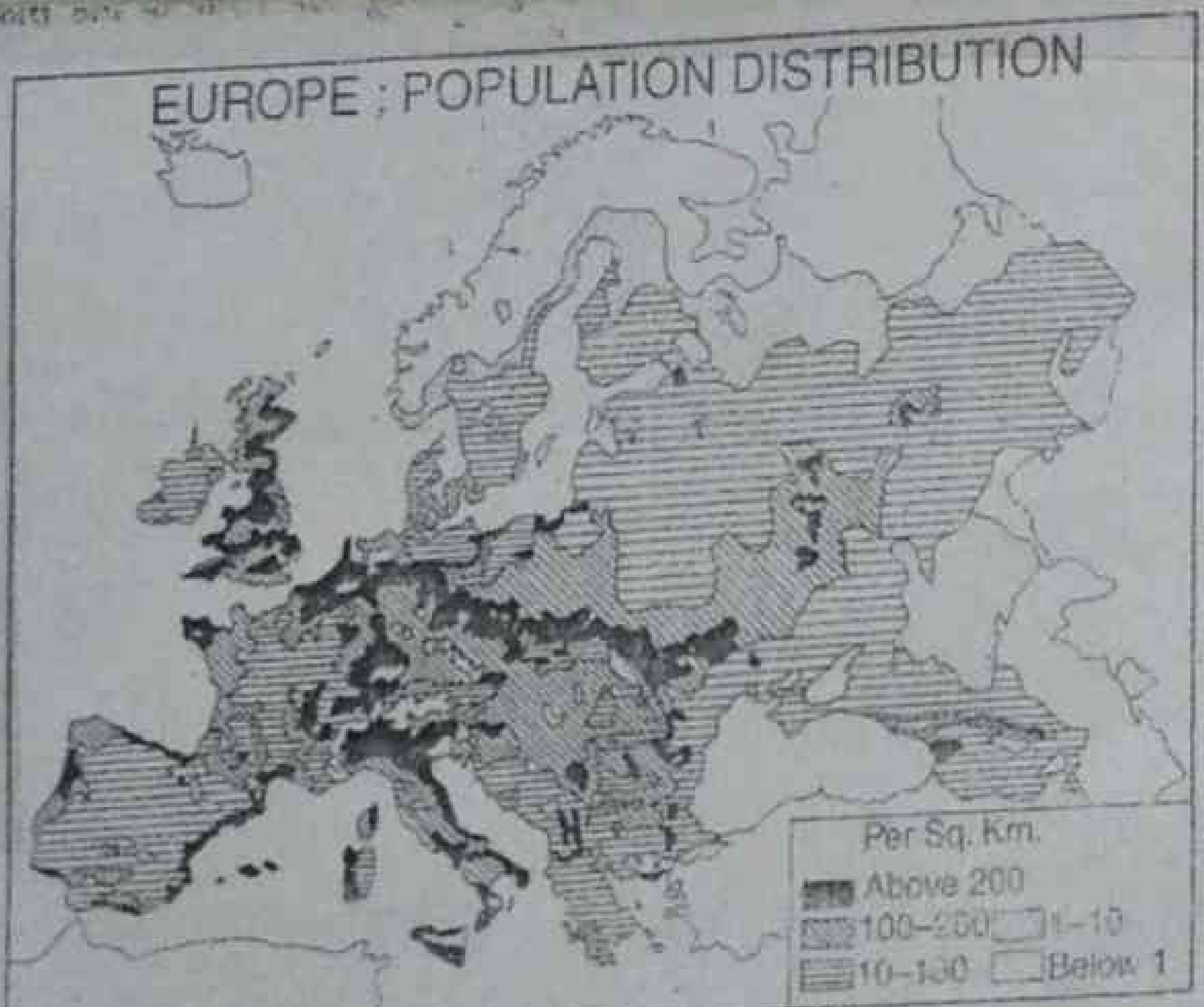

चित्र 8. यूरोप में जनसंख्या का वितरण।

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

(3) अमेरिकन जनसमूह (American Agglomeration):-

उत्तरी अमेरिका तथा दक्षिणी अमेरिका दोनों महाद्वीपों की जनसंख्या लगभग 97.2 करोड़ है। इन दोनों महाद्वीपों में भी सबसे अधिक सघन आबादी का प्रदेश संयुक्त राज्य अमेरिका में बड़ी झीलों के पूर्वी भाग में स्थित है।

- इस प्रदेश की 85% जनसंख्या 30° उत्तर से 45° उत्तरी अक्षांश के मध्य रहती है। इस प्रदेश में बड़े-बड़े औद्योगिक केन्द्र तथा कृषि की मुख्य पेटियाँ भी इसी प्रदेश में हैं।

निम्न प्रदेशों में जनसंख्या -

(1) संयुक्त राज्य अमेरिका :-

यहा 30.96 करोड़ जनसंख्या निवास करती है। यहा जनसंख्या सघन निवास के तीन प्रदेश हैं।

(i) अटलांटिक तट के समीपवर्ती राज्य का क्षेत्र, जो दक्षिणी - मैन में मैरीलैंड तक फैला हुआ है। यहा जनसंख्या का सबसे बड़ा केन्द्र हडसन नदी का मुहाने का क्षेत्र है।

(ii) बड़ी झीलों का क्षेत्र - मिशीगन झील, इरी झील, ओण्टारियो झील आदि के दक्षिणी पश्चिमी तट पर सघन जनसंख्या पाई जाती है।

(iii) पश्चिमी कैलिफोर्निया के समीप का पैसिफिक का तटीय क्षेत्र

संयुक्त राज्य में जनसंख्या का सबसे बड़ा केन्द्र हडसन नदी के मुहाने का क्षेत्र है। जिसे न्यूयार्क

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

केन्द्र कहते है। इस न्यूयार्क केन्द्र से उत्तर-पूर्व की ओर बोस्टन तक दक्षिणी-पश्चिम में फिलाडेलफिया तक सबसे अधिक सघन जनसंख्या की पेटी है।

- संयुक्त राज्य अमेरिका की ग्रामीण कृषक जनता का अधिक निवास मध्य और दक्षिणी राज्यों में है।
- सयुक्त राज्य अमेरिका का पश्चिमी भाग शुष्क है और भूतल असमतल है।

(2) दक्षिणी अमेरिका में जनसंख्या:-

दक्षिणी अमेरिका में जनसंख्या का सकेन्द्रण महासागरीय तटों के सहारे-सहारे हुआ है।

- अमेजन बेसिन की जलवायु विषुवतरेखीय है, जो उष्ण-आर्द्र है, यह प्रदेश निर्जन है। एण्डीज पर्वत पर समशीतोष्ण जलवायु से कुछ मानव निवास करते है।

इसमें ~~वेनेजुएला~~

कुल जनसंख्या 40.67 करोड़ जनसंख्या निवास करती है। जो विश्व का 5.68% है। यह जनसंख्या 175 लाख वर्ग किमी क्षेत्र पर निवास करती है। तथा यहा 23 व्यक्ति मानव प्रति वर्ग किमी पाये जाते है।

वेनेजुएला (2.88 करोड) कोलम्बिया (4.55 करोड़) पेरू (2.95 करोड़) और इक्वेडोर (1.42 करोड़) ब्राजील में (19.3 करोड़) अर्जेन्टिना (4.05 करोड़) व पुरूग्वे मे 34 लाख, चिली में 1.71 करोड़

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

11 करोड़ से आबा

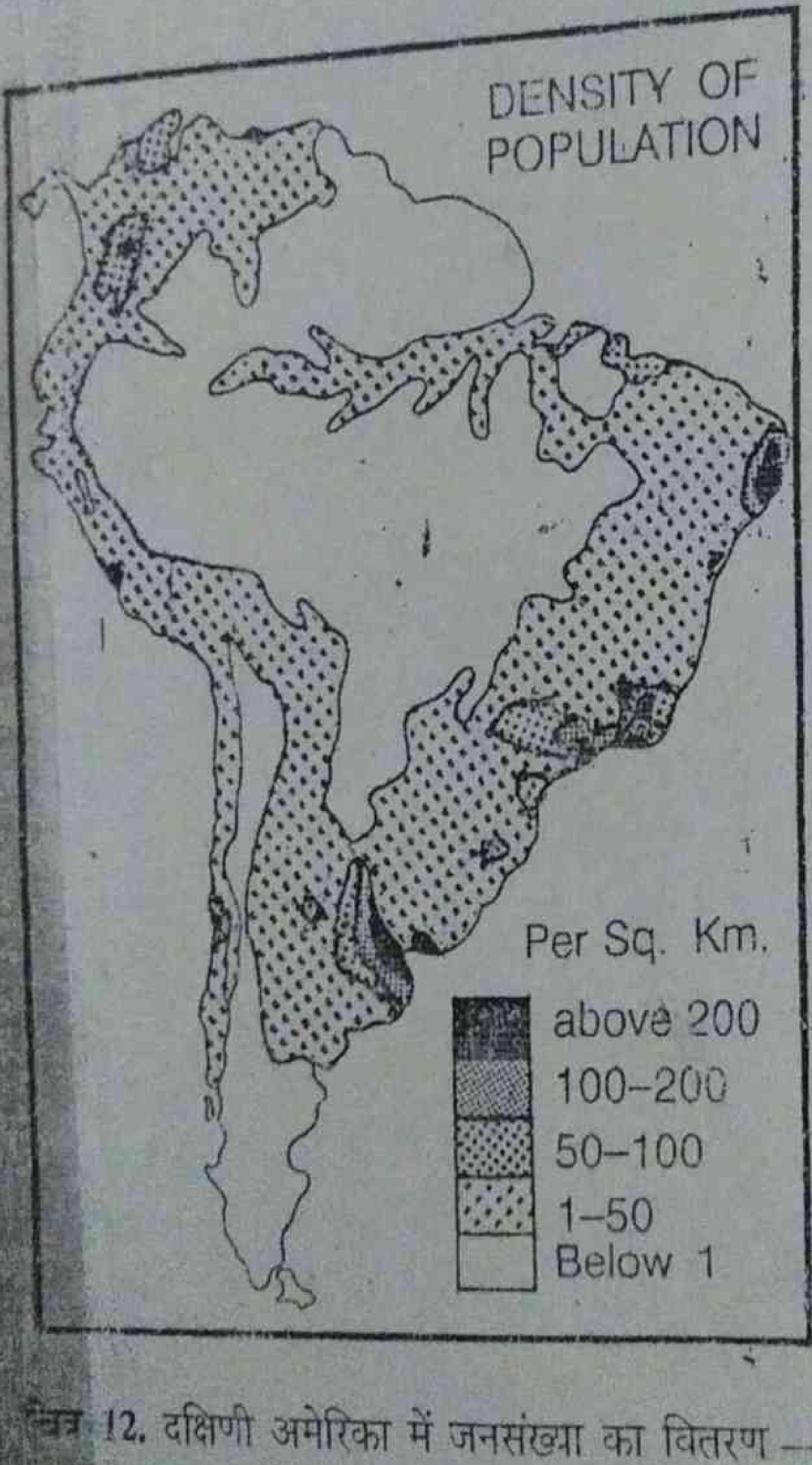

चित्र 12. दक्षिणी अमेरिका में जनसंख्या का वितरण — जनसंख्या का संकेन्द्रण महासागर तट के समीप हुआ है और भीतरी भाग प्रायः खाली पड़े हुए हैं।

निवास करती है।
जनसंख्या वेनेजुएला, कोलम्बिया और इक्वेडर में पर्वतीय भाग
में कुछ आबादी निवास करती है। रायो डि जेनेरो
सेन्टॉस, और साओपोलो बड़े नगर है। जो कृषि, उद्योग,
की व्यापारिक फसलों पर आधारित है।
अर्जेंटीना के उत्तरी भाग में और युरुग्वे में गेहूं का
बहुत अधिक उत्पादन है। चिली की मध्य घाटी
में रूमसागरीय प्रकार की जलवायु है। जिसके कारण
सैंटियागो के समीप कुछ आबादी है।

(3) मैक्सिको :-
उत्तरी अमेरिका का दूसरा बड़ा जनसंख्या
वाला देश मैक्सिको है। यहा की जनसंख्या लगभग
11 करोड़ से अधिक है। यहा 61 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी
पाये जाते है। इस प्रदेश में यह घनत्व
कही अधिक व कही कम पाया जाता है,

(4) कनाडा :-
कनाडा में लगभग 3.5 करोड़ की आबादी है।
लेकिन क्षेत्रफल भारत से गुना अधिक है। यहा
जनसंख्या घनत्व 3 मनुष्य प्रतिवर्ग किमी से
कम पाये जाते है।
- कनाडा की 2/3 जनसंख्या सेंट लारेंस नदी के
निम्न प्रदेशों में झीलों के समीप रहती है।
- कनाडा की आबादी का दूसरा प्रदेश गेहूं की उपज
का प्रेअरी का बड़ा मैदान है,

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

कनाड़ा में टुण्ड्रा और शंकुधारी वनों की पेटियाँ निर्जन हैं।
- उत्तरी अमेरिका में जनसंख्या संकेन्द्रण का प्रमुख कारण औद्योगिक उत्पादन एवं व्यापारिक केन्द्र है।

(5) अफ्रीकन जनसमूह:-
अफ्रीका महाद्वीप की जनसंख्या 111 करोड़ है। अफ्रीका के धरातल का 70% से भी अधिक भू-भाग रेगिस्तानों और ~~घने आबाद~~ सघन वनों से घिरा है। केवल 30% भू-भाग पर ही जनसंख्या स्थित है। ~~यह~~ यहाँ 37 मनुष्य प्रतिवर्ग किमी है।
- अफ्रीका महाद्वीप पर जनसंख्या जमाव के चार छोटे क्षेत्र हैं।
(i) उत्तरी-पूर्वी भाग में नील-नदी की घाटी- मिस्र सूडान, इरिट्रिया व इथोपिया देशों के भाग।

(ii) उत्तरी- पश्चिमी पर्वतीय भू-भाग - अल्जीरिया, मोरक्को तथा ट्युनिशिया देशों के उत्तरी-भाग
(iii) गिनी की खाड़ी के समीपवर्ती तटीय मैदान व नाइजर नदी का बेसिन - नाइजीरिया, घाना, आइवरी कोस्ट व गिनी आदि देश।
(iv) महाद्वीप का दक्षिणी तटीय मैदान - दक्षिणी अफ्रीकी गणतन्त्र।
- सहारा के पूर्वी भाग में नील नदी की घाटी में सिंचाई की सुविधा होने के कारण बहुत सघन आबादी है।

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

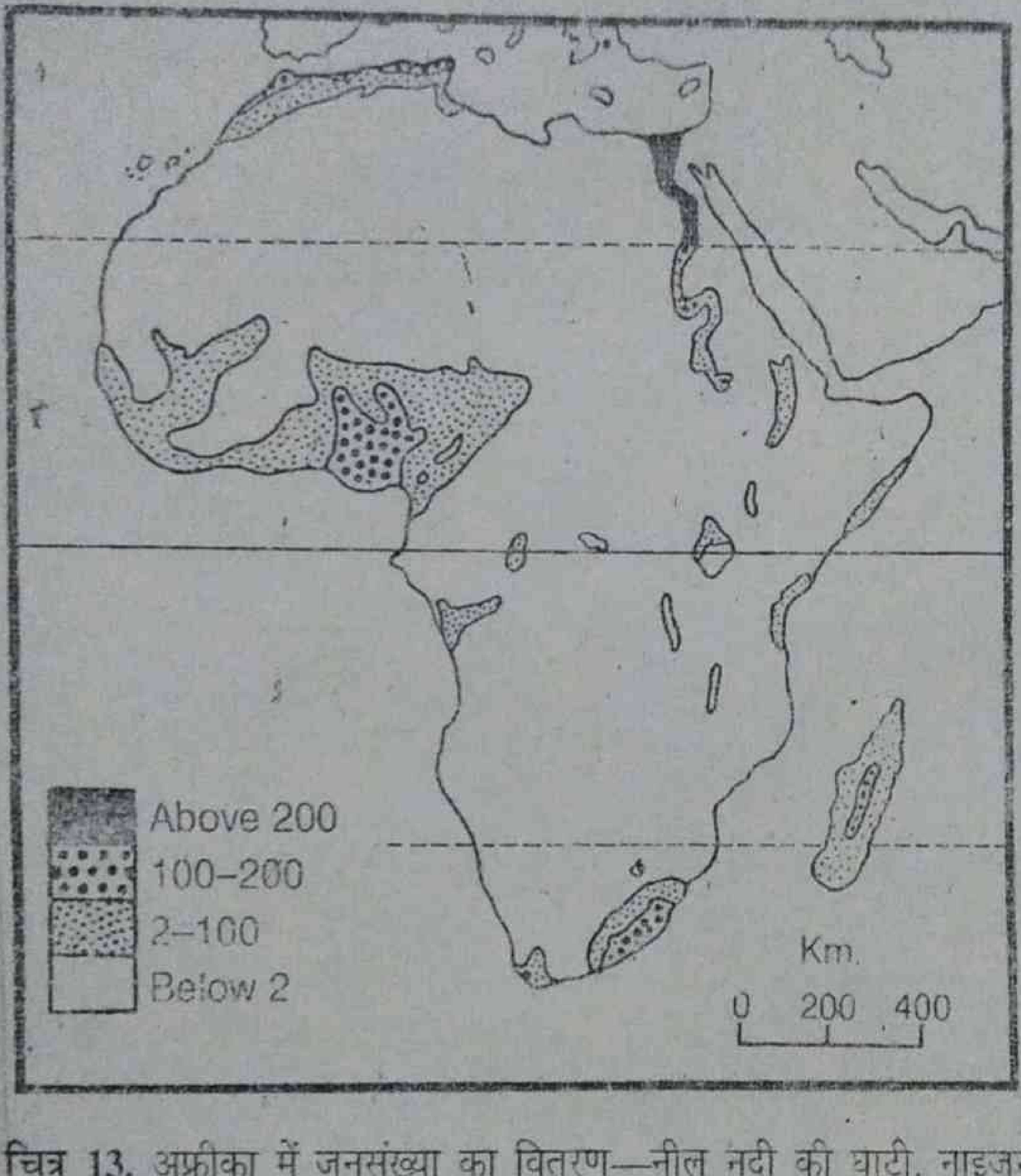

चित्र 13. अफ्रीका में जनसंख्या का वितरण—नील नदी की घाटी, नाइज़र बेसिन, दक्षिणी-पूर्वी क्षेत्र और मोरोक्को की तटीय पेटी में आबादी है; शेष अफ्रीका निर्जन प्रायः है।

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

Date ______
Page ______

Topic-② Population Growth Theory :-
(Malthusian and Demographic transition Theory): (जनसंख्या वृद्धि सिद्धान्त:-
(माल्थस और जनांकिकीय संक्रमण सिद्धान्त)

प्रश्न (1) जनसंख्या वृद्धि के माल्थस के सिद्धान्त को विस्तार से समझाइयें।,

प्रश्न (2) जनसंख्या वृद्धि के जनांकिकीय संक्रमण सिद्धान्त का वर्णन कीजिए।,

Topic-③ Human Development Index (HDI.)
(मानव विकास सूचकांक) -

प्रश्न (1) मानव विकास सूचकांक क्या है, समझाइयें (विस्तार से).

Scanned by CamScanner

प्रश्न ① **माल्थस का जनसंख्या सिद्धान्त** को विस्तार से समझाइये।

(Malthusian Theory of Population)

माल्थस एक अर्थशास्त्री तथा मानववादी विद्वान थे। इन्होंने मानव तथा संसाधन के सम्बन्धों का अध्ययन किया तथा जनसंख्या सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। यह जनसंख्या सिद्धान्त तीन मान्यताओं पर आधारित है :

(1) मानव जीवन के लिये भोजन (खाद्य-पदार्थ) अनिवार्य आवश्यकता है तथा कृषि में उत्पत्ति ह्रास का नियम लागू होता है।

(2) मनुष्य के दोनों लिंगों में कामवासना प्राकृतिक सत्य है, जो सन्तानोत्पत्ति के लिये यथास्थिर रहती है।

Scanned by CamScanner

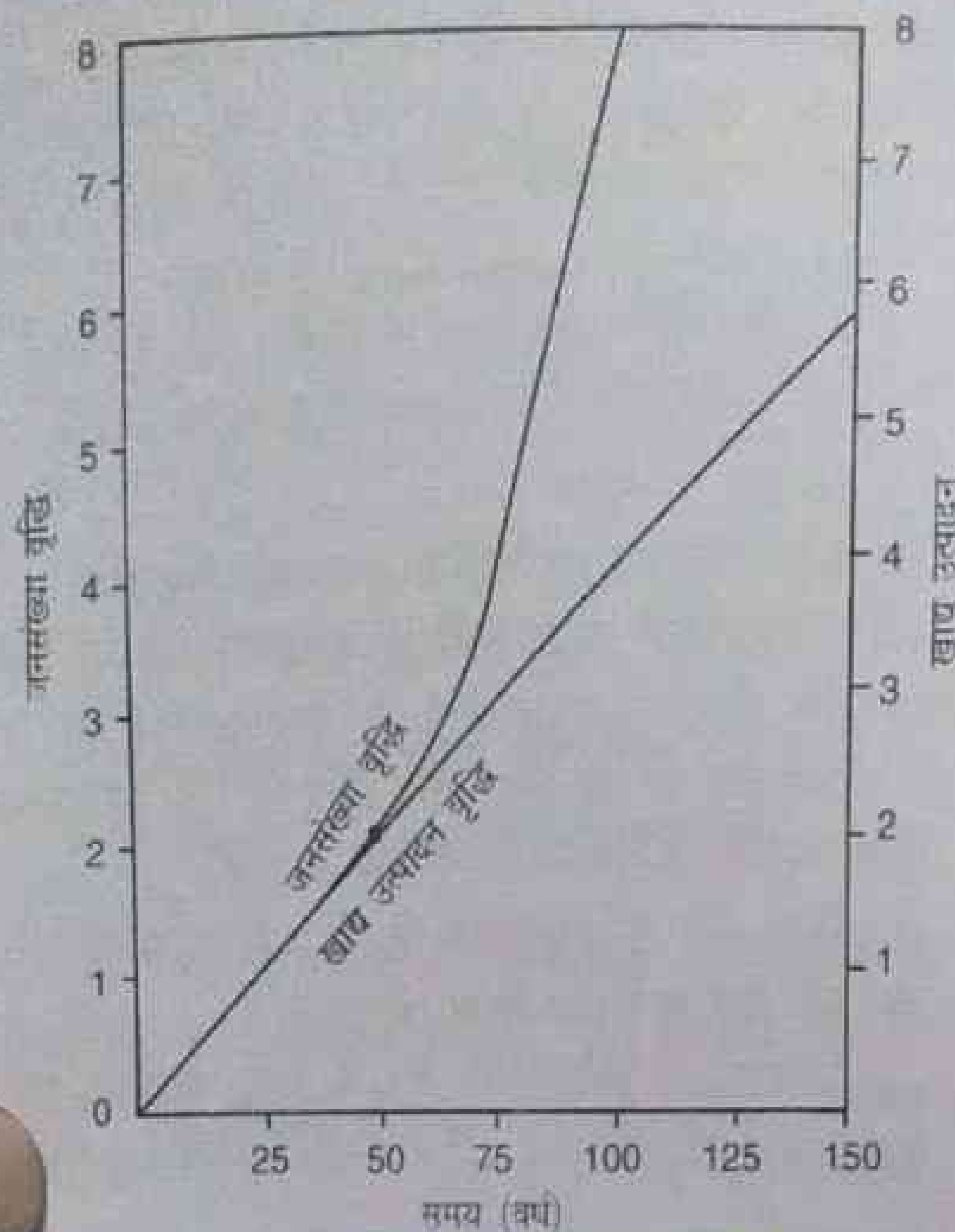

चित्र 1. माल्थस का जनसंख्या सिद्धान्त।

(3) जीवन-स्तर एवं जनसंख्या वृद्धि में सीधा सम्बन्ध है अर्थात् जीवन-स्तर बढ़ने पर जनसंख्या में भी वृद्धि होती है।

माल्थस ने अपने जनसंख्या सिद्धान्त को निम्नलिखित प्रकार से स्पष्ट किया है—

(a) यदि जनसंख्या पर नियन्त्रण न किया जाये तो वह ज्यामितीय ढंग से –

1-2-4-8-16-32-64 .... क्रम में बढ़ती है।

(b) खाद्य-सामग्री गणितीय ढंग से 1-2-3-4-5....... की दर से बढ़ती है।

(c) खाद्य-सामग्री उत्पादन की दर धीमी गति से तथा जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ती है, जिससे असंतुलन उत्पन्न होता है।

माल्थस के अनुसार जनसंख्या 25 वर्ष में दो गुना होती है। इस प्रकार यदि 150 वर्ष का आकलन करें तो—

वर्ष	0	25	50	100	125	150
खाद्य उत्पादन वृद्धि	–	1	2	3	4	5
जनसंख्या वृद्धि	–	1	2	4	8	16
असंतुलन	16 - 5 = 11					

अर्थात् 150 वर्षों में जनसंख्या में 16 गुना तथा खाद्यान्न उत्पादन में केवल 5 गुना वृद्धि होगी। इस **असंतुलन** के भयंकर परिणाम होंगे। अतः संतुलन को बनाये रखना आवश्यक है।

(d) माल्थस ने संतुलन के लिये जनसंख्या पर दो प्रकार के प्रतिबन्ध बताये हैं—(i) प्राकृतिक, तथा (ii) मानवीय।

(i) प्राकृतिक अवरोध—प्राकृतिक अवरोधों में—भूकम्प, बाढ़, सूखा, महामारी, अकाल, आदि को सम्मिलित किया है। इन कारणों से जनसंख्या कम होती रहती है। इन कारकों को माल्थस ने **कष्टकारी कारक** कहा है।

(ii) मानवीय प्रतिबन्ध—माल्थस का विचार था कि **कष्टकारी कारकों** से बचने के लिये मानव को स्वयं जनसंख्या वृद्धि पर प्रतिबन्ध लगाने चाहिये। इसके लिये उन्होंने **ब्रह्मचर्य, देर से विवाह करना** तथा **संयम** को अधिक महत्व दिया है।

माल्थस के सिद्धान्त की आलोचना—माल्थस के इस सिद्धान्त की अनेक विद्वानों ने आलोचना की है, इनमें से कुछ आलोचनाएँ निम्नलिखित हैं—

(1) माल्थस की मान्यता थी, कि जीवन-स्तर अच्छा होने के साथ-साथ जनसंख्या दर में वृद्धि होती है। परन्तु यूरोपीय देशों में इसके विपरीत जीवन-स्तर बढ़ने पर जनसंख्या वृद्धि की दर कम हो रही है।

(2) माल्थस की दूसरी मान्यता है—कामवासना का स्थिर रहना, परन्तु जब मानव का जीवन-स्तर ऊँचा होता है तो उसके मनोरंजन व आमोद-प्रमोद के अनेक साधन उपस्थित हो जाते हैं, अतः कामवासना में कमी आती है।

(3) माल्थस के अनुसार, कृषि में उत्पत्ति ह्रास तीव्रता से लागू होता है। यह त्रुटिपूर्ण है, इसे रोका जा सकता है।

(4) अर्थशास्त्री **कैनन** ने माल्थस की आलोचना करते हुए कहा कि मानव जब उत्पन्न होता है तो वह एक मुँह तथा दो हाथ लेकर आता है। अतः जनवृद्धि कोई भारी खतरा नहीं है। जनसंख्या वृद्धि कभी-कभी (जब वह अनुकूलतम से कम है) देश तथा प्रदेश के हित में भी होती है।

वर्तमान में माल्थस के सिद्धान्त की स्थिति—अनेक आलोचनाओं के बाद भी माल्थस के सिद्धान्त की वर्तमान में भी काफी मान्यता है। मुख्य रूप से पिछड़े हुए तथा पुरातन कृषि क्षेत्रों में यह सिद्धान्त मुख्य रूप से प्रभावी है।

आदर्श या अनुकूलतम जनसंख्या का सिद्धान्त
(Ideal or Optimum Population Theory)

अनुकूलतम जनसंख्या का सिद्धान्त, **प्राकृतिक संसाधनों** और **जनसंख्या के संतुलन** पर आधारित है। संतुलन होने पर जनसंख्या अधिकतम सुख व समृद्धि प्राप्त कर सकती है। वास्तव में, आदर्श (ideal) जनसंख्या वह है, जिसके द्वारा

Scanned by CamScanner

चक्र की भिन्न-भिन्न अवस्थायें होती हैं।

प्रश्न (2)

जनसंख्या विकास अवस्थायें या जनसंख्या चक्र या जनांकिकी परिवर्तन सिद्धान्त (POPULATION GROWTH STAGES OR POPULATION CYCLE OR DEMOGRAPHIC TRANSITION THEORY)

विश्व में जनसंख्या की वृद्धि के इतिहास पर दृष्टिपात करने से हम जनसंख्या विकास की विभिन्न अवस्थायें (stages) देखते हैं। इसके अध्ययन से ज्ञात होता है कि जनसंख्या के विकास क्रम में सामान्यतः पाँच अवस्थायें होती हैं। बर्गडौरफ़र (Burgdorfer)[1], ब्लेकर (Blaker)[2], साइमन (Simon)[3], संयुक्त राष्ट्र (United Nations)[4], आदि ने जनसंख्या वृद्धि क्रम की अवस्थाओं पर अपने विचार प्रकट किये हैं। वे पाँच अवस्थायें निम्नलिखित हैं—

(1) उच्च जन्म-दर, उच्च मृत्यु-दर (high fertility, high mortality)।

(2) उच्च जन्म-दर, मृत्यु-दर उच्च परन्तु गिरती हुई (high fertility, mortality high but declining)।

(3) उच्च जन्म-दर, मध्यम मृत्यु-दर (high fertility, moderate mortality)।

(4) मध्यम जन्म-दर, निम्न मृत्यु-दर (moderate fertility, low mortality)।

(5) निम्न जन्म-दर, निम्न मृत्यु-दर (low fertility, low mortality)।

संयुक्त राष्ट्र संघ ने अपनी रिपोर्टों में, तीसरे वर्ग का एक अन्य प्रतिरूप भी लिखा है, जिसमें कुछ-कुछ उच्च जन्म-दर (fairly high fertility) अर्थात् उच्च परन्तु गिरती हुई जन्म-दर तथा मध्यम मृत्यु-दर (moderate mortality) होती है, परन्तु

Scanned by CamScanner

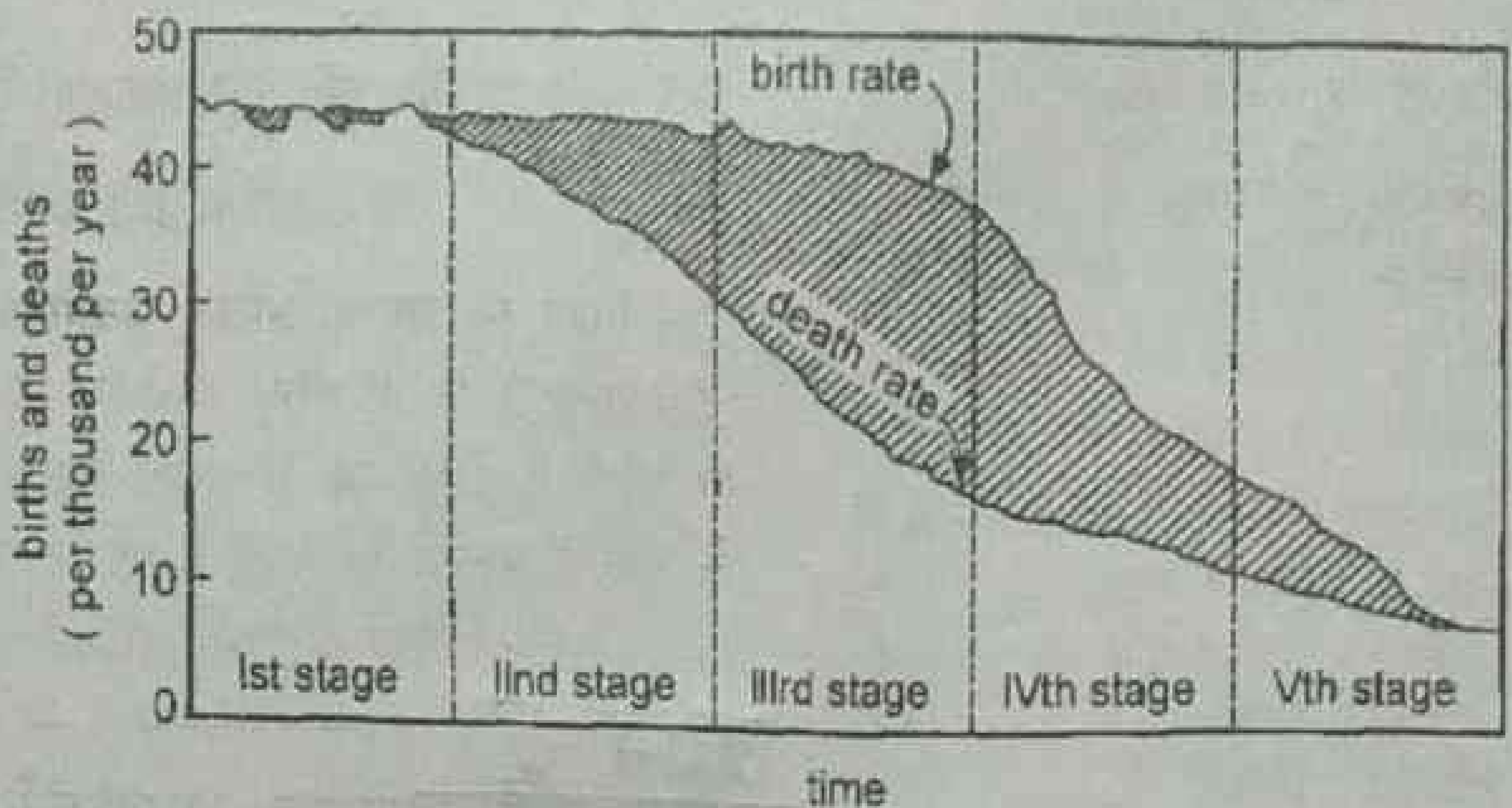

चित्र 4. जनसंख्या विकास की पाँच अवस्थायें।

इस प्रकार का प्रदेश केवल क्यूबा है, जो सामान्यतः तीसरे वर्ग में ही सम्मिलित होता है।

जनसंख्या वृद्धि-क्रम की अवस्थाओं के अनुसार पाँच मुख्य जनांकिकी वर्ग (Five Demographic Groups According to the Stages of Population Growth)

इन उपरोक्त पाँच अवस्थाओं के कारण विश्व में निम्नलिखित पाँच जनांकिकीय वर्ग मिलते हैं—

(1) प्रथम अवस्था में उच्च जन्म-दर और मृत्यु-दर होते हैं, जो 40 से 50 तक जन्म तथा मृत्यु प्रति हजार होते हैं। जन्म और मृत्यु लगभग बराबर होने के कारण इन देशों में जनसंख्या की वृद्धि बहुत मंद होती है। ये देश अधिकतर निर्वाह कृषि (subsistence agriculture) पर निर्भर करते हैं। अफ्रीका में सूडान, नाइज़ीरिया, इथिओपिया, कांगो, घाना, कीनिया, तंज़ानिया, अंगोला, रोडेशिया, आदि देश तथा मध्य अमेरिका (Central America) में ग्वाटेमाला और दक्षिणी मेक्सिको इसी अवस्था के देश हैं। जब जन्म व मृत्यु-दर समान होते हैं, तो वह स्थिति शून्य जनसंख्या वृद्धि (zero population growth) की होती है, और ऐसी ही स्थिति में जनसंख्या ह्रास भी होता है, या उसका खतरा बना रहता है, परन्तु वास्तविक रूप से, वर्तमान समय में विश्व की अनेक चैरिटेबल संस्थाओं, सहयोग संघटनों तथा संयुक्त राष्ट्र की संस्थाओं द्वारा किये जाने वाले मानवीय कार्यों (भोजन व स्वास्थ्य सुविधाओं) के कारण विश्व के अधिकांश देशों (जिनमें उपरोक्त देश भी शामिल हैं) को इस वर्ग से बाहर कर दिया है। अतः अब इस वर्ग के किसी भी देश में मृत्यु-दर का स्तर जन्म-दर के स्तर से उच्च नहीं है। हाँ, कुछ देशों, जैसे—सोमालिया, कांगो, अंगोला, रोडेशिया, आदि के कुछ भाग किन्हीं आन्तरिक कारणों से इस वर्ग में आते हैं।

(2) दूसरी अवस्था में भी, जन्म-दर और मृत्यु-दर दोनों ही उच्च होती हैं, परन्तु स्वास्थ्य सेवाओं (health services) के विकास के कारण मृत्यु-दर गिरती हुई होती है। इस अवस्था में जनसंख्या में वृद्धि होने लगती है। इस वर्ग में प्रायः वे पिछड़े हुये देश आते हैं, जिनकी अर्थव्यवस्था में सुधार दृष्टिगोचर होने लगता है। अफ्रीका महाद्वीप के अधिकांश देश, जो प्रथम अवस्था में थे, अब इसी अवस्था में आ गये हैं।

(3) तीसरी अवस्था में, उच्च जन्म-दर और मध्यम मृत्यु-दर होती है। इस अवस्था में जनसंख्या वृद्धि बहुत तीव्र गति से होती है। उत्तरी अफ्रीका के नाइज़ीरिया, अल्ज़ीरिया, लीबिया, ट्युनिशिया और पश्चिमी एशिया के अरब राष्ट्र तथा दक्षिण एशिया में पाकिस्तान, अफगानिस्तान, नेपाल, भारत के उत्तरी तथा उत्तरी-पूर्वी राज्य, दक्षिणी-पूर्वी एशिया में लाओस, कम्बोडिया, आदि देश इस वर्ग में आते हैं। वास्तव में, इस अवस्था में अति तीव्र वृद्धि होने के कारण ही सामाजिक व राजनीतिक संस्थायें परिवार नियोजन का लक्ष्य लेकर आती हैं और फिर जन्म-दर धीरे-धीरे कम होने लगती है।

(4) चौथी अवस्था में, मध्यम जन्म-दर (moderate fertility) और निम्न मृत्यु-दर (low mortality) होती है। संयुक्त राज्य, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, चिली, अर्जेंटीना, सुरीनाम, मिस्र, कोलम्बिया, इण्डोनेशिया, मलेशिया, थाईलैंड, आदि देश इस वर्ग में आते हैं। वर्तमान समय में भारत के दक्षिणी राज्य तथा चीन एवं बाँग्लादेश भी इसी वर्ग में शामिल हो गये हैं। इस अवस्था के प्रारंभिक काल में जनसंख्या में तेजी से हो रही वृद्धि धीरे-धीरे मंद होने

Scanned by CamScanner

लगती है तथा इस अवस्था के अन्तिम काल में पहुँचते-पहुँचते वृद्धि न्यूनतम सीमा के पास पहुँच जाती है। इस अवस्था के देशों में यान्त्रिक कृषि (mechanised agriculture) के द्वारा प्रायः अधिक भोज्य उत्पादन (surplus food production) होता है। निर्माण औद्योगिक धन्धे भी इन देशों में बहुत विकसित हुए हैं, जिनके कारण वहाँ शहरों की अधिक वृद्धि होने लगी है।

(5) पाँचवें वर्ग में निम्न जन्म-दर (low fertility) होती है, इसलिये ऐसे देशों को भविष्य में जनसंख्या घट जाने का भय रहता है। पश्चिमी यूरोप के प्रायः सभी देश और जापान इस अवस्था में हैं। ब्रिटेन, जर्मनी, पोलैंड, बेल्जियम, स्वीडन, फ्रांस, आदि में निम्न जन्म-दर होने से जनसंख्या अपनी स्थाई अवस्था (static stage) को प्राप्त हो गयी है। रूस, बेलारूस, यूक्रेन तथा जापान भी अब इसी वर्ग में हैं। भारत का केरल राज्य तथा दक्षिणी पूर्वी चीन के कुछ भाग भी इसी वर्ग में पहुँचने वाले हैं। इस वर्ग के कई देश जनसंख्या ह्रास (रूस, जर्मनी, जापान, फ्रांस, इटली, यूक्रेन व स्वीडन, आदि) का सामना कर रहे हैं। रूस की जनसंख्या, जो 1990 में 1480 लाख थी, 2007 में घटकर 1420 लाख रह गयी और 2025 में 1380 लाख रह जाने की संभावना है। इन देशों को भय है कि ऐसा लगातार होने से इन राष्ट्रों की मानव शक्ति (human power) अति दुर्बल हो सकती है।

इन पाँच अवस्थाओं से गुजरती हुई किसी देश की जनसंख्या, अपनी संतुलन अवस्था (equilibrium stage) को प्राप्त हो जाती है। पश्चिमी यूरोप के देश इन अवस्थाओं को पार करते हुए अन्तिम अवस्था में आ गये हैं। इन देशों में सबसे अधिक औद्योगिक (industrial) तथा व्यापारिक (commercial) विकास हुआ है। एशियाई देशों में, चीन, भारत, बाँग्लादेश, आदि अब चौथी अवस्था में पहुँच रहे हैं। इसलिये उनमें जन्म-दर और मृत्यु-दर दोनों नीचे गिर रही है और वहाँ की जनसंख्या जो तेजी से बढ़ रही थी, उसमें कुछ कमी आने लगी है और निकट भविष्य में जनसंख्या वृद्धि की दर सामान्य से नीचे आने की उज्ज्वल संभावना है।

Scanned by CamScanner

(capabilities) में होने वाली वृद्धि की प्रक्रिया है। सामर्थ्य से तात्पर्य मनुष्य के कार्यों के उन वैकल्पिक एकीकरण (alternative combinations) से है जिन्हें वह अर्जित कर सकता है तथा इन वैकल्पिक एकीकरण से अपने लिये एक संग्रह (collection) चुन सकता है। स्वतन्त्रता का भाव यहाँ 'सामर्थ्य' शब्द में प्रतिमूर्तित किया गया है—अर्थात् विकल्पों की वह सीमा जिसमें मनुष्य यह निर्णय लेता है कि वह किस प्रकार का जीवन चाहता है। नैतिक विचारों का परिचय इस उपागम (approach) का प्रमाण-चिन्ह रहा है।

प्रश्न ⇒

मानव विकास सूचकांक (HUMAN DEVELOPMENT INDEX OR HDI)

मानव विकास के स्तर को मानव विकास सूचकांक द्वारा मापा तथा प्रदर्शित किया जाता है। वास्तव में, HDI जीवन की गुणवत्ता (quality of life) के गैर-आय आयामों (non-income dimensions) को मापने का एक उपकरण (tool) है। यह विकास के तीन अंगों (components) का संयुक्त सूचकांक (composite index) है — दीर्घायु (longevity), शिक्षा या ज्ञान (knowledge) तथा आय (income)। दीर्घायु, जनसंख्या की जन्म के समय जीवन प्रत्याशा (life expectancy) से प्रदर्शित होती है, जो कि एक लम्बा व स्वस्थ जीवन जीने की सामर्थ्य की ओर संकेत करती है। जबकि शिक्षा-प्राप्ति, दो शैक्षणिक संग्रह चरों (educational stock variables) का भारित औसत (weighted average) है। वयस्क साक्षरता (adult literacy) व विद्यालयी शिक्षा के औसतन वर्ष (average years of schooling)। इसमें दो-तिहाई भारण (two-third weightage) वयस्क साक्षरता को तथा एक-तिहाई भारण विद्यालयी शिक्षा को दिया जाता है। शिक्षा प्राप्ति से तात्पर्य ज्ञान प्राप्त करने की उस सामर्थ्य से है जिसकी सहायता से मनुष्य सामुदायिक जीवन में घुल-मिल सकें तथा उसमें भागीदार बन सकें। जबकि आय (income) से तात्पर्य मनुष्य की वस्तुओं व सेवाओं का उपभोग करने की सामर्थ्य से है।

$$W(y) = \frac{1}{(1-e)} y^{(1-e)}, \; e < 1$$

प्राचल (parameter) 'e' आय की सीमान्त उपयोगिता की लोच (elasticity) है तथा ह्रासमान लाभ (diminishing return) की सीमा की माप है। जब $e = 1$ होता है तब 'W' लघुगणकीय (logarithmic) रूप में आता है।

मानव विकास सूचकांक (HDI) की गणना से पहले— दीर्घायु, शिक्षा व आय; इन तीनों आयामों हेतु अलग-अलग सूचकांक की गणना करनी पड़ती है। इन आयाम सूचकांकों (dimension indices) की गणना हेतु प्रत्येक अन्तर्निहित सूचकों (underlying indicators) हेतु न्यूनतम व अधिकतम मूल्य चुने जाते हैं। प्रत्येक आयाम में निष्पादन (performance) निम्नलिखित सूत्र द्वारा प्राप्त 0 से 1 के बीच मूल्यों द्वारा प्रदर्शित किया जाता है :

$$\text{आयाम सूचकांक} = \frac{\text{वास्तविक मूल्य} - \text{न्यूनतम मूल्य}}{\text{अधिकतम मूल्य} - \text{न्यूनतम मूल्य}}$$

इसके पश्चात् HDI, आयाम सूचकांकों के समान्तर माध्य के रूप में आँका जाता है। वर्ष 2002 में HDI की विश्व में उच्चतम मूल्य नार्वे (0.956) को प्राप्त हुआ था। भारत मध्यम मानव विकास की श्रेणी में आया था। भारत में HDI का मूल्य 0.595 था।

मानव विकास सूचकांक की आलोचना (CRITICISM OF HUMAN DEVELOPMENT INDEX)

HDI, कई कारणों से आलोचना का विषय रहा है। यह सूचकांक ऐसा कोई संकेत उपलब्ध नहीं कराता है कि शिक्षा-प्राप्ति, स्वास्थ्य तथा क्रय-शक्ति मनुष्य के जीवन-स्तर में कोई सुधार लाते हैं। UNDP द्वारा परिभाषित 'मानव विकास' में शिक्षा-प्राप्ति, स्वास्थ्य एवं जीवन-स्तर के साथ-साथ राजनीतिक, आर्थिक तथा सामाजिक स्वतन्त्रता की छाँट (choices) से लेकर रचनात्मक एवं उत्पादक बनने के अवसर (opportunities), स्वाभिमान तथा मानवाधिकारों की गारण्टी तक सम्मिलित हैं। यह शब्द 'मानव विकास' मनुष्य के सामर्थ्य के निर्माण को प्रदर्शित करता है, जैसे—सुधरता हुआ स्वास्थ्य, ज्ञान तथा कुशलता (skills) एवं इन्हीं सामर्थ्यों (capabilities) का प्रयोग मनुष्य मनोरंजन, उत्पादक उद्देश्यों तथा सांस्कृतिक, सामाजिक एवं राजनीतिक मसलों (affairs) में सक्रिय रहने हेतु करता है। यद्यपि, यह सूचकांक मनुष्य के कल्याण (wellbeing) की ओर कोई संकेत नहीं करता है।

HDI अभाव (deprivation) व गरीबी का रैखिक माप (linear measure) है। अतः किसी राष्ट्र विशेष का 'मानव विकास' निम्न (low) माना जाता है क्योंकि इसके द्वारा प्राप्त मानव विकास मूल्य (value) अन्य किसी ऐसे राष्ट्र से कम है जिसने अधिक मूल्य अर्जित किये हैं। यदि न्यूनतम मूल्य

Scanned by CamScanner

प्राप्त करने वाले देश के मूल्य में कोई सुधार होता है तो अन्य सभी राष्ट्रों के मूल्यों में गिरावट आ जाती है। इसी प्रकार का प्रभाव तब देखने को मिलता है जब अधिकतम मूल्य प्राप्त करने वाले राष्ट्र के मूल्य में सुधार होता है। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह है कि HDI किसी एक समय विशेष में होने वाले सुधारों को मापता है। यद्यपि, कालान्तर में मानव विकास की प्राप्ति में सुधार अथवा गिरावट के प्रतिरूपों (patterns) का अध्ययन आवश्यक एवं रुचिकर है।

उपरोक्त आलोचनाओं के अतिरिक्त कई अन्य तथ्य और हैं जिनका HDI में वर्णन नहीं किया गया है। जब मानव विकास पर चर्चा की जाये तो समाज के सामाजिक तथा सांस्कृतिक प्रसंगों (context) को भी विश्लेषण का विषय बनाया जाना चाहिए।

Scanned by CamScanner

Unit - IV 45.

Topic ① Factors, Types and Consequences of Migration, (कारण, प्रभाव, प्रकार - जनसंख्या स्थानान्तरण (जनसंख्या प्रवसन)

प्रश्न (1) जनसंख्या प्रवसन को विस्तारपूर्वक समझाइए और प्रवसन के प्रकार व कारणों का वर्णन कीजिए। (2017)

प्रश्न (2) जनसंख्या स्थानान्तरण को परिभाषित करते हुए। इसके प्रकारों व इसे प्रभावित करने वाले कारकों का वर्णन कीजिए।

प्रश्न (3) जनसंख्या स्थानान्तरण के प्रभावों पर संक्षिप्त में लिखियें।

Topic ② Griffith Taylor's Migration theory (टेलर का प्रवास कटिबन्ध सिद्धान्त)

प्रश्न (4) ग्रिफिथ टेलर के 'प्रवास कटिबन्ध सिद्धान्त' की व्याख्या कीजियें।

Scanned by CamScanner

Topic-③ Trends and Patterns of Urbanisation of the World.
(विश्व में नगरीकरण : प्रवृत्तियाँ और प्रतिरूप)

प्रश्न-5 विश्व में नगरीकरण की प्रवृत्तियाँ को विस्तार से समझाइयें।

प्रश्न-6. विश्व में नगरीकरण के प्रतिरूप को समझाइयें।

Topic-④ Settlements:- Types and Patterns.
(बस्तियाँ :- प्रकार और प्रतिरूप)
(ग्रामीण, नगरीय)

प्रश्न-(7) अधिवासों के प्रकारों से आप क्या समझते हैं? ग्रामीण अधिवास प्रतिरूपों की विस्तार से व्याख्या कीजिए। (2018)

प्रश्न-8 नगरीय अधिवासों के विषय में विस्तृत ब्यौरा दीजिये। (2020)

Topic:-⑤ Christaller's Central Place theory.
(क्रिस्टालर केन्द्रीय स्थल सिद्धान्त)

प्रश्न-9 क्रिस्टालर के केन्द्रीय स्थल सिद्धान्त को समझाइयें।

Scanned by CamScanner

लिडियो

[illegible] - [illegible]

(110)

Date Topic ①: Migrations of Population: Types and Impact.
जनसंख्या का स्थानान्तरण प्रकार व कारण

Q.1. संसार में जनसंख्या स्थानान्तरण के कारणों और प्रकारों का वर्णन कीजिए। (2016)

Q.2. जनसंख्या प्रवसन को विस्तार पूर्वक समझाइए और प्रवसन के प्रकार व कारणों का वर्णन कीजिए। (2017)

Ans. ऐतिहासिक काल से पृथ्वी के विभिन्न भागों में एक स्थान से दूसरे स्थान पर मानव-वर्गों का प्रवास होता रहा है। इसे जनसंख्या का स्थानान्तरण या गमनागमन या प्रवसन कहते हैं।

Migration → प्रवास, स्थानान्तरण

बोग महोदय के अनुसार - "एक मानव समुदाय या समूह द्वारा अपने स्थान को त्यागकर किसी अन्य स्थान पर जाकर रहना या बसना ही प्रवसन कहलाता है।"

प्रवास के दो भेद हैं।
① उत्प्रवास ② आप्रवास

(i) उत्प्रवास :- स्थानान्तरण की वह प्रक्रिया जिसके द्वारा एक स्थान से मनुष्य दूसरे स्थान को जाते हैं। जैसे यूरोप से अमेरिका, भारत आदि देशों में जाना।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

— प ए ... में प्रवेश कर गई है," कथन की व्याख्या

II आत्मा में प्रवेश कर गई है," कथन की व्याख्या

परिचय :- मानव एक सामाजिक प्राणी होने के साथ-2 एक गतिशील प्राणी है। अतः मनुष्य प्रागैतिहासिक काल से ही विभिन्न प्राकृतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक कारको से प्रभावित होकर एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर प्रवास करता रहा है।

(ii) आप्रवास :-
आगमन की वह प्रक्रिया जिसके द्वारा बाहरी स्थानों से मानव किसी प्रदेश या स्थान के अन्दर आते हैं।
जैसे :- उत्तरी अमेरिका में ब्रिटेन, जर्मनी, इटली, फ्रांस आदि देशों से मनुष्यों आना।

प्रवसन / स्थानान्तरण के प्रकार :-

(A) स्थान - पक्ष की दृष्टि से स्थानान्तरण के निम्नलिखित भेद होते हैं,

1. ~~अन्तर्राष्ट्रीय~~ - अन्तर्महाद्वीपीय स्थानान्तरण / प्रवसन
2. अन्तर्राष्ट्रीय स्थानान्तरण / प्रवास -
3. अन्तर्प्रान्तीय स्थानान्तरण / प्रवास -
4. स्थानीय प्रवास

(B) काल के अनुसार स्थानान्तरण तीन प्रकार का होता है।

(i) दीर्घकालीन प्रवास
(2) मौसमी / सामयिक प्रवास -
(3) दैनिक प्रवास

(C) संख्या के अनुसार स्थानान्तरण / प्रवास तीन प्रकार का होता है।

(i) वृहत संख्या स्थानान्तरण / प्रवास
(2) मध्यम संख्या में प्रवास
(3) अल्प संख्या मे प्रवास

(D) स्थिरता के अनुसार

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

Today ~~वर्गीकरण के अनुसार~~

(ii) स्थान पक्ष की दृष्टि से प्रवासः- के चार भेद हैं।

(i) अन्तर्महाद्वीपीय प्रवासः-
इसमें किसी उद्देश्य हेतु एक महाद्वीप से दूसरे महाद्वीप को मानव-प्रवास होता है। इस प्रकार के प्रवास 20 वी शताब्दी तक यूरोप के पश्चिमी देशों से उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, ~~अफ्री~~ अफ्रीका, आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड गये थे।

(2) अन्तर्राष्ट्रीय प्रवासः-
इस प्रकार के प्रवास में किसी उद्देश्य हेतु एक ही महाद्वीप के अन्दर, एक देश के मानव दूसरे देश को जाते हैं।
जैसे:- भारत व पाकिस्तान के मध्य प्रवसन हुआ है।

(3) अन्तर्प्रान्तीय प्रवासः-
~~इसमें~~ इस प्रकार के प्रवास में एक ही देश या राष्ट्र के मानव एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त को ~~जा~~ जाते हैं।
जैसे - पंजाब के बहुत से परिवार उत्तर-प्रदेश में आकर बस गये हैं।

(4) स्थानीय प्रवासः- (Local migration):-
इस प्रवास में एक जिले से दूसरे जिले को या गाँव से नगर को प्रवास होता है। इस प्रवास से 1920 से 1940 तक जापान में नगरीकरण 32 से 50% वृद्धि हुई है।

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

(B) काल के अनुसार प्रवास:- तीन प्रकार का होता है।

(1) दीर्घकालीन प्रवास:-(Long era migration):-
इस प्रकार के प्रवास लम्बे समय या शताब्दियों के उपरान्त होते हैं। इस प्रकार प्रवास का कोई निश्चित समय नहीं होता है। ये अचानक घटित होने वाले होते हैं।
जैसे:- स्पेन और पुर्तगाल से दक्षिणी अमेरिका के लिये तथा ब्रिटेन, जर्मनी और फ्रांस से उत्तरी अमेरिका के लिए 17वी, 18वीं, और 19वीं शताब्दियों में अनेक बार ऐसे ऐतिहासिक प्रवास हुए थे।

(2) मौसमी या सामयिक प्रवास:-(Periodic migration):-
इस प्रकार का प्रवास ~~के~~ निश्चित समय के अन्दर होता रहता है। ~~जैसे~~ ये प्रतिवर्ष या प्रति दो वर्षो में या प्रत्येक मौसम में। जैसे - हिमालय के अधिक ऊँचे प्रदेशों के निवासी, शीतकाल में हिमपात शुरू होने से पूर्व ही नीचे कोष्ण घाटियों में आ जाते हैं।

(3) दैनिक प्रवास (Daily migration):-
इस प्रकार के प्रवास में किसी महानगर या औद्योगिक नगर में मजदूरी करके अपनी जीविका कमाने के लिये उस महानगर के समीपवर्ती गाँवों या कस्बों से ~~लोग~~ सुबह जाते हैं। तथा कार्य करके सांय काल वापस आ जाते हैं।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

23-08

Date 114

(c) संख्या के आधार प्रवास :- तीन प्रकार का होता है।

(1) वृहत संख्या प्रवास :-

इस प्रवास में किसी कारण से जनसंख्या का स्थानान्तरण बड़े पैमाने पर होता है।

जैसे - दैनिक प्रवास में या धार्मिक कारणों से भारत पाकिस्तान के मध्य इस प्रकार का प्रवास हुआ है।

(2) मध्यम संख्या प्रवास :-

~~मध~~ इस प्रवास मे किसी भी कारण जनसंख्या मध्यम संख्या में एक स्थान से दूसरे स्थान को जाती है।

(3) अल्प संख्या में प्रवास :-

इस प्रकार के प्रवास में किसी स्थान से अल्प संख्या मे जनसंख्या स्थानान्तरण होता है। जैसे - शिक्षा के लिए, युद्ध और आक्रमण के द्वारा होने वाले प्रवास

(D) स्थिरता ~~पक्ष~~ के अनुसार प्रवास :-

कुछ प्रवास इस प्रकार के होते हैं। जिनमें प्रवासी जनता नये देशों में जाकर स्थायी रूप से बस जाती है।

जैसे :- उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, आस्ट्रेलिया, दक्षिणी अफ्रीका में यूरोपीय जनता स्थायी रूप से बस गई है।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

स्थानान्तरण अथवा प्रवसन के कारण :

प्रवसन के निम्न कारण हैं।

(i) भौतिक कारण -
(ii) आर्थिक कारण -
(iii) सामाजिक - सांस्कृतिक कारण -
(iv) राजनीतिक कारण -

(i) भौतिक कारण :-

जलवायु, नदियों की बाढ़, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, अकाल, भूकम्प, ज्वालामुखी, हिमराशियों का घटना - बढ़ना, मृदा का अनुपजाऊ होना, समुद्र तटों का उठना या नीचे धंसना आदि के होने से मानव जनसंख्या बड़े पैमाने पर स्थानान्तरण कर जाती है। जैसे शीत प्रधान टुण्ड्रा प्रदेशों से और हिमाच्छादित पर्वतीय भागों से जनता शीत - ऋतु में गर्म प्रदेशों में प्रवास कर जाती है। तथा ग्रीष्म ऋतु आने पर फिर ठण्डे भागों में आ पहुंचती है।

- भूकम्प तथा ज्वालामुखी के कारण मानव भयभीत होकर अपना आवास छोड़कर अन्यत्र चला जाता है। जैसे - सिसली, हवाई - द्वीप, आदि में ज्वालामुखी के कारण मानव दूसरे देशों में जाकर बस गये। जलवायु परिवर्तन से भी अधिक संख्या में प्रवसन होता है।

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

Date 11 6

(2) आर्थिक कारण (Economic Causes):-

वर्तमान समय में जनसंख्या के प्रवसन में आर्थिक कारण महत्वपूर्ण है। इसमें जीविका के साधन की सुविधा मुख्य है। जिन प्रदेशों में जीविका-निर्वाह में कठिनाइयाँ आने लगती है। वहा से मानव प्रवास कर उन प्रदेशों में चले जाते है। जहाँ आर्थिक साधनों की सुलभता होती है।

मुख्य आर्थिक कारण निम्न है।

(i) अत्यधिक जनसंख्या और निवास व जीवन-निर्वाह के साधनों की कमी
(ii) कृषि भूमि अनुपलब्धता
(iii) सिंचाई सुविधा
(iv) खनिज सम्पत्ति की उपलब्धता
(v) यातायात की सुविधा
(vi) व्यापार की सुविधा

आदि के कारण प्रवसन होता है।

Today

जैसे :- (i) नदियों के बेसिनों (सिन्धु, गंगा,) उपजाऊ भूमि के कारण अन्य प्रदेशों से जनसंख्या आकर बसती है।
(ii) औद्योगिक केन्द्रो ने भी जनसंख्या को अपनी ओर आकर्षित किया है।
(iii) खनिज उपलब्धता से ऑस्ट्रेलियाँ मे कालगूर्ली और कूलगार्डी की सोने की खाने होने से उस उष्ण रेगिस्तान मे मानव ने बस्तियाँ बसाई है।

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

(3) सामाजिक-सांस्कृति कारण :-

सामाजिक-सांस्कृतिक कारणों से भी जनसंख्या का प्रवसन होता है।

(i) ईसा से पाँच शताब्दी पूर्व से लेकर ईसा की पाँचवी शताब्दी तक, भारत से हजारों मनुष्य अपना धार्मिक और सांस्कृतिक प्रचार करने के लिए म्यानमार (बर्मा), श्रीलंका, इंडोनेशिया, मलाया, थाईलैंड, सुमात्रा, जावा आदि प्रदेशों में गये थे।

(ii) 1947 में भारत और पाकिस्तान के बँटवारे के बाद भारत से लाखों मुसलमान पाकिस्तान चले गये और पाकिस्तान से लाखों हिन्दू भागकर भारत में आ गये।

(iii) अरब में मक्का-मदीना में हज्ज करने के लिए प्रत्येक वर्ष हजारों मुस्लिम व्यक्ति भारत, पाकिस्तान, जावा, ईरान, मिस्त्र, आदि से अरब जाते हैं। हज्ज करने के बाद वापस अपने देश लौट आते हैं।

(iv) पर्यटकों, खिलाड़ियों, कलाकारों, संगीतज्ञों आदि हजारों की संख्या में एक देश से दूसरे देश आते-जाते हैं।

इस प्रकार अब सामाजिक और सांस्कृतिक कारणों से अन्तर्राष्ट्रीय प्रवसन दिनों-दिन बढ़ता जा रहा है।

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

(५) राजनीतिक कारण :- निम्न राजनीतिक कारणों से जनसंख्या प्रवसन हो रहा है।

(i) आक्रमण :- विभिन्न शासकों द्वारा कई देशों में आक्रमण किये तथा वहा निवास करने लग गये स्थाई रूप से।

(ii) उपनिवेशन :- उपनिवेशन के द्वारा अफ्रीका महाद्वीप में फ्रांसीसी और अंग्रेजो ने अपनी नई बस्तियाँ बसाई थीं। डच लोगों ने इण्डोनेशिया में और स्पेन तथा पुर्तगाल के लोगों ने 16वीं शताब्दी में दक्षिणी अमेरिका में अपने उपनिवेश बसाये थे।

जनसंख्या प्रवास के ~~प्रवास~~ प्रभाव :-

मुख्य प्रभाव निम्न है

(i) जनसंख्या भार में परिवर्तन
(ii) सांस्कृतिक समेकन
(iii) नये देशों का आर्थिक विकास
(iv) पारस्परिक उन्नति
(v) नये वातावरण से समायोजन
(vi) अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना की वृद्धि -
(vii) विज्ञान की उन्नति आदि।

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

Topic (5) अधिवास : ग्रामीण व शहरी अधिवास

Q.1. अधिवासों के प्रकारों से आप क्या समझते हैं, ग्रामीण अधिवासों के प्रकारों की विस्तार से व्याख्या कीजिए। (2015) (2018) (2023)

Q.2. अधिवासों के प्रकारों का वर्णन कीजिए शहरी अधिवासों के प्रकारों को विस्तार से समझाइए (2017, 2016) टिप्पणी (2022)

Ans - ~~मानव अधिवासों / बस्तियों के प्रकार~~ :- हडसन के अनुसार :- " भूमि का वह भाग जो मानव बसाव के उद्देश्य से प्रयुक्त किया जाता है, मानवीय अधिवास कहलाता है"

मानव अधिवास :- मानव अधिवास मानव द्वारा रचित उस रचना से है, जो उसके रहने अथवा कार्य करने या अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बनायी जाती है।

- इनमें सभी प्रकार के घरों या आश्रयों को सम्मिलित किया जाता है।

मानव बस्तियों / मानव अधिवासों का वर्गीकरण :- मानव बस्तियों का वर्गीकरण विभिन्न पक्षों के आधार पर किया जाता है,

(1) स्थिति के अनुसार :- अधिवास या बस्तियों का विस्तार जितने भू-भाग पर होता है। उसे उस अधिवास का स्थल कहा जाता है। इसके अनुसार बस्तियाँ निम्न है।

(i) मैदानी बस्तियाँ
(ii) पहाड़ी या पर्वतीय बस्तियाँ

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

Date 6

(iii) झील तटीय बस्तियाँ -
(iv) समुद्र तटीय बस्तियाँ -
(v) वन प्रदेशीय बस्तियाँ -
(vi) मरुस्थलीय बस्तियाँ -

(B) घरों के मध्य दूरियों के आधार पर :-
(i) एकाकी बस्तियाँ
(ii) बिखरी बस्तियाँ
(iii) सघन बस्तियाँ

(C) समय के विचार के आधार पर :-
(i) अस्थायी बस्तियाँ -
(ii) मौसमी बस्तियाँ -
(iii) स्थायी बस्तियाँ -

(D) बस्तियों के आकार के अनुसार :-
(i) पुरवा -
(ii) ग्राम -
(iii) कस्बा -
(iv) नगर -
(v) महानगर

(E) बस्तियों की आकृति के अनुसार -
(i) रेखीय प्रतिरूप (ii) वृत्ताकार प्रतिरूप (iii) अरीय प्रतिरूप
(iv) त्रिभुजाकार प्रतिरूप (v) ब्लॉक प्रतिरूप (vi) चौकपट्टी प्रतिरूप
(vii) तीर प्रतिरूप (viii) तारा प्रतिरूप (ix) मधु - छत्ता प्रतिरूप
(x) सीढ़ी प्रतिरूप (xi) पंखा प्रतिरूप (xii) तटीय पंखा प्रतिरूप

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

(F) बस्तियों के विभिन्न कार्यों के आधार पर

(i) ग्रामीण बस्तियाँ -
(ii) नगरीय बस्तियाँ -

(G) बस्तियों के विकास की अवस्था के अनुसार -
(ग्रिफिथ टेलर ने) :- 7 अवस्थायें होती हैं।

(i) जन्मावस्था -
(ii) शैशवस्था -
(iii) बाल्यावस्था -
(iv) किशोरावस्था -
(v) प्रौढ़ावस्था -
(vi) प्रौढ़ोत्तर -
(vii) वृद्धावस्था -

Today:

ग्रामीण बस्तियाँ :-

इसमें निवासी अपने जीवनयापन के लिए भूमि के विदोहन पर निर्भर करते हैं। अर्थात इनके निवासियों का मुख्य उद्यम कृषि करना, पशुपालन, ~~मछलियाँ~~ मत्स्य पालन, लकड़ियाँ काटना आदि हैं। इनका जीवन एक प्रकार से ग्रामीण स्वरूप लिये होता है।

(A) पारस्परिक दूरी के आधार पर :-

(i) सघन बस्तियाँ -
(ii) संयुक्त या सम्मिश्र बस्तियाँ -
(iii) खण्डित या अखण्डित बस्तियाँ
(iv) परिक्षिप्त बस्तियाँ -

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

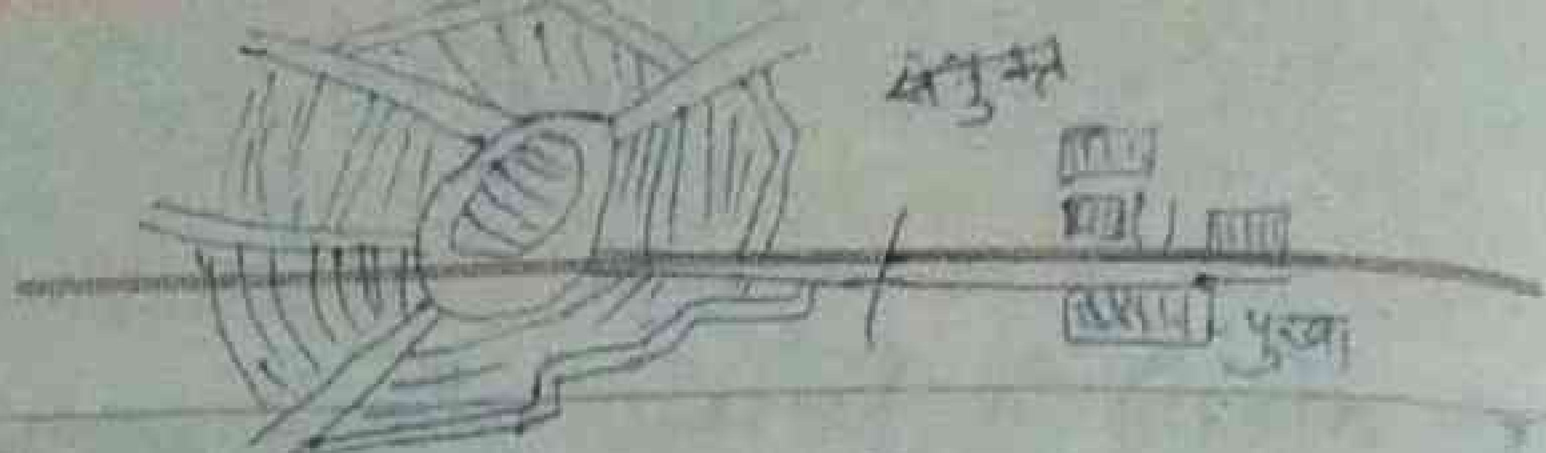

(i) सघन बस्तियाँ :-

इस प्रकार की बस्तियों में मकान या झोंपड़ियाँ पास - पास सटे हुए स्थित होते हैं।, इन बस्तियों को पुंजित या संकेन्द्रित बस्तियाँ भी कहते हैं।,

(i) फ्रिंच और ट्रेवार्था ने - न्यष्टित बस्तियाँ या सघन बस्तियाँ कहा

(ii) विडाल -डी - ला- ब्लाश - ने पुंजित बस्तियाँ कहा

(iii) बूंज ने - संकेन्द्रित बस्तियाँ कहां

सघन बस्तियों के आकार के आधार पर निम्न भेद है।

(i) पुरवा या नंगला - सबसे छोटे आकार की सघन बस्ती होती है।

(ii) गाँव -

(iii) कस्बा -

(iv) नगर - (i) सामान्य नगर, (ii) मैट्रोपौलिस (iii) मेगालोपोलिस आदि

(2) संयुक्त बस्तियाँ :-

इस प्रकार की बस्तियों में एक गाँव के साथ उसके एक - दो पुरवे भी होते हैं। यदि किसी गाँव का कृषि भूमि क्षेत्र काफी विस्तृत है। तो गाँव के कुछ परिवार जिनके खेत गाँव से दूरी पर होते हैं।, वहा छोटी बस्ती बसा लेते है। इसे हेमलेट कहते है। इस हेमलेट तथा पुराने गाँव को मिलाकर संयुक्त बस्ती कहा जाता है।,

(3) अपखण्डित बस्तियाँ :-

इस प्रकार की बस्तियाँ जिनमें अलग - 2 वासगृह एक ही बस्ती के अन्दर एक - दूसरे के निकट बसे हुए होते हैं।

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

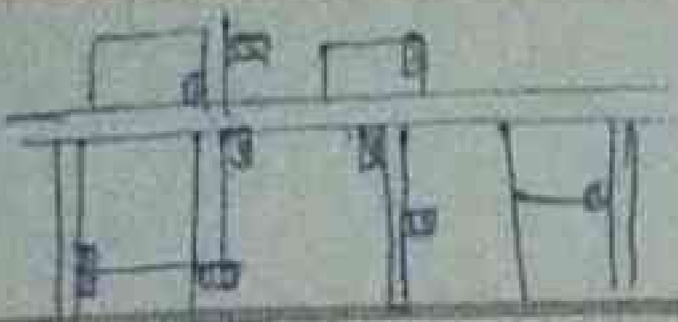

(फार्म स्टेड)

Date 9

(ii) एकाकी बस्तियाँ :- (प्रकीर्ण, बिखरी)

इन बस्तियों में अलग - अलग बसे हुए घर, कृषिगृह, अथवा वासगृह होते हैं। ये एक - दूसरे से पृथक - 2 मध्य दूरियाँ छोड़ - 2 कर या कृषि भूमि को छोड़कर बसे हुए हैं। तो ये एकाकी बस्तियाँ कहलाती हैं।

जैसे - संयुक्त राज्य के अलावा अन्य देशों में भी एकाकी बस्तियाँ एक - दूसरे से दूरी पर बसी हुई होती हैं।

(3) ग्रामीण बस्तियों के प्रतिरूप :-

इन बस्तियों की आकृति के अनुसार होते हैं। ~~ग्रामीण~~ ग्रामीण बस्तियों के मुख्य प्रतिरूप निम्न हैं,

(i) रेखीय प्रतिरूप
(ii) चौक - पट्टी प्रतिरूप
(iii) अरीय - त्रिज्या प्रतिरूप
(iv) त्रिभुजाकार प्रतिरूप
(v) वृत्ताकार प्रतिरूप
(vi) तीर प्रतिरूप
(vii) तारा प्रतिरूप -
(viii) अनियमित या अनाकार प्रतिरूप -
(ix) शू - स्ट्रिंग प्रतिरूप.
(x) पंखा प्रतिरूप
(xi) सीढ़ी प्रतिरूप.
(12) चौकोर प्रतिरूप.
(13) मधु - छत्ता प्रतिरूप.
(14) अर्द्ध - वृत्ताकार प्रतिरूप.
(15) अन्य - प्रतिरूप

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

(i) रेखीय प्रतिरूप - (Linear Pattern) :-

इस प्रतिरूप मे किसी सड़क या नदी या नहर के किनारे - किनारे बसे हुए मकानों की बस्तियाँ रेखीय प्रतिरूप की होती हैं। इन मकानों के द्वार सड़क की ओर होते हैं, इनमें मकान सटे हुए या कुछ दूरी पर हो सकते हैं। ऐसी बस्तियों को रिबन प्रतिरूप या डोरी प्रतिरूप भी कहते हैं।

जैसे- जिला मेरठ (U.P.) में गोविन्दपुर ग्राम इसी प्रकार से बसा हुआ है। तथा गंगा के उत्तरी मैदान में सड़कों के किनारे बसे हुए गाँव।

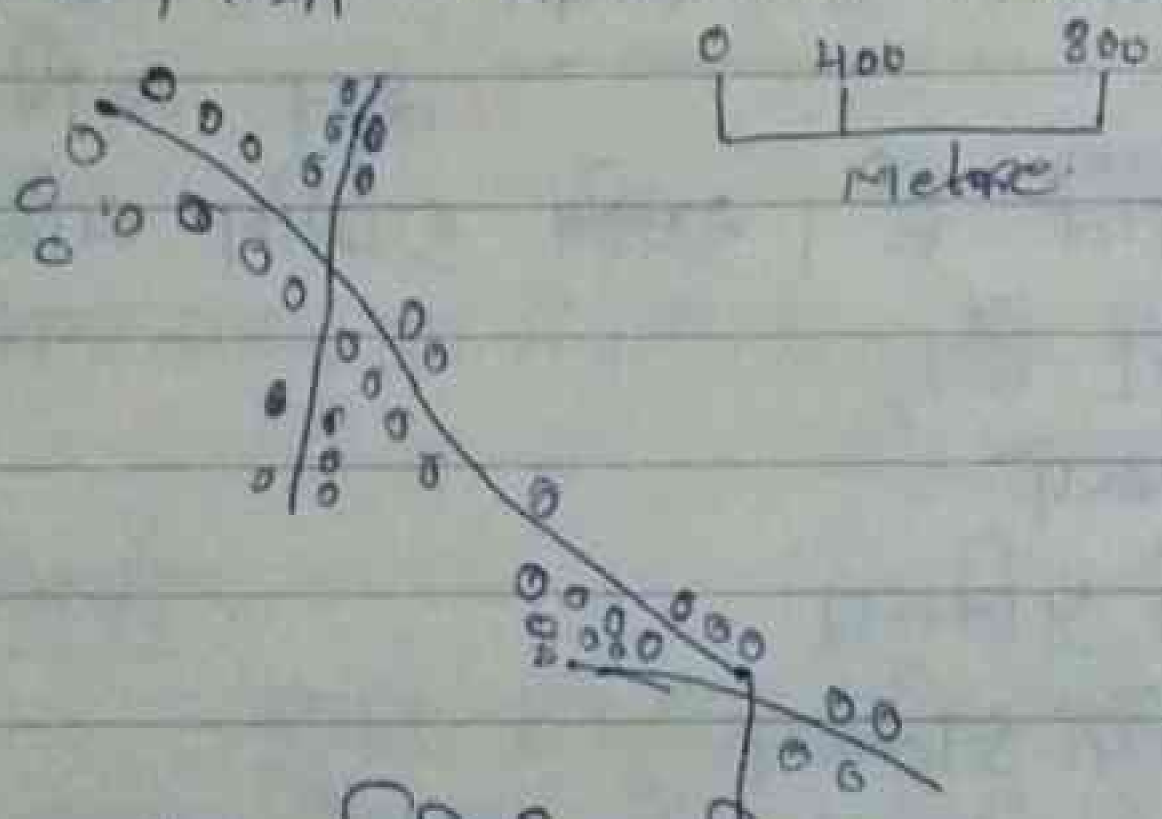

(आदर्श रेखीय प्रतिरूप)

(2) चौक-पट्टी प्रतिरूप - (Checker-board Pattern) :-

- मैदानों में जो गाँव दो मार्गों के मिलने के चौपले या क्रॉस पर बसने प्रारम्भ होते हैं, इन गाँवो की गलियाँ मार्गों के साथ मेल खाती हुई आयताकार प्रतिरूप में बनने लगती हैं। जो परस्पर लम्बवत् होती हैं। ऐसे गाँवों की बस्ती चौक - पट्टी प्रतिरूप की होती हैं।

जैसे- मेरठ जिले में गेसूपुर, रेवड़ीखास आदि,

(U.P.) गाजियाबाद जिले में सिम्भावली तथा बाबूगढ़ छावनी के कुचेसर चौपाला इस प्रकार की बस्ती हैं,

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

③ **अरीय त्रिज्या प्रतिरूप :- (Radial Pattern) :-** इस प्रतिरूप के गाँवो में कई ओर से मार्ग आकर मिलते हैं या उस गाँव से बाहर अन्य गाँवो के लिये कई दिशाओं को मार्ग जाते हैं। इन गाँवो की गलियाँ गाँव की भीतरी भाग में आकर मिलती रहती हैं। मकानों के सामने व पीछे की ओर मार्ग होते हैं। ये सभी मार्ग आस पास के गाँवो से मिल जाते हैं। ऐसे प्रतिरूप को मकड़ी जाला प्रतिरूप भी कहते हैं।

उदा.- भारत, पाकिस्तान, चीन ~~के~~ में 35% संख्या इस प्रकार के अरीय प्रतिरूप की होती है। भारत में, बिहार, M.P, हरियाणा और राजस्थान के प्रत्येक जिले इस प्रकार के ग्रामों की प्रतिरूप पाये जाते हैं।

(4) **त्रिभुजाकार प्रतिरूप :- (Triangular Pattern) :-** इस प्रकार का प्रतिरूप उन स्थानों पर होता है। जहाँ कोई सड़क या नहर दूसरी सड़क या नहर से जाकर मिले, परन्तु क्रॉस न करे। ये गाँव सड़क या नहर के एक ओर फैलते रहते हैं।

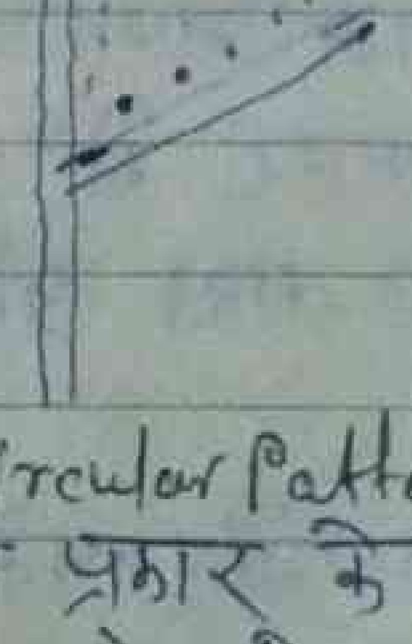

(5) **वृत्ताकार प्रतिरूप - (Circular Pattern) :-** इस प्रकार के प्रतिरूप में किसी वृत्ताकार झील या तालाब के के चारो ओर बसे हुये गाँवो को वृत्ताकार प्रतिरूप कहते हैं। जैसे - भीमताल की बस्तीं
(N.P) नगर (उत्तराखंड) नगर (नागालैंड)

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

(6) तीर प्रतिरूप :- (Arrow Pattern) :-

इस प्रकार के प्रतिरूप में गाँव किसी अन्तरीप के सिरे पर या नदी के नौकीले मोड़ पर बसे होते हैं। इनके अग्रभाग में मकानों की संख्या कम और पृष्ठ भाग में बढ़ती जाती है।

जैसे :- (i) कन्याकुमारी ग्राम । द. सिरे पर

(ii) उड़ीसा की चिलका झील प्रदेश में साना व नैसी ग्राम

(iii) खम्भात की खाड़ी में गोद्य, कुंडा, गोपनाथ आदि ग्राम

(iv) M.P की सोनार नदी के मोड़ पर असलाना

(v) बिहार में गंडक नदी के मोड़ पर, सिवारी, अहो आदि ग्राम

(vi) केरल में मुत्तामतुरा आदि ग्राम

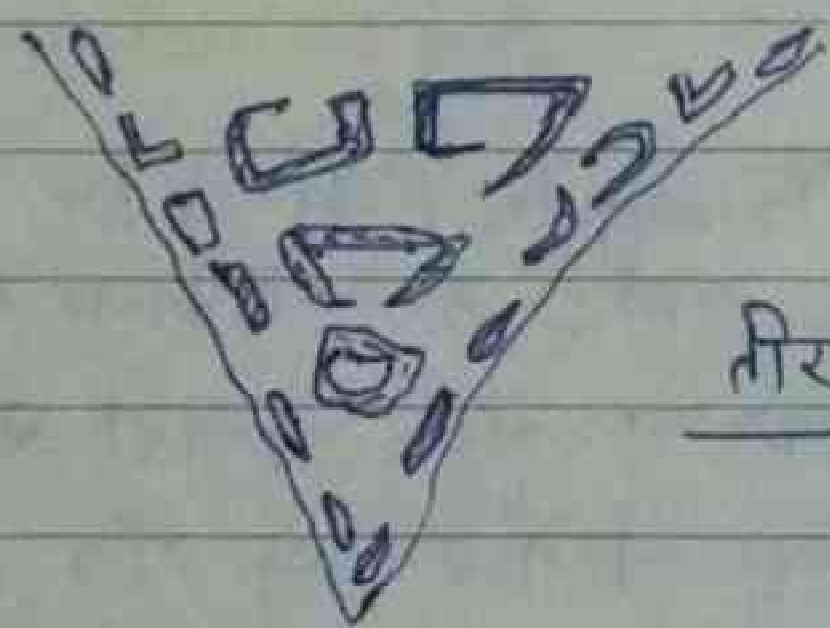

तीर प्रतिरूप

(7) तारा प्रतिरूप :- (Star Pattern) :-

इस प्रतिरूप में ग्राम प्रारम्भ में अरीय या त्रिज्या प्रतिरूप में होते हैं। और बाद में वे बढ़ते - बढ़ते बाहर की ओर जाने वाले मार्गों पर मकान ~~बनाते हैं~~। बसाते चलते हैं। ये बाहर की ओर फैलते मकान बसने के बाद वह ग्राम तारा प्रतिरूप आकृति में हो जाता है।

जैसे - U.P. के डहाना और अटौना गाँव

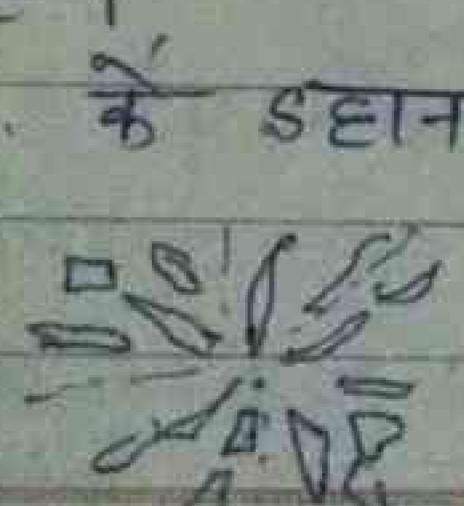

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

(8) अनियमित या अनाकार प्रतिरूप :- (Irregular Patterns) :-

- इस प्रतिरूप में ग्राम वे हैं। जो किन्हीं मार्गों के निर्माण से पूर्व ही बस गये थे। प्रत्येक घर उस स्थान पर बस गया, जहाँ उसके स्वामी को सुविधा हुई। बाद में गलियों और मार्गों के बनने पर ग्राम की आकृति अनियमित रूप में हो गई।

जैसे :- भारत और पाकिस्तान तथा दक्षिणी चीन के अधिकांश ग्राम।

(9) शू - स्ट्रिंग प्रतिरूप :- (Shoe-string Pattern) : फिंच-ट्रिवार्था ने

- इस प्रतिरूप में ग्राम किसी नदी के प्राकृतिक कूल के बाँध पर या समुन्द्रतटीय कटक पर बसे हुये होते हैं। इसमें कटक शिखर पर बनी हुई सड़क के किसी ओर मकान बसे होते हैं।

जैसे - जापान के नीचले क्षेत्रों वहाँ पर ऊपर उठी हुई शुष्क भूमि पर जो मकान ~~बस्के बे~~ या बस्ती।

(10) पंखा प्रतिरूप :-

इस प्रतिरूप में ग्राम नदियों के डेल्टाओं में बसे हुए हैं।

जैसे - महानदी, गोदावरी और कृष्णा नदी के डेल्टाओं में इस प्रकार के ग्राम प्रतिरूप पाये जाते।

2. हिमालय के पाद-प्रदेशों बसे ग्राम

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

Date 14

(11) सीढ़ी प्रतिरूप :- (Terrace Pattern):-

इस प्रकार के प्रतिरूप में ग्राम पर्वतीय ढालों पर होते हैं। इनमें भवन पास या दूर दोनों ही प्रकार के होते हैं। जो ढाल के अनुसार विभिन्न ऊँचाई तलों पर बने हुए होते हैं। ये मकान सीढ़ीनुमा कई स्तरों में बसे होते हैं।

जैसे - हिमालय, आल्प्स, रॉकी, एण्डीज इत्यादि पर्वतों पर बसे हुए गाँव इस प्रतिरूप के होते हैं।

(12) चौकोर प्रतिरूप :-

इस प्रकार के प्रतिरूप मे ग्राम मरूस्थलों या अर्द्ध मरूस्थलों में बसे होते हैं। इनके मकान बहुत उच्च होते हैं। गाँवों के बाहर चारदीवारी भी कही - कही होती है। मकानों को बहुत ऊँचा इसलिये बनाया जाता है। ताकि उनकी रेत के तुफानों, चोरों या डाकुओं और शत्रुओं से सुरक्षा हो सके।

(13) मधु - छत्ता प्रतिरूप :- (Beehive - Pattern):-

इस प्रतिरूप के ग्राम जनजातियों के लोग बनाते हैं। दक्षिण भारत में टोडा लोगो द्वारा तथा दक्षिणी अफ्रीका में जुलू लोग बनाते हैं। आन्ध्र प्रदेश के समुद्रतटीय क्षेत्र के निवासियों और ~~मत्स्य~~ उद्योग पर निर्वाह करने वाले मछुआ लोगों के होते हैं।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

10/Jun/

(14) अर्द्ध-वृत्ताकार प्रतिरूप :- नदियों के तटों पर बसे हुए गाँव प्राय: अर्द्ध-वृत्ताकार प्रतिरूप के होते हैं। उत्तरी भारत भाग में गंगा, यमुना, गोमती, घाघरा, कोसी, सोन, आदि नदियों के तटो पर बसे गाँव प्राय: इसी प्रतिरूप के हैं।

(15)

(15) अन्य प्रतिरूप :- मकड़ी जाल-प्रतिरूप, टेढा-मेढा प्रतिरूप आदि अन्य प्रतिरूपों की भी ग्रामीण बस्तियाँ संसार के बहुत-से-प्रदेशों में बसी हुई देखी जाती हैं।

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

Date 16

शहरी अधिवासों के प्रकार :

(A) आकार के आधार पर नगरीय बस्तियां के 8 वर्ग होते है।

(i) अनुमार्ग बस्ती
(ii) नगरीय पुरवा
(iii) नगरीय गाँव
(iv) कस्बा
(5) नगर
(6) महानगर
(7) सन्नगर
(8) मेगालोपोलिस

(1) अनुमार्ग बस्ती :-

इस प्रकार की बस्ती में सड़क के किनारे कोई एक या दो दुकानें सड़क पर आने-जाने वाले लोगों की चाय-जलपान के लिए होती है। यहाँ कोई होटल या रेस्तराँ होता है।

(2) नगरीय पुरवा :- या पल्ली :-

इस प्रकार की बस्ती मे 20 से 150 मानव तक जनसंख्या होती है। इस प्रकार की पुरवा U.S.A में पाये जाते है।

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

Date 17

(3) नगरीय गाँव :- (Urban village):-
इस ग्राम में 150-500 मनुष्यों तक की बस्ती होती है। इस प्रकार के ग्राम U.S.A. में पाये जाते है।

(4) कस्बा :- (Town)
~~जिन इन अधिवासों~~ ~~की~~ जहाँ जनसंख्या 500 से 40,000 तक पायी जाती है। उन आबादी केन्द्र को कस्बा कहते है।
जैसे - भारत में गंगा-यमुना दो आब में ऐसे बहुत से कस्बे हैं। (इनकी जनसंख्या 30,000 या 35000 से अधिक हैं)

(5) नगर :- (city):-
जिन स्थानों पर जनसंख्या 50,000 से अधिक होती है। ~~उसे~~ ~~कहते~~ तथा वहाँ मानव के लिए उपयुक्त सुविधायें (बैंक, चिकित्सा, डाकघर, विद्यालय, परिवहन) ~~को~~ उपलब्ध हो उसे नगर कहते है।

(6) महानगर :-
जिन स्थानों की जनसंख्या 10 लाख से अधिक होती है। तथा उसमें प्रादेशिक राजधानी या व्यापारिक मंडी भी होती उसे महानगर कहते है।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

Date 18

(7) सन्नगर :- (Conurbation) :- 1915 मे 'पैट्रिक गिडिज' ने इस शब्दावली का प्रयोग किया।

इसमें कई फैलते हुए, कस्बे परस्पर मिलकर एक इकाई बन जाते हैं। इनके केन्द्र में भी कई नगरीय बस्तियाँ होती हैं।

जैसे- कोलकाता कोनरबेशन

(8) मैगालोपोलिस :- (Megalopolis) :- ये अत्यन्त बड़े नगर होते हैं। जिनकी जनसंख्या प्रायः 50 लाख से अधिक होती है।

जैसे :- टोकियो, न्यूयार्क, लन्दन आदि

– 'ममफोर्ड' ने विशाल नगरों को मैगालोपोलिस की संज्ञा दी है।

(B) 28.08 नगरों के विन्यास की दृष्टि से निम्न प्रतिरूप होते हैं।

(i) चैकरबोर्ड प्रतिरूप -
(ii) वृत्ताकार प्रतिरूप -
(iii) अरीय या त्रिज्या प्रतिरूप -
(iv) तारा प्रतिरूप
(v) मिश्रित प्रतिरूप
(vi) खाड़ी - पत्तन प्रतिरूप
(vii) रेखीय प्रतिरूप
(viii) तटीय पंखा प्रतिरूप
(ix) खुला-हाथ प्रतिरूप
(x) मकड़ी - जाल प्रतिरूप

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

(1) चैकरबोर्ड प्रतिरूप :-

इस प्रकार के प्रतिरूप में सड़कें समान्तर तथा समकोण बनाती हुई होती हैं। और नगर की आकृति आयताकार होती है।

जैसे :- भारत में मेरठ, गाजियाबाद, अम्बाला, अमृतसर मथुरा, झाँसी आदि नगरों के विन्यास चैकरबोर्ड प्रतिरूप के हैं।

जापान का असाहीगावा नगर

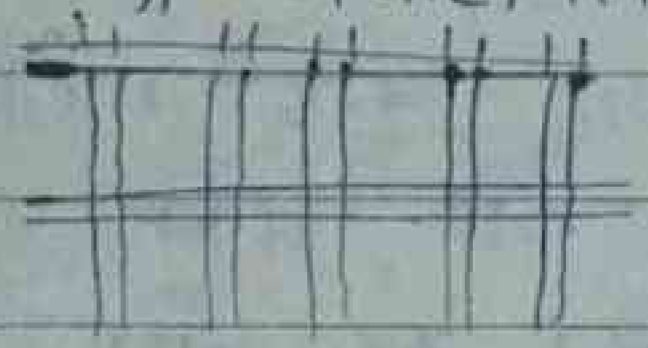

(2) वृत्ताकार प्रतिरूप :- / परिबद्ध

इस प्रकार के प्रतिरूप में नगर केन्द्र में नगरपति या सरदार का घर बना होता है। और उसके चारों ओर अन्य घरों की बस्तियाँ होती हैं। नगर की सड़कें भी इस प्रतिरूप से मेल खाती हुईं होती हैं।

जैसे - आगरा, जयपुर, आदि

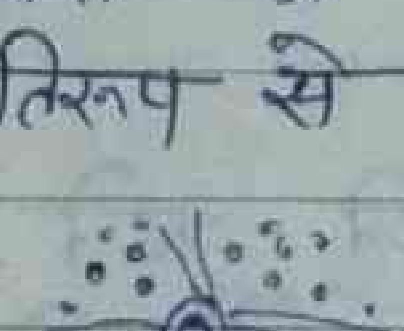

(3) त्रिज्या प्रतिरूप :- (Radial Pattern) :-

इस प्रतिरूप में नगर सड़कों या रेलमार्गों के क्रास पर बसे हैं। और वे बाद में बढ़ते - बढ़ते नगर से बाहर जाने वाले मार्गों के सहारे - सहारे आगे फैलते चले जाते हैं। इन्हें अरीय त्रिज्या प्रतिरूप कहते हैं।

जैसे - दिल्ली, भोपाल, इन्दौर, उदयपुर आदि

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

Date 20

(4) तारा प्रतिरूप :- (Star Pattern):-

जब किसी अरीय प्रतिरूप नगर का विकास अधिक होता है और उसका प्रसार बाहर जाने वाले मार्गों की ओर अधिक दूर तक तथा प्रत्येक ओर अधिक चौड़े क्षेत्र पर होता है तब उस नगर की आकृति तारा प्रतिरूप हो जाता है। जैसे - जबलपुर

(5) मिश्रित प्रतिरूप :-

कुछ नगर कई मार्गों और नये विकास को अपनाते हुए भी, अपने पुराने वर्गाकार प्रतिरूप को परिवर्तित कर नये रूप में बन जाते हैं उसे मिश्रित प्रतिरूप कहते हैं। जैसे M.P का रायपुर नगर (आयताकार + त्रिज्या प्रतिरूप) मिश्रण

(6) खाड़ी - पत्तन प्रतिरूप :-

जैसे - मुम्बई का पोर्ट - महानगर बढ़ते - बढ़ते. उसका पत्तन अपने पृष्ठ प्रदेश के समीपवर्ती क्षेत्र से मिलता रहा है, और इस समस्त महानगर का खाड़ी - पत्तन प्रतिरूप में परिवर्तित हो गया।

(7) रेखीय प्रतिरूप :- (Linear Pattern):-

इस प्रतिरूप में वे नगर हैं, जो किसी नहर के किनारे बसे हुए गाँवों के विकसित रूप हैं। या वे किसी सड़क के किनारे - किनारे बसे हुए घरों के समूह हैं, या उनके मध्य में होकर कोई सड़क जाती है। जिसके दोनों किनारों

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

की ओर को मकान, फैलते चले गए हैं।
जैसे - U.P में मोदी नगर

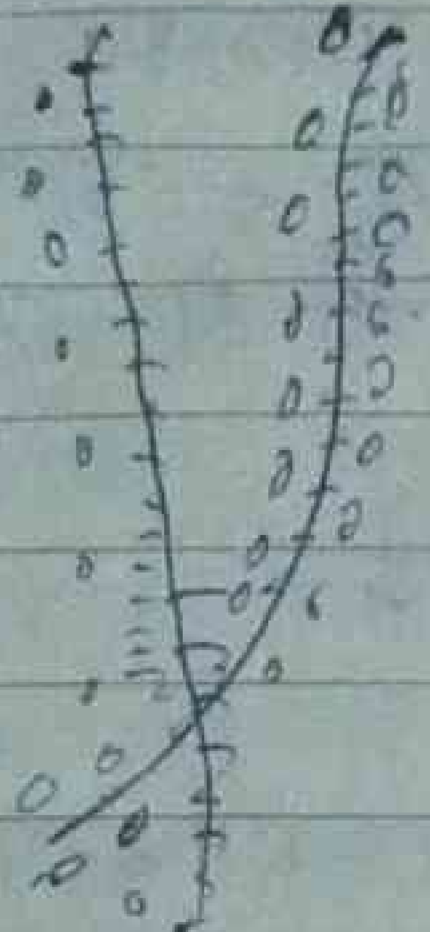

(8) तटीय पंखा प्रतिरूप :-
समुन्द्री तट के किनारे बसे नगरों का जब अधिक विकास होता है, तब उनका प्रसार पृष्ठ प्रदेश की ओर होने के साथ - साथ तट के सहारे - सहारे भी होता है। तट की दिशा भू - रचना की दृष्टि से अधिक अनुकूल होती है। उस पर और इमारतें बनती चली जाती हैं।
जैसे - भारत में चेन्नई नगर

(9) खुला - हाथ प्रतिरूप :-
इस प्रकार के प्रतिरूप समुद्री तटों पर, जहाँ जल के द्वारा थल कई स्थानों पर भीतर की ओर को काट दिया गया हो ~~और~~ तो वहाँ खुला - हाथ प्रतिरूप के समुद्री - पतन बन जाते हैं, जैसे - जापान में

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

Date 22

(10) मकड़ी - जाल प्रतिरूप :- (Spider - Web Pattern) :-
इस प्रकार के प्रतिरूप में नगरों के केन्द्र में इमारतें, राजभवन, मन्दिर आदि बना दिये जाते हैं फिर सड़क मार्ग बाहर की ओर हो तथा वृत्ताकार भी हो उसे मकड़ी-जाल प्रतिरूप कहते हैं।
जैसे :- मेरठ, लखनऊ आदि

28-08
(ह) स्थिति के विचार से नगरों का वर्गीकरण :-

(i) नदी तटीय नगर - गंगा नदी - हरिद्वार, कानपुर, पटना,
(ii) झील तटीय नगर - नैनीताल
(iii) बन्दरगाह - मुम्बई, कोलकाता
(iv) मैदानी नगर - जयपुर, मेरठ,
(v) पठारी नगर - बंगलुरू,
(vi) पर्वतपाद नगर - चण्डीगढ़
(vii) प्रपात नगर - झरनों पर स्थित (कोलम्बस)
(viii) मरूद्यान नगर - प. एशिया मक्का मदीना, अफ्रीका बर्जा
(ix) पर्वतीय नगर - यूरोप में आल्प्स आदि।

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

(D) व्यवसाय एवं कार्य की प्रधानता के आधार पर नगरों का वर्गीकरण :-

(i) औद्योगिक नगर :- भिलाई, शोलापुर आदि
(ii) व्यापारिक नगर :- लन्दन, मुम्बई
(iii) परिवहन नगर :- शिकागो, डिजोन
(iv) खनिज उद्योग के नगर :- भारत मे झरिया, डिगबोई,
(v) राजधानी या प्रशासनिक नगर :- दिल्ली, जयपुर
(vi) सुरक्षा कार्य के नगर :- छावनी, किले
(vii) सैनिक महत्व के नगर :- सिंगापुर.
(viii) मत्स्य कर्म और लकड़ी चीरने के केन्द्र :- कनाड़ा, चार्लटन
(ix) शिक्षा केन्द्र :- कोलकत्ता (जादवपुर), पिलानी,
(x) धार्मिक केन्द्र :- काशी (बनारस) मथुरा, अमृतसर
(xi) पर्यटन केन्द्र :- आबू, शिमला,
(12) क्रीडा-स्थल तथा मनोरंजन केन्द्र :- इग्लैंड मे ब्राइटन आदि है।

#

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

Topic ③ नगरीकरण

Date 24

Q ① नगरीकरण क्या है? विश्व में नगरीकरण की वृद्धि के कारणों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कीजिए। (2020) (2014) (2016)

Ans: नगर प्राचीन काल से आधुनिक समय तक मानवीय सभ्यता तथा संस्कृति के प्रमुख स्थल रहे हैं।

नगरीकरण मानव समाज को व्यावहारिक स्तर पर प्रभावित करती है। मानव के आचार - विचार, रहन - सहन, वेशभूषा, भाषा, संस्कृति, आदि परिवर्तित होते हैं। इनसे नगरों में आधुनिकता स्पष्ट होती है।

डेविस के अनुसार "नगरीकरण सामाजिक जीवन के सम्पूर्ण क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन की ओर संकेत करता है। यह स्वयं एक आधारभूत अर्थव्यवस्था और तकनीकी विकास का परिणाम है।"

ग्रिफिथ टेलर के अनुसार "गाँवों से नगरों की ओर जनसंख्या का स्थानान्तरण ही नगरीकरण कहलाता है।

त्रिवार्था के अनुसार "नगरीकरण एक चक्रीय प्रक्रिया है जिससे होकर राष्ट्र कृषि समाज से होकर औद्योगिक समाज की ओर अग्रसर होते हैं।"

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

- विश्व के नगरों में निवास करने वाली जनसंख्या सबसे अधिक यूरोप, उत्तरी अमेरिका तथा जापान में है। एशिया और अफ्रीका के कृषि-प्रधान महाद्वीपों में नगरीय जनसंख्या का अनुपात कम है।

विश्व में नगरीकरण की वृद्धि के कारण:-

निम्न कारणों से ~~तरह~~ नगरीकरण की वृद्धि हो रही है।

(i) रोजगारों की विविधता और रोजगार मिलने में आसानी जो लोग भूमिहीन श्रमिक होते हैं, उनको शहर में निर्माण-उद्योगों में रोजगार मिल जाता है। नगरों में व्यापार करने तथा छोटे-छोटे उद्योगों को चलाने के अवसर भी अधिक होते हैं।

(ii) नगरों का उद्भव स्थल उन्हीं भागों में होता है, जहाँ उस नगर को फैलने के लिए पर्याप्त स्थल उपलब्ध हो तथा उच्चावच सम्बन्धी कठिनाई न हो। अतः नगरों की वृद्धि अधिक मैदानी क्षेत्रों में होती है।

(iii) जलवायु:-

सागर व झीलों के तटीय भागों में सम जलवायु पाये जाने के कारण ही अधिकतर नगर तटीय क्षेत्रों में स्थित होते हैं।

(iv) नगरों की स्थापना ~~के~~ या वृद्धि में सुरक्षा का महत्व अधिक होता है। प्राचीन काल नगरों के चारों ओर दीवार बनाकर या जल से भरी खाइयाँ बनाकर सुरक्षा का पूरा

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

Date 26

प्रबन्ध किया जाता था। सुरक्षात्मक स्थिति में नगरों की वृद्धि होती है।

(v) जल उपलब्धता :-
जिन स्थलों पर पर्याप्त मात्रा में कृषि व उद्योग के लिए शुद्ध जल मिल जाता है। उन स्थानों पर नगरीकरण में वृद्धि होती है। इसी कारण अधिकांश नगर नदियों के किनारों पर स्थापित हुये है।
जैसे - मथुरा, आगरा आदि।

(vi) सुविधाओं के कारण :- नगरों की वृद्धि में वहा उपलब्ध, सफाई, स्वास्थ्य, चिकित्सा, बैंकिंग, पुलिस प्रबन्ध महत्व रखते है।

(vii) परिवहन एवं संचार की सुविधा :-
नगरों में उत्पादित वस्तुओं का निर्यात करने तथा कच्चा माल लाने आदि के लिए परिवहन के विभिन्न साधनों का प्रमुख योगदान रहता है। अत: नगरों का विकास प्राचीन काल से समुद्र तटीय भागों में अधिक हुआ (जल परिवहन ही यातायात का प्रमुख साधन था)

(viii) पूंजी (capital) :- नगरों के उद्‌भव तथा विकास के प्रमुख आधार विभिन्न प्रकार के निर्माण उद्योग, व्यापार, परिवहन, खनन, वाणिज्य, आदि है, ये सभी

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

क्रियाएँ बिना पूँजी के संचालित नही हो सकती हैं। इनके अलावा विभिन्न इमारतों, सड़कों, रोशनी तथा जलापूर्ति आदि के विकास के लिए पूँजी की अधिक आवश्यकता होती है।

(ix) विभिन्न प्रकार के सामाजिक व सांस्कृति कारक जैसे - रीति-रिवाज, धार्मिक विश्वास, मनोरंजन केन्द्र, पर्यटन नगर आदि नगरीकरण वृद्धि में सहायक है।

(x) किसी राज्य या देश की सरकारी नीति व नियम भी नगरों के विकास पर प्रभाव डालते है।
जैसे:- भारत में विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं के द्वारा विभिन्न कार्यो (उद्योग स्थापना, सड़क निर्माण, रेलमार्ग निर्माण) पर अधिक बल दिया जिससे नगरों में तीव्र वृद्धि हुई है।

Topic :- (मानव व्यवसाय)

Scanned by CamScanner

प्रश्न • 2 नगरीयकरण की प्रक्रिया को स्पष्ट करते हुए नगरीय क्षेत्रों की प्रमुख समस्याओं का वर्णन कीजिए। (2018)

Ans :- नगरीयकरण की प्रक्रिया :- (Processes of Urbanization)

नगर प्राचीन काल से आधुनिक समय तक मानवीय सभ्यता तथा संस्कृति के प्रमुख स्थल रहे हैं। नगर किसी भी देश के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, व्यापारिक, औद्योगिक तथा राजनीतिक विकास के आधार स्तम्भ माने जाते हैं। अतः नगर किसी देश के विकसित तथा अविकसित होने का ज्ञान कराते हैं।

- सामान्यतया नगरीयकरण से तात्पर्य नगरीय क्षेत्र की विभिन्न क्रियाओं - जैसे - जनसंख्या, व्यापार, तथा अन्य क्रियाओं की वृद्धि से माना जाता है।
- नगरीयकरण प्राथमिक व्यवसायों से धीरे-2 या तीव्र गति से द्वितीय एवं तृतीय व्यवसायों की ओर बढ़ने की प्रवृत्ति के रूप में है। नगरीयकरण की प्रक्रिया प्राचीन काल से ही चली आ रही है। जिसके कारण मानव की जीवन पद्धति ही बदल जाती है।
- मानवीय बस्तियों के नगरीय स्वरूप में परिवर्तित होने की इस प्रक्रिया को नगरीकरण कहते हैं।

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

ग्रिफिथ टेलर के अनुसार :- "गाँवो से नगरो की ओर जनसंख्या का स्थानान्तरण ही नगरीयकरण कहलाता है।"

किंग्सले डेविस के अनुसार :- "नगरीयकरण सामाजिक जीवन के सम्पूर्ण क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन की ओर संकेत करता है। यह स्वयं एक आधारभूत अर्थव्यवस्था और तकनीकी विकास का परिणाम है।"

जे. सी. मिचेल के अनुसार :- "नगरीयकरण ग्राम्य अधिवासों से नगरों के रूप में कायान्तरण की एक समन्वित विधि है। जिसके परिणामस्वरूप ग्रामीण अधिष्ठानों, व्यवसाय तथा अर्थव्यवस्था क्षेत्र या भूमि उपयोग, समाज, एवं संस्कृति, जीवन तथा रहन-सहन के स्तर और अन्य मानव मूल्यों में गुणात्मक तथा परिमाणात्मक परिवर्तन क्रमशः स्पष्ट होने लगता है।"

ट्रिवार्था के अनुसार :- "नगरीयकरण एक चक्रीय प्रक्रिया है। जिससे होकर राष्ट्र कृषि समाज से होकर औद्योगिक समाज की ओर अग्रसर होते हैं।"

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

- नगरीयकरण की प्रक्रिया एक चक्रीय प्रक्रिया है। जिसके अन्तर्गत जनसंख्या विकास की विभिन्न अवस्थाएँ पायी जाती हैं। ये अवस्थाएँ निम्न हैं।

(i) प्रारम्भिक अवस्था :- (Initial stage):-

इसके अन्तर्गत कुल जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या की गति बहुत कम अर्थात लगभग 25 प्रतिशत से कम रहती है। अधिकतर लोग परम्परागत आर्थिक क्रियाओं में ही लगे रहते हैं धीरे-2 जनसंख्या का कुछ भाग द्वितीय तथा तृतीय व्यवसायों की ओर अग्रसर होते जाते है प्रारम्भिक अवस्था की नगरीयकरण की प्रवृत्ति वर्तमान समय में अविकसित देशों में पायी जाती है।

(2) त्वरण अवस्था :-

इस अवस्था में नगरीयकरण की प्रवृत्ति तीव्र गति से पायी जाती है। यह द्वितीय अवस्था है। जिसके अन्तर्गत कम समय में ही तेजी से देश की लगभग 30% प्रतिशत से भी अधिक जनसंख्या नगरों में निवास करने लगती है। तथा ये द्वितीय एवं तृतीय व्यवसायों में संलग्न रहते है।

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

- विभिन्न नगरीय औद्योगिक क्रियाओं जैसे - उद्योग, व्यापार, परिवहन, वाणिज्य, विभिन्न प्रशासनिक सेवाओं का तेजी से विकास होता है। इन विभिन्न सुविधाओं के कारण नगरीय जनसंख्या थोड़े समय में ही तीव्र गति से बढ़ जाती है। ग्रामीण क्षेत्रों के लोग तेजी से नगरों की ओर पलायन करने लगते हैं।

(3) <u>अन्तिम अवस्था</u>:- नगरीयकरण की प्रवृत्ति की यह अन्तिम अवस्था है। जिसके अन्तर्गत देश की कुल जनसंख्या की लगभग 70 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या, उद्योग, व्यापार, आदि नगरीय क्रियाओं में संलग्न रहती है। तथा नगरीय क्षेत्र में ही निवास करती है। यह अवस्था स्थिर अवस्था भी कहलाती है। क्योंकि इस अवस्था में नगरीयकरण का स्तर लगभग स्थिर हो जाता है। तथा बहुत ही मन्द गति से वृद्धि होती है।

- ऐसी अवस्था की नगरीयकरण की प्रवृत्ति वर्तमान समय में केवल औद्योगिक दृष्टि से विकसित देशों में ही पायी जाती है।

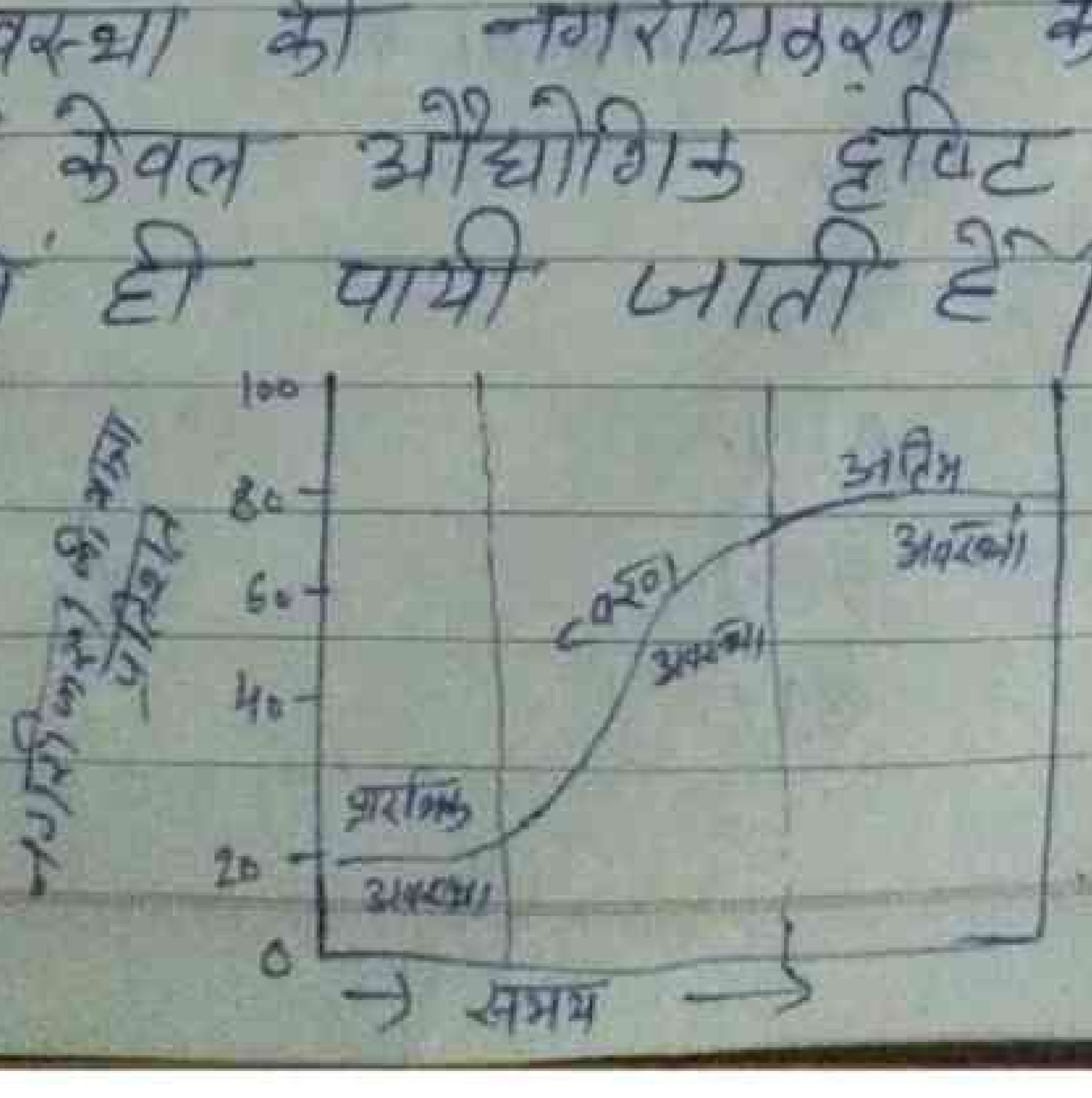

नगरीकरण चक्र

विश्व के विभिन्न देशों में नगरीयकरण:-

संसार में कुल जनसंख्या का 33% प्रतिशत भाग 1960 में नगरीय जनसंख्या के रूप में था। 1975 में बढ़कर नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत 38 हो गया था। 2001 की जनगणना के आँकड़ो के अनुसार विश्व की कुल जनसंख्या का 48% जनसंख्या नगरीय है।

- नगरीय जनसंख्या का उस देश की कुल जनसंख्या के अनुपात के आधार पर विश्व के देशों को निम्न भागों में विभाजित किया जाता हैं।

20.8

(1) अति उच्च नगरीयकरण:-

इस वर्ग के अन्तर्गत विश्व के उन विकसित देशों को सम्मिलित किया जाता है जिनकी कुल जनसंख्या का 75% से अधिक भाग नगरीय क्षेत्र में निवास करते है।

जैसे -

	नगरीय जनसंख्या का %
सिंगापुर	100%
बेल्जियम	97%
इजरायल	91%
नीदरलैंड	93%
इंग्लैण्ड	89%

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

(2) उच्च नगरीयकरण:- जिन देशों की कुल जनसंख्या का 50-से 75 प्रतिशत भाग नगरीय क्षेत्र में निवास करता है।
जैसे - नार्वे, हंगरी, आस्ट्रिया, पोलैण्ड, ईरान,

(3) मध्यम नगरीयकरण:- विश्व में स्थित जिन देशों की कुल जनसंख्या का केवल 25-50% भाग नगरीय क्षेत्र में निवास करते है। तथा इन देशो की अधिकतम जनसंख्या प्राथमिक व्यवसायों में लगी हो।
जैसे - भारत, पाकिस्तान, इण्डोनेशिया आदि के नगर

(4) निम्न नगरीयकरण:- विश्व के वे अविकसित देश जिनकी कुल जनसंख्या का 25 प्रतिशत से भी कम भाग नगरों में निवास करता है। तथा अधिकतर भाग ग्रामीण क्षेत्र मे निवास करता है।
जैसे - श्रीलंका, थाईलैण्ड, कम्बोडिया, नेपाल, वियतनाम आदि देशों इस श्रेणी मे आते है।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

II नगरीय क्षेत्रों की समस्याएँ ⇒

नगर वर्तमान समय में आधुनिक सुविधाओं एवं रोजगार की दृष्टि से सुख - सुविधापूर्ण माने जाते है। लेकिन अति नगरीयकरण की प्रवृत्ति के कारण नगर - धीरे - 2 एक समस्या क्षेत्र के रूप में परिवर्तित होते जा रहे है। नगरीय क्षेत्रों की प्रमुख समस्याएँ निम्न है।

(i) स्थान सम्बन्धी समस्याएँ (a) कृषि भूमि पर अतिक्रमण (b) भूमि - मूल्य में वृद्धि
(ii) आवासीय समस्याएँ -
(iii) परिवहन सम्बन्धी समस्याएँ - (a) अत्यधिक भीड़ (b) [illegible]
(iv) जलापूर्ति की समस्याएँ
(v) विद्युत की समस्या
(vi) स्वास्थ्य तथा चिकित्सा सम्बन्धी समस्याएँ -
(vii) नगरीय क्षेत्र से प्राप्त अपशिष्ट पदार्थों की समस्या -
(viii) शिक्षा एवं मनोरंजन सम्बन्धी समस्याएँ,
(ix) पर्यावरणीय प्रदूषण सम्बन्धी समस्याएँ
(x) नगरीय क्षेत्रों की प्रमुख समस्या :- मलिन बस्तियाँ।
(xi) अन्य समस्याएँ :- खाद्य पदार्थों मे मिलावट, (व्यापारी लाभ कमाने के चक्कर), अपराधों का बढ़ता स्तर, उपभोक्ता वस्तुओं का उच्च मूल्य, सामाजिक प्रशासनिक समस्या, दुर्घटनाओं की समस्या

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

(1) स्थान सम्बन्धी समस्याएँ :- दिन - प्रतिदिन नगरीय जनसंख्या में होने वाली तीव्र वृद्धि के कारण विभिन्न औद्योगिक संस्थानो की स्थापना, दुकानों, आवासीय क्षेत्र आदि के लिए स्थान विशेष कम होते जा रहे हैं। नगरों का ग्रामीण क्षेत्रों की ओर तेजी से विस्तार हो रहा है। जिस कारण कृषि भूमि पर अतिक्रमण हो रहा है। तथा जहाँ भूमि उपलब्ध है। उसकी कीमत बहुत अधिक पायी जाती है।

(2) आवासीय समस्याएँ :- नगरीय क्षेत्रों की सुविधाओं के कारण ग्रामीण क्षेत्र के लोग नगरीय क्षेत्र में आकर बसने लगते हैं। इसके अतिरिक्त तीव्र जनसंख्या वृद्धि तथा मजदूरों के आगमन के कारण नगरो में आवासीय स्थलों की कमी होती जा रही है। यही कारण है कि नगरो में गन्दी बस्तियों का तीव्रता से विकास हो रहा है।

(3) परिवहन सम्बन्धी समस्याएँ :- नगरीय जनसंख्या के तीव्र वृद्धि के कारण नगरीय यातायात मार्गों की चौड़ाई कम तथा वाहनों की संख्या अत्यधिक होने के कारण कभी-2 यातायात मार्ग घण्टों तक अवरूद्ध रहते हैं। इसके अतिरिक्त नगर के

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

लगभग मध्य में स्थित नगरीय व्यापारिक क्षेत्र में तीव्र जनसंख्या तथा उपभोक्ता वस्तुओं की दुकानों आदि के कारण वाहनों की आवाजाही पर प्रतिबन्ध रहता है।

(iv) जलापूर्ति की समस्या :-

नगर के संकेन्द्रित विशाल जनसंख्या के लिए शुद्ध पेय जल की आपूर्ति कर पाना नगर प्रशासन के लिए एक बड़े उत्तरदायित्व और कठिनाई का काम होता है। इसके अतिरिक्त विभिन्न उद्योगों के लिए भी विभिन्न वस्तुओं की निर्माण की प्रकृति के अनुसार जल की आवश्यकता रहती है।

- वर्तमान समय में प्राकृतिक जल स्रोतों में जलीय स्तर के गिरने के कारण नगरों में पेयजल की सुव्यवस्थित व्यवस्था नहीं पायी जाती है।
- शुष्क प्रदेशों में जलापूर्ति में अधिक कठिनाई होती है। अशुद्ध जल से नगरों में हैजा, पीलिया आदि जानलेवा बीमारियाँ फैल जाती हैं।

(v) विद्युत आपूर्ति की समस्या :-

विद्युत आधुनिक नगर का प्राण है। जिसके अभाव में नगर मृतप्राय हो जाता है। नगरों के विकास एवं समृद्धि का आधार विद्युत को ही माना जाता है। अतः विद्युत आपूर्ति ही वर्तमान नगरीय

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

क्षेत्रों के विकास का आधारभूत कारक है। लेकिन नगरीय जनसंख्या के तीजी से बढ़ने के कारण वर्तमान समय में विभिन्न घरेलू कार्यों तथा औद्योगिक एवं व्यापारिक संस्थानों में विद्युत की माँग उसके उत्पादन से अधिक तेजी से बढ़ रही है। अतः नगरों में यह आए दिन विद्युत सम्बन्धी समस्याएं आती रहती हैं।

(vi) स्वास्थ्य तथा चिकित्सा सम्बधी समस्याएँ :- नगरों में जनसंख्या की तीव्र वृद्धि, मलिन बस्तियों के विकास, जल एवं वायु प्रदूषण, शुद्ध पेय जल की आपूर्ति में गड़बड़ी होने, निर्धनता एवं बेरोजगारी आदि के परिणामस्वरूप नगरों में तरह-तरह की बीमारियों के फैलने से जनस्वास्थ्य में गिरावट आती है। इसके लिए उपयुक्त चिकित्सा व्यवस्था का होना अनिवार्य होता है।

- विकसित देशों में चिकित्सा की उतनी समस्या नहीं है जितनी विकासशील देशों में है। नगरों के अस्पतालों मे केवल नगर के मरीज ही नहीं इलाज करते है बल्कि नगर के बाहर उसके प्रभाव क्षेत्र से भी बड़ी संख्या मे मरीज चिकित्सा के लिए नगर मे ही आते है क्योकि नगर से बाहर अस्पतालों का अभाव पाया जाता है।
- भारत के नगरों में अस्पतालों की कमी है जो अस्पताल है उनमें सुविधाओं की कमी है

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

आधुनिक मशीनें तथा उपकरण तो कुछ बड़े अस्पतालों में ही उपलब्ध होते हैं। इस प्रकार भारत जैसे विकासशील देशों के नगरों में स्वास्थ्य एवं चिकित्सा की समस्या नगर प्रशासन तथा नगरवासियों के लिए गंभीर चुनौती बन गयी है।

21-08

(vii) शिक्षा एवं मनोरंजन की समस्या :-

नगरीय क्षेत्रों में तीव्र जनसंख्या वृद्धि तथा अधिक जनसंख्या घनत्व पाये जाने के कारण शैक्षिक संस्थाओं, जैसे- विद्यालय महाविद्यालय, विश्वविद्यालय प्रशिक्षण संस्थाएं आदि की अधिक आवश्यकता होती है। नगर के शिक्षा संस्थानों में बाहर के विद्यार्थी भी पढ़ने आते हैं।

- व्यावसायिक शिक्षा सम्बंधी संस्थाओं मे तो प्रवेश के लिए होड़ लगी रहती है और केवल अल्पांश छात्र ही उनसे लाभ उठा पाते है
- इसी प्रकार अनेक पब्लिक स्कूलों मे इतनी अधिक फीस ली जाती है कि आर्थिक दृष्टि से कमजोर अभिभावक अपने बच्चों को स्कूलों मे भेजने की सोच भी नहीं सकते है।
- भारत के अनेक छोटे - बड़े नगरों में विभिन्न मनोरंजन केन्द्रों पर भारी भीड़ तथा टिकट - खिड़कियों पर लम्बी-2 कतारे देखी जाती हैं। जो स्पष्ट करती है कि वहाँ मनोरंजन सुविधाओं का अभाव है।

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

(viii) नगरीय क्षेत्र से प्राप्त अपशिष्ट पदार्थों की समस्या :-

नगरीय क्षेत्रों से विभिन्न उद्योगों तथा घरेलू कार्यों में काम आने वाले गन्दे जल, कूड़ा-करकट तथा मलमूत्र आदि के निकास की उत्तम व्यवस्था नहीं पायी जाती है। इसके कारण कई नगरीय समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं। गन्दा जल रिसकर भूमिगत जल में मिल जाता है जो कई बीमारियों का कारण बनता है।

(ix) पर्यावरणीय प्रदूषण सम्बन्धी समस्याएँ :-

नगरीय क्षेत्रों में उच्च जनसंख्या घनत्व, तीव्र जनसंख्या वृद्धि, भूमि का अभाव, पेड़-पौधों की कमी, विभिन्न प्रकार के कूड़ा-करकट का पाया जाना, अत्यधिक औद्योगिक संस्थानों के स्थापित होने, विभिन्न परिवहन साधनों से निकलने वाली हानिकारक गैस CO_2 तथा कार्बन मोनोऑक्साइड आदि के कारण जलवायु तथा ध्वनि प्रदूषण का उच्च स्तर पाया जाता है।

- ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में नगरीय क्षेत्रों में तापमान अधिक मिलता है। तीव्र औद्योगीकरण के कारण वायु में मिश्रित गैसों व धूल कणों से धूल गुम्बद बन रहे हैं। ये सभी पर्यावरण को प्रभावित कर रहे हैं। इस नगरीय प्रभाव से सूक्ष्म जलवायु परिवर्तन परिलक्षित होने लगे हैं।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

(x) नगरीय क्षेत्रों की प्रमुख समस्या : मलिन बस्तियाँ :-

- मलिन बस्तियाँ शहर के वे क्षेत्र हैं जिनमें निम्न स्तर की आवास व्यवस्था होती है, तथा एक से अधिक आवास होते है।

डिकिन्सन के अनुसार :-

"मलिन बस्ती नगर के उस भाग को कहते हैं। जहाँ पर मकान रहने योग्य न हो और जहाँ का वातावरण नागरिको के स्वास्थ्य एवं उनकी नैतिकता के लिए हानिकारक हो।"

- इस प्रकार यह नगर का सघन बसा क्षेत्र होता है। जहाँ निम्न आर्थिक स्तर तथा उच्च अपराध दर पायी जाती है।
- अनेक विद्वानों ने इस क्षेत्र को 'शहर का कैन्सर' तथा 'पत्थर का रेगिस्तान' कहा है। इसे व्याधिकी नगर भी कहा जाता है।

मसानी कहते हैं

"विश्व की रचना ईश्वर ने की है, नगरों की मानव ने तथा मलिन बस्तियों की शैतानों ने।"

विशेषताएँ :- (i) यहाँ के आवास अति प्राचीन पद्धति के ~~छोटे~~ होते है।
(ii) यहाँ निम्न आर्थिक स्थिति पायी जाती है तथा गरीब लोग रहते है।
(iii) यह क्षेत्र भीड़-भाड़ वाला होता है।
(iv) ये क्षेत्र सार्वजनिक सेवाओं से वंचित रहते है। (स्वास्थ्य, साफ सफाई,

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

(v) यहाँ कि नैतिकता का अभाव पाया जाता है तथा बाल अपराध, वैश्यावृति जैसी अनेक बुराइयाँ मिलती है।

मलिन बस्तियों के अस्तित्व तथा निर्माण के कारक :-

(i) औद्योगिकरण एवं नगरीकरण -
(ii) जनसंख्या में वृद्धि -
(iii) नगरीय आकर्षण -
(iv) बेरोजगारी, गरीबी -
(v) प्राकृतिक प्रकोप -
(vi) श्रमिकों की अधिकता -
(vii) आवास की कमी -
(viii) शोषण - दृष्टिकोण -

रोकथाम के उपाय :-

(i) परिवहन की सुविधा की जाये
(ii) इनमें, बाजार, चिकित्सालय, स्कूल, पार्क, आदि सुविधाएँ उपलब्ध करायी जावें।
(iii) ऋण उपलब्ध कराया जाये
(iv) आवास सुविधा उपलब्ध करायी जायें सरकारी कर्मचारियों की तरह।
(v) बस्ती सुधार कार्यक्रम लागू किया जाये।
(vi) जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण
(vii) बेरोजगारी की समस्या का हल ढूँढा जाये।
(viii) राज्य सरकारों द्वारा स्वस्थ्य नगरीय भूमि उपयोग की नीति अपनायी जाये।

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

प्रश्न - ⑥
वाल्टर क्रिस्टलर के केन्द्रीय स्थान सिद्धान्त को समझाइये

Q. क्रिस्टालर के केन्द्रीय स्थल सिद्धान्त की व्याख्या करते हुये क्रिस्टालर तथा लॉश के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत कीजिये - (●●) में

केन्द्रीय स्थल से आशय :-

केन्द्रीय स्थलों का उद्भव स्वयं नहीं होता है। अपितु किसी आवास के चारो ओर स्थित निकटवर्ती क्षेत्र के उपभोक्ता उस अधिवास के विकास के रूप में दिखाई देता है। यह अधिवास एक नगर का रूप धारण कर लेता है।

केन्द्रीय स्थल जहाँ विविध प्रकार की मानवीय क्रियाएँ अपने निकटवर्ती क्षेत्र की सेवा करने के उद्देश्य से संचालित होती हैं, केन्द्रीय स्थल अपने चारों ओर विस्तृत क्षेत्र के निवासियों का मिलन केन्द्र भी होता है। जहाँ लोग अपनी आवश्यकता की वस्तुओं और सेवाओं के लिए एकत्रित होते हैं। प्राय नगर ही ऐसे कार्यों की सुविधा उपलब्ध कराने के कारण केन्द्रीय स्थल होते हैं। तीन केन्द्र होते हैं

(1) विशिष्ट कार्य केन्द्र - (सेवा केन्द्र) - खनन, विनिर्माण
(2) परिवहन केन्द्र - नदी, तट, रेल, सड़क मार्ग के सहारे विकसित
(3) केन्द्र स्थल - नगरीय क्षेत्र (बाजार)

केन्द्रीय स्थलों का निर्धारण :- निम्न हो

(1) केन्द्रीय सेवाओं की उपस्थिति -
(2) क्षेत्रीय सर्वेक्षण -
(3) जनांकिक सूचना -
(4) केन्द्रीयता सूचकांक -
(5) यातायात सेवाएं -

केन्द्र स्थलों के वितरण पर प्रभाव डालने वाले तत्व :-

(i) यातायात सम्पर्क
(ii) सेवाओं की गुणवत्ता
(iii) उच्चावच
(iv) मांग की मात्रा

सरलीकृत आर्थिक भूदृश्यों में केन्द्रीय स्थानों की स्थिति ⇒

आर्थिक भूदृश्यों के मॉडल :- यह एक काल्पनिक मॉडल है। जिसका सरलीकृत रूप धरातल और वहाँ निवास करने वाली जनसंख्या को आधार मानकर किया जाता है।

(1) धरातल :-
(i) असमतल या मैदानी हो
(ii) परिवहन लागत वृद्धि हो जाती है

(2) जनसंख्या :-
(i) जनसंख्या वितरन क्षेत्र मे समान हो
(ii) वहाँ निवास करने वाले आय, माँग, उपभोग प्रवृति में समानता हो।

केन्द्रीय स्थानों स्थिति :-

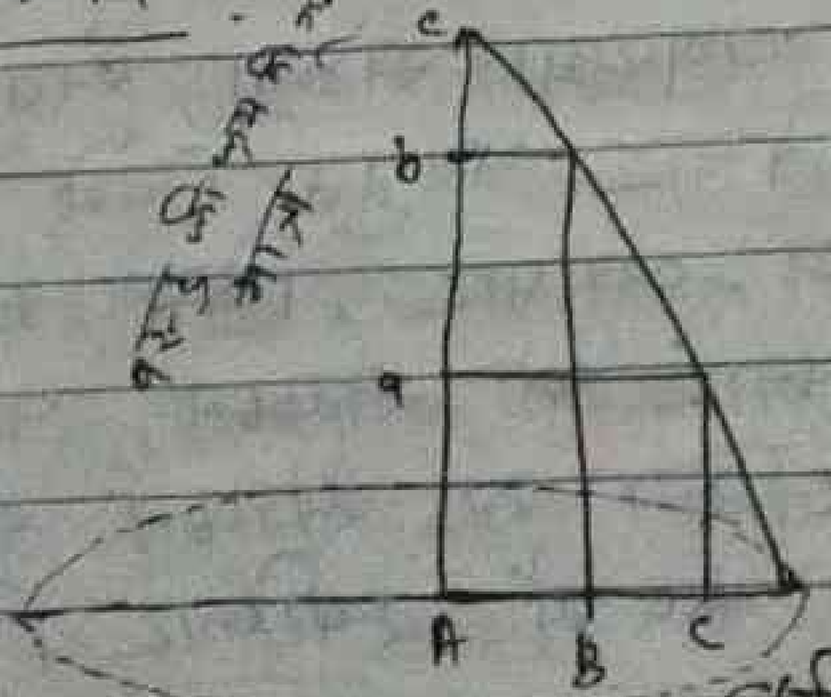

(दूरी के अनुसार मूल्य)
(बाजार क्षेत्र का निर्धारण)

सिद्धान्त :-

वाल्टर क्रिस्टालर का केन्द्रीय स्थल सिद्धान्त ⇒

केन्द्रीय स्थान सम्बन्धी वास्तविक और ठोस आधारशिला तैयार करने का श्रेय क्रिस्टालर को जाता है।

✓ 1933 मे Book - "Central Places in South Germany" में सिद्धान्त को स्पष्ट किया।

⇒ आर्थिक भूगोल में वान थ्यूनेन, वेबर, और क्रिस्टालर के अवस्थिति सिद्धान्त प्रसिद्ध है, इनमें क्रिस्टालर का अधिक महत्वपूर्ण है।

⇒ क्रिस्टालर का सिद्धान्त ग्रामीण और नगरीय अधिवासो के विवरण से सम्बन्धित है।

- क्रिस्टालर के सिद्धान्त को संक्षेप रूप में कह सकते है। कि एक नगरीय केन्द्र के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए उसके चारों ओर उत्पादन भूमि का एक निश्चित क्षेत्रफल आवश्यक है। उस केन्द्र का अस्तित्व इसलिए बना रहता है, क्योंकि वह अपने चारों ओर के क्षेत्र के निवासियों को आवश्यक सेवाएँ प्रदान करता रहता है।

- अत: आदर्शरूप में नगर अपने उत्पादन क्षेत्र के केन्द्र में होना चाहिये। उसने दक्षिणी जर्मनी की बस्तियों के आधार पर केन्द्रीय स्थलों की स्थिति, व्यवस्था, संख्या, सेवा प्रदेशों के सम्बन्ध में अपने विचार प्रस्तुत किये। उसने प्रशासन, श्रम, व्यापार, वित्त, स्वास्थ्य, उद्योग परिवहन, बाजार का संगठन, आर्थिक व सामाजिक जीवन का संगठन आदि को केन्द्रीय सेवाओं के रूप में स्वीकार किया।

Scanned by CamScanner

क्रिस्टॉलर सिद्धान्त की मान्यताएं ⇒

(1) यह प्रदेश एक समतल मैदान है जिसमें ढाल, मिट्टी की उत्पादकता आदि विशेषताएं एक समान है,
(2) ग्रामीण जनसंख्या का वितरण समान है। और उनकी क्रयशक्ति भी समान-
(3) जनसंख्या केन्द्रों का त्रिभुजाकार वितरण है।
(4) प्रत्येक कार्य की बाजार सीमा निर्धारित है।
(5) प्रदेश में सभी दिशाओं में यातायात मूल्य समान रूप से दूरी के प्रत्यक्ष अनुपात में बढ़ता है।
(6) जनसंख्या का निश्चित स्थानिक व्यवहार पाया जाता है।

(1) एक समान धरातल:-

इसके अनुसार धरातल सतत व सीमा रहित है। इसमें गमनागमन सभी दिशाओं में है। तथा किसी भी स्थान से परिवहन व्यय समान है। इसी कारण ऐसे प्रदेश में सम परिवहन मूल्य रेखाये सकेन्द्रीय वृत्तों के रूप में दिखाई देती है।

(2) ग्रामीण जनसंख्या का समान वितरण:-

इस प्रदेश में ग्रामीण जनसंख्या समान रूप से वितरण पाया जाता है। और समान रूप से वितरित केन्द्रीय स्थान ग्रामीण जनसंख्या को सेवाएँ प्रदान करते हैं। ग्रामीण जनसंख्या विरल होने पर केन्द्रीय स्थल भी विरल होते हैं। और ग्रामीण जनसंख्या के बढ़ने पर केन्द्रीय स्थल भी बढ़ते जाते हैं। और उनके मध्य दूरी कम होती जाती है।

Scanned by CamScanner

(3) जनसंख्या केन्द्रों का त्रिभुजाकार वितरण:-

सभी केन्द्रीय स्थानों की समस्त जनसंख्या की सेवा हो सके।

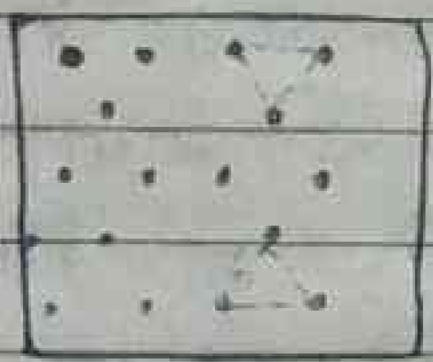

(4) प्रत्येक कार्य के लिए बाजार सीमा:-

⇒ इस मान्यता के अनुसार प्रत्येक कार्य के लिए अधिकतम दूरी निर्धारित है। जिसके बाहर कोई व्यक्ति उक्त कार्य हेतु नहीं जा सकता। दूरी का निर्धारण कार्य के स्वरूप द्वारा होता है,

उदा:- निम्न स्तर के कार्य के लिए व्यक्ति कम दूरी की यात्रा करेंगे जबकि उच्चस्तर के कार्य के लिए उसे अधिक दूर तक जाना पड़ेगा।

(5) किसी कार्य के लिए न्यूनतम आवश्यक जनसंख्या:-

किसी सेवा, उत्पादन, या व्यापार को प्रारम्भ करने के लिये न्यूनतम जनसंख्या का होना आवश्यक है। न्यूनतम जनसंख्या से आशय सेवा या वस्तु की मांग से है मांग इतनी होनी चाहिये कि उत्पादन लागत में अतिरिक्त खुद लाभ अर्जित कर सकें। स्पष्ट है कि जनसंख्या की मांग कार्य के रूप पर आधारित है। निम्न स्तरीय कार्य में कम जनसंख्या की मांग और उच्च स्तरीय कार्य के लिए अधिक जनसंख्या की मांग होगी।

Scanned by CamScanner

(6) जनसंख्या का निश्चित स्थानिक व्यवहार:- इस मान्यता के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति अपने निकटतम केन्द्र से ही वस्तु खरीदेगा।

केन्द्रीय सूचकांक / घांतक -

⇒ क्रिस्टालर ने बस्तियों के केन्द्रीयता सूचकांक टेलीफोन सेवाओं के आधार पर

$$\Rightarrow Ic = \left(t - \frac{P^T}{P'} \right)$$

Ic =

Ic = केन्द्रीय सूचकांक
t = कस्बे मे टेलीफोन की संख्या
P = कस्बे की जनसंख्या
T' = प्रदेश मे टेलीफोन की संख्यां
P' - उस समस्त प्रदेश की जनसंख्या

- इस प्रकार वाल्टर क्रिस्टालर ने केन्द्रीय सूचकांक ज्ञात करने के लिए टेलीफोन की संख्या को उपयोग मे लिया। इन्होने केन्द्रीय सूचकांक ज्ञात करने के लिए चिकित्सा केन्द्र, समाचार- पत्रों के वितरण की संख्या, स्कूली बच्चों की संख्या, स्कूलों की संख्या आदि को भी आधार माना।

(T) # क्रिस्टालर के अनुसार बाजार या सेवा क्षेत्र की व्यवस्था:- ऊपर दी गई दशाओं वाले प्रदेशों मे बाजार क्षेत्र का केन्द्र मध्य में होगा। बाजार की बाह्य सीमा का निर्धारण उस दूरी में होगा। जहाँ दूरी बढ़ने के कारण वस्तुओं की मांग समाप्त हो जाती है। सैद्धान्तिक रूप में बाजार की सीमा वृत्ताकार होनी चाहिये क्योंकि

Scanned by CamScanner

केन्द्र के चारों ओर समान दशाएं पाई जाती है और परिवहन का साधन भी समान है तथा परिवहन लागत दूरी के अनुपात में बढ़ती है। बाजार या सेवा क्षेत्रों की व्यवस्था पहले स्पष्ट की जा चुकी है। वृत्ताकार बाजार क्षेत्र की सीमाएँ वृत्ताकार रखने पर उत्पन्न उभयनिष्ठ और असेवित क्षेत्र की समस्याओं का निराकरण करने के लिए क्रिस्टालर ने बाजार क्षेत्रों की कल्पना वृत्ताकार न करके षटकोण रूप में की। ज्यामितीय दृष्टि से षटकोण आकृति ही वृत के सबसे अधिक निकट होती है। इसमें समान स्तर के सभी केन्द्रीय स्थल परस्पर समान दूरी पर स्थित होता है तथा उनका बाजार क्षेत्र भी समान होता है। षटकोणीय स्थिति में निकटवर्ती कोई भी तीन केन्द्र सीधी रेखाओं द्वारा मिला दिये जाने पर समत्रिपद त्रिभुज का निर्माण करते है।

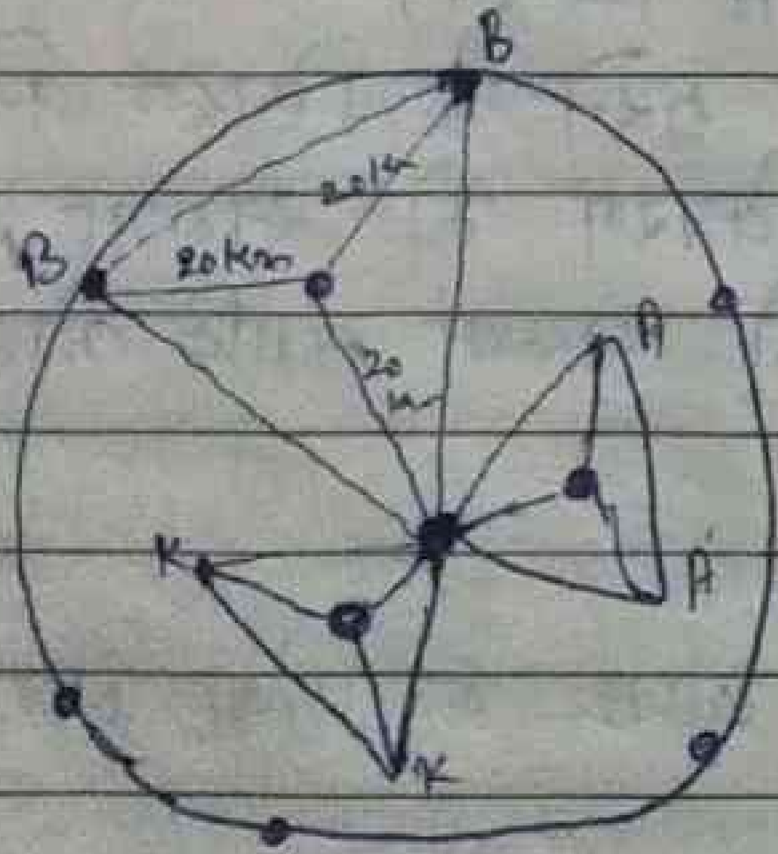

(नगरीय पदानुक्रम का निर्धारण)

Scanned by CamScanner

सेवा केन्द्र / केन्द्रीय स्थान पदानुक्रम:-

सेवा प्रदान करने वाले बसावों का प्रत्येक वर्ग अपने से निम्न क्रम के स्थानों द्वारा किये गये सभी कार्यों को करता है। साथ ही वह उन सभी सेवाओं को भी प्रदान करता है। जिनके आधार पर उसे निम्न क्रम के स्थान की अपेक्षा उच्च पद प्राप्त होता है। पदानुक्रम के बसावों में कई स्तर होते हैं बृहत नगर या विश्व नगर अपने पर निर्भर कई महानगरों की सेवा करता है महानगर अनेक नगरों की सेवा करता है तथा प्रत्येक नगर कई कस्बों की सेवा करता है। प्रत्येक कस्बा कई गावों की सेवा करता है एवं प्रत्येक गाँव कई पुरवों की सेवा करता है इस प्रकार बृहत नगर, महानगर, नगर, गाँव, और पुरवों का परस्पर सम्बन्धित पदानुक्रम होगा।

- क्रिस्टालर ने दक्षिणी जर्मनी के नगरों की अवस्थिति के अपने अध्ययन में केन्द्र स्थल के साथ पदानुक्रमों का उल्लेख किया है जो एक लघु पुरवे से लेकर मेट्रोपोलियन नगर तक भिन्न-2 है क्रिस्टलर के अनुसार एक घंटे में सामान्यतया एक व्यक्ति 3.5 किमी. की दूरी तय कर सकता है इस आधार पर उन्होंने लघुतम केन्द्रों के बीच 7 km की दूरी को बताया है
- क्रिस्टालर के अनुसार केन्द्रस्थलों का पदानुक्रम बाजार नियम K-3, परिवहन नियम K-4, तथा प्रशासनिक नियम K-7 के अनुसार निर्धारित किया जाता है

Scanned by CamScanner

क्रिस्टालर का पदानुक्रम :-

क्रम.	केन्द्र स्थल	संकेत	केन्द्र संख्या	सेवा क्षेत्रों की संख्या	केन्द्रों के बीच की दूरी	केन्द्रों की जनसंख्या	क्षेत्रफल	सेवा क्षेत्र जनसंख्या
1	बाजार केन्द्र	M	486	729	6.9	1000	44	3500
2	टाउनशिप केन्द्र	A	162	243	12.0	2000	133	11000
3	काउन्टी सीट	K	54	81	20.7	4000	400	35000
4	डिस्ट्रिक्ट सिटी	B	18	27	36.0	10,000	1200	100000
5	छोटा राज्य राजधानी	G	6	9	62.1	30000	3600	350,000
6	प्रान्तीय प्रधानगर	P	2	3	108.0	100000	10,800	1000000
7	प्रादेशिक	L	1	1	186.80	500,000	32,400	3500000

विभिन्न केन्द्रों का क्रम / स्पष्टीकरण :-

① **बाजार केन्द्र (M) :-**

बाजार केन्द्र को ही पुरवा और जर्मन भाषा में Markort कहते हैं। इन केन्द्रों के मध्य दूरी 7 किलोमीटर होगी। दो केन्द्रों के मध्य इतनी दूरी तक का क्षेत्र सेवा क्षेत्र होगा इनके षट्कोणीय बाजार का क्षेत्रफल 44 वर्ग कि.मी होगा इस केन्द्र द्वारा निम्न स्तर के कार्य किये जाएंगे।

② **टाउनशिप केन्द्र :-**

यह निम्न स्तर का प्रशासकीय केन्द्र है जिसके अन्तर्गत तीन बाजार केन्द्र और उनके सेवा क्षेत्र होते हैं। ये केन्द्र रेलमार्ग पर स्थित होते हैं

इन केन्द्रों पर न्यायालय, पुलिस के कार्यालयों के अतिरिक्त पशु चिकित्सालय, प्राथमिक स्कूल, पुस्तकालय, सिनेमा घर, बैंक आदि भी होते हैं, दवाई विक्रेता तथा विशेष वस्तुओं की दुकानें भी होती हैं।

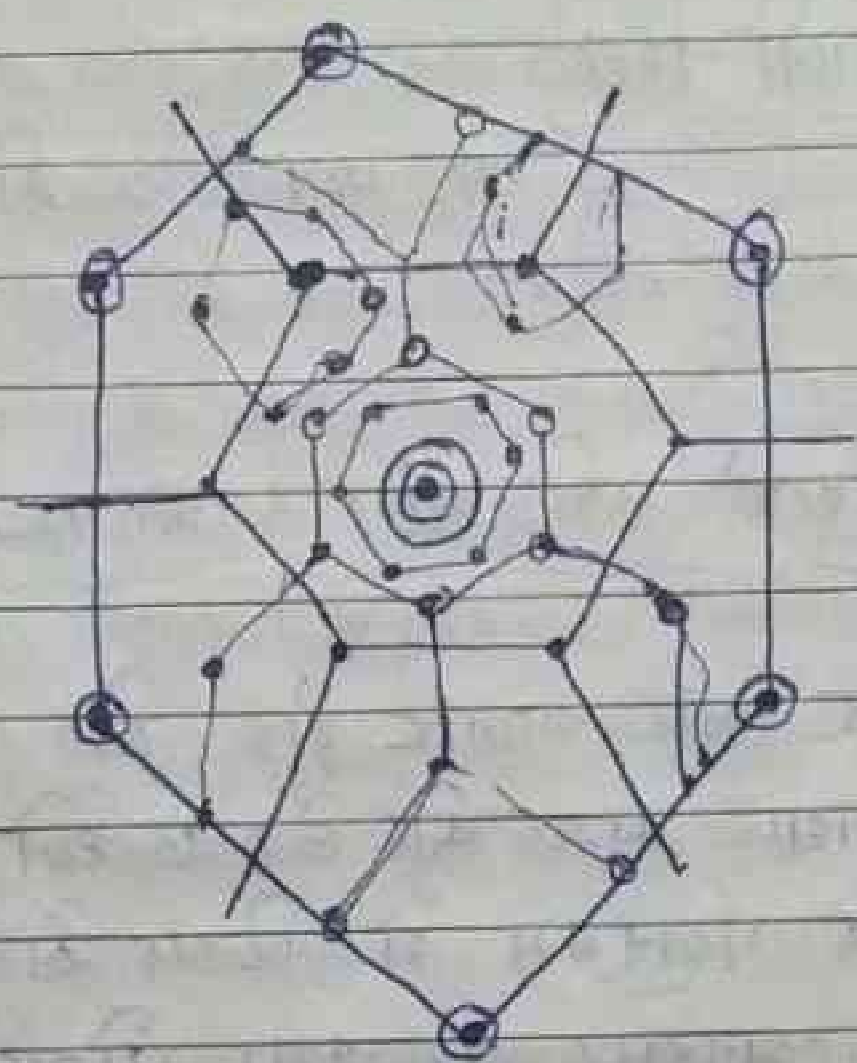

◎ G केन्द्र — G प्रदेश की सिमा
⊙ B केन्द्र — B प्रदेश की सिमा
⊙ K केन्द्र ---- K प्रदेश की सीमा
○ A केन्द्र - --- A प्रदेश की सीमा
• M केन्द्र ---- M प्रदेश की

K = 3 पर आधारित केन्द्रीय स्थल व्यवस्था

(3) काउन्टीसीट केन्द्र :-
इनकी संख्या 54 है। जो 81 सेवा क्षेत्रों को सेवाएं प्रदान करते हैं। इनका सेवा क्षेत्र 4000 वर्ग Km मे विस्तृत होता है। यहाँ मुख्यत: प्रशासन सम्बंधी कार्य होते है।

(4) डिस्ट्रिक सिटी - इस केन्द्र पर उच्च शिक्षा संस्थान, चिकित्सा, जिला प्रम कार्यालय, कई सिनेमाघर, बैंक डाकघर, दैनिक समाचार पत्र, विशेष वस्तु की दुकाने पाई जाती है।

(5) छोटा राज्य राजधानी :-
इनकी संख्या 9 है ये सेवा क्षेत्र की संख्या 9 है।

Scanned by CamScanner

(6) प्रान्तीय प्रधान नगर :- यहा लगभग 1 लाख लोग निवास करते है। इन क्षेत्र इनकी संख्या दो है, जो परस्पर 108 km की दूरी पर स्थित होते है। यहां बडे सरकारी कार्यालय स्थित होते है,

(7) प्रादेशिक राजधानी नगर :-
ये पाँच लाख की जनसंख्या वाला नगर है।

वस्तुओं व सेवाओं की मांग का आधार :-
क्रिस्टालर ने केन्द्रीय वस्तु के प्रसार और बाजार क्षेत्र की व्याख्या उनकी माँग के स्तर के आधार पर की है, उन्होने सेवा केन्द्रों तथा बाजार क्षेत्र के पदानुक्रम मे जिस संकल्पना का निर्माण किया उसके अनुसार आवश्यक सेवाओं को प्रदान करने वाले भण्डारों एंव केन्द्र स्थलों की संख्या प्रदेश में अधिकतम होनी चाहिये, उच्च श्रेणी की वस्तुओं व सेवाओं की मांग का आधार सबसे बडा होता है, इन केन्द्रों पर कम मांग के आधार वाली सभी वस्तुऐं उपलब्ध रहती है,

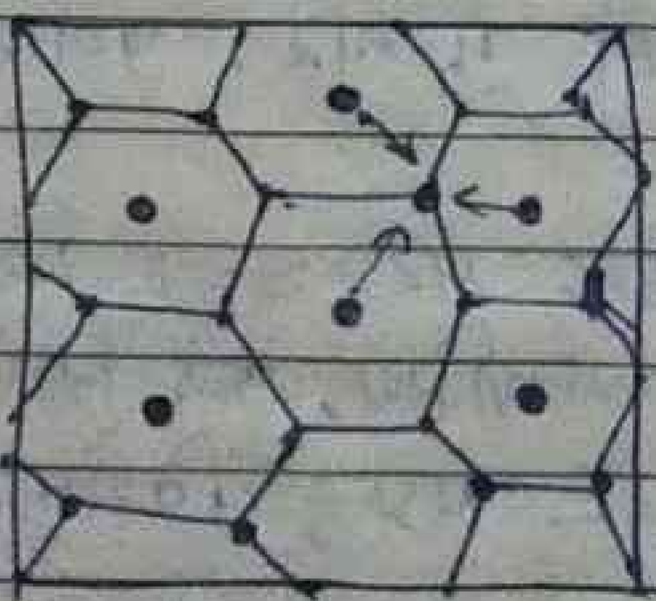
K = 3

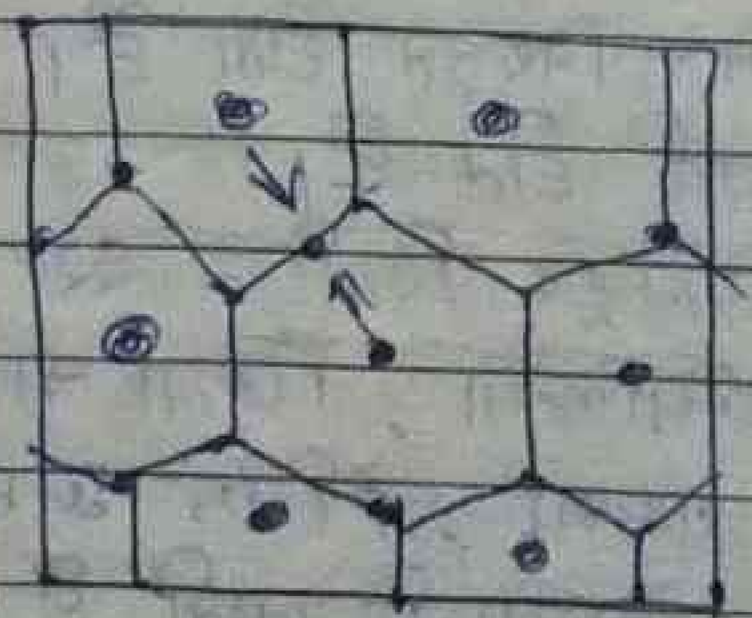
K = 4

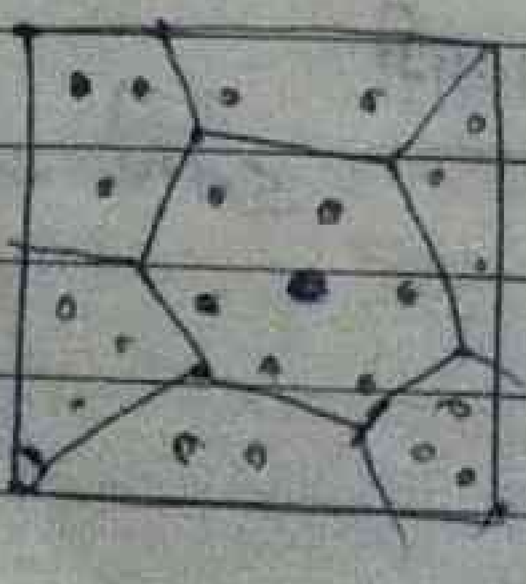
K = 7

अर्थव्यवस्था की निम्न लिखित - चार श्रेणियाँ हैं
(1) प्राथमिक श्रेणी - आखेट, पशुचारण, कृषि, खनन प्राचिण आदि
(2) द्वितीयक श्रेणी - निर्माण उद्योग, पशुपालन दुग्ध व्यवसाय, मत्स्य उद्यो
(3) तृतीयक श्रेणी - यातायात व संचार सेवाएँ, बैंकिंग, आदि
(4) चतुर्थक श्रेणी - शिक्षक, चिकित्सक, वकील, वैज्ञानिक, शोधकर्ता आदि।

वस्तुओं व सेवाओं की अवसीमा पर आधार ⇒ क्रिस्टालर

ने केन्द्रीय वस्तु के प्रसार और बाजार क्षेत्र की व्याख्या उनकी अवसीमा के आधार पर की है। इन्होंने सेवा केन्द्रों तथा बाजार क्षेत्र के पदानुक्रम मे जिस संकल्पना का निर्माण किया उनके अनुसार आवश्यक सेवाओं को प्रदान करने वाले बाजारों एवं केन्द्र स्थलों की संख्या प्रदेश में अधिकतम होनी चाहिये।

उच्च श्रेणी की वस्तुओं व सेवाओं की मांग का आधार सबसे बड़ा होता है इसीलिए उच्चतम केन्द्रीय स्थल सभी वस्तुओं और सेवाओं को प्रदान करते हैं। इससे तुरन्त नीचे स्तर के सेवा केन्द्र कम मांग के आधार वाली वस्तुओं व सेवाओं की पूर्ति करेगे। ये केन्द्र तीन केन्द्र स्थलों के ठीक मध्य में स्थित होंगे।

इस प्रकार दूसरी श्रेणी के केन्द्र स्थल पूरे प्रदेश मे षटभुजों का जाल बनाते हुए विकसित होंगे। इससे स्पष्ट है कि केन्द्रीय स्थलों में षटभुजों का जाल बनाते हुए विकसित होंगे। इससे स्पष्ट है कि केन्द्र स्थलों में कार्यों एवं उनमें सम्बन्धों के आधार पर पदानुक्रम पाया जाता है।

क्रिस्टालर के मॉडल मे K एक संकेत चिन्ह है, जिसका उपयोग सबसे बड़े केन्द्र स्थल के लिए किया गया इस किसी एक क्षेत्र में केन्द्र स्थलों के पदानुक्रम K का मूल्य सैद्धान्तिक स्वरूप में स्थिर रहता है।

Scanned by CamScanner

क्रिस्टालर ने केन्द्र स्थलों की व्यवस्था के लिए तीन सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया -

(1) बाजार सिद्धान्त = K=3
(2) यातायात सिद्धान्त = K=4
(3) प्रशासनिक सिद्धान्त = K=7

(1) बाजार सिद्धान्त :- यह क्रिस्टालर का महत्वपूर्ण सिद्धान्त है। इस सिद्धान्त पर आधारित केन्द्र स्थलों के जाल को K=3 जाल कहा गया है। K सबसे बड़े स्थल के प्रतीक चिन्ह और यह केन्द्र अपने से ठीक नीचे की पदानुक्रमीय श्रेणी के तीन केन्द्र स्थलों के बराबर होता है।

- बाजार सिद्धान्त पर विकसित केन्द्र स्थल तंत्र में जाल निर्माण तीन के नियम के अनुसार होता है। इसमें प्रत्येक बड़े केन्द्र के बराबर होती है। यदि उच्च श्रेणी का नगर K है तो वहाँ तीन नगर (K/3) जनसंख्या के होंगे जो केन्द्र K केन्द्र
3/9 से निम्न श्रेणी के होंगे इस प्रदेश में 9 केन्द्र तृतीय श्रेणी के होंगे और उनकी जनसंख्या
K/27 (K/9) होगी। इस प्रकार चतुर्थ श्रेणी के 27 केन्द्र होंगे। और उनकी जनसंख्या (K/27) होगी।

- अतः पदानुक्रमीय वर्गों में वृद्धि का रूप - 1, 3, 9, 27, 81, 243, होगा। इसमें निचली श्रेणी के 6 केन्द्रों की स्थिति षट्भुज के शीर्ष बिन्दुओं पर होती है।

इस प्रकार इस सिद्धान्त में प्रत्येक आकार के केन्द्रों का क्रम 1, 2, 6, 18, 54, होगा।

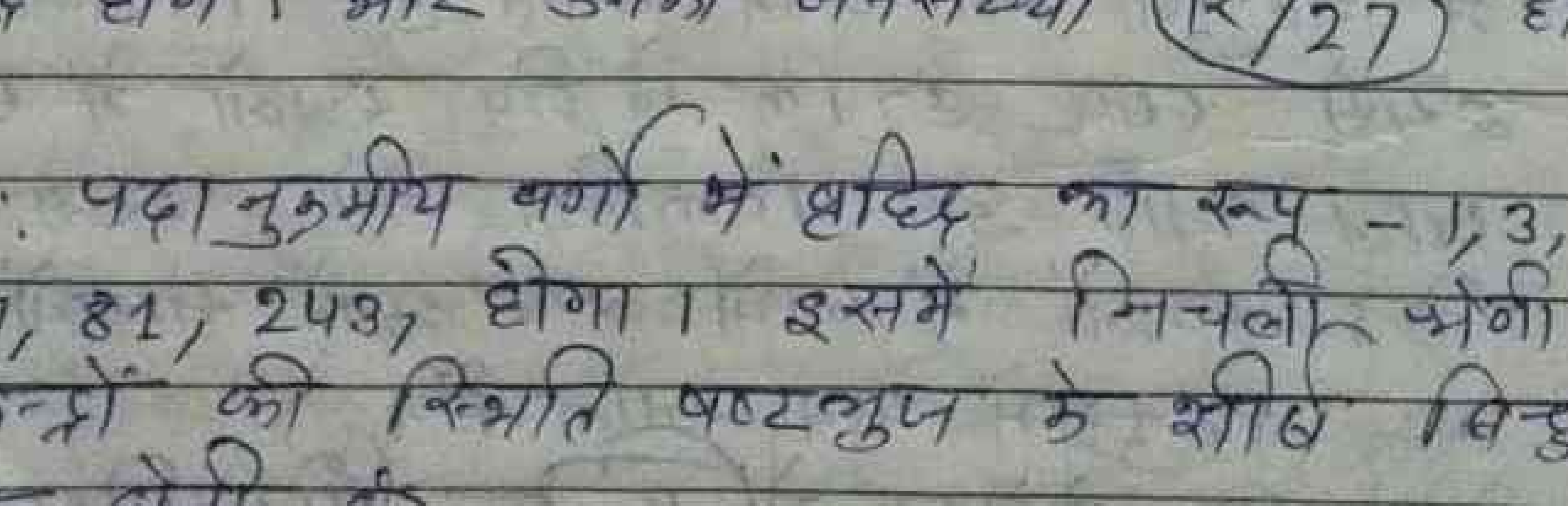

K=3

② **यातायात सिद्धान्त** ⇒ जब परिवहन लागत महत्वपूर्ण कारक होती है। वहाँ केन्द्रीय स्थलों का विकास यातायात सिद्धान्त के अनुसार रैखिक ढंग से होता है। इस व्यवस्था से अधिक से अधिक केन्द्रीय स्थानों को बड़े नगरों के मध्य एक ही मार्ग पर व्यवस्थित करने का उद्देश्य परिवहन लागत को कम करना है। इस सिद्धान्त के अनुसार केन्द्रीय स्थलों का पदानुक्रम K = 4 के अनुसार होता है। अतः इसमें केन्द्रों और उनके प्रदेशों की संख्या में कुल वृद्धि क्रमशः 1, 4, 16, 64, 256 ... के रूप में होती है। इस व्यवस्था में मुख्य केन्द्र के चारों ओर निम्न केन्द्र सीमा रेखा के किनारे मुख्य केन्द्र के मध्य स्थित होंगे। अतः प्रत्येक दो केन्द्र के मध्य में द्वितीय श्रेणी का एक केन्द्र स्थित होगा।

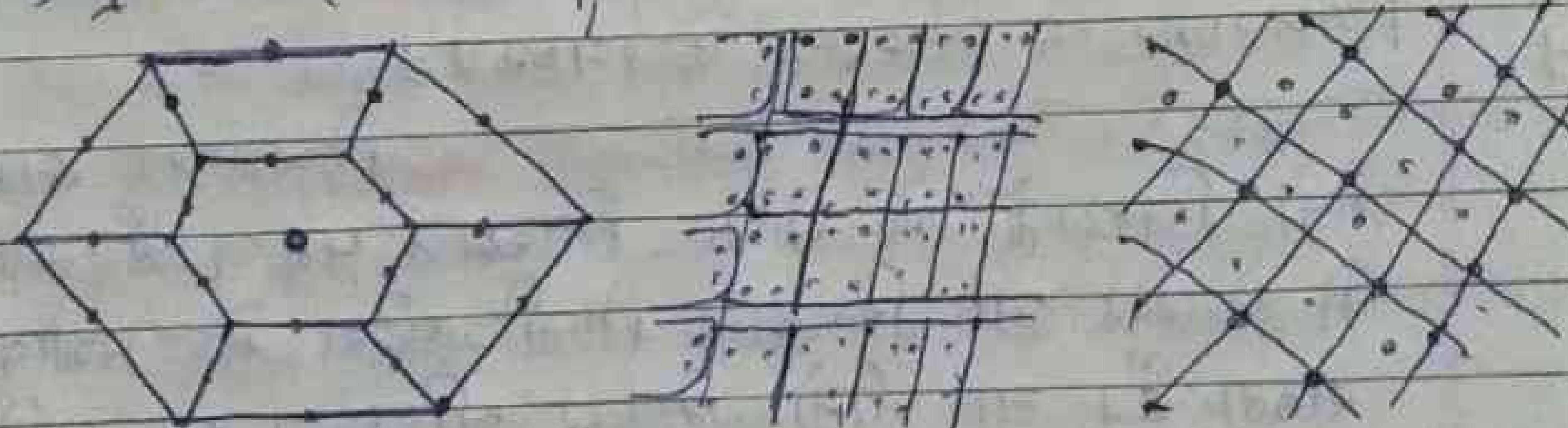

यातायात सिद्धान्त K = 4

③ **प्रशासनिक सिद्धान्त** ⇒ जहाँ प्रशासकीय नियंत्रण अथवा राजनीतिक सेवाओं की पूर्ति आवश्यक होती होती है। वहाँ केन्द्रीय स्थलों की स्थिति K = 7 के मूल्य वाले प्रशासकीय सिद्धान्त के अनुसार होती है। इस प्रदेश में निचली श्रेणी के सभी 6 केन्द्र बड़ी श्रेणी केन्द्र के षटभुजाकार प्रदेश के अन्दर षटकोणीय ढंग से इस प्रकार स्थित होते हैं कि वे

पूर्णतया: उस एक बड़े केन्द्र और उसके प्रदेश से सबद्ध होते है। इस व्यवस्था में प्रत्येक केन्द्रीय स्थान क्षेत्र के केन्द्र में स्थित होता है। यहाँ एक उच्च स्तर के केन्द्र का क्षेत्र 7 निम्न स्तर के केन्द्रों के क्षेत्र के बराबर होता है। इस में 1, 7, 49, 343 के क्रम में वृद्धि होती है।

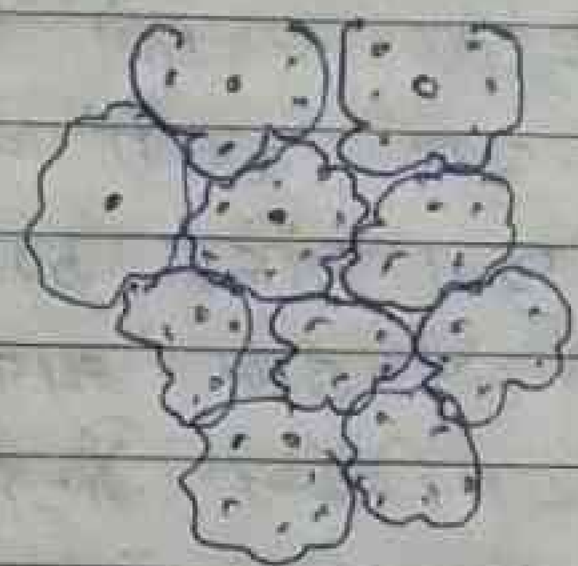

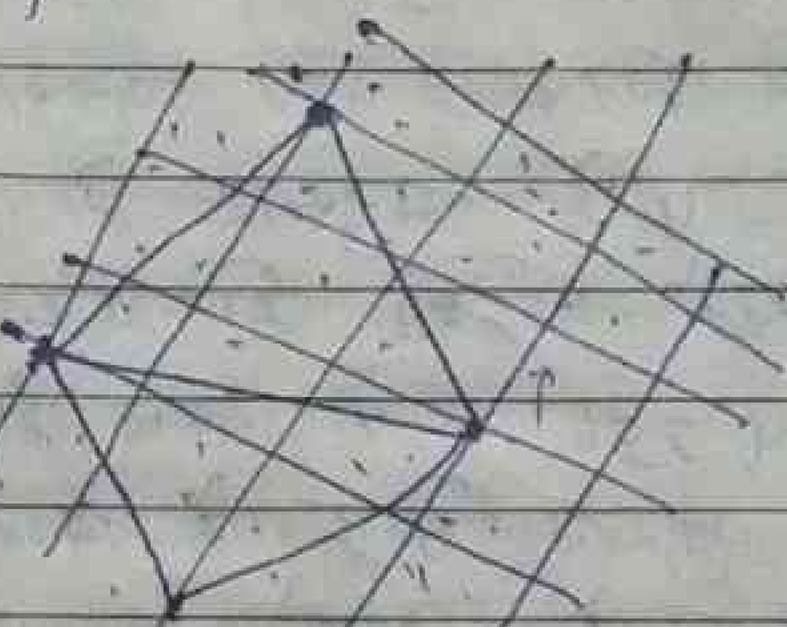

(प्रशासनिक सिद्धान्त K=7)

क्रिस्टालर के सिद्धान्त के निष्कर्ष

क्रिस्टालर द्वारा प्रतिपादित तीनों सिद्धान्तों में बाजार सिद्धान्त प्रमुख है। इन तीनों में से कोई भी सिद्धान्त किसी प्रदेश मे प्रभावशाली हो सकता है, या तीनों मिलकर भी काम कर सकते है।

(1) केन्द्रीय स्थलों के सेवा प्रदेश षटभुजाकार होते है। प्रत्येक केन्द्र के अन्तर्गत 6 निम्नतर श्रेणी केन्द्र होते है। जो उसकी सीमाओं पर स्थित होते है। इसके प्रदेश में छोटे केन्द्रो के सेवा क्षेत्र बाजार सिद्धान्त K=3, यातायात सिद्धान्त K=4 और प्रशासकीय K=7 के नियमानुसार सम्मिलित है।

(2) केन्द्रीय स्थलों का पदानुक्रम केन्द्रीय कार्यों की संख्या और मांग के पर आधारित होता है।

(3) पदानुक्रम में एक बाजार केन्द्र सबसे निम्न स्तर का केन्द्र होता है। जिसके बाजार क्षेत्र का विस्तार 4 km व्यास व अन्य केन्द्रो 7 किमी दूर होता है।

Scanned by CamScanner

(4) निम्न श्रेणी के केन्द्रों की संख्या उच्चतर श्रेणी के केन्द्रों की संख्या के साथ एक नियमानुसार रहती है, अतः एक केन्द्र स्थल व्यवस्था में 1L, 2P, 6G, 18B, 54K, 132A, 486 M, केन्द्र होंगे। इनमें संख्या का ह्रास तीन गुना कम होता जायेगा।

(5) केन्द्र स्थलों के पदानुक्रम के अनुसार ही यातायात मार्गों का भी पदानुक्रम विकसित होता है।

सिद्धान्त की आलोचना ⇒

(1) यह सिद्धान्त इतना अधिक सैद्धान्तिक, जटिल, और आदर्श दशाओं वाला है, कि वास्तविक क्षेत्र की दशाओं में लागू होना कठिन है, इसी प्रकार ऐसा यातायात प्रतिरूप भी कठिन है।

(2) क्रिस्टालर के अनुपात और सम्बद्ध वैचारिक मान्यताओं पर आधारित प्रतीत होते हैं। छोटे केन्द्रों का उनसे बड़े केन्द्रों के साथ उनके द्वारा बताये गये अनुपात के बारे

(3) इसी प्रकार औद्योगीकरण जैसे- महत्वपूर्ण कारक को पर्याप्त महत्व नहीं दिया गया है।

(4) परिवर्तन जो एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। जो मॉडल में स्थान नहीं दिया गया है। अतः मॉडल एक प्रकार की स्थिर प्रकृति का है।

(K) स्थिर

(5) केन्द्रीयता को निर्धारित करने का उनका मापदण्ड पर्याप्त नहीं है। (टेलीफोन संख्या)

(6) उनका सिद्धान्त अनुभवनात्मक प्रमाणों पर कम आधारित है। जबकि यह मान्यताओं पर अधिक आधारित है।

Scanned by CamScanner

क्रिस्टालर माडल का संशोधन ⇒

क्रिस्टालर के केन्द्र स्थल सिद्धान्त में संशोधन का श्रेय "लॉश" को जाता है। लॉश ने 19 ५४ मे अपनी Book "The Economics of Locations" मे किया। वे क्रिस्टालर की सेवा केन्द्रों की त्रिभुजाकार व्यवस्था और षटभुजीय बाजार क्षेत्र की आकृति से सहमत थे पर जनसंख्या का वितरण सतत रूप से समान नही माना। लॉश ने U.S.A के आयोवा प्रान्त का अध्ययन किया।

① केन्द्र स्थल सम्बन्धित व्याख्या - (i)

(i) उन्होने फर्म के आर्थिक सिद्धान्त के आधार पर पूर्ति व मांग का विश्लेषण करके किसी दी हुई वस्तु के लिए बनने वाले स्थानात्मक मांग शंकुओं को ठीक-ठीक ज्ञात किया। लॉश की संकल्पना थी कि सम्पूर्ण प्रदेश में आत्मनिर्भर कृषि में संलग्न समान रूप से वितरित ग्रामीण लोग निवास करते है। यदि इनमें से कोई एक विशेष पदार्थ का अधिक उत्पादन करता है और जिसका वह विक्रय करना चाहता है तो उस पदार्थ के लिए वृत्ताकार बाजार विकसित होगा कि जहाँ परिवहन मूल्य में वृद्धि के कारण पदार्थ का मूल्य इतना अधिक हो जाएगा कि उस वस्तु की माँग बन्द हो जाएगी।

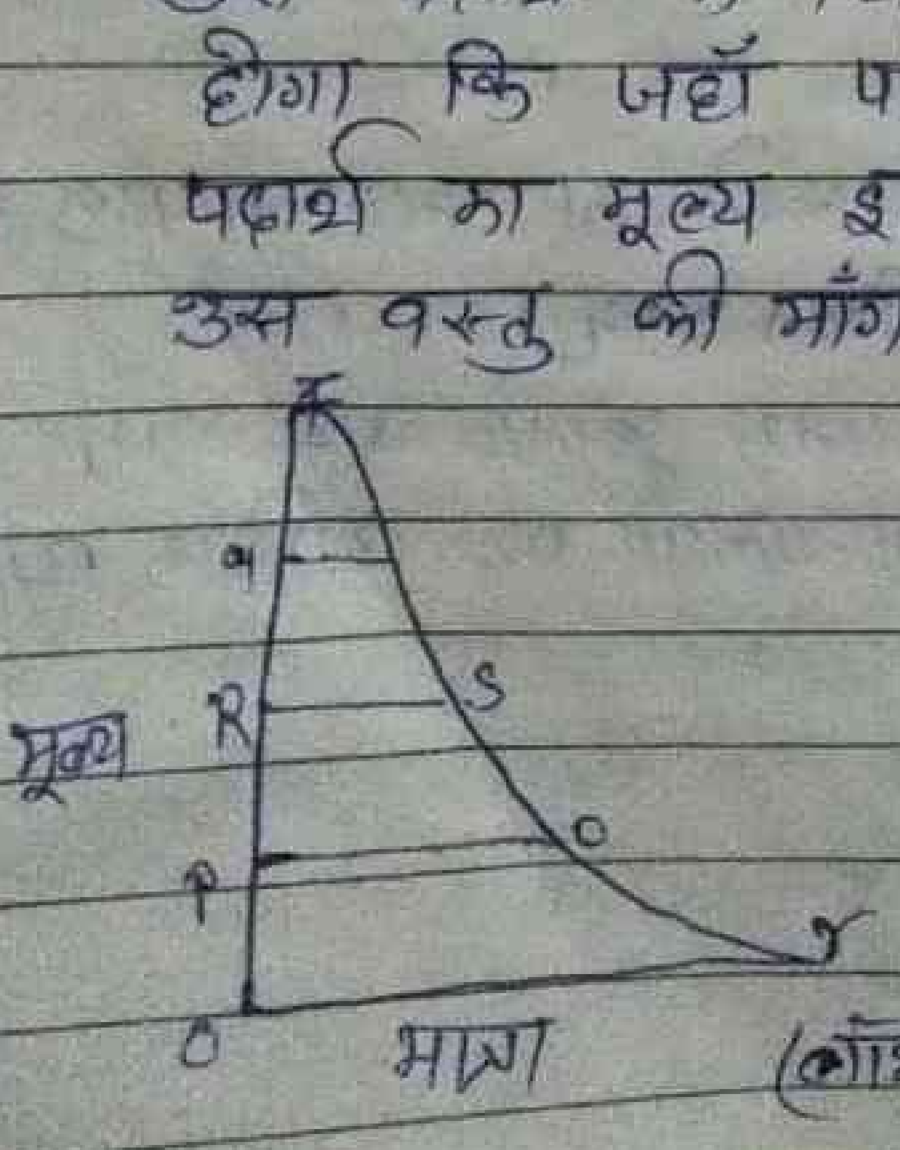

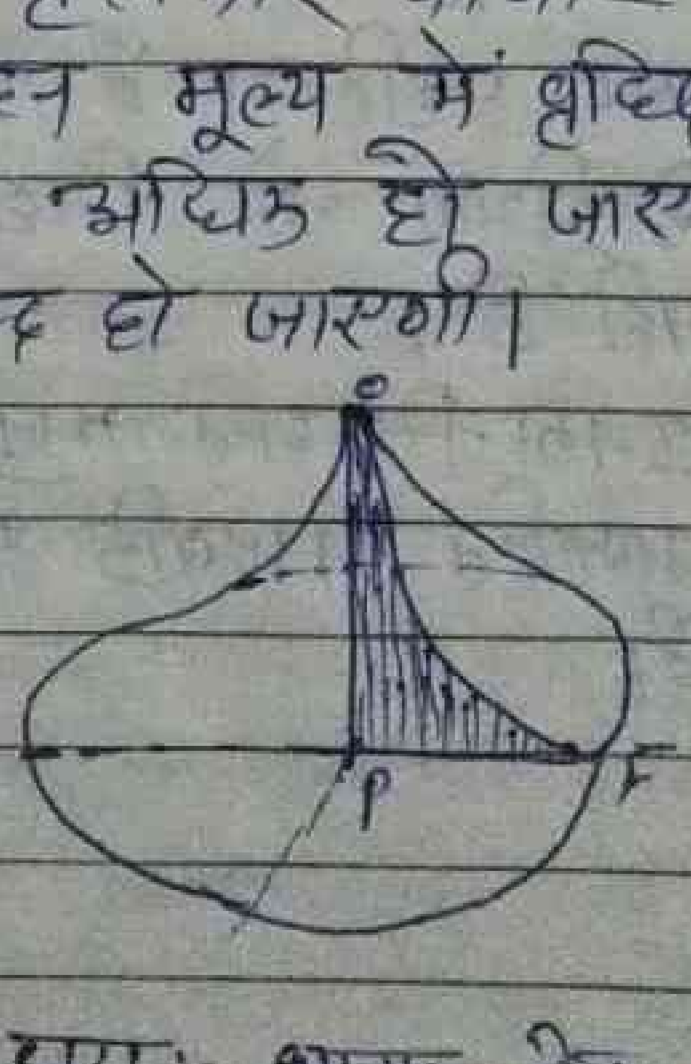

(लॉश) द्वारा बाजार क्षेत्र व मांग शंकु)

(ii) उन्होंने इस निर्णय का गणितीय और आर्थिक प्रमाण दिया कि बाजार क्षेत्र के लिए षट्भुज आकृति सबसे अच्छी आकृति है। इसमें कम भूमि की आवश्यकता पड़ती है।

(2) लॉश का केन्द्रीय स्थल तंत्र यद्यपि क्रिस्टालर के K = 3 रेखा जाल पर आधारित है किन्तु उसने K मूल्य को स्थिर न मानकर परिवर्तनशील माना है। उसने K के परिवर्तित मूल्य को 3, 4, 7, 9, 12, 16, 19, 21 के रूप माना। 6 खण्डों में बहु संख्या उत्पादन स्थल थे।

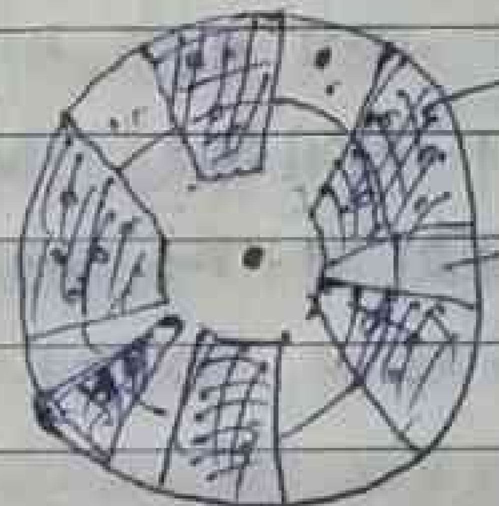

(नगर खण्ड)

(3) लॉश ने क्रिस्टालर के विपरीत पदानुक्रम निर्मित करने का प्रारम्भ ग्रामीण बस्तियों या कृषि ग्रामों से ऊपर की ओर बढ़ते हुए किया। लॉश ने ऐसे केन्द्रीय गावों की कल्पना की है। जो समूचे प्रदेश में आदर्श षट्भुजाकार रूप में स्थित है। इनके अनुसार यदि चुने गये गाँव, जो इस तंत्र में महानगर होगा, उसके चारों ओर स्थित विभिन्न षट्भुजीय जालों को घुमाया जाए तो आर्थिक भूदृश्य में बस्तियों के वृत्त में 6 खण्डों की व्यवस्था विकसित हो जाएगी, इनमें से प्रत्येक खण्ड 60° का होगा एक खण्ड में अधिक विकसित और विशिष्टीकरण वाले होंगे और दूसरा निर्धन खण्ड कहलायेगा।

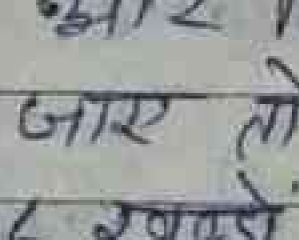

Thanks

Sh